'शबरी' संज्ञक आधुनिक काव्य कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन

अनुसंधित्सु

सान्त्वना मिश्रा

हिन्दी विभाग

पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय

शिलांग - 793 002

मेघालय

2008

Thesis (Hindi)

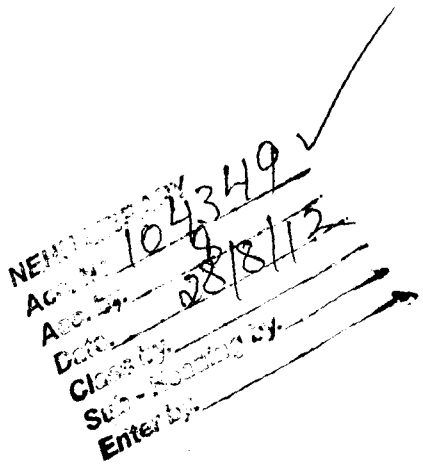

'शबरी' संज्ञक आधुनिक काव्य कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन

शोध निर्देशक
डा. दिनेश कुमार चौबे
उपाचार्य
हिन्दी विभाग
पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय
शिलांग - 793 022
मेघालय

अनुसंधित्सु
सान्त्वना मिश्रा

2008

हिन्दी विभाग
द्वारा

पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग, मेघालय
के हिन्दी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलासफी के लिए
अपेक्षित आवश्यकता की पूर्ति हेतु प्रस्तुत।

पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय
शिलांग

घोषणा

मैं सान्त्वना मिश्रा एतत्द्वारा घोषित करती हूँ कि इस शोध प्रबन्ध की विषय-सामग्री मेरे द्वारा किये गये कार्यों का परिणाम है। इस शोध सामग्री के आधार पर न तो मुझे, और जहाँ तक मुझे ज्ञात है, किसी अन्य को पहले उपाधि प्रदान की गयी है और न ही यह शोध-प्रबन्ध मेरे द्वारा कोई अन्य शोध-उपाधि प्राप्त करने के लिए किसी अन्य विश्वविद्यालय/संस्थान में प्रस्तुत किया गया है।

इसे पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय के सम्मुख हिन्दी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलासफी की उपाधि के लिए प्रस्तुत किया जाता है।

S.K. Sharma 25-2-08	25-02-08	सान्त्वना मिश्रा
अध्यक्ष	निर्देशक	अनुसंधित्सु

अध्यक्ष Head
हिन्दी विभाग/Hindi Deptt
पू.प.वि.वि. शिलांग-22
N.E.H.U., Shillong-22

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषय	पृष्ठ सं.
	अनुक्रमणिका	v
	प्राक्कथन	viii
प्रथम	विषय प्रतिपादन	1-25
1-क	शोध विषय	2
1-ख	राम साहित्य में भक्ति भावना	3
1-ख-I	राम साहित्य में ईश्वर का स्वरूप	4
1-ख-II	राम साहित्य में भक्त का स्वरूप	4
1-ख-III	राम साहित्य में भक्ति का स्वरूप	5
1-ग-I	वाल्मीकीय रामायण में शबरी प्रसंग	6
1-ग-II	शोध की आवश्यकता	8
1-ग-III	शोध की महत्ता	10
1-घ	आधुनिक कालीन शबरी संज्ञक काव्य कृतियों का सामान्य परिचय	11
1-च	शोध प्रविधि	22
	संदर्भ	22-25
द्वितीय	कथावस्तु	26-76
2-क	प्राचीन साहित्य में शबरी प्रसंग	27
2-क-I	पुराणों में शबरी प्रसंग	27
2-क-II	अध्यात्म रामायण में शबरी प्रसंग	27
2-क-III	आनन्द रामायण में शबरी प्रसंग	28
2-क-IV	भट्टिकाव्य में शबरी प्रसंग	28
2-क-V	हिन्दी साहित्य में शबरी प्रसंग	29
2-क-V-1	राधेश्याम रामायण में शबरी प्रसंग	29
2-क-V-2	अरूण रामायण में शबरी प्रसंग	29
2-क-V-3	रामायण कथा में शबरी प्रसंग	30
2-क-V-4	साकेत में शबरी प्रसंग	30
2-क-V-5	जानकी जीवन में शबरी प्रसंग	30
2-क-V-6	वनस्थली में शबरी प्रसंग	30
2-क-V-7	तुलसी पूर्व राम-कथा में शबरी प्रसंग	30
2-क-V-8	गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस में शबरी प्रसंग	30
2-क-V-9	तुलसीदासोत्तर राम काव्य साहित्य	31

2-क-V-10	रामचन्द्रिका में शबरी प्रसंग	31
2-क-VI	आधुनिक हिन्दी साहित्य में राम-कथा सम्बन्धी कृतियाँ	31
2-क-VI-1	वाल्मीकि रामायण में वर्णित शबर्याख्यान अथवा शबरी की मूलकथा	32
2-क-VI-2	वाल्मीकि रामायण में वर्णित शबर्याख्यान (मूलकथा) की समीक्षा	32
2-क-VII	आधुनिक कालीन शबरी संज्ञक समीक्ष्य काव्य कृतियों का कथानक	33
2-ख	कुमारी माया देवी 'मधु' कृत 'शबरी' का कथानक	33
2-ग	गोविन्ददास कृत 'शवरी' का कथानक	41
2-घ	श्री धनन्जय अवस्थी कृत 'शबरी' का कथानक	47
2-च	श्री अवध किशोर श्रीवास्तव 'अवधेश' कृत 'श्रमणा-शबरी के राम' की कथावस्तु	55
2-छ	श्री नरेश मेहता कृत 'शबरी' का कथानक	64
	संदर्भ	70-76
तृतीय	**पात्र-योजना**	77-134
3-क	वाल्मीकीय रामायण (मूलकथा) के पात्रों का चरित्रांकन	79
3-क-I	वाल्मीकीय रामायण (मूलकथा) में शबरी की चरित्रगत विशेषताएँ	79
3-ख	कु. माया देवी 'मधु' कृत 'शबरी' के पात्रों का चरित्रांकन	81
3-ख-I	शबरी का चरित्रांकन	82
3-ख-II	मुनि मतंग का चरित्र चित्रण	84
3-ख-III	राम का चरित्रांकन	85
3-ख-IV	लक्ष्मण का चरित्र चित्रण	88
3-ग	गोविन्ददास कृत- 'शवरी' के प्रमुख पात्रों का चरित्रांकन	90
3-ग-I	शवरी का चरित्रांकन	91
3-ग-II	शवरी के अन्य पात्र	95
3-घ	श्री धनंजय अवस्थी की कृति शबरी के पात्रों का चरित्रांकन	95
3-घ-I	'शबरी' की प्रमुख स्त्री पात्र शबरी की चरित्रगत विशेषताएँ	95
3-घ-II	राम का चरित्रांकन	101
3-घ-III	मुनि मतंग का चरित्रांकन	103
3-घ-IV	अन्य पात्रों का चरित्रांकन	105
3-घ-V	मुनि वितण्ड का चरित्रांकन	105
3-च	श्री अवध किशोर श्रीवास्तव 'अवधेश' कृत 'श्रमणा-शबरी के राम' के पात्रों का चरित्रांकन	107
3-च-I	'श्रमणा' महाकाव्य के प्रमुख पात्र	108

3-च-II	'श्रमणा' की शबरी का चरित्र चित्रण	108
3-च-III	'श्रमणा' में राम का चरित्रांकन	117
3-च-IV	'श्रमणा' के अन्य पात्र	120
3-छ	नरेश मेहता कृत 'शबरी' की पात्र योजना	120
3-छ-I	भक्तिमती शबरी का चरित्रांकन	120
3-छ-II	मतंग मुनि का चरित्र चित्रण	123
3-छ-III	राम का चरित्रांकन	126
3-छ-IV	अन्य पात्रों का चरित्र चित्रण	128
	संदर्भ	128-134
चतुर्थ	**परिवेश प्रतिबिम्बन एवं विचाधारा**	135-229
4-क	कु. माया देवी 'मधु' कृत शबरी का परिवेश प्रतिबिम्बन	138
4-ख	श्री गोविन्ददास कृत शवरी का परिवेश प्रतिबिम्बन	159
4-ग	श्री धनन्जय अवस्थी कृत शबरी का परिवेश प्रतिबिम्बन	165
4-घ	श्री अवधकिशोर श्रीवास्तव 'अवधेश' कृत 'श्रमणा' का परिवेश प्रतिबिम्बन	180
4-च	नरेश मेहता कृत शबरी का परिवेश प्रतिबिम्बन	204
	संदर्भ	218-229
पंचम	**काव्य सौन्दर्य**	230-273
5-क	काव्य सौन्दर्य के आधार पर शबरी संज्ञक काव्य कृतियों का अवमूल्यन	232
5-ख	समीक्षा हेतु प्रयुक्त काव्य सौन्दर्य के उपादान	232
5-ख-I	शबरी संज्ञक काव्य कृतियों के भावपक्ष का अवलोकन व समीक्षा	233
5-ख-II	शबरी संज्ञक काव्य कृतियों के कलापक्ष का अवलोकन व समीक्षा	246
	संदर्भ	268-273
	उपसंहार	274-294
	संदर्भ	293-294
	परिशिष्ट	295-298

प्राक्कथन

राम-कथा के उद्‌भव विकास एवं इतिहास के संदर्भ में यह तथ्य निर्विवाद है कि आदिकवि वाल्मीकि कृत रामायण ही समस्त राम-कथा की स्रोतस्विनी है। आधुनिक भारतीय भाषाओं के साहित्य में राम-कथा की व्यापकता अद्वितीय है। ज्ञातव्य है कि प्राय: सभी भाषाओं के प्रथम महाकाव्य का विषय राम-कथा ही है। राम-कथा विषयक आधुनिक हिन्दी काव्यों में जिन विशिष्ट प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं वे हैं राम के सम्पूर्ण जीवन के चित्रण के स्थान पर उनके जीवन से सम्बद्ध किसी गुण अथवा घटना विशेष को वर्ण्य विषय बनाना, राम की लीला स्थली में से किसी स्थल विशेष का चयन कर उससे सम्बद्ध पारम्परीण मान्यताओं के कुछ स्वीकरण कुछ अस्वीकरण की प्रक्रिया से गुजरते हुए उसमें वैयक्तिक रागात्मकता के रंग भरना तथा युगों-युगों से चली आ रही राम-कथा में उपेक्षित अथवा विशिष्ट पात्रों को युगानुरूप प्रश्नों के साथ चित्रित कर उनके साथ न्याय करना। इस प्रकार के अनेक पात्रों में से शबरी भी एक पात्र है जिसकी शाप मुक्ति का उल्लेख न्यूनाधिक सभी ग्रन्थों में प्राप्य है। इस शोध कार्य हेतु आधुनिक काल की 'शबरी' संज्ञक कृतियों के अनुशीलन व समीक्षात्मक अध्ययन का प्रयास मैने किया है।

प्रारम्भिक दिनों में शोध सामग्री की खोज करने पर तथा उपलब्ध सामग्री के अनुशीलन से मैं इस निष्कर्ष पर पहुँची कि यह विषय इतना नगण्य है तथा साहित्य में इस विषय को अधिक महत्व न प्राप्त होना इस बात का द्योतक है कि शबरी आख्यान पर शोध की कोई सम्भावना नहीं है। तत्पश्चात जब मेरे शोध निर्देशक द्वारा मुझे शबरी संज्ञक कई काव्य कृतियों की उपलब्धता की जानकारी मिली तो शोध की आवश्यकता और शोध की अर्गलाओं का अनावरण स्वयमेव ही हो गया। शोध की रूपरेखा तथा प्रविधि निर्धारित करने में मुझे किंचित कठिन श्रम करना पड़ा। इस अनुच्छेद में मैं अपने शोध-प्रबन्ध के विषय, शोध सामग्री की उपलब्धता, शोध प्रविधि इत्यादि विषयों पर संक्षिप्त चर्चा करना अपना कर्तव्य समझती हूँ।

शोध सामग्री का संग्रह राम-कथा रूपी महासागर से ठीक मोती चुनने जैसा कार्य था। इस प्रयास में मुझे विभिन्न विश्वविद्यालयों के मुख्य तथा विभागीय पुस्तकालयों यथा-पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग, गोरखपुर विश्वविद्यालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी विद्यापीठ, प्रयाग विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, लखनऊ विश्वविद्यालय, ज. ल. नेहरू विश्वविद्यालय तथा दिल्ली विश्वविद्यालय, हिन्दी साहित्य अकादमी, दिल्ली, भारतीय राष्ट्रीय साहित्य अकादमी, दिल्ली, दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, पुसा रोड तथा इन्द्रपुरी, राष्ट्रीय हिन्दी कृषि पुस्तकालय, पुसा इन्स्टीटयूट, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान पुस्तकालय, नई दिल्ली इत्यादि से स्वयं अथवा मित्रों के सहयोग से महत्वपूर्ण सामग्रियों की प्राप्ति हुई। इसके अतिरिक्त मैंने विभिन्न प्रकाशकों की वेब साइट्स, मुद्रित विषय सूचियों तथा प्रकाशनों से पत्राचार के माध्यम से इस विषय पर उपलब्ध सामग्री को संकलित करने का प्रयास किया। शोध विषय से सम्बन्धित अन्य सामग्रियों और स्रोतों जैसे - रामायण तथा उत्तर रामायण नामक दूरदर्शन धारावाहिकों के शबरी नामक भाग के अध्ययन द्वारा भी मेरे द्वारा विषय की गूढ़ता को आत्मसात करने का प्रयत्न किया गया।

शोध प्रबन्ध के विभिन्न अध्यायों में निरूपित सामग्री का संक्षिप्त वर्णन सुधी पाठकों की सुविधा हेतु करना मैं अपना एक प्रमुख कर्तव्य समझती हूँ। प्रथम अध्याय, 'विषय प्रतिपादन' में

आधुनिक कालीन शबरी संज्ञक मुख्य काव्य कृतियों के सामान्य परिचय, शोध का विषय, शोध की आवश्यकता तथा शोध की महत्ता पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला गया है। इसी क्रम में शोध सामग्री की उपलब्धता एवं शोध की अर्गला का अनावरण करना भी इस अध्याय का प्रमुख ध्येय रहा है।

शोध प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय, 'कथानक' के प्रणयन हेतु सर्वप्रथम आदि कवि वाल्मीकि कृत रामायण (मूलकथा) का सम्यक अध्ययन आवश्यक प्रतीत हुआ। राम-कथा के मर्मज्ञ विभिन्न विद्वानों द्वारा विरचित ग्रन्थों, टिप्पणियों एवं भाष्यों ने इस कार्य में मेरा यथोचित मार्गदर्शन किया। आधुनिक कालीन शबरी संज्ञक काव्य कृतियों का सम्यक अध्ययन तथा उनकी विवेचना का कार्य अपेक्षाकृत कम श्रम साध्य व सरल प्रतीत हुआ परन्तु समीक्षा एवं मूलकथा से साम्य तथा वैषम्य हेतु आधार बिन्दुओं (मानकों) का चुनाव एवं उनके सापेक्ष समीक्षित करने का कार्य जटिल एवं दुरूह कार्य था। इस सम्बन्ध में मैं यह निवेदन करना चाहती हूँ कि जिन समीक्ष्य ग्रन्थों को मैंने अपने शोध कार्य हेतु आधार बनाया केवल उनके कथावस्तु की समीक्षा की, परन्तु 'क्यों' तथा 'कैसे' जैसे प्रश्नों के उत्तर देनें अथवा सही या गलत के निर्धारण हेतु अपनी व्यक्तिगत सम्मति न देकर मूलकथा के आलोक में साम्य/वैषम्य, सत्य/असत्य, तथा यथार्थ/कल्पना का प्रतिपादन किया है।

शबरी संज्ञक काव्य कृतियों में मुख्यतः खण्ड-काव्य ही प्रणयित हुए क्योंकि राम-कथा विषयक सम्पूर्ण वाङ्गमय में शबर्याख्यान अति संक्षिप्त है। कविवर 'अवधेश' ने अनेकानेक ज्ञाता-ज्ञात आख्यानों तथा उपाख्यानों के प्रयोग से इसी विषय पर महाकाव्य लिखकर इसे बहुआयामी बना डाला है। काव्य सर्जनाओं के इन प्रयोगों में कवियों ने अपनी-अपनी कृतियों में शबरी के अतिरिक्त अन्य पात्रों का भी समावेश किया है। 'पात्र योजना' नामक तृतीय अध्याय में शबरी संज्ञक काव्य कृतियों के प्रमुख पात्रों के चरित्रांकन एवं उनकी विशिष्टताओं को मूल एवं ख्यात कथा के पात्रों के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त इस अध्याय में शबरी नामक मुख्य पात्र की चारित्रिक विशेषताओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एवं अध्ययन भी किया गया है।

खण्ड-काव्यों तथा महाकाव्यों का प्रणयन परिवेश प्रतिबिम्बन के बिना कैसे संभव है? लगभग सभी कवियों ने अपने राम-कथा विषयक ज्ञान, सुमेधा, सृजनशीलता, शब्द-लाघव, भाषा, शैली काव्य सौन्दर्य एवं कल्पना शीलता का परिचय देते हुए रामायण कालीन परिवेश का बड़ा ही मनोहारी चित्रण किया है। शोध प्रबन्ध के चतुर्थ अध्याय 'परिवेश प्रतिबिम्बन एवं विचारधारा' में शबरी संज्ञक काव्य कृतियों में वर्णित सामाजिक, भौगोलिक, राजनैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, आर्थिक व प्राकृतिक परिवेशों का विस्तृत अध्ययन विवेचन एवं समीक्षात्मक अवमूल्यन के प्रस्तुतीकरण का प्रयास किया गया है। परिवेश प्रतिबिम्बन के अतिरिक्त तत्सम्बन्धित विचारधारा को वाल्मीकीय मूलकथा व ख्यात राम-कथा के संदर्भ में समीक्षीत करने का भी प्रयास किया गया है।

शोध प्रबन्ध के पंचम अध्याय में काव्य के सौन्दर्य की अभिवृद्धि करने वाले उपादानों यथा-कलापक्ष एवं भावपक्ष के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न अवयवों जैसे - रसाभिव्यंजना (काव्यगत रस सामग्री तथा रसिकगत रस सामग्री के आधार पर), छन्द योजना (मुख्यतः मात्रिक एवं वार्णिक छन्द); अलंकार योजना (भेद, प्रभेद सहित); भाषा गुण शैली एवं प्राकृतिक परिवेशों का शास्त्रीय रीति से सम्यक अध्ययन व विवेचन किया गया है।

इस विवेचना में मूल एवं ख्यात राम-कथा का आधुनिक एवं अभिनव शिल्प में प्रस्तुतीकरण हेतु समीक्षात्मक पद्धति शोध प्रविधि के रूप में प्रयुक्त की गयी है। उपसंहार में प्रयुक्त

विधाओं के अवमूल्यन द्वारा प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कृतियों की उत्कृष्टता का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की प्रविधि के रूप में साहित्य समीक्षा के मानदण्डों के अनुपालनार्थ समीक्षा के विविध पक्षों के आधार पर कृतियों की समीक्षा विश्लेषणात्मक पद्धति से की गयी है। पूर्ववर्ती मान्यताओं के खण्डन-मण्डन एवं निष्कर्ष निरूपण में यत्किंचित तुलनात्मक शोध प्रक्रिया का अनुसरण करते हुए शोधकार्य से प्राप्त निष्कर्षों एवं शोधकार्य की उपलब्धियों का समग्र आंकलन एवं उल्लेख इस अध्याय में किया गया है।

ध्यातव्य है कि साहित्येतिहास दर्शन में साहित्य के इतिहास के पुनर्लेखन को सदा-सदा से महत्वपूर्ण, स्तुत्य एवं वरेण्य माना जाता है क्योंकि साहित्य की समृद्धि महान-गौणों के समुच्चय का परिणाम होती है। यही सिद्धान्त 'शबरी' संज्ञक काव्य कृतियों के रचनाकारों एवं उनकी कृतियों; दोनों के संदर्भ में समान रूपेण सार्थक है, तथा इसी से शोध की सम्भावना की अर्गला का अनावरण हुआ। हिन्दी साहित्य से सम्बद्ध शोध पत्रिकाओं में अथवा शोध ग्रन्थों अथवा शोध -प्रबन्ध के रूप में अद्यावधि 'शबरी' संज्ञक कृतियों के अध्ययन का एक भी उल्लेखनीय प्रयास उपलब्ध नहीं है। यह भी ध्यातव्य है कि 'शबरी' संज्ञक काव्य कृतियों में कृती रचनाकारों की कारयत्री एवं भावयत्री प्रतिभा का उन्मेष समवेत रूप में लक्षित होता है। अत: यह कहना अनुचित न होगा कि रामकाव्य धारा के अन्तर्गत हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में प्रणीत 'शबरी' संज्ञक काव्य कृतियों पर शोध की पर्याप्त संभावना विद्यमान थी।

इस शोधकार्य से अनेकों नवीन तथ्य भी प्रत्यक्ष हो सके जो अद्यावधि अज्ञात अथवा अल्पज्ञात थे। इस शोध कार्य से राम-कथा के परम्परागत कथा संघटन, पात्रों, घटनाओं, समस्याओं, जीवन मूल्यों एवं काव्य मानदण्डों का आधुनिक युगबोध के संदर्भ में पुनर्मूल्यांकन करने का एक तुच्छ प्रयास मेरे द्वारा किया गया है। पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से विद्या वाचस्पति (पी-एच. डी.) की उपाधि हेतु मैं अपना शोध ग्रन्थ आचार्यों अधिकारियों, सुधी पाठकों तथा विद्वज्जनों के समक्ष प्रस्तुत कर रही हूँ। मेरी असीम त्रुटियों हेतु मैं स्वयं उत्तरदायी हूँ तथा अनुरोध करती हूँ कि त्रुटियों के निवारण हेतु पाठक स्वयं प्रयास करेंगे या भविष्य में मुझे निर्दिष्ट करेंगे। इस शोध कार्य में मुझे अनेको विद्धानों एवं राम-कथा मर्मज्ञ मनीषियों का सहयोग प्राप्त हुआ। उनके प्रति आभार ज्ञापन करना मेरा महत्वपूर्ण कर्तव्य है।

सर्वप्रथम मैं अपने शोध निर्देशक, परम आदरणीय डा. दिनेश कुमार चौबे जी, सम्प्रति विभागाध्यक्ष एवं वरिष्ठतम आचार्य महोदय की कोटिश: आभारी हूँ जिन्होंने मुझे समय-समय पर सम्यक मार्ग दर्शन प्रदान किया एवं घोर निराशापूर्ण क्षणों में मेरा उत्साहवर्धन करते रहे। शोध कार्य के विभिन्न चरणों में जब भी मेरा मनोबल क्षीण हुआ डा. चौबे जी की गरिमामयी ओजस्वी वाणी से उच्चारित होने वाले उत्साहवर्धक एवं स्फूर्तिपरक वाक्यों को श्रवण करने से मेरे क्षीण होते मनोबल में मानो नवीन आशा का संचार हो उठता था। वस्तुत: डा. चौबे जी ही वह सक्षम, सुदृढ़ एवं सुयोग्य व्यक्तित्व हैं, जिनके ओजस्वितापूर्ण संभाषण, विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन, सबल संरक्षण एवं गरिमापूर्ण सानिध्य में मेरे शोध ग्रन्थ रूपी वृक्ष का पुष्पण और पल्लवन संभव हो सका है।

मैं डॉ विवेक कुमार श्रीवास्तव, तात्कालीन प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग, की उस महती अनुकम्पा हेतु विशेष रूप से अपना आभार ज्ञापन करना चाहती हूँ, जिनके दिग्दर्शन ने मुझे प्रस्तुत विषय पर शोध हेतु प्रवृत्त किया।

मैं डा. सुशील कुमार शर्मा, रीडर, हिन्दी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग, द्वारा प्रदत्त उन सभी अमूल्य सुझावों और मार्गदर्शन हेतु विशेष रूप से अपना आभार प्रकट करती हूँ; जो उन्होंने शोध की रूपरेखा के प्रस्तुतीकरण के समय मुझे प्रदान किये थे।

मुझे विभाग के वरिष्ठ आचार्य डा. माधवेन्द्र प्रसाद पाण्डेय जी; जो मेरे पति के पूर्व परिचित भी हैं, का सहयोग विश्वविद्यालय में नामांकन के बहुत पहले से प्राप्त होता रहा है। शोध कार्य में निरत होने से बहुत पहले शोध कार्यों हेतु स्वयं को मानसिक रूप से तैयार करने अथवा दूसरे शब्दों में शोध की पृष्ठभूमि हेतु मेरे पति के द्वारा डा. पाण्डेय जी के अमूल्य सुझावों से मुझे ऐसी प्रेरणा मिली कि मैं अपनी शिक्षा पूर्ण करने हेतु एक बार पुनः तैयार हो सकी।

शोधकार्य के इस महायज्ञ में मैने विभिन्न विद्वानों एवं मनीषियों का सहयोग प्राप्त किया। इनमें डा. फूल चन्द तिवारी, प्राध्यापक, वी. एस. ए. वी. डिग्री कालेज, गोला बाजार, गोरखपुर; डा. (श्रीमती) ममता त्यागी, विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, डा. रेखा चौबे, प्राध्यापक (हिन्दी) नरेन्द्र देव कृषि विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद, डा. (श्रीमती) प्रीति श्रीवास्तव, एम. ए., पी-एच. डी. (हिन्दी) का अमूल्य सहयोग, मार्गदर्शन सुझाव तथा आलोचनाओं के द्वारा मेरे शोध ग्रन्थ रूपी घट का परिमार्जन एवं सुन्दरीकरण किया गया। जिसके लिए मैं सभी विद्वज्जनों का शतशः धन्यवाद ज्ञापन करती हूँ।

इसी क्रम में मैं धन्यवाद ज्ञापित करना चाहती हूँ अपनी शुभेच्छु एवं अग्रजा डा. (श्रीमती) अंजू सिंह तथा डा. मान सिंह का, जिनके पथ प्रदर्शन के द्वारा ही मैं अपनी शोध यात्रा के इस पड़ाव पर पहुँची हूँ।

शोधकार्य की सम्पूर्णता हेतु मेरे दोनों बच्चों आयु. अनन्या और चि. आयुष्मान तथा मेरे पति डा. अनिल कुमार मिश्र का मुझे पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। दोनों बच्चों ने शोध कार्य की अवधि में असीम त्याग एवं धैर्य का परिचय दिया। मेरा पुत्र आयुष्मान जो शोध कार्य के प्रारम्भ में अपनी तोतली वाणी में मुझसे पूरी बात तक नही कर पाता था, वह शोध कार्य की समाप्ति तक लगभग सात वर्ष का हो गया। मेरी बेटी जो लगभग पाँच वर्ष की थी वह साढ़े नौ वर्ष की हो गयी। शोध कार्य हेतु पठन-पाठन, चर्चा व लेखन कार्यों में दत्त रहने के कारण मुझसे अपने मातृ दायित्वों के निर्वहन में बहुत सारी त्रुटियाँ तो अवश्य हुई, जिसका दुष्परिणाम मेरे इन्ही नौनिहालों ने अधिक भुगता। जहाँ तक सम्भव हो सका भग्वत्कृपा से मैने अपने कार्यों का यथाशक्ति सम्पादन एवं दायित्वों के निर्वहन का पूर्ण प्रयास किया। अत्यन्त अल्पायु होते हुए भी अनन्या और आयुष्मान नें तो राम-कथा, श्रीराम चरित व शबरी आख्यानों के अतिरिक्त राम-कथा सम्बन्धित विभिन्न आख्यानों-उपाख्यानों के श्रवण मात्र से किंचित ज्ञान अर्जित कर लिया।

शोध कार्य की सम्पूर्णता हेतु मेरे पति डा. अनिल कुमार मिश्र का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने अपना अत्यधिक मूल्यवान समय मेरे इस शोध कार्य को समर्पित कर दिया जिसके कारण मेरा पी-एच. डी. करने का चिरसंचित स्वप्न साकार तथा मूर्त रूप को प्राप्त हो सका। इसके लिए मैं उनकी आजीवन आभारी रहूँगी। मैं अपने सम्पूर्ण परिवार के असीम त्याग, प्रेम और सहयोग की आजीवन ऋणी तथा आभारी रहूँगी। इसके अतिरिक्त मैं अपने वृहद परिवार के सभी सदस्यों, सास, ससुर, मेरी माँ, छोटी बहन श्वेता, ननदों अंजू व वीनू, अनुज भ्राता प्रशान्त व उनकी धर्मपत्नी शालिनी; इन सभी का आभार ज्ञापित करती हूँ। इन्होंने समय-समय पर मेरा उत्साह वर्धन किया तथा हर प्रकार से मेरी सहायता की। जिसके लिए मैं इनकी सदैव ऋणी

रहूँगी। बच्चों पार्थ और प्रियंक ने अपनी-अपनी माँ का बहुत सहयोग किया; जिनका सहयोग मैं प्राप्त करती रही। इन सभी को धन्यवाद देने में मुझे बहुत संकोच हो रहा है क्योंकि धन्यवाद शब्द अपने आप में इतना सम्पूर्ण नहीं है जो कृतज्ञता ज्ञापन को समुचित रूप से व्यक्त कर सके।

मैंनें अपने शोध कार्य में संदर्भ हेतु अनगिनत पुस्तकों का अवलोकन किया और लाभान्वित हुई। मेरे शोध कार्य में प्रयुक्त शोध सामग्री के प्रणेताओं. विद्वज्जनों, मनीषियों, संतों, चिन्तकों, गुरुओं और उन अनेक व्यक्तियों, जिनका नामोल्लेख इस शोध ग्रन्थ में हुआ है; अथवा नहीं हो सका है; उन सभी ज्ञाता-ज्ञात विद्वानों का मैं आभार ज्ञापन करती हूँ।

शोधकार्यों के परिणामों को स्वच्छता पूर्वक टंकित करने एवं उसे सुग्राहय बनाने हेतु मैं अशोक प्रिन्टर्स पूसा के श्री अशोक कुमार गर्ग, श्री अश्वनी जी, अमित जी तथा श्री लाल बहादुर जी का विशेष रूप से धन्यवाद करती हूँ जिनके अथक श्रम के प्रतिफल स्वरूप प्रस्तुत शोध ग्रन्थ अपने सर्वश्रेष्ठ कलेवर में आपके हाथों में हैं।

अन्त में मैं प्रार्थना करती हूँ कि भगवत्वत्सल मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की ऐसी भक्ति हम सभी को मिले तथा ऐसी भगवत्कृपा प्राप्त हो जिससे हम सभी का कल्याण हो सके। मैं सविनय यह शोध ग्रंथ साहित्य मनीषियों और विद्वानों के समक्ष मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करती हूँ।

सान्त्वना मिश्रा

दिनांक 25 फरवरी... 2008 (सान्त्वना मिश्रा)

स्थान : शिलांग, मेघालय

प्रथम अध्याय

प्रथम अध्याय

विषय प्रतिपादन

राम-कथा भारतीय जन-जीवन में पूर्ण रूप से अनुस्यूत है। राम-कथा ही सम्पूर्ण भारतीय वाङ्मय का उपजीव्य एवं प्रेरणा स्रोत है। राम-कथा ही भारतीय चिन्तन का वह मेरुरज्जु है जिससे सभी ललित कलायें, दर्शन, साहित्य एवं मनोविज्ञान की अवधारणाओं के सूत्र जुड़ते और प्रेरित होते हैं।[1] राम-कथा भारतीय जन-जीवन, भारतीय संस्कृति, भारत की चिरन्तन आध्यात्मिक साधना एवं धार्मिक मान्यताओं, भारतीय विचारधारा एवं मूल्य बोधों का संतुलन एवं संघर्ष, भारतीय जन-मानस को प्रभावित एवं आन्दोलित करने वाले नैतिक, सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्यों का प्रतिबिम्ब है।[2] प्रागैतिहासिक काल से अभी तक के विभिन्न काल-खण्डों की आध्यात्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक मान्यताएँ एवं अवधारणाएँ राम-कथा के सनातन प्रतीक चरित्रों के माध्यम से अपने-अपने युगों के यक्ष-प्रश्नों प्रति-प्रश्नों के समाधान खोजती रही हैं।

भारतीय संस्कृति की मूलभूत चेतना अर्थात उसके सांस्कृतिक मूल्य बोध की दीर्घकालीन परम्परा राम-कथा के पात्रों और उनके आचरण के विभिन्न आयामों में अभिव्यक्त हुयी है।[3] भारतीय संस्कृति के क्रमिक विकास को राम-कथा के क्रमिक विकास के समानान्तर उसके नैरन्तर्य में विश्लेषित किया जा सकता है। राम-कथा का विस्तार इतना व्यापक है कि यह देश, जाति, धर्म एवं सम्प्रदाय की सीमा से बहुत आगे उठकर लगभग सम्पूर्ण संसार में, अपने मूल अथवा किंचित परिवर्तित रूप में ख्यात है।

यद्यपि भारतीय भक्ति मार्ग का बीजारोपण वैदिक साहित्य में ही हो चुका था किन्तु शताब्दियों के पश्चात् ही वह भागवत् धर्म में पुष्पित और पल्लवित हो सका। संस्कृत साहित्य एवं वैदिक साहित्य में राम-कथा का स्थान अपेक्षाकृत कम होना इसका द्योतक है। वैदिक साहित्य में तो राम-कथा का नितान्त अभाव है।[4] कालान्तर में भागवतों के इष्टदेव वासुदेव कृष्ण विष्णु के अवतार माने जाने लगे, जिसके फलस्वरूप भक्ति भावना इन्हीं विष्णु-वासुदेव-कृष्ण में केन्द्रीभूत होकर उत्तरोत्तर विकसित होने लगी, बाद में राम भी विष्णु के अवतार माने गये, किन्तु अवतार के रूप में स्वीकृत हो जाने के शताब्दियों पश्चात् राम-भक्ति का आविर्भाव हुआ। राम-भक्ति के पल्लवित होने के पश्चात असंख्य साम्प्रदायिक रामायण तथा संहिताए प्रचलित हुयीं। जिनमें अध्यात्म रामायण, अद्भुत रामायण, आनन्द रामायण, तत्व संग्रह रामायण और विभिन्न काल निर्णय रामायण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। संस्कृत ललित साहित्य के स्वर्णकाल में प्रायः समस्त कवियों ने राम-कथा को लेकर अमर रचनाओं की सृष्टि की है यथा - रघुवंश, रावण-वध, भट्टिकाव्य, महावीर चरितम्, उत्तरराम चरितम्, जानकी हरण, कुन्दमाला, अनर्घ राघव, बाल रामायण, महानाटक इत्यादि।[5] आदि कवि वाल्मीकि के पूर्व की राम-कथा विषयक गाथाओं तथा आख्यानों की लोकप्रियता

तथा व्यापकता को निर्धारित करना संभव नहीं है। राम-कथा के उद्भव, विकास तथा इतिहास के सन्दर्भ में यह तथ्य निर्विवाद है कि आदि कवि वाल्मीकि कृत रामायण ही समस्त राम-कथा साहित्य की स्रोतस्विनी है।[6] वाल्मीकीयरामायण में राम-कथा का प्राचीनतम् क्रमबद्ध रूप मिलता है। विद्वानों का मत है कि वाल्मीकि ने स्फुट आख्यानों को कथा-सूत्रों में संग्रहित कर रामायण महाकाव्य की रचना की, जिसके आज दक्षिणात्य, गौणीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ मिलते हैं।[7]

वैदिक संहिताओं में राम-कथा की प्रमुख घटनाओं एवं पात्रों का उल्लेख संक्षिप्त रूप में मिलता है। राम पूर्व तापिनीय उपनिषद, रामोत्तर तापिनीय उपनिषद और सीतोपनिषद में राम-कथा की सभी प्रमुख घटनाओं का वर्णन किया गया है। पुराणों, रामायणों और संस्कृत के ललित साहित्य में श्रीराम का विस्तार पूर्वक गुण-गान किया गया है। पालि, प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य में भी राम-कथा का सृजन हुआ है। इसके अतिरिक्त भारतवर्ष की प्रायः सभी आधुनिक भाषाओं में भी रामायणों और राम-काव्यों का प्रणयन हुआ है। अतः यह कहना सम्यक है कि श्रीराम के पावन और उदात्त चरित्र पर आदिकविवाल्मीकि से लेकर अब तक वृहद वाङ्मय रचित किया जा चुका है।[8]

यद्यपि उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चिम तक सम्पूर्ण भारत राम की आभा से भास्वर है, परन्तु कविवर भवभूति जहाँ अपने रामचरित में राम का उत्तर कालीन जीवन चित्रित करते हैं वहीं कालिदास का रघुवंश पूरे रघुवंश की कीर्ति और यशोगाथा से आप्लावित है। राम वस्तुतः सर्वत्र रमे हुए हैं। पुराण वस्तुतः उनकी यशोगाथा से प्रेरित होकर ही लिखे गये हैं, यहाँ तक कि श्रीमद्भागवत पुराणकारों ने अपने दो अध्याय ही उनको समर्पित कर दिये हैं।[9]

आधुनिक भारतीय भाषाओं के साहित्य में राम-कथा की व्यापकता अद्वितीय है। ज्ञातव्य है कि प्रायः सभी भाषाओं के प्रथम महाकाव्य का विषय राम-कथा ही है। जिसमें कम्बनकृत तमिल रामायण, तेलगू-द्वीपद रामायण, मलयालम-रामचरितम्, कन्नड़-तोरवै रामायण, असमिया-माधव कन्दले-रामायण, बंगाली-कृतिवास रामायण, उड़िया-बलराम दास रामायण, मराठी-भावार्थ रामायण और हिन्दी में कवि कुल शिरोमणि गोस्वामीतुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।[10] श्रीरामचरितमानस का स्थान हिन्दी साहित्य में ही नहीं बल्कि जगत साहित्य में भी निराला है। ऐसा सर्वांग सुन्दर, उत्तम-काव्य लक्षणों से युक्त, साहित्य के सभी रसों का आस्वादन कराने वाला तथा काव्य-कला की दृष्टि से भी सर्वोच्च कोटि का कोई दूसरा ग्रन्थ हिन्दी ही नहीं कदाचित् संसार की किसी भी भाषा में उपलब्ध नहीं है, तभी तो जितनी टीकाएं, जितने भाष्य और जितने शोध इस ग्रन्थ पर हुए हैं उतनी विश्व के किसी अन्य ग्रन्थ पर नहीं।[11]

1-क शोध विषय

विश्व भर में राम-कथा साहित्य के पात्रों के नामों पर आधारित विविध वृतान्त मिलते हैं। राम-कथा के पात्रों को पारम्परिक रूप से राम-पक्ष एवं राम के विपक्ष पात्रों में स्पष्ट रूप से

विभक्त करती हुयी सीमा-रेखा साफ दृष्टिगोचर होती है। राम-पक्ष के पात्रों में जहाँ सतोगुण एवं रजोगुण की प्रधानता है वहीं राम के विपक्ष पात्रों में तमोगुण की। राम-पक्ष के पात्रों में जीवन की सर्वोच्च साधनाओं की चरम उपलब्धियाँ सन्निहित हैं। त्याग, उदारता, दया, सहिष्णुता, धैर्य, क्षमा तथा इतर सात्विक गुणों का आविर्भाव उनके चरित्रों में सहज दृष्टिगत होता है। इसके विपरीत राम के प्रतिपक्ष के चरित्रों में आसुरी वृत्तियों की प्रधानता है। राम-कथा के पात्रों को प्रमुख एवं गौण, पुरुष तथा नारी अथवा इनके संयुक्त विभेदों में भी बांटा गया है।[12] राम-कथा का विवेचन करते समय डा. लालता प्रसाद सक्सेना ने मानस के राम, लक्ष्मण, भरत, दशरथ, हनुमान एवं रावण को प्रधान पुरुष पात्र तथा शत्रुघ्न, अंगद, परशुराम को गौण पुरुष पात्र व सुग्रीव, जाम्बवान, जटायु, शरभंग, सुतीक्ष्ण मुनि, नारद, शिव तथा अन्य ऋषियों को अन्य गौण पात्रों की संज्ञा दी है। इसी प्रकार सीता, कौशल्या एवं कैकेयी को प्रमुख नारी पात्र व सुमित्रा, अनुसूया, मंदोदरी, शूर्पणखा को गौण नारी पात्र मात्र है तथा शबरी, अहिल्या तथा सुरसा, ताड़का अन्य गौण नारी पात्र माने गये हैं।[13] डा. लक्ष्मी नारायण दूबे ने भी इसी प्रकार का पात्र वर्गीकरण विभिन्न आधार पर किया है।

जहाँ प्राचीन काव्यों में राम को ही केन्द्रीय वृत्त में रखकर कथा का विस्तार किया गया है, वहाँ आधुनिक युग में गौण एवं अन्य गौण स्त्री व पुरुष पात्रों को भी केन्द्रीय महत्व प्रदान कर स्वतन्त्र काव्य की सृष्टि की गयी है। इसी प्रकार सीता के अतिरिक्त, कैकेयी, शूर्पणखा, शबरी, अहिल्या इत्यादि स्त्री पात्रों को केन्द्र में रखकर भी स्वतन्त्र काव्यों की सृष्टि की गयी है। राम-कथा के पात्रों के नामों पर विविध वृतान्त मिलते हैं। अवतारवाद एवं भक्ति के विकास के कारण राम की कथाओं में अलौकिकता की मात्रा बहुत बढ़ गयी है। राम को मुक्ति दाता के रूप में चित्रित करने के उद्देश्य से विभिन्न पात्रों के उद्धार का सम्बन्ध राम से स्थापित किया गया है।[14] इस प्रकार के अनेक पात्रों में से शबरी भी एक पात्र है जिसकी शाप-मुक्ति का उल्लेख न्यूनाधिक सभी ग्रन्थों में मिलता है।

1-ख राम साहित्य में भक्ति भावना

भक्ति भावना राम साहित्य में स्थाई भाव के रूप में विद्यमान हैं। वस्तुतः राम से सम्बन्धित गद्य-पद्य, नाटक, कथा इत्यादि सभी तो भक्ति की ही परिणति हैं। लगभग सभी साहित्यकार आकण्ठ भक्ति में डूबे हुए प्रतीत होते हैं। भक्ति के समस्त भावों के दर्शन विभिन्न ग्रंथों के पठन से पाठकों को अनायास ही होते हैं। रामचन्द्र जी का आदर्श युगों-युगों से जनमानस के सामने रहा है। पितृ वचन पालन में निष्ठा, सुख दुखों में समत्व की बुद्धि, कष्ट सहिष्णुता, बन्धु प्रेम, जनता को अपने बन्धु बान्धवों की भाँति देखना सभी गुण की महानता के द्योतक हैं। वज्र से भी कठिन और कुसुम से भी कोमल इस तरह महान व्यक्ति को कौन समझ सकता है? - **"वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि, / लोकोत्तराणां चेतांसि को हिविज्ञातुर्महति।"**

विभिन्न भाषायी रामायणों एवं राम कथा सम्बन्धित ग्रन्थों में कवियों की भक्ति भावना अद्यान्त परिलक्षित होती है। इसमें लेश मात्र भी शंका नहीं है कि श्रीराम का आध्यात्मिक स्वरूप

अपने आप में एक विशाल परिधि में विद्यमान है। प्रस्तुत अध्याय के इस प्रखण्ड में राम साहित्य में प्रतिपादित भक्ति के विभिन्न स्वरूपों पर तीन तत्वों के आधार पर विशद विमर्श किया जा रहा है। ये तीन तत्व निम्नांकित हैं- (क) ईश्वर, (ख) भक्त, (ग) भक्ति।

1-ख-I राम साहित्य में ईश्वर का स्वरूप

'ईश ऐश्वर्ये' धातु में वर् प्रत्यय का योग करने पर ईश्वर शब्द का निष्पादन होता है। ईश्वर का अर्थ है प्रभुता सम्पन्न या ऐश्वर्यवान। ईश्वर संकल्प मात्र से ही जगत का उद्धार कर सकते हैं।

ईशन शील इच्छामात्रेण सकल जगदुद्धरणक्षमः ईश्वरः। -विष्णुपुराण

भगवान को सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय, जीवों के जन्म-मृत्यु तथा विद्या-अविद्या का ज्ञान रहता है।

उत्पत्ति प्रलयं चैव जीवनामागति गतिम्। / वेत्ति विद्यामविद्यां च स वाच्योभगवानिति। - विष्णुपुराण

गीता में भी कहा गया है कि परमेश्वर तीनों लोकों में प्रवेश कर सभी प्राणियों का पालन पोषण करते हैं- **"उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः। / यो लोक त्रयमाविश्य विमर्त्यव्यय ईश्वरः। - श्रीमद्भाग्वत्गीता।"**

ईश्वर की 15 कलाएँ हैं। वेदों में तो ईश्वर को षोडस कलाओं से युक्त बताया गया है। भागवत में कहा गया है कि सृष्टि के आरम्भ में भगवान ने सोलह कलाओं से युक्त विराट पुरुष का रूप धारण किया। यद्यपि भगवान अनन्त शक्तियों के स्वामी हैं तथापि उनमें सोलह शक्तियाँ प्रमुख हैं। इन्हीं सोलह शक्तियों को सोलह कलाओं के नाम से उल्लिखित किया जाता है। ये कलाएँ निम्नांकित हैं- 1. श्री, 2. भू, 3. कीर्ति, 4. इला, 5. लीला, 6. कान्ति, 7. विधा, 8. विमला, 9. उत्कर्षिणी, 10. ज्ञाना, 11. क्रिया, 12. योगा, 13. प्रहवी, 14. सत्या, 15. अनुग्रहा, 16. ईशाना।[15]

1-ख-II राम साहित्य में भक्त का स्वरूप

अध्यात्म रामायण में भक्त के तीन स्वरूप बताये गये हैं- तामसगुणी, रजोगुणी तथा सात्विक भक्त। यद्यपि सारी मानव जाति हेतु ये तीनों ही गुण एक समान रूप से प्रयुक्त होते हैं तथापि भक्तों के लिए इन गुणों का विशेष महत्व है। जो पुरुष हिंसा, दम्भ, मात्सर्य आदि के योग से भक्ति करता है वह तामस भक्त है। जो फल और यश की इच्छा वाला है, वह रजोगुणी भक्त है तथा जो व्यक्ति अपने कर्म ईश्वर के प्रति समर्पण भाव से युक्त होकर करता है, वह सात्विक भक्त है। गोस्वामीतुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस में भक्त के गुणों का वर्णन करते हुए कहा गया है कि उनके मन में न तो स्वर्ग के लिए आसक्ति होती है और न नर्क के प्रति विरक्ति। वे मोक्ष

की भी कामना नहीं करते हैं। वे सर्वत्र अपने इष्टदेव भगवान श्रीराम के ही दर्शन करते हैं। वे अपने स्वामी श्रीराम से निष्काम भाव से प्रेम करते हैं। 'राम चन्द्रिका' में भक्तों के गुणों और उनकी प्रवृति का विवेचन करते हुए प्रतिपादित किया गया है कि जिनका चित्त भगवान के चरणों में लीन रहता है उन्हें दु:ख पीड़ा नहीं पहुँचा सकते। भगवान की कृपा से उनका कल्याण होता है- **"जग जिनको मन तव चरणलीन, / तन तिनको मुत्यु न करति दीन। - राम चन्द्रिका।"**

1-ख-III राम साहित्य में भक्ति का स्वरूप

राम साहित्य में भक्ति के विभिन्न स्वरूपों के प्रत्यक्ष एवं सुगम दर्शन प्राप्य है। भक्ति शब्द 'भज सेवायाम्' धातु में 'क्तिन' प्रत्यय का योग करने पर निष्पन्न होता है। इस प्रकार 'क्तिन' प्रत्यय के भाव में प्रयुक्त होने पर भक्ति शब्द सन्ध्या भक्ति का द्योतक है और इस प्रत्यय के करण तथा अधिकरण में प्रयुक्त होने पर 'भक्ति' शब्द साधन भक्ति को लक्षित करता है।

1-ख-III-1 भक्ति की परिभाषा : भक्ति प्रतिपादक ग्रन्थों में भक्ति की अनेक परिभाषाओं का उल्लेख किया गया है। महर्षि शाण्डिल्य के मत से ईश्वर के प्रति प्रकृष्ट अनुराग को भक्ति कहते हैं। नारदभक्तिसूत्र में कहा गया है कि व्यास के मत से पूजा आदि में अनुराग होना भक्ति है। इस प्रकार शाण्डिल्य ने ईश्वर के प्रति परमानुरक्ति को भक्ति कहा है और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने श्रद्धायुक्त प्रेम को भक्ति कहा है।[16]

1-ख-III-2 भक्ति के भेद : श्री रूप गोस्वामी के मतानुसार भक्ति के निम्नांकित तीन भेद होते हैं- 1. साधन भक्ति, 2. भाव भक्ति, 3. प्रेमा भक्ति।

1-ख-III-2.1 *साधन भक्ति* : इष्ट देव के प्रति उपाय-साध्य को साधन भक्ति कहते हैं। साधन भक्ति दो प्रकार की होती है- 1. वैधी, 2. रागानुगा

1-ख-III-2.1.1 *वैधी* : जहाँ भक्ति में जीव की प्रवृति शास्त्राज्ञा के कारण होती है परन्तु प्रेमाकर्षण के कारण नहीं, वहाँ वैधी भक्ति की प्रधानता ज्ञात होती है। वैधी भक्ति के 64 अंग ज्ञात होते हैं। जिनमें नवधा भक्ति के नौ अंग प्रमुख हैं।

1-ख-III-2.1.2 रागानुगा : भक्ति में जीव की प्रवृत्ति प्रेमानुराग के कारण होती है, यथा; श्री कृष्ण के प्रति ब्रज वासियों की भक्ति अनुरागमयी भक्ति है जो रागानुगा भक्ति का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है।

1-ख-III-2.2.2 भाव भक्ति : नाना रुचियों से चित्त को कोमल बनाने वाले शुद्ध, सत्वमय और प्रेमामित्र अनुराग को भाव भक्ति कहा जाता है।

1-ख-III-2.3 प्रेमा भक्ति : वैधी और रागानुगा भाव-भक्ति का अनुष्ठान करने पर या भगवान की महती कृपा होने पर साधक के हृदय में प्रेमाभक्ति का उदय होता है।

1-ख-III-2.4 नवधा भक्ति : नवधा भक्ति, वैधी भक्ति का एक सुगम, आसानी से किया जा सकने वाला सर्व सुलभ भक्ति का स्वरूप है। जिसके नौ अंगों के परिपालन से भगवत् कृपा प्राप्त हो सकती है। नवधा भक्ति का महत्व इस कारण अधिक बढ़ जाता है कि इस भक्ति के नौ अंगों का प्रतिपादन भगवान श्रीराम के श्रीमुख से हुआ है। वस्तुत: नवधा भक्ति ही भक्ति का वह स्वरूप है जो साधारण से साधारण जनमानस, अन्त्यज, अछूतों अशिक्षित, ग्राम्य वासियों इत्यादि को स्वत: ही भक्ति में प्रेरित करके भगवान की प्राप्ति में सहायक है।[17] कर्मकाण्डों एवं जातिगत अशुद्धता के विपरीत फलों से भी इस भक्ति का स्वरूप विचलित नहीं होता है। ब्रह्मज्ञान और दर्शन जैसे उत्कृष्ट विषयों से भिज्ञता के बिना भी नवधा भक्ति शबरी सरीखे साधारण जनसमुदाय को राम भक्ति प्रवण एवं रामानुगामी बना सकता है। भगवान श्रीराम मतंगाश्रम पधार कर अकिंचन शबरी को दर्शन, नवधा भक्ति का उपदेश एवं मोक्ष प्रदान करते हैं। संक्षेप में गो. तुलसीदास द्वारा प्रतिपादित नवधा भक्ति के नौ अंगों का वर्णन निम्नलिखित है- **"नवधा भगति कहऊँ तोहि पाहीं। सावधान सुनु धरु मन माहीं / प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा। / दो.- गुरु पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान। / चौथि भगति मम गुनगन करई कपट तजि गान। / मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा, पंचम भजन सो बेद प्रकासा। / छठ दम सील बिरति बहु करमा, निरतनिरंतर सज्जन धरमा। / सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मोते संत अधिक करि लेखा। / आठवँ जथालाभ संतोषा। सपनेहुँ नहिं देखइ परदोषा। / नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हियँ हरष न दीना। / नव महुँ एकउ जिन्ह के होई। नारि पुरुष सचराचर कोई।"[18]**

श्रीरामचन्द्र जी ने अपने मुखारविन्दों से इस नवधा भक्ति का उपदेश शबरी को दिया जिसे उन्होंने अपने गुरू से अर्जित किया था। रामायण में वर्णित शबरी प्रसंग इसी कारण और भी विशिष्ट बन गया है। चूँकि शबरी प्रसंग का सम्बन्ध नवधा भक्ति से सर्वविदित है, इस कारण साधन भक्ति का विशद विवेचन किया गया है। यद्यपि भाव भक्ति तथा प्रेमा भक्ति के विभेद-प्रभेद अनेकों हैं तथापि शोध कार्य से क्षीण रूप से सम्बद्ध होने के कारण इनके विशद वर्णन एवं निष्पादन से बचने का प्रयास किया गया है।

1-ग-I वाल्मीकीयरामायण में शबरी प्रसंग (मूलकथा)

वाल्मीकि रामायण के तीनों पाठों में जो सामग्री समान रूप से मिलती है, उसमें शबरी की कथा इस प्रकार है- सीता की खोज में राम की पक्षिराज जटायु से भेंट होती है। जटायु राम को समाचार देता है कि उसके द्वारा प्रतिरोध करने पर भी रावण देवीसीता का हरण करके ले गया। जटायु को मोक्ष का दान देकर राम अधोमुखी नामक विशालकाय राक्षसी का वध करते हैं।[19] तदनन्तर मार्ग में कबन्ध नामक राक्षस से उनकी भेंट होती है जिसके पेट में ही उसका मुख बना हुआ था तथा छाती में ही ललाट था। कबन्ध को अध्यात्म रामायण में ऋषि अष्टावक्र तथा मानस में दुर्वासा ऋषि द्वारा शापित होने का वर्णन है।[20] श्रीराम कबन्ध की दोनों भुजाओं को काट डालते

हैं। शाप मुक्त होकर कबन्ध अपने पूर्व जन्म की कथा सुनाने के बाद श्रीराम को ऋष्यमूक पर्वत और पम्पा सरोवर का मार्ग बताकर सुग्रीव की मैत्री के लिए अनुप्रेरित करता है।[21] कबंध राम को मतंगाश्रम का मार्ग बताकर शबरी का भी परिचय इस प्रकार देता है: **"मतंगाश्रम के ऋषि तो चले गये किन्तु उनकी परिचारिणी श्रमणी शबरी अब तक वहाँ विद्यमान है और देवोपम श्रीराम के दर्शन करने के पश्चात् ही वह स्वर्ग लोक के लिए प्रस्थान करेगी।"** इस प्रकार से कबंध सहज भाव से अपनी गंधर्व-गति प्राप्त कर शापमुक्त हो आकाश मार्ग से चला जाता है। तदुपरांत राम पम्पा सरोवर के तट पर मतंगाश्रम में जाकर शबरी का सत्कार ग्रहण करते हैं।[22] वाल्मीकि कृत रामायण की शबरी श्रमशीला, परिचारिणी, तपस्विनी है जिसके आश्रम में श्रीराम पूर्व जनित प्रीति के कारण प्रवेश करते हैं।[23]

राम शबरी के आश्रम में पहुँच कर तथा उसका आतिथ्य सत्कार स्वीकार कर उसकी तत्पश्चर्या के विषय में प्रश्न करते हैं, इस पर शबरी उत्तर देती है कि जिस समय राम चित्रकूट पहुँचे, यहाँ के ऋषि मतंग, जिनकी सेवा वह करती थी, स्वर्ग चले गये। जाते समय ऋषियों ने कहा था कि लक्ष्मण के साथ राम यहाँ अतिथि के रूप में पधारेंगे, उनके दर्शन करने के पश्चात् शबरी भी स्वर्ग जा सकेगी। शबरी राम से यह भी निवेदन करती है कि- **"मैने आपके लिए वन के विविध कन्द-मूल एकत्र कर रखे हैं- मया तु संचितं वन्यं विविधं पुरुषर्षभ्।"**[24] तब वह अपने गुरुओं का गुणगान करती हुयी राम-लक्ष्मण को मतंग वन का दर्शन कराती है। अन्त में वह उन ऋषियों के पास जाने की इच्छा प्रकट करती है तथा राम की आज्ञा लेकर अग्नि में प्रवेश करती है, तदनन्तर वह दिव्य रूप धारण कर उसमें से प्रकट हो जाती है तथा विद्युत सा प्रकाश फैलाती हुयी अपने गुरु महर्षियों के पास पहुँच जाती है।[25]

शबरी कथा के इस प्रथम रूप में गुरु-भक्ति तथा तपस्या की महिमा पर विशेष बल दिया गया है। 'भट्टि काव्य' में भी शबरी कथा का यही रूप मिलता है।[26] महावीर चरित के अनुसार शबरी मतंग आश्रम में रहने वाली तपस्विनी है।[27] अध्यात्म रामायण में भी शबरी का प्रसंग महत्वपूर्ण है।[28] अध्यात्म रामायण में शबरी की कथा इस प्रकार है- कबंध राम को आश्वासन देता है कि शबरी उनको सीता के विषय में सब बातें बता देगी। शबरी भक्ति पूर्वक राम लक्ष्मण का आतिथ्य सत्कार करती है तथा उनको अपने इकट्ठे किये हुये दिव्य फल अर्पित करती है। तदनन्तर यह बताती है कि इस आश्रम में पहले उसके जो गुरु निवास करते थे, उनके आदेशानुसार वह राम का ध्यान करती हुयी उनकी प्रतीक्षा करती रही, अन्त में राम का दर्शन होता है तथा राम शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश देकर कहते हैं कि उन साधनों द्वारा प्रेम लक्षणा भक्ति का आविर्भाव होता है। इससे इसी जन्म में मुक्ति मिलती है। अन्त में राम सीता के विषय में पूछते हैं- **"सीता कमल लोचना, कुत्रास्ते के न वा नीता।"**[29] शबरी राम को उनकी सर्वज्ञता का स्मरण दिलाकर कहती है कि आप लोकाचार का अनुसरण करते हुये सीता का पता पूछते हैं। तब वह प्रकट करती है कि सीता लंका में है और राम को सुग्रीव के पास जाने का परामर्श देती है। अन्त में वह अग्नि

में प्रवेश करती है तथा राम के प्रसाद से मोक्ष प्राप्त कर लेती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि अध्यात्मरामायण के रचयिता ने शबरी की कथा को राम-भक्ति के गुणगान में परिणत कर दिया है। शबरी के हीन जाति को महत्व देकर यह स्पष्ट किया गया है कि राम-भक्ति भेद-भाव से ऊपर उठ कर सबको मुक्ति प्रदान करती है- **"भक्तिर्मुक्तिविधायिनी भगवतः श्रीरामचंद्रस्य।"**[30]

भक्तमाल की प्रियदास कृत टीका प्राचीनतम रचना है जिसमें शबरी की पवित्रता सिद्ध करने वाली कथा पायी जाती है। रघुराजसिंह की राम रसिकावली में भी वही कथा मिलती है किन्तु सरोवर को स्वच्छ करने की कथा इस प्रकार है- राम पहले उसका स्पर्श करते हैं जिससे-**"भयो दून शोणित सर वारी"**, तब राम प्रकट करते हैं कि शबरी ही उसे पवित्रता प्रदान कर सकती है। मुनियों के निवेदन करने पर- **"शबरी सकुचि सलिल पग डारी / तुरतहि भा निरमल सर वारी।"** रघुराजसिंह की राम रसिकावली (पृष्ठ 118) के अनुसार शबरी एक मुनि की पत्नी थी, जो अपने पति के साथ वन में निवास करती थी। साधनारत पति द्वारा वह शापित होती है। तदनन्तर उसके करुण विलाप को सुनकर मुनि उसे निम्न शब्दों में सान्त्वना प्रदान करते हैं- **"करिहे सन्तन की सेवा, / एहै तुव घर रघुकुल देवा।"**[31] शबरी की कथा आदिवासियों में अपेक्षाकृत बहुत अधिक लोकप्रिय है। मध्य भारत के कोल अपने को शबरी के वंशज मानते हैं।[32]

1-ग-II शोध की आवश्यकता

राम-कथा के मर्मज्ञ रेवेरन्ड फादर कामिलबुल्के के अनुसार शबरी प्रसंग का वाल्मीकीयरामायण की आधिकारिक कथावस्तु से कोई सीधा सम्बन्ध ज्ञात नहीं होता है। यह प्रसंग महाभारत के रामोपाख्यान में नहीं मिलता है और अधिक संभव यह प्रतीत होता है कि आदिरामायण में शबरी का उल्लेख नही था। वाल्मीकि कृत रामायण में शबरी की कथा प्रक्षिप्त है। परवर्ती राम साहित्य में शबरी की कथा का उत्तरोत्तर विकास हुआ है। शबर्याख्यान संक्षिप्त रूप में वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण, तत्व संग्रह रामायण, पद्म पुराण, मंजुल रामायण, महावीर चरित, भक्तमाल की प्रियदास कृत टीका, राम-रसिकावली, रामायण ककविन, राम-कियेन, राम गीतावली, राम-चन्द्रिका तथा श्रीरामचरितमानस में उल्लिखित है।[33]

मध्य कालीन कवियों ने राम-कथा के विकास में वैयक्तिक अन्तर्भूति की अपेक्षा जाति चेतना की सामान्य भूमिका का अधिक उपयोग किया है। परिणामतः कृतियों की दृष्टि केवल उन महत्वपूर्ण पात्रों तक ही सीमित रही जैसे- राम, लक्ष्मण, सीता, भरत इत्यादि जो महत्कार्य की लक्ष्यपूर्ति में अपना समुचित योगदान कर सके।

आधुनिक काल के कवियों ने भी आदिकालीन राम-कथा को आधार मानकर विभिन्न ग्रन्थों की अवधारणा एवं रचना के सुन्दर प्रयास किये हैं। इसी क्रम में राम-कथा के अनेक प्रधान या मुख्य, गौण अथवा अन्य गौण पुरुष तथा नारी पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को उजागर करती हुयी रचनाएँ की हैं।[34] जिन पात्रों का पुनर्संस्कार आधुनिक युग में हुआ, वे कवियों की यादृच्छिक

भावना की अपेक्षा युगानुरुप मानवीय मूल्यों की अनिवार्य परिणति हैं। इन कवियों ने पात्रों की मूल प्रकृति को यथासम्भव तथा यथावत् सुरक्षित रखते हुये उनके चरित्र का पुनर्संस्कार करने का प्रयत्न किया। आधुनिक राम-काव्य के प्रवर्तकों ने सदियों से उपेक्षित पड़े चरित्रों को उकेरा तथा अपनी दूर-दृष्टि और कल्पना के द्वारा सजाया और संवारा। राम-कथा के पात्रों के प्रति आधुनिक युग के कवियों का दृष्टिकोण किंचित परिष्कृत तथा परिमार्जित रहा है। परम्परागत पात्रों को नवीन संस्कारों तथा भावों से समन्वित कर उनके चरित्र को अधिक मानवीय अधिक विवेक पूर्ण अधिक मनोवैज्ञानिक आयाम प्रदान किया है। जिन पात्रों के केवल नाम ही प्राचीन राम-काव्य में उल्लिखित थे तथा जिनके आकार व व्यक्तित्व की सुस्पष्ट रूप-रेखा सामने नहीं थी उनको युग-बोध के अनुरूप अपनी कल्पना और प्रतिभा से सुस्पष्ट व्यक्तित्व प्रदान किया गया।[35]

आधुनिक शबरी संज्ञक काव्य का अनुशीलन करते समय यह तथ्य दृष्टिगत होता है कि अधिकांश कवियों ने वाल्मीकीयरामायण को ही प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया है। इतर वाङमय का उपयोग उन्होंने अपनी स्फुट अवधारणाओं की पुष्टि के लिए ही किया है। यहाँ तक कि मानस में वर्णित घटनाओं को ही वास्तविक एवं ऐतिहासिक तथ्य माना जाता है। मानस मूलत: अध्यात्म रामायण से प्रभावित है तथा कथानक के संयोजन के लिए वाल्मीकीयरामायण के अतिरिक्त 'प्रसन्न राघव' 'हनुमन्नाटक', 'अनर्घ राघव' आदि से सूत्र ग्रहण करता है। अत: यहां प्रारम्भ में परम्परित कथानक की रूपरेखा स्फुट करने के लिए वाल्मीकीयरामायण, अध्यात्म रामायण एवं श्रीरामचरितमानस के कथासूत्रों का उल्लेख किया गया है।[36] कहीं-कहीं प्रमुख घटनाओं में नवीनता एवं भिन्नता का संकेत देने के लिए अन्य ग्रन्थों का भी तुलनात्मक उल्लेख किया गया है।

भक्तिकाल में जहां हिन्दू-धर्म के लगभग सभी मुख्य देवी देवताओं तथा उनके अनेकानेक अवतारों का विशद वर्णन मिलता है, वहीं कतिपय महत्वपूर्ण चरित्रों की सदा अवहेलना हुयी है। आधुनिक युग के कुछ रचनाकारों ने ऐसे ही महत्वपूर्ण चरित्रों को अपना वर्ण्य विषय बनाया है। 'शबरी' एक ऐसी ही नारी पात्र है, जिसकी ओर आधुनिक हिन्दी साहित्य के कतिपय रचनाकारों का ध्यान गया है। राम-कथा की इस भक्तिप्रवण नारी शबरी के व्यक्तित्व को परिवर्तित युग सन्दर्भ के अनुरूप नया परिवर्तित एवं परिमार्जित संस्कार भी प्राप्त हुआ। इन रचनाकारों ने शबरी के प्रख्यात आख्यान, उसके पारम्परिण व्यक्तित्व के वैशिष्ट्य को अपनी तूलिका से सँवारा है।

ध्यातव्य है कि साहित्येतिहास दर्शन में साहित्य के इतिहास के पुनर्लेखन को सदा महत्वपूर्ण एवं वरेण्य माना जाता है क्योंकि साहित्य की समृद्धि महान गौणों के समुच्चय का परिणाम होती है। यह सिद्धान्त रचनाकारों एवं कृतियों दोनों के सन्दर्भ में समानरुपेण सार्थक है तथा शोध की संभावनाओं की अर्गला का अनावरण करती है।

1-ग-III शोध की महत्ता

शबरी की कथा अनार्य जाति की एक अन्त्यज, अछूत स्त्री के आत्मिक एवं आध्यात्मिक संघर्ष की ऐसी कथा है जो रामायण के शीर्षस्थ पात्रों, चरित्रों में भी अपनी प्रयुक्ति के बाद अपनी पहचान बनाये रखती है। रामायण में प्रयुक्त अन्य साधारण पात्र अपनी प्रयुक्ति के बाद रचना के गतिशील फलक में विलीन हो जाते हैं परन्तु शबरी जिस क्षण राम-गाथा में प्रयुक्त होती है उस क्षण तक वह अत्यन्त उच्च भाव-भूमि प्राप्त किये हुए होती है। रचनात्मक प्रयुक्ति के क्षण में शबरी के लिए राम स्वतंत्र सत्ता नहीं है। साधना की यह परावस्था ही शबरी को सारे रामायण कालीन पात्रों में विशिष्ट बनाती है।[37]

शबरी अपनी जन्मगत निम्नवर्गीयता को कर्म दृष्टि के द्वारा वैचारिक उर्ध्वता में परिणत करती है। यह आत्मिक या आध्यात्मिक संघर्ष, व्यक्ति विशेष के सन्दर्भ में आज भी प्रासंगिक है। सामाजिक संकीर्णता, मूढ़ता, परिवेश जड़ता तथा अपने युग के साथ संलापहीनता की स्थिति में व्यक्ति केवल अपने को ही जागृत कर सकता है। इसी संघर्ष के माध्यम से ही व्यक्ति समाज बन सकता है। इसी प्रक्रिया के द्वारा शबरी अपने वर्ण, वर्ग, समाज, युग सबसे ऊपर प्रतिष्ठित हो सकी है।

प्रत्येक व्यवस्था का दोषमय होना उसकी नियति एवं प्रकृति है। वर्ण-व्यवस्था भी इसका अपवाद नहीं हो सका। यह प्रश्न आदि कवि के युग में भी ज्वलन्त था तथा आज के वर्ण व्यवस्था वाले समाज में भी जीवन्त समस्या है कि कैसे एक व्यक्ति अपने चैतन्य की रक्षा इस सामूहिक जड़ता से कर सकता है।

आदिकवि वाल्मीकि का इस प्रसंग को विस्तार से उल्लिखित करने के मूल में श्रीराम चन्द्र द्वारा सामाजिक, राजनैतिक अथवा कूटनीतिक मन्तव्य सिद्ध करने का प्रयोजन प्रतीत होता है। यथा- उस काल में कैसे एक राज्यच्युत राजा साधारण प्रजा के अन्तर्मन में सदियों से कूट-कूट कर भरी हुयी वर्ण व्यवस्था नामक विद्रूपता को तिरस्कृत कर सामंजस्य स्थापित कर सकता है और सभी वर्णों मुख्यत: अंत्यज और अछूतों द्वारा पूजित हो सकता है।

जिस युग की यह कथा है उस समय सामाजिक स्तर पर भले ही वर्ण व्यवस्था का विधान रहा होगा परन्तु व्यक्ति कर्म के द्वारा वर्ण मुक्त होने की चेष्टा कर सकता था। शबरी की कथा के विषय में भी कई कवियों का यह मत है कि यह एक अशिक्षित, अन्त्यज और अछूत नारी की वर्णाश्रम व्यवस्था के प्रति विद्रोह और वर्ण मुक्त होने की चेष्टा है। सदा से ही कवि, विचारक, दार्शनिक तथा समाज-सुधारक सामाजिक वर्ण व्यवस्था और वैयक्तिक कर्म विधान में एकता का प्रतिपादन करते आये हैं।

शबरी प्रसंग का महत्व इसलिए और बढ़ जाता है क्योंकि प्रभु श्रीराम ने शबरी को ही 'नवधा भक्ति' का उपदेश दिया है जो कलयुग में मानव जाति को मोक्ष दिलाने का एक प्रधान

साधन है।[39] शबरी आख्यान के महत्व का प्रतिपादन अध्यात्म-रामायण में निम्न प्रकार से किया गया है- **"कबंध शबरी की राम भक्ति का उल्लेख करते हुए यह आश्वासन देता है कि शबरी राम को सीता के विषय में सब बातें बता देगी, तब राम शबरी के आश्रम पहुँचकर उसका आतिथ्य ग्रहण करते हैं तथा जूठे बेर भी खातें हैं। अन्त में शबरी राम से यह प्रश्न पूछती है कि मै मूढ़ स्त्री, हीन-जाति-कुल उत्पन्ना आपके दर्शन के योग्य क्यों ठहरी? राम कहते हैं कि पुरुषत्व, स्त्रीत्व, जाति, नाम, आश्रम का कोई महत्व नहीं है भक्ति ही सर्वोपरि है। तदनन्तर राम शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश देकर कहते हैं कि उन साधनों द्वारा प्रेम, लक्षणा, भक्ति का आविर्भाव होता है जिससे इसी जन्म में मुक्ति प्राप्त होती है।"**[40]

1-घ आधुनिक कालीन 'शबरी' संज्ञक काव्य कृतियों का सामान्य परिचय

वस्तुतः आधुनिक युग नारी जागरण का युग है और आधुनिक रामकाव्य के मूल में नारी के किसी न किसी रूप को रेखांकित और परिभाषित करने का उपक्रम है आधुनिक युग की नैतिक एवं सामाजिक अनिवार्यताएँ इन नारी पात्रों के माध्यम से अपना प्रतिनिधित्व खोजती हैं। आधुनिक युग में उर्मिला, कैकेयी तथा शबरी जैसे पात्रों को नया आयाम मिला है। आधुनिक कवियों ने इनको अपनी करुणा और सहानुभूति अर्पित की है। अहिल्या, शबरी, मंथरा, सुमित्रा, कैकेयी आदि सभी के व्यक्तित्व को परिवर्तित युग-संदर्भ के अनुरूप नया संस्कार भी प्राप्त हुआ है। आधुनिक हिन्दी साहित्य के कतिपय रचनाकारों का ध्यान राम-कथा की इस भक्ति प्रवण नारी शबरी की ओर भी गया है। इन रचनाकारों ने शबरी के प्रख्यात आख्यान, उसके पारम्परीण व्यक्तित्व के वैशिष्ट्य को अपनी तूलिका से सँवारा है। आधुनिक हिन्दी साहित्य की शबरी संज्ञक काव्य-कृतियों में निम्नलिखित कृतियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं-

1. कु. मायादेवी 'मधु' कृत 'शबरी' (अरुण लिमिटेड, मुरादाबाद, 1948) ।
2. गोविन्ददास कृत 'शवरी' (भारतीय विश्व प्रकाशन, फव्वारा, दिल्ली, 1960) ।
3. धनंजय अवस्थी कृत 'शबरी' (संगम प्रकाशन, इलाहाबाद, 1992) ।
4. श्री अवधेश कृत 'श्रमणा-शबरी के राम' (महाकाव्य), (अंजलि प्रकाशन, झाँसी, 1981)।
5. श्री नरेश मेहता कृत 'शबरी' (लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1977) ।

1-घ-I कुमारी मायादेवी 'मधु' कृत 'शबरी' का सामान्य परिचय

कुमारी मायादेवी 'मधु' कृत 'शबरी' आधुनिक काव्य शैली में लिखा गया आधुनिक खण्ड-काव्य है। जिसमें शबरी की कथा के माध्यम से जीवन की मुख्य स्थितियों का यथावश्यक निरूपण किया गया है। यह खण्ड-काव्य नौ खण्डों में विभक्त है। खण्ड-काव्य के सभी गुणों यथा-प्राकृतिक दृश्यों का मनोरम एवं चित्रमय वर्णन, करुणादिक रसों का संवेदनमय परिपाक, वृत्त, इतिवृत्त, भाषा, शैली, विधान, प्रबन्ध-पटुता, रस-परिपाक इत्यादि का सम्यक ध्यान रखते हुये किया गया है।

कु. मायादेवी ने अपनी कृति 'शबरी' में शबरी की चरित्रगत विशेषताओं एवं लोकोत्तर गुणों का योग्यता पूर्वक चित्रण एवं शबरी के मनोभावों का सहज, सुन्दर एवं सरस वर्णन गेय छन्दों में किया है। वन्य प्रकृति के मुक्त रूप का यत्र तत्र चित्रण तन्मयता के साथ किया है- **"उपवन, प्रसून, वर, शोभी / अमृत फल, विटप सुसज्जित, / अपने सौन्दर्य, सुरभि से, करता / नन्दन वन लज्जित।"**[41]

'मधु' की शबरी श्रद्धा-भक्ति प्रवीणा, एकाकी व पुत्र-विहीना भीलनी है जो ऋषि के आश्रम में रहकर सेवा करती है- **"बस ऐसे समय वहाँ पर, / एकाकी पुत्र विहीना / भीलनी एक, शबरी थी, / अति श्रद्धा-भक्ति प्रवीणा।"**[42] खण्ड-काव्य के प्रारम्भ में जब ऋषि मतंग शबरी का पता लगाते हैं और शबरी प्रथम बार उनके सम्मुख लायी जाती है तब वह कृशकाय तथा अर्धवसना थी- **"ऋषि ने शबरी को देखा, / कृशकाय अर्ध वसना थी। / जग-वैभव-सुख परित्यक्ता, / अब शेष न कुछ तृष्णा थी।"**[43] ऋषि मतंग से धर्म-ज्ञान की शिक्षा ग्रहण कर उन्हें अपनी सेवा से प्रसन्न कर शबरी चर्म चक्षुओं द्वारा भगवत्दर्शन का वरदान प्राप्त करती है- **"इन चर्म चक्षुओं से ही, / तू दर्शन लाभ करेगी। / नर रूप देख नारायण, / भव-सागर पार तरेगी।"**[44] तब से शबरी प्रभु राम के आगमन की प्रतीक्षा करती रहती है उसकी उत्कंठित मनोदशा का वर्णन दृष्टव्य है- **"हरि दर्शन-समुत्सुका थी, / उर-प्रेम-उदधि उमड़ाता। / अटपट पग मग में पड़ना, / वर गूढ़ भाव प्रकटाता।"**[45]

शबरी भगवान के लिए प्रतिदिन कन्दमूलं-फल एकत्र करके रखती है ताकि भगवान के आने पर उनका आतिथ्य सत्कार कर सके- **"आतिथ्य धर्म पालन हित, / क्षण-क्षण होती थी विह्वल। / वह चख-चख कर रखती थी, / जो होते थे मीठे फल।"**[46]

श्रीराम द्वारा शबरी के जूठे बेर खाने का वर्णन इस खण्ड-काव्य में निम्न पंक्तियों में किया गया है- **"निर्लेप, निरीह, निरंजन, / निर्गुण न ध्यान में आते। / जूठे बदरी शबरी के, / देखा सबने फल खाते।"**[47] 'मधु' ने श्रीराम द्वारा शबरी को दिये गये नवधा-भक्ति के उपदेश रूपी पुष्पों को बहुत सुन्दर विधि से रागात्मक गेय छन्दों की माला में पिरोया है- **"श्री गुरुवर चरण-कमल में, / कर प्रेम प्रगाढ़ अदूषण। / अभिमान रहित सेवी हो, / है भक्ति तृतीय सुलक्षण।"**[48] पम्पासर के दूषित जल को पवित्र करने की कथा भी बड़े ही मनोयोग से सटीक शब्दों द्वारा चित्रित की गयी है। शबरी के छूते ही पम्पासर का जल पहले की तरह पावन हो जाता है- **"शबरी ने हाथ बढ़ाया, / जल छूने को जैसे ही। / वह रक्त, कीट दूषित सर, / हो गया स्वच्छ वैसे ही।"**[49]

'मधु' ने शबरी आख्यान का आश्रय लेकर स्त्रियों के ऊपर सदियों से हो रहे भेद-भाव तथा अत्याचार के ऊपर लेखनी चलायी है। साथ ही शबरी नामक खण्ड-काव्य को विराम देते हुए लिखा है- **"यह शबरी गाथा क्या है / है नारी के उर का चित्रण / यह कविता नहीं नहीं क्रन्दन / भावुकता नहीं? वक्ष के व्रण।"**[50]

1-घ-II गोविन्ददास कृत 'शवरी' का सामान्य परिचय

गोविन्ददास ने अपनी कृति का नाम लोकप्रसिद्ध 'शबरी' न रख कर 'शवरी' रखा है जो इस काव्य की नायिका भी है। गोविन्ददास द्वारा रचित 'शवरी' में राष्ट्रकवि श्री मैथिली शरण गुप्त जी की 'यशोधरा' के सदृश कहानी, एकांकी, नाटक और श्रव्य-काव्य तीनों माध्यमों के अतिरिक्त एक पात्री नाटक का भी समावेश किया गया है। गोविन्ददास की शवरी दक्षिण में दण्डकारण्य नामक वन के समीप स्थित पम्पा सरोवर के तट पर ऋषियों के आश्रम में निवास करने वाली 6 वर्ष की अल्पवय की अनाथ भील बालिका है, जो ऋषिगणों की भक्ति, श्रद्धापूर्वक दत्तचित्त होकर परिश्रम के साथ सेवा के फलस्वरूप भगवत्दर्शन का वरदान प्राप्त करती है। गोविन्ददास की 'शवरी' की कथा सप्तऋषियों के चौमासे में प्रस्थान के समय पर उस की मनोदशा से प्रारम्भ होती है। गोविन्ददास ने अपनी कल्पना से पम्पा सरोवर का जो सजीव चित्रण किया है वह उनकी कल्पनाशीलता और शब्दलाघव का जीवन्त प्रमाण है। एक बालिका की मनोदशा के चित्रण में गोविन्ददास का कला कौशल सराहनीय है। शवरी को ऋषियों द्वारा भगवत्दर्शन का आशीर्वाद प्राप्त होता है।[51] ऋषियों के प्रस्थान के पश्चात् शवरी धेनुओं के साथ एकाकी रह जाती है और इस समय एक पात्री नाटक की परिकल्पना बड़ी सटीक एवं सम्यक है। मनोवैज्ञानिक रूप से भी यह प्रतीत होता है कि सब ओर से तिरस्कृत शवरी मतंग मुनि के आश्रम में सुरक्षित थी। ऋषियों के प्रयाण करने के पश्चात् उस भील बालिका का सारा समय जड़ वस्तुओं यथा आश्रम, पेड़-पौधों तथा कुछ अन्य चेतन जीवों यथा धेनुओं, पशु, पक्षियों इत्यादि के सानिध्य में व्यतीत होता है। ऐसी अवस्था में व्यक्ति या तो स्वयं से संलाप करता है अथवा उन सभी वस्तुओं को चेतन मानकर उनके साथ ही संलाप-विलाप, हास-परिहास कर सकता है। इस कारण एक पात्री नाटक की संकल्पना सम्यक ही कही जायेगी। आश्रम में निवास करने वाली एकाकी भील बालिका की मनोदशा का सुन्दर चित्रण अनेकों विधाओं द्वारा किया जाना ही इस कृति को अति विशिष्टता प्रदान करता है। लोक-गीतों का समावेश इस कृति की जीवन्तता का मूल मंत्र है।

गोविन्ददास की इस कृति की नायिका शवरी एक अल्पव्यस्क बालिका से बड़ी होकर एक तरुणी, नवयौवना, प्रौढ़ तथा वृद्धावस्था को प्राप्त होती है। शवरी अपनी अवस्था के अनुसार प्रभु श्रीराम से उसी भाव में प्रेम करती है जिस अवस्था के मानवोचित भावनाओं का विकास अपेक्षित है। गोविन्ददास की शवरी को एक विरहिणी नायिका के रूप में अपने प्रियतम श्रीराम की प्रतीक्षा करते हुये देखा जा सकता है- **"ओ सौन्दर्य सागर पधारो हे, पधारो हे।/ मेरे प्राण नाथ, मैने कितनी प्रतीक्षा की / सोचा नहीं क्या-क्या किया मैने, नहीं क्या-क्या है?"**[52] जिस प्रकार कोई विरहिणी नायिका अपने प्रिय के आगमन के प्रति सशंकित रहती है उसी प्रकार गोविन्ददास की शवरी भी प्रभु श्रीराम के आगमन के बारे में सशंकित प्रतीत होती है- **"क्या इस वसन्त का भी अन्त लिखा यों ही / किंवा प्राण नाथ आके प्राणों को जुड़ायेंगे।"**[53] गोविन्ददास द्वारा रचित 'शवरी' में शवरी की राम के प्रति अनन्य निष्ठा को रचनाकार ने सर्वथा मौलिक आयाम

प्रदान किया है क्योंकि वह प्रभु राम के प्रति कान्ता भाव से अभिसिंचित वर्णित हुयी है- **"... प्रणय बढ़ा है भरा हृदय हिलोरों से। / मेरे इस मानस सरोवर में वैसे ही / उठता और लहराता प्रभु प्रेम है।"**[54]

इसके साथ-2 शवरी के आश्रम और उसके आस-पास के वातावरण की सर्जना करने में रचनाकार का कौशल ध्यानाकर्षण का विषय है- नदी, निर्झर, पुष्करिणी, सारे जलाशय जल में निमग्न है। जल-जन्तुओं के सुख की सीमा नहीं है। शवरी ऐसे वातावरण में गीत गुनगुनाती है- **"घेरि घेरि आवे रामा कारी बदरिया, / देवा हो बरसे बड़े-बड़े बूँदा, / सब लोग भीजे अपने घर अपने, / मोरा रामा हो भीजे परदेश, / बदरिया बैरिन हो।"**[55] गोविन्ददास कृत 'शवरी' की नायिका शवरी की उत्तरोत्तर विकसित होती हुयी शारीरिक व मानसिक अवस्था के क्रमानुसार उसका प्रभु श्रीराम के प्रति प्रेम भी बाल सखा, प्रियतम, मातृवत प्रेम तथा भगवत प्रेम में परिणत हुआ है। कालान्तर में यह प्रेम भगवान श्रीराम की अनन्य भक्ति एवं श्रद्धा में परिवर्तित हो जाता है और शवरी का आख्यान भी मूलकथा में परिणत होकर श्रीराम को बेरों का आतिथ्य प्रदान करने वाली शवरी में बदल जाता है- **"भेंट किये बेर जिन्हें चुन-चुन कर रखा था / खाने लगे सहर्ष दोनों भाई यों / स्वाद के हैं सार मानो वे संसार भर के।"**[56]

समीक्षात्मक दृष्टि से इस कृति का अनुशीलन करने से यह प्रतीत होता है कि गोविन्ददास की शवरी प्रत्यक्ष में तो प्रभु श्रीराम के प्रति नायिका भाव में दर्शायी गयी है लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से यह सूफी मत का प्रभाव सा जान पड़ता है, जिसमें भक्त स्वयं को प्रेमिका तथा भगवान को प्रेमी भाव में प्रस्तुत करता हुआ देखा गया है। सूफी विचारधारा के सभी कवि की कृतियों में इसी प्रकार का वर्णन पाया जाता है। गोविन्ददास की शवरी अन्त में प्रभु श्रीराम से कहती है कि हे प्रभु जिन हाथों से आपने मुझे बनाया है उन्हीं हाथों से मेरा अन्त कर दीजिए जिससे मुझे आपका कभी भी वियोग न होवे- **"प्रभु! जिन हाथों से बनाया मुझे आपने / इतना उन्हीं से और आप करे अन्त में, / एक दिव्यालोक तब शबरी के नेत्रों से / निकल तुरन्त प्रभु नेत्रों में समा गया, / उसका अचेष्ट तनु उनके पदों में था।"**[57]

1-घ-III श्री धनंजय अवस्थी कृत 'शबरी' का सामान्य परिचय

श्री धनंजय अवस्थी आधुनिक काल के कतिपय कवियों की अग्रणी पंक्ति में शामिल हैं जिन्होंने अपनी लेखनी के स्पर्श से कोटि-कोटि अन्त्यज अछूतों की मानसिक और सामाजिक अवस्था का चित्रण और रूढ़िगत विसंगतियों की ओर समाज का ध्यानाकर्षण अपनी 'शबरी' नामक काव्यकृति के द्वारा कराया है। 'शबरी' नामक खण्ड-काव्य धनंजय अवस्थी द्वारा रचित एक कालजयी रचना है जिसका रचनाकाल अपेक्षाकृत नवीनतम है। यह खण्ड-काव्य अतुकान्त मुक्तक रूपी पुष्पों को कथा-सूत्र में पिरोकर भगवान श्रीराम की महिमामण्डित यश पताका में एक पुष्पमाल्यार्पण है। प्रस्तुत खण्ड-काव्य की यात्रा के आठ बिन्दु क्रमशः उद्भावना, क्रान्ति, संघर्ष, चेतना, आस्था,

104349
1034
NORTH EASTERN HILL UNIVERSITY LIBRARY
DATE ......

साधना, बोध तथा सिद्धि हैं। विभिन्न बिन्दुओं में सर्गों की असमानता कवि द्वारा दिये गये महत्व का परिचायक है।

धनंजय अवस्थी की 'शबरी' अपनी मूल-कथा से कहीं भी विचलित नहीं होती है परन्तु एक छोटी सी कथा को खण्ड-काव्य बनने हेतु जिस विस्तार की आवश्यकता है; उस विस्तार को प्राप्त करने के लिए कवि का कल्पनाशील होना आवश्यक है और कविवर अवस्थी ने अपनी कुशल मेधा का परिचय देते हुए यथासंभव उस वातावरण की इस प्रकार सर्जना की है मानों सब कुछ उनकी आँखों के सामने ही घटित हुआ हो।

उत्तर भारत में शबरी की कथा उसके द्वारा राम को जूठे बेर खिलाने और राम द्वारा उसे बड़े प्रेम से खाने तक ही सीमित है; किन्तु प्रस्तुत काव्य में शबरी के जीवन के नये पृष्ठ व नये आयाम उद्घाटित किये गये हैं जिससे न केवल उत्तर भारत वरन् दक्षिण भी प्रस्तुत काव्य की परिधि में उजागर होता है। शबरी खण्ड-काव्य का उद्भव एक अल्पवय भील कन्या के विवाह प्रसंग से होता है। विवाह के मण्डप का सुन्दर वर्णन करता हुआ निम्न पद अनायास ही पाठक को सम्मोहित कर लेता है- **"वन्दनवार! / झूम रहे मुख्य द्वार / महक रहे सुमन माल / पलक पलक रूप जाल / फूल रहे हरसिंगार।"**[58] कविवर धनंजय अवस्थी द्वारा प्रात:काल का सजीव वर्णन उनकी कल्पनाशीलता का प्रत्यक्ष प्रमाण है- **"एक प्रात / जब, / लहराया ऋतु वसन्त, / बौराये दिग् दिगन्त, / सौरभ परिमल अनन्त, / गंधवाह- / मंद-मंद, / मादक स्पर्शों से करता था / अनुप्राणित / प्राणों, में भरता अनुराग, राग, / अंकुरित प्रणय पराग / मेदिनी सुहागिनी...।"**[59]

शबरी की अबोधावस्था का परिचय उसके द्वारा अपने विवाहोत्सव के आयोजन के प्रयोजन की अनभिज्ञता से प्राप्त होता है जब वह अपने पिता से निम्न प्रश्न करती है- **"बापू- / क्या, और एक माई घर आयेगी?"**[60] इसी विवाहोत्सव में अनेकों मूक वन्य पशुओं के साथ-साथ उसके द्वारा पोषित शावक 'छगलक' के बलि दिये जाने रक्तपात एवं चीत्कार देख-सुनकर शबरी के अन्तस में अपनी सारी भील जाति के विरुद्ध क्रान्ति का सूत्रपात तथा इस कृत्य के विरुद्ध जुगुप्सा प्रदीप्त हो उठती है परन्तु एक असहाय कन्या सिर्फ मूक विलाप ही करती है- **"... व्यथा दाह थी प्रचण्ड / नयन बने निर्झर / अबाध झर रहे झर-झर ...।"**[61] बालिका के मन में क्रान्ति की ज्वाला धधक उठते ही विवाहोत्सव त्याग अन्यत्र पलायन को उतावली हो उठती है- **"... टूट गया मोह-जाल, / मण्डप का। / लाज, लोभ कंगन का। / रस का घट तोड़-फोड़, / छोड़ कर सुहाग पंथ / लक्ष्य-हीन / दौड़ चली। / मंदिर के- / जीर्ण पृष्ठ-द्वार से। / प्रताड़ना सँवार के।"**[62] गृह त्याग के पश्चात् अभिजात्य वर्ग के द्वारा अछूत-अंत्यज, अस्पृश्य और अपवित्र घोषित तथा तिरस्कृत शबरी की मानसिक व्यथा का परिचय निम्न पंक्तियों में दृष्टव्य है- **"देह शिथिल- / मंद चरण / विवशा- / चली हठात्- / टूटती, बिखरती, गति-हीन, दीन / छिन्न-भिन्न लतिका-सी / अन्धड़ में जलती बुझती, / टूटी मणि-कणिका सी।"**[63]

इस खण्ड-काव्य की नायिका शबरी द्वारा मतंग मुनि को अपना परिचय निम्न शब्दों में दिया गया है- **"मै हूँ शबर पुत्री, / शबरी अनाश्रिता / परित्यक्ता, अग-जग से / भिल्लिनी उपेक्षिता, / इतना ही परिचय है।"**[64] इस खण्ड-काव्य में शबरी की अस्पृश्यता को केन्द्रबिन्दु बनाया गया है। मतंगमुनि की आश्रिता शबरी जब वितंड मुनि की क्रोधाग्नि और वर्ण भेद वृत्ति से अभिशप्त हो जाती है तब वर्ण संघर्ष की ज्वाला में जन-जीवन, वन-प्रान्तर तथा पुष्कर भी खौलने लगते हैं और इसका कलंक शबरी के मस्तक पर मढ़ा जाता है। शबरी अपनी सेवा, भक्ति भावना, श्रीराम के प्रति अटूट निष्ठा एवं धर्म परायणता के फलस्वरूप मतंग मुनि से ना केवल श्रीराम की विशिष्ट अनुकम्पा का वरदान प्राप्त करती है अपितु मोक्ष का पथ-प्रदर्शन भी प्राप्त करती है। वे राम के प्रति शबरी के हृदय में आस्था जगाते हैं। शबरी इसी आस्था को अपनी ज्योति-शिखा बनाती है। शबरी के प्रति मतंग मुनि का निम्न संबोधन जीवन मूल्यों की वर्तमान संदर्भ में पुनर्व्याख्या है- **"बेटी! / जो बैठे गये हों निराश जीवन में / होता उपलब्ध नहीं लक्ष्य उन्हें त्रिभुवन में। / जीते वे जिनका विश्वास जिया करता है। / जिसका विश्वास मरा वही मरा करता है। / मृत न बन अमृत पुत्री / ऐसा विश्वास बन। / जीना है युगों-युगों ऐसा इतिहास बन।"**[65]

इस प्रकार यह खण्ड-काव्य देश, काल एवं परिस्थितियों की सीमा से बहुत आगे सार्वदेशिक, सार्वकालिक एवं सार्वजनीन चेतना ये युक्त हो गया है। कविवर सोहनलाल द्विवेदी ने भी इस खण्ड-काव्य में ना केवल राम के मानवीय संवेदन का चरमोत्कर्ष अनुभूत किया है अपितु यह भी स्वीकार किया है कि यह खण्ड-काव्य युग बोध को सार्थक करता है।

1-घ-IV श्री अवध किशोर श्रीवास्तव 'अवधेश' कृत महाकाव्य 'श्रमणा-शबरी के राम' का सामान्य परिचय

श्री अवध किशोर श्रीवास्तव 'अवधेश' ने प्रबन्ध काव्य परम्परा में 'श्रमणा' महाकाव्य का प्रणयन कर न केवल हिन्दी साहित्य की सम्पन्नता में वृद्धि की है अपितु आदर्श को यथार्थ रूप में भी प्रस्तुत किया है। 'श्रमणा' महाकाव्य अत्यन्त सरल एवं सरस भाषा में रचित है। इसमें वर्णित प्रसंगों का आधार ऐतिहासिक होते हुए भी सर्वथा मौलिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। शबरी संज्ञक अन्य काव्य कृतियों के विपरीत इस महाकाव्य का नाम 'श्रमणा' वाल्मीकीय परम्परा का निर्वहन करते हुये रखा गया है, परन्तु महाकाव्य की विषय-वस्तु गोस्वामीतुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस से प्रभावित है। कविवर 'अवधेश' ने स्वयं इस महाकाव्य के सिंहावलोकन में स्वीकार किया है कि उन्होंने गोस्वामीतुलसीदास के अनन्य ग्रन्थ श्रीरामचरितमानस को ही अपने श्रमणा महाकाव्य का आधार बनाया है- **"मैने अपनी ओर से कुछ नहीं कहा है मुझे तो रामबोला ने जो कुछ बोला, सुझाया वही मैने श्रमणा महाकाव्य में लिख दिया है।"**[66] श्रमणा महाकाव्य के तृतीय सर्ग में कविवर 'अवधेश' ने अपने महाकाव्य का परिचय इस प्रकार दिया है- **"चलते हैं जिस ओर महाजन उसे पंथ कहते हैं, / जिसमें जीवन ग्रंथि गुथी हो उसे ग्रंथ कहते हैं। / उसी ग्रंथ से एक ग्रंथि लेकर मै खोल रहा हूँ, / मुझे रामबोला ने बोला मैं वह बोल रहा हूँ।"**[67]

प्रस्तुत महाकाव्य की नायिका श्रमणा एक शबर कन्या है जो कि भगवान राम को वनवास के समय में मिलती है। कवि ने भवभूति और वाल्मीकि के आधार पर उसका नाम श्रमणा रखा है। पुराणों में वर्णित एक आख्यान के अनुसार-श्रमणा अपने पूर्वजन्म में एक अप्सरा थी। देवराज इन्द्र की सभा में कोई महोत्सव मनाया जा रहा था, श्रमणा भी उस समय वहाँ उपस्थित थी। जब भगवान विष्णु वहाँ पधारे तब श्रमणा उन्हें अपलक देखती रह गयी। देवराज इस बात से अप्रसन्न हो गये और उन्होंने श्रमणा को मनुष्य योनि में अधम जाति की स्त्री होने का शाप दे दिया। वही अप्सरा शाप-वश शबरी हुई। इसी कथानक के आधार पर कवि ने अपनी कल्पना से पूरे एक महाकाव्य का सृजन कर दिया है। इस महाकाव्य की शतशः पंक्तियों में जीवन तथा सृष्टि की अनेक सच्चाइयों को, मर्मवेधी कालज्जयी अभिव्यक्ति के द्वारा पकड़ लिया गया है। आधुनिक जीवन संदर्भों की दृष्टि से श्रीराम के मानवीय चरित्र, जीवन में कर्म की दृढ़ प्रतिष्ठा, जातिवाद की विवादास्पदता, ऊँच नीच तथा अस्पृश्यता आदि पर काव्यात्मक दृष्टि के साथ तर्कपूर्ण विचार प्रस्तुत किये गये हैं। श्रमणा शबरी के जीवन के अनेक अनजाने प्रसंगों को कवि ने विविध उपलब्ध स्त्रोतों से प्राप्त कर कवि सृष्टि की प्राजापत्य चतुराई के साथ प्रस्तुत कर अपने विराट ज्ञान, परिश्रम अनुभव और गहरी पैठ का परिचय दिया है।

अतीत को वर्तमान के संदर्भ में प्रस्तुत करना व देवत्व का मानवीय परिप्रेक्ष्य में दिग्दर्शन कराना ही श्रमणा का मुख्य उद्देश्य है जिससे उसका मानव के अनुकरण में आना संभव हो। श्रमणा कथा का काव्य तुलसी कृत श्रीरामचरितमानस तथा आदिकवि वाल्मीकि कृत रामायण के परिकर में घूमता है फिर भी इस काव्य में सर्वत्र मौलिकता का परिवेश दृष्टिगोचर होता है। उदाहरणार्थ-विश्वामित्र के साक्षात्कार में गायत्री की उत्पत्ति, महिमा और प्रभाव की विशद विवेचना की गयी है जो मौलिक तथा अपने ढंग की अनूठी है।[68]

मतंग ऋषि के आश्रम के कथानक को नये परिवेश में प्रस्तुत किया गया है। ऋषि-मुनियों के वाद-परिवाद तथा भ्रम का निवारण मानवीय धरातल पर युक्ति पूर्वक किया गया है सम्पूर्ण प्रबन्ध में आध्यात्मिक एवं दार्शनिक तत्वों की तर्कसंगत मीमांसा एवं प्रतिपादन किया गया है। कविवर 'अवधेश' ने 'श्रमणा' में शबरी के सेविका अथवा भक्त रूप के अतिरिक्त अन्य मानवीय गुणों, जिसके बारे में अन्य कथाकार सर्वथा मौन प्रतीत होते हैं; का निरूपण किया है। 'अवधेश' शबरी को सर्वगुण सम्पन्ना, विदुषी तथा श्रीराम की सहयोगिनी नारी के रूप में निम्नलिखित पंक्तियों में चित्रित करते हैं- **"रूप, शील, सौन्दर्य, धैर्यता, साहस की प्रतिमा सी, / ज्ञान, स्नेह, यश, नीति, निपुणता, पावन दया क्षमा सी।"**[69]

श्रमणा महाकाव्य पूर्वार्ध एवं उत्तरार्ध दो खण्डों में विभाजित है जिनके नाम क्रमशः गृह-खण्ड एवं वन-खण्ड है। पूर्वार्ध खण्ड 10 सर्गों में तथा उत्तरार्ध-खण्ड 11 सर्गों में विभक्त है। गोस्वामीतुलसीदास द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस का अनुकरण करते हुये श्रमणा महाकाव्य का स्वरूप भी ठीक उसी प्रकार रखा गया है परन्तु जहाँ गोस्वामीतुलसीदास ने दोहा, सोरठा, छन्द, श्लोक और चौपाइयों का

यथासम्यक प्रयोग किया है वही श्री 'अवधेश' ने खड़ी बोली का प्रयोग करते हुए श्रमणा महाकाव्य की रचना में साधारण तुकान्त दोहों का प्रयोग किया है।

'अवधेश' ने शबरी-प्रसंग को अपने महाकाव्य का वर्ण्य विषय चयन के प्रयोजनार्थ युगों-युगों से चली आ रही सामाजिक बुराइयाँ यथा-अस्पृश्यता, आर्य-अनार्यवाद, जातिवाद, धार्मिक असहिष्णुता, रूढ़िवाद, एवम् घृणा जैसे मूलभूत प्रश्नों के समाधान हेतु वैचारिक मंथन का आश्रय लिया है- **"हरि चरण से निःसृत है जब, हरि प्रिया पय पूत / हरि चरण से निःसृत है फिर क्यों अछूत। / जन्म के पहले सभी और मृत्यु के पश्चात् / एक हैं तो मध्य में क्यों, यह मनुज उत्पात।/ शूद्र ही सब जन्म से, होते यहाँ उत्पन्न। / संस्कृत होकर सभी बनते, यहाँ पर भिन्न।"**[70]

कवि की जिज्ञासा में लगातार वृद्धि होती चली गयी। जितना गहन अध्ययन, मनन, चिन्तन, वाद-परिवाद किया, प्रश्न उतना ही उलझता गया और कवि को दिग्भ्रमित करता गया- **"खोजने पर भी न जिज्ञा पा सकी थी शान्ति, / ज्यों भ्रमण करता गया, बढ़ती गयी त्यों भ्रान्ति।"**[71] कवि का मत है कि विकास जाति और धर्म पर निर्भर नहीं होता, सभी को स्वयं को विकसित करने का अधिकार है। उतिष्ठ-जाग्रत का उद्घोष प्राणी मात्र के लिए है, जाति धर्म का प्रतिबन्ध नहीं है। 'अवधेश' के अनुसार, अन्य कवियों और कथाकारों के विपरीत शबरी की लोक कल्याण की बहुमुखी प्रतिभा का प्रस्फुटन अपने महाकाव्य के द्वारा कराया है। इस संदर्भ में शबरी का अन्त्यज होना, उसकी भक्ति के विकास में बाधक नहीं है- **"क्या अधम करते नहीं है, श्रेष्ठता का यत्न । / क्या अँधेरी खान में, होते नहीं है रत्न।"**[72]

'अवधेश' के महाकाव्य के पूर्वार्ध के प्रथम सर्ग में मानव जन्म को सर्वश्रेष्ठ बताते हुये जीव का कर्म-अकर्म द्वारा पथ प्रदर्शन किया गया है। भक्त शबरी का चित्र निम्न पंक्तियों में देखा जा सकता है- **"चिर विरह की वेदिका पर, वेदना की मूर्ति, / या प्रतीक्षित सेज पर, सोयी हुयी इस्फूर्ति। / थी ना काया शेष किंचित चिन्ह थे अवशेष, / भव्य उज्जवल भाल पर थे तिलक, सुन्दर केश।"**[73] विश्वामित्र ऋषि को श्रमणा अपना परिचय निम्न पंक्तियों में देती है- **"तुच्छ शबर कन्या मै गुरुवर, पंचवटी वासी हूँ, / माता-पिता विहीन राम के दर्शन की प्यासी हूँ। / पंचवटी के वन में शबरों के गणपति रहते थे, वैभवशाली थे सब उनको शबरसेन कहते थे।"**[74] तदनन्तर विश्वमित्र ऋषि को अपने गृह त्याग का अभीष्ट बताकर उनसे भगवान राम के दर्शन प्राप्त करने की अभिलाषा पूर्ण करने की प्रार्थना करती है- **"है मेरी अभिलाष, राम को कभी किसी विधि पाऊँ, / किन्तु न उनकी मानव मर्यादा में छिद्र बनाऊँ। / क्या संभव है देव? असंभव संभव हो सकता है, / उनका विरुद वारि क्या, मेरी लघिमा धो सकता है।"**[75]

राम द्वारा बिना नोक के बाण से घायल मारीच को शबरराज अचेतावस्था में अपने घर ले आते हैं और तब मारीच द्वारा श्रमणा को राम का परिचय प्राप्त होता है। शनैः शनैः राम से उसका प्रेम इतना बढ़ जाता है कि श्रमणा को स्वप्न में राम के दर्शन होते हैं और वह उनसे वार्तालाप भी करती है। श्रमणा को श्रीराम स्वप्न में दर्शन देते हैं और वह वचन देते हैं कि वे उससे मिलने अवश्य आयेंगे- **"प्रेम और परमार्थ हेतु, यह जन्म किया है धारण, / इतने शीघ्र आ रहा हूँ वन, शुभे तुम्हारे कारण।"**[76] अपने विवाह-मण्डप से भागने के उपरान्त शबरी ब्रह्मर्षि विश्वामित्र से मिलकर उनसे गायत्री मंत्र की उत्पत्ति और महत्व का प्रतिपादन सुनकर तथा विश्वामित्र द्वारा राजर्षि से ब्रह्मर्षि बनने का सारा हाल सुनती है- **"बोले रिषि तुम धन्य हो गये, अनुभव से पाया है, / गायत्री हो गयी, इसे जो तीन बार गाया है। / भूर्भवः स्वः यह तीन शब्द है बीज रूप में इसके, / अउम त्रिमात्रिक बिन्दु नाद आधार बने हैं जिसके।"**[77] श्रमणा के अन्तर्मन में सदैव एक ही अभिलाषा रहती कि कब राम उसको दर्शन देंगे, कभी-कभी अत्यन्त व्याकुलता के क्षणों में अनायास ही उसके आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगती थी- **"सदा राम के विषिख चित्र के ध्यान मग्न रहती थी / कभी-कभी अति विह्वलता में अश्रुधार बहती थी / जग में आकर करनी अब तो कुछ भी शेष नहीं था / राम मिलन की अभिलाषा ही मन में शेष रही थी।"**[78]

'अवधेश' ने अपनी कल्पना से तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक परिवेश का भी प्रतिबिम्बन किया है। गोस्वामीतुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस के नगण्य प्रसंगों को ऐसा विस्तार प्रदान किया है मानो कवि स्वयं वहाँ उपस्थित रहा हो। 'अवधेश' की इस कृति से कुछ ऐसे प्रसंग भी उद्घाटित हो सके हैं जिनका वर्णन श्रीरामचरितमानस में नहीं मिलता है जैसे- देवासुर संग्राम, श्रमणा का किष्किन्धा जाकर हनुमान और सुग्रीव से मिलन, सीता की बहन वेदवती का प्रसंग, रावण का श्रमणा के आश्रम में आगमन तथा वार्तालाप इत्यादि। कवि का कथन है कि ये सारे प्रसंग सर्वथा सत्य हैं क्योंकि - **"क्या असत्य की कल्पना, हो सकती है मित्र, / लखे कल्पना नयन से, कवि अतीत के चित्र।"**[79]

'अवधेश' की श्रमणा का पार्वती व शिव से भी संवाद होता है और श्रमणा की राम भक्ति से प्रसन्न होकर शिवजी उसे राम के दर्शन का वरदान प्रदान करते हैं- **"सर्वश्रेष्ठ सम्मान मिलेगा, तुम्हे राम के द्वारा, / सदा राम भक्तों में होगा, उत्तम नाम तुम्हारा, / गाकर विमल चरित्र तुम्हारा, मनुज मुक्ति पायेंगे, / कीर्ति तुम्हारी गाने से ही, राम रीझ जायेंगे।"**[80] शबरी द्वारा श्रीराम को अपने जूठे बेर खिलाने के प्रसंग को कविवर 'अवधेश' ने निम्न पंक्तियों में वर्णित किया है- **"कौन कहे, थी भूख उदर की या कि हृदय के भूखे, / एक निमिष में बेर खा गये, प्रभु सब रूखे सूखे।"**[81] भगवान राम से नवधा भक्ति का उपदेश प्राप्त होने के पश्चात् अवधेश की श्रमणा योग अग्नि में अपना शरीर भस्म कर देती है और प्रभु श्रीराम में लीन हो जाती है- **"ली महर्षि ने विदा, आश्रम पथ पर चरण दिये थे, / श्रमणा ने कुटिया के, अन्तरपट युग बन्द किये थे।"**[82]

आचार्य डा. शुकरत्न उपाध्याय ने इस महाकाव्य को कालजयी, मर्मभेदी रचना की उपमा प्रदान की है।[83] श्रमणा शबरी के जीवन के अनेक अनजाने प्रसंगों को कवि ने विविध उपलब्ध स्त्रोतों से प्राप्त कर कवि सृष्टि की प्रजापत्य, अपने विराट ज्ञान, परिश्रम, अनुभव और गहरी पैठ का भी परिचय दिया है। उनके अनुसार यह महाकाव्य प्रसाद गुण सम्पन्न एक अनूठी उपलब्धि है। पं. रामेश्वर रामायणी 'मानस सम्राट', प्रयाग ने 'अवधेश' के महाकाव्य के बारे में अपनी सम्मति निम्न पद में दी है- **"सुना श्री अवधेश का, शबरी सुकाव्य महान, / भाव भाषा भक्ति पूर्ण चाक चिराना। / निगम आगम सार सम्मत, भरा सब कल्याण, / आधुनिक युग में अलौकिक डाल देता प्राण।"**[84]

1-घ-V नरेश मेहता कृत 'शबरी' का सामान्य परिचय

लब्धप्रतिष्ठित भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत कविकुल शिरोमणि श्री नरेश मेहता कृत शबरी अपेक्षाकृत नवीन काल की रचना है। शबरी एक खण्ड-काव्य है जिसमें कविवर मेहता ने छन्दोबद्ध कविता में शबरी-प्रसंग को निरूपित किया है। कविवर नरेश मेहता ने इस खण्ड-काव्य की प्रासंगिकता का विवेचन करते हुए लिखा है- "प्रत्येक रचना का एक प्रयोजन होता है। 'शबरी' की रचना के पीछे भी निश्चित ही प्रयोजन दृष्टि रही है। शबरी की कथा निम्न वर्ग की एक साधारण स्त्री की आत्मिक एवं आध्यात्मिक संघर्ष की ऐसी कथा है जो रामायण के शीर्षस्थ पात्रों, चरित्रों में भी अपनी पहचान बनाये रखती हैं। रामायण में प्रयुक्त अन्य साधारण पात्र अपनी प्रयुक्ति के बाद रचना के गतिशील फलक में विलीन हो जाते हैं परन्तु शबरी जिस क्षण वाल्मीकि के द्वारा राम-गाथा में प्रयुक्त होती है उस समय तक वह अत्यन्त उच्च भाव-भूमि प्राप्त किये होती है। रचनात्मक प्रयुक्ति के क्षणों में शबरी के लिए राम स्वतंत्र सत्ता नहीं है। साधना की यह परावस्था ही शबरी को सारे रामायण कालीन पात्रों में विशिष्ट बनाती है।" जिस युग की यह कथा है उस समय सामाजिक स्तर पर भले ही वर्ण व्यवस्था का विधान रहा हो पर व्यक्ति, कर्म के द्वारा वर्ण-मुक्त होने की चेष्टा कर सकता था। शबरी की कथा में भी यही वर्ण मुक्त होने की चेष्टा है। वाल्मीकि ने सामाजिक वर्ण व्यवस्था से ऊपर व्यक्ति के आध्यात्मिक स्वत्व एवं असंग कर्म को प्रतिस्थापित किया और शबरी वही बीज चरित्र है। कवि की मानवीय दृष्टि ने ही शबरी के साधारणत्व को असाधारणत्व प्रदान किया।

श्री नरेश मेहता कृत 'शबरी' में शबरी की व्यथा राम-कथा के साथ जुड़कर पवित्र हो गयी- **"त्रेता युग की व्यथा मयी, यह कथा दीन नारी की / राम-कथा से जुड़कर, पावन हुई उसी शबरी की।"**[85] शबरी को अपने घर में पकते हुए मांस इत्यादि से घृणा होती थी उसे यह नरक के समान प्रतीत होता था। वह प्रत्येक क्षण सोचा करती कि क्या मेरे जीवन में यही पाप-कर्म लिखा हुआ है? अन्त में शबरी अपना घर त्याग कर चली जाती है- **"शाल और सागौन वनों को / पार किया शबरी ने, / सुन रक्खा था नाम कभी / पम्पासर का शबरी ने।"**[86] वह मतंग ऋषि के आश्रम में पहुँच गयी तब मतंग ने उससे उसका परिचय निम्न शब्दों में पूछा-

"बोले मतंग - बेटी शबरी! / यदि अन्त्यज तू, तो कौन श्रेष्ठ? / तुझमें तो प्रभु ही बोल रहे / निश्चय होगी तू भक्त श्रेष्ठ।"[87] शबरी प्रभु श्रीराम के ध्यान में हमेशा आकण्ठ डूबी रहते हुए भी अपना श्रमणी धर्म निर्वाह करती थी- **"लेकिन शबरी तो दिन में / भी प्रभु में तन्मय रहती / वह सभी कर्म को प्रभु का / श्रृंगार समझ कर करती।"**[88] शबरी प्रभु श्रीराम के दर्शन से आनन्द विभोर होकर अपनी सुध-बुध खोकर भगवत्दर्शन हेतु श्रद्धा से परम विनीत हो उठती है- **"वह झुकी हुई थी प्रभु के / चरणों में श्रद्धानत हो, / आँसू से भीग गये पग / श्रद्धा भी झुकी विनत हो।"**[89] तदनन्तर प्रभु श्रीराम को अपने जूठे बेर खिलाने का कितना सुन्दर एवं सजीव वर्णन कवि ने किया है जो कवि की लेखनी की सहज शक्ति का द्योतक है- **"वह सहज भाव से चखती / मीठे प्रभु को देती, / प्रभु सहज भाव से खाते / आँखों से कृपा बरसती।"**[90] शबरी प्रभु श्रीराम से कहती है कि- **"शबरी बोली तब प्रभु से - / है मात्र निवेदन इतना / मै सहन नहीं कर सकती / अब तो वियोग क्षण जितना।"**[91] प्रभु श्रीराम की कृपा से शबरी स्वर्ग लोक को चली जाती है- **"आकाश-भागवत की वह / थी प्रथम श्लोक सी शबरी / करने कृतार्थ जाती थी / अब स्वर्ग लोक शबरी।"**[92] भक्त और भगवान के गूढ़तम अनन्य रिश्ते का यह सहज वर्णन इतनी साधारण भाषा में कही अन्यत्र देखने को नहीं मिलता है।

ध्यातव्य है कि हिन्दी साहित्य से सम्बद्ध शोध ग्रन्थों या शोध पत्र-पत्रिकाओं में अथवा शोध प्रबन्ध के रूप में अद्यावधि शबरी संज्ञक कृतियों के अध्ययन का एक भी प्रयास उपलब्ध नहीं है। इस सन्दर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि शबरी संज्ञक काव्य कृतियों में कृति रचनाकारों की भावयित्री एवं कारयित्री प्रतिभा का उन्मेष समवेत रूप में लक्षित होता है। निम्न उद्धरणों में इनका आस्वादन क्रमशः किया जा सकता है। 'मधु' के उद्गार हैं- **"हरि-दर्शन समुत्सुका थी, / उर-प्रेम-उदधि उमड़ाता। / अटपट-पग मग में पड़ना, / वर गूढ़ भाव प्रकटाता।"**[93] 'अवधेश' ने व्यक्त किया है- **"शूद्र ही सब जन्म से, होते यहाँ उत्पन्न, संस्कृत होकर सभी, बनते यहाँ पर भिन्न। / क्या अधम करते नहीं हैं श्रेष्ठता का यत्न, / क्या अँधेरी खान में, होते नहीं है रत्न।"**[94] नरेश मेहता की शबरी का प्रश्न है कि- **"क्या आत्मा की उन्नति केवल, / है उच्च वर्ग तक ही सीमित? / प्रभु तो हैं सबके पिता, भला / उनका आराधन क्यों सीमित?"**[95] गोविन्ददास की शवरी गान करती है- **"कोउ आयी सुघर पनिहारी, / कुअला उमड़ि परे। / कै तुम गोरी धन साँचे की ढ़ारी, / कै तुम गढ़े हैं सुनार। / ना हम गोरी ध न साँचे की ढ़ारी, / ना हम गढ़ी है सुनार।"**[96] वहीं धनन्जय अवस्थी की दीन-हीन शबरी का परिचय निम्न है- **"आई मुनि के समीप / अनुचरी गिरी सभीत, / मैं हूँ शबर पुत्री / शबरी अनाश्रिता / परित्यक्ता, अग-जग से / भिल्लिनी उपेक्षिता, / इतना ही परिचय है।"**[97] अतः यह कहना अनुचित न होगा कि राम काव्य-धारा के अन्तर्गत हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में प्रणीत शबरी संज्ञक काव्य कृतियों पर शोध-कार्य की पर्याप्त संभावनाएँ विद्यमान हैं।

1-च शोध प्रविधि

साहित्य समीक्षा के विविध पक्षों विषय-वस्तु, कथानक, पात्र-योजना, परिवेश प्रतिबिम्बन, विचारधारा एवं मूल तथा ख्यात कथा से साम्य एवं विषमता का अध्ययन एवं काव्य के विविध प्रसाधनों (भाषा, शैली, रस, छन्द, अलंकार इत्यादि) की; विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुये गवेषणात्मक शोध-प्रविधि को प्रस्तुत शोध-कार्य में प्रयुक्त किया गया है। ध्यातव्य है कि इस शोध-कार्य से अनेक नवीन तथ्यों को भी प्रत्यक्ष करने में सहायता मिल सकी है जो अद्यावधि अल्पज्ञात या अज्ञात थे और सबसे अधिक तो राम कथा के परम्परागत कथा संघटन पात्रों, घटनाओं, समस्याओं, जीवन-मूल्यों एवं काव्य मानदण्डों का आधुनिक युग के संदर्भ में पुनर्मूल्यांकन एवं व्याख्या की जा सकी है।

संदर्भ

1. श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणम (हिन्दी भाषान्तर सहित भाग 1 व 2) - श्री नारायण दत्त शास्त्री, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं. 2014 वि.।
2. वाल्मीकि रामायण - अनु. पाण्डेय रामतेज शास्त्री, सन् 1951 ई, प्रयाग।
3. राम-कथा के पात्र - भ. ह. राजुरकर, ग्रन्थम, रामबाग, कानपुर, प्र. सं.।
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास - डा. वचनदेव कुमार, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली सन् 1989 ई.।
5. संस्कृत सुकवि समीक्षा - आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी, सन् 1963 ई.।
6. राम-कथा - उद्भव और विकास - रेवरेन्ड फादर कामिल बुल्के, भारतीय हिन्दी परिषद, इलाहाबाद सन् 1971 ई.।
7. तुलसीपूर्व राम-साहित्य - डा. अमरपाल सिंह, प्रथम सं., सन् 1967, रचना प्रकाशन इलाहाबाद ।
8. हिन्दी राम-काव्य का स्वरूप और विकास-बदलते युगबोध के परिप्रेक्ष्य में - प्रेमचन्द माहेश्वरी, प्रथम सं. सन् 1983, वाणी प्रकाशन, दिल्ली ।
9. रघुवंश महाकाव्य - कालिदास व्याख्याकार-साहित्याचार्य श्री हरगोविन्द मिश्र, काशी संस्कृत ग्रंथमाला 51, तृतीय संस्करण 2015, वाराणसी ।
10. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास द्वितीय खण्ड- डा. वीरेन्द्र वर्मा सम्पूर्णानन्द, 1957 काशी ।
11. तुलसी ग्रंथावली - प्रथम खण्ड, श्री रामचरितमानस - गोस्वामी तुलसीदास - मूल सम्पादक - आचार्य रामचन्द्रशुक्ल (भगवानदीन तथा ब्रजरत्नदास सम्पादक मण्डल), अध्यक्ष कमलापति त्रिपाठी प्रकाशन काल सं. 2030 वि. ।
12. रामकथा सरिता - कुसुम स्वरूप, किताब महल, सन् 1993 ई., प्र. पृ. 178 ।
13. हिन्दी महाकाव्यों में मनोवैज्ञानिक तत्व (द्वितीय भाग) निर्मल प्रकाशन संस्थान आगरा, 1973 ई. ।
14. रामायण: भारतीय रोमांच प्रेम तथा बुद्धिमत्ता की अमर कथा (अंग्रेजी) - कृष्णधर्म, टार्च लाइट प्रकाशन, सं.रा.अ. सन् 2000 ई., 488 प्र. पृ.।
15. राम-कथा - भक्ति और दर्शन - विश्वम्भरदयाल अवस्थी, सरस्वती प्रकाशन मंदिर, इलाहाबाद, 310 प्र. पृ. ।
16. गोस्वामी तुलसीदास - आचार्य रामचन्द शुक्ल, अष्टम संस्करण प्रयाग, सन् 1935 ई.।
17. रामचरितमानस में जीवन मूल्य - अमितारानी सिंह, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ 95-100, 1993 ई., प्र. पृ. 200 ।

18. श्रीरामचरितमानस - गोस्वामी तुलसीदास कृत - टीकाकार - हनुमान प्रसाद पोद्दार - अरण्यकाण्ड 16/1 से 16/16, गीताप्रेस, गोरखपुर, छियालीसवां संस्करण, सं. 2051 वि., पृ. 573 ।
19. श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम् - अरण्यकाण्ड 69/1-19 ।
20 अध्यात्म रामायण : 3/9/27 ।
21. श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम् (अरण्यकाण्ड) 3/72/77 ।
22. वही-3/73/74 ।
23. वही-3/75/7-10 ।
24. वही-3/74/17 ।
25. वही-3/74/24 ।
26. भट्टिकाव्य-सर्ग 59, 79 ।
27. महावीर चरित 5, 27 ।
28. अध्यात्म रामायण : 3, 10, 1 / 44 ।
29 वही 3, 10, 2/25 ।
30. वही, 3, 10, 1/44 ।
31. राम रसिकावली - रघुराज सिंह, पृ. 118 ।
32. विभिन्न संस्कृतियों में राम-कथा: - रामायण पर प्रश्न, एक दक्षिण भारतीय परम्परा (सं. पौला रिचमैन) आक्सफोर्ड, विश्वविद्यालय प्रेस, नई दिल्ली, 432 प्र.पृ. का रिव्यु द ट्रिब्युन - कुमार अक्षय, सन् 2002 ई.।
33. राम-कथा - उद्भव और विकास-फादर कामिल बुल्के, भारतीय हिन्दी परिषद प्रकाशन, प्रयाग, इलाहाबाद, सन् 1971 ई. ।
34. मानस के मोहक प्रसंग - रामदेव प्रसाद सोनी 'मानस-मधुकर' शिवम प्रकाशन, राजरूपपुर, इलाहाबाद, सन् 2001 ई.।
35. राम-कथा का तात्विक स्वरूप : एक तात्विक विवेचन, अर्चना प्रकाशन, दिल्ली पृ. 31 ।
36. वाल्मीकि के ऐतिहासिक राम: सत्याग्रही राम - विश्वनाथ लिमये, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली-6, पृ. 163, पृ. 187, सन् 1987 ।
37. नरेश मेहता का काव्य: समग्र मूल्यांकन - डा. गिरिजा शंकर दुबे, शक्ति प्रकाशन भोपाल, पृ. 123।
38. तुलसी के हिय हेरि - विष्णुकान्त शास्त्री, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.पृ. 277, सन् 2003 ई. ।
39. अयोध्या का युद्ध - रमेश चन्द्र गुप्त, उर्मिला पब्लिकेशंस, दिल्ली-4, सन् 1991-92 ।
40. अध्यात्म रामायण 3, 10/1-44 ।
41. शबरी (खण्ड-काव्य) - कु. मायादेवी 'मधु', अरुण लिमिटेड, मुरादाबाद, सन् 1939 ई., आश्रम-29 : पृ. 10 ।
42. वही, सेवा-2 : पृ. 17 ।
43. वही, सेवा-10 : पृ. 20 ।
44. वही, सेवा-36 : पृ. 29 ।
45. वही, उत्कण्ठा-9 : पृ. 36 ।
46. वही, उत्कण्ठा-7 : पृ. 35 ।
47. वही, दर्शन-46 : पृ. 73 ।
48. वही, उपदेश-29 : पृ. 86 ।
49. वही, भ्रमनिवारण-59 : पृ. 126 ।
50. वही, समाज-47 : पृ. 162 ।

51. शवरी - गोविन्ददास, भारतीय विश्व प्रकाशन, फव्वारा, दिल्ली, सन् 1952 ई., कहानी पृ. 5 ।
52. वही, एक पात्री नाटक : पृ. 37 ।
53. वही, एक पात्री नाटक : पृ. 37 ।
54. वही, एक पात्री नाटक : पृ. 36 ।
55. वही, एक पात्री नाटक : पृ. 43 ।
56. वही, श्रव्य काव्य : पृ. 55 ।
57. वही, श्रव्य काव्य : पृ. 55-56 ।
58. शबरी - धनन्जय अवस्थी, संगम प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1992 ई., उद्‌भावना : पृ. 12 ।
59. वही, उद्‌भावना : पृ. 11-12 ।
60. वही, क्रान्ति : पृ. 23 ।
61. वही, उद्‌भावना : पृ. 15 ।
62. वही, क्रान्ति : पृ. 32 ।
63. वही, संघर्ष : पृ. 43 ।
64. वही, चेतना : पृ. 64 ।
65. वही, साधना : पृ. 86 ।
66. श्रमणा- शबरी के राम - श्री अवध किशोर श्रीवास्तव 'अवधेश' सिंहावलोकन, श्रीमती श्री कुँवर अंजलि प्रकाशन, झाँसी, सन् 1986 ई., पृ. 11 ।
67. वही, सर्ग 3 : पृ. 25 ।
68. वही, सिंहावलोकन : पृ. 13 ।
69. वही, तृतीय सर्ग : पृ. 30 ।
70. वही, प्रथम सर्ग : पृ. 4 ।
71. वही, प्रथम सर्ग : पृ. 5 ।
72. वही, प्रथम सर्ग : पृ. 4 ।
73. वही, प्रथम सर्ग : पृ. 8 ।
74. वही, दसवाँ सर्ग : पृ. 154 ।
75. वही, दसवाँ सर्ग : पृ. 154 ।
76. वही, दसवाँ सर्ग : पृ. 142 ।
77. वही, दसवाँ सर्ग : पृ. 163 ।
78. वही, चौदहवाँ सर्ग : पृ. 226 ।
79. वही, सोलहवाँ सर्ग : पृ. 255 ।
80. वही, अट्‌ठारहवाँ सर्ग : पृ. 296 ।
81. वही, बीसवाँ सर्ग : पृ. 307 ।
82. वही, इक्कीसवाँ सर्ग : पृ. 328 ।
83. वही, आचार्य शुकरत्न उपाध्याय के दो शब्द : पृ. 3 ।
84. वही, पं. रामेश्वर रामायणी, मानस सम्राट, प्रयाग : टिप्पणी, पृ. 38 ।
85. शबरी - नरेश मेहता, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, त्रेता : पृ. 9 ।
86. वही, पम्पासर : पृ. 13 ।
87. वही, पम्पासर : पृ. 21 ।
88. वही, तपस्या : पृ. 33 ।
89. वही, दर्शन : पृ. 76 ।
90. वही, दर्शन : पृ. 78 ।
91. वही, दर्शन : पृ. 79 ।

92. वही, दर्शन : पृ. 80 ।
93. शबरी - कु. मायादेवी 'मधु' उत्कण्ठा-9 : पृ. 36 ।
94. श्रमणा - शबरी के राम - अवधेश - प्रथम सर्ग : पृ. 4 ।
95. शबरी - नरेश मेहता, पम्पासर : पृ. 19 ।
96. शवरी - गोविन्ददास, एकांकी नाटक : पृ. 10 ।
97. शबरी - श्री धनन्जय अवस्थी, चेतना : पृ. 64 ।

द्वितीय अध्याय

द्वितीय अध्याय

कथावस्तु

'राम-कथा' में हमें भारतीय संस्कृति के वास्तविक स्वरूप का दर्शन प्राप्त होता है। आदि काल से वर्तमान काल तक के इतिहास में जीवन मूल्यों का महत्वपूर्ण संरक्षण श्रीराम की पवित्र कथाओं में ही सुलभ हो पाया है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम का पावन एवं उदात्त स्वरूप तथा उनकी पावनी लीलाएँ भारतीय जीवन के अक्षय प्रेरणा स्रोत रहे हैं। समय-समय पर सन्त जन राम-कथा को अपनी रुचि-मति-ढंग के अनुसार कहते-सुनते-लिखते चले आये हैं।[1] कवि प्रवर गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी अमृतोपम वाणी से इस तथ्य का रहस्योद्घाटन निम्न शब्दों में किया है- **"हरि अनंत हरि कथा अनंता, कहहिं श्रवहिं बहु विधि सब संता।"**[2]

हरि कथारसामृतपयस्विनी सभी रचनाओं का आद्यान्त यही मूल उद्देश्य रहा है कि मानव समाज में व्याप्त ईर्ष्या, द्वेष, भेद-भाव, घृणा, वैमनस्य एवं अस्पृश्यता इत्यादि समाप्त होकर समता भ्रातृभाव, प्रेम तथा भक्ति भावना व सुसंस्कृति का उत्थान होकर शान्ति व सद्भावना का साम्राज्य स्थापित हो। कवयित्री महादेवी वर्मा के अनुसार, **"ऋषि कवि वाल्मीकि से पूर्व भी राम कथा नाराशंसी गाथाओं के रूप में प्रचलित रही होगी। आदि कवि ने उसे परिविष्ठित छन्द बद्ध काव्य के रूप में नवीन कलेवर प्रदान किया, जो साहित्य के लिए भी आधार शिला बना और धर्म के लिए भी।"**[3]

राम-कथा एवं राम काव्यों की परम्परा प्राचीन है। संस्कृत में भी अनेक ऐसे ग्रन्थ हैं जो राम भक्ति से परिपूर्ण हैं। आदि कवि ने अपने रामायण के साथ इस परम्परा का शुभारम्भ किया तो कालान्तर में अध्यात्म रामायण, दशरथ जातक, जैन रामायण और संस्कृत के अनेक नाटकों और खण्ड-काव्यों द्वारा इस परम्परा का विकास हुआ।[4] इसी प्रकार समकालीन भारतीय भाषाओं के विकास के साथ-साथ यह अन्य भाषाओं में भी पुष्पित व पल्लवित होती रही। महाकवि तुलसीदास ने अपनी अमर लेखनी द्वारा अवधी में श्रीरामचरितमानस का प्रणयन करके इसे चरमोत्कर्ष तक पहुँचाया। इसीलिए श्रीरामचरितमानस को संसार का सर्वश्रेष्ठ राम-काव्य माना जाता है।

राम-कथा के काल एवं कथा के विभिन्न प्रसंगों की मौलिकता के बारे में विद्वानों में मतैक्य नही है, तथापि कथा के मूल प्रसंग सर्वत्र न्यूनाधिक एक समान हैं।[5] भिन्न-भिन्न व्यक्तियों द्वारा प्रतिपादित कथाओं के प्रणयन में भिन्नता, विषय प्रतिपादन, भाषा, शैली, काव्य सौष्ठवों में भिन्नता आना स्वाभविक प्रक्रिया है। राम-कथा की सर्जना के समय कवियों की भक्ति भावना कल्पनाओं की उत्ताल तरंगों पर प्रतिष्ठित होकर एवं भाषा की असमानताओं के कारण नये-नये आयाम ग्रहण करती प्रतीत होती है।

संक्षेप में राम-कथा हर हिन्दू के मानस पटल पर अंकित ही है। किसी भी कथा का जितना भाग कथा के श्रवण के पश्चात् साधारण से साधारण मनुष्य को स्मरण रह जाय; वही कथा का मूल कथानक भी होता है। कथानक के आधार पर कृतियों की विवेचना करना एक जटिल व दुरूह कार्य है, क्योंकि मेरा मत है कि किसी भी व्यक्ति विशेष को सभी रामायणों को एक साथ जानने अथवा देखने का सौभाग्य भी प्राप्त नहीं हुआ होगा, पढ़ना, सुनना, समझना एवं पुनः किसी नये रूप में राम-कथा का प्रणयन करना अन्यथा है। समय के साथ-साथ कुछ प्रसंग विलुप्त हो गये तो कुछ नये प्रसंगों का समावेश भी हुआ है। आधिकारिक रूप से आदिकवि वाल्मीकि द्वारा प्रणयित रामायण को ही राम-कथा का मूल कथानक माना जाता है। कृतियों के कथानक अथवा कथावस्तु की विवेचना से अभिप्राय है कि किसी कृति में वर्णित प्रसंगों, घटनाओं, पात्रों एवं चरित्रों का प्रस्तुतीकरण एवं मूलकथा से साम्य एवं वैषम्य का सम्यक अनुशीलन एवं मूल्यांकन किया जाय। इस अभीष्ट की प्राप्ति हेतु प्रस्तुत अध्याय में आधुनिक हिन्दी साहित्य की शबरी संज्ञक पांच काव्य कृतियों के कथानक की समीक्षात्मक विवेचना की जायेगी तथा मूलकथा से साम्य व वैषम्य पर प्रकाश डाला जायेगा।

2-क प्राचीन साहित्य में शबरी प्रसंग

2-क-I पुराणों में शबरी प्रसंग

पुराणों के अनुसार श्रमणा या शबरी एक अधम जाति की हीन स्त्री थी जो भगवान राम से उनके वनवास के समय मिलती है। श्रमणा अपने पूर्वजन्म में एक अप्सरा थी जो देवराज इन्द्र की सभा में किसी महोत्सव के समय उपस्थित थी। उस सभा में भगवान विष्णु का भी आगमन हुआ। वह भगवान विष्णु के प्रति अनुरक्त होकर उन्हें निर्निमेष अवलोकित करती रह गयी। देवराज इन्द्र इस बात से क्षुब्ध हुए तथा शबरी से कुपित होकर उसे श्राप दे डाला कि, 'जा तू मनुष्य योनि में अधम जाति की स्त्री हो।' वही अप्सरा रामावतार के समय इन्द्र के शाप के कारण शबरी हुयी तथा उसे अपने भगवत् अनुराग के कारण भगवान के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

2-क-II अध्यात्म रामायण में शबरी प्रसंग

अध्यात्म रामायण मे शबरी प्रसंग का वैशिष्ट्य राम द्वारा शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश दिया जाना है। वाल्मीकि की भाँति अन्तिम समय में कबन्ध राम को शबरी के निकट जाने का सुझाव देता है। कबन्ध मुख्य रूप से शबरी की दो विशेषताओं का उल्लेख करता है - राम के प्रति अनुराग तथा भक्ति मार्ग में कुशलता (अध्यात्म रामायण : 3-10-12)। साथ ही साथ ही साथ वह राम को यह भी बताता है कि वह सीता की खोज में भी सहायक होगी। राम को अपने आश्रम में आया हुआ देखकर हर्ष विह्वल शबरी उन्हें प्रणाम कर उचित आसन देती है। वह व्यवहार कुशल है। अर्घ्यादि विविध सामग्रियों से वह राम-लक्ष्मण का विधिवत् पूजन कर पूर्व संचित अमृतोपम दिव्य फल अर्पित करती है- **"सम्पूज्य विधिवद्रामं ससौमित्रिं समर्पया। / संगृहीतानि**

दिव्यानि रामार्थं शबरी मुद्रा॥ / फलान्यमृत कल्पानि ददौ रामाय भक्तितः।"[6] शबरी अपने गुरू मतंगऋषि के विषय में राम-लक्ष्मण को बताती है। ब्रह्मलोक प्रयाण करते हुए मतंगऋषि शबरी को आश्रम में रह कर राम के आगमन की प्रतीक्षा करने का आदेश दे गये थे। राम को सम्मुख पाकर हीन जाति शबरी भाग्यवान हो उठी है। शबरी अपनी दीनता प्रदर्शित करती है जो भक्ति परक दृष्टि से प्रधान्य का कारण है- **"योषिन्मूढ़ा प्रमेयत्मन् हीन जाति समुद्भवा। / तव दासस्य दासानां शवशंरवयोत्तरस्य वा। / दासीत्वेना धिकारोऽस्ति कुतः साक्षात्तवैव हि।"**[7] राम द्वारा शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश देना इस रचना की प्रमुख विशेषता है।[8] राम कहते हैं कि भक्ति ही मुक्ति का साधन है एवं राम की भक्ति ही शबरी की मुक्तिदात्री है। शबरी राम को सीता के विषय में बताकर अग्नि प्रवेश द्वारा शरीर त्याग देती है।

2-क-III आनन्द रामायण में शबरी प्रसंग

आनन्द रामायण में शबरी प्रसंग अत्यन्त संक्षिप्त है। सारकाण्ड के सप्तम सर्ग में राम-लक्ष्मण शबरी के आश्रम में पहुँचते हैं। शबरी मतंग ऋषि की परिचायिका है, जो ऋषि के जाने पर भी शून्य आश्रम में राम की प्रतीक्षा कर रही है। राम को देखकर शबरी पुष्पों तथा फलों से उनका पूजन तथा सत्कार करती है। चितारोहण करते समय वह राम को ऋष्यमूक पर्वत पर सुग्रीव के निवास के विषय में बताकर उनसे मित्रता कर सीता के सम्बन्ध में पता करने का सुझाव देती है। इससे पूर्व पम्पासरोवर जाने का सुझाव भी वह देती है; और उसी समय राम को प्रणाम कर अग्नि प्रवेश करती है।

2-क-IV भट्टिकाव्य में शबरी प्रसंग

भट्टिकाव्य में शबरी-वृत्त अलौकिकता से मुक्त प्रतीत होता है। भट्टिकाव्य में वर्णित है कि राम-लक्ष्मण भिद्य एवं उद्धय के समान अनेक नदों को पारकर सिद्धय नक्षत्र के तुल्य विख्यात शबरी नामक तपस्विनी के निकट पहुँचे - **"सिध्य-तारामिव ख्यातां शबरीमापतु वर्तने।"**[10] शबरी हीन वर्ण की होने पर भी अपने तप से महिमावान है। वह वल्कल; मूँग की मेखला, दण्ड, मृग-चर्म-धारिणी, धर्म कृत्य में अनुरक्त रहने वाली तपस्या से कृश, सात्विक भोजन करने वाली तपस्विनी है- **"वासानां वल्कले शुद्धे विपून्यैः कृत मेखलाम्। / क्षमामंजन-पिण्डाऽऽमां दण्डिनी भजिनाऽऽस्तराम्॥ / ऋगृध्यां वीत-कामात्वाद् देव-गृहयामनिन्दताम्। / धर्मकृत्य रतां नित्यम् वृष्यं-फल-भोजनाम्॥ / दृष्टवा ताप मुचद् रामो युग्याऽऽयात् इव श्रमम् ॥"** एवं **"सख्यस्य तव सुग्रीवः कारकः कपिनन्दनः । द्रुतं द्रष्टासि मैथिल्याः, सैव मुक्तवा तिरोऽभवत्।"**[12] राम शबरी के शील, व्यवहार एवं तप के विषय में कुशल प्रश्न करते हैं। राम को उचित उत्तर देकर मधुर्पक जल आदि से राम का पूजन करके शबरी का राम को सुग्रीव से भावी मैत्री के विषय में बताकर अन्तर्ध्यान होना अलौकिकत्व की प्रतिष्ठा की ही चेष्ठा है।

2-क-V हिन्दी साहित्य में शबरी प्रसंग

हिन्दी साहित्य में राम-कथा लेखकों तथा कवियों के लिए प्रेरणादायिनी बनी है। हिन्दी साहित्य की दोनों विधाओं; गद्य एवं पद्य के अलावा भी कई अन्य विधाओं यथा- कहानी, नाटक एकांकी व एक पात्री नाटक इत्यादि में राम-कथा मूलक (समग्र) एवं राम-कथा के पात्रों को केन्द्र में रखकर विहंगम साहित्य का सृजन किया गया है। इन सारी कृतियों का अनुशीलन करने पर ज्ञात मुख्य-2 कृतियों में वर्णित शबरी प्रसंग का संक्षिप्त कथानक निम्नलिखित अनुच्छेदों में वर्णित है।

2-क-V-1 राधेश्याम रामायण में शबरी प्रसंग : राधेश्याम रामायण में शबरी सम्बन्धी घटना का पर्याप्त एवं विस्तृत विवरण मिलता है। भक्त की भावनाएँ भगवान के लिए भी सम्माननीय हैं। मतंग मुनि का कोई विशेष वर्णन यहाँ नहीं मिलता है। राधेश्याम रामायण के अनुसार, जटायु की मृत्यु के पश्चात् उसका गुणगान करते हुए राम शबरी के आश्रम पहुँचे। शबरी को यहाँ भीलनी कहकर संबोधित किया गया है- **"भीलनी की आँखों के आगे लक्ष्मण समेत प्रभु जा पहुँचे।"** शबरी और राम का यह मिलन जीवात्मा तथा परमात्मा का मिलन है। भाव विभोर शबरी राम का आतिथ्य बेरों से करती है। सूर-सागर का स्पष्ट उल्लेख करते हुए उसी के आधार पर बेरों को जूठा बताया गया है - **"वे फल शबरी के जूठे थे, (यह लिखा सूर सागर में है)। / हम भी कहते हैं जो कुछ है सब प्रेम और आदर में है।"**[13] लक्ष्मण बेरों को नहीं खाते। यही नहीं, राम के आग्रह पर वे बेर लेकर गुप्त रूप से पीछे फेंक देते हैं जो द्रोण गिरि पर जा गिरा तथा संजीवनी औषधि बना। इस सम्पूर्ण वृत्त का उद्देश्य भक्ति के महत्व का प्रदर्शन ही है। शबरी के भक्ति में वह शक्ति थी कि उसका अपमान परमात्मा को असह्य हुआ। लक्ष्मण के मन को अरुचिकर लगने वाला बेर ही उनका प्राण-रक्षक सिद्ध हुआ।[14]

वस्तुतः शबरी समर्पण के उस बिन्दु पर जा पहुँची थी, जहाँ कोई मर्यादा नहीं है। राम स्वयं स्वीकार करते हैं - **"पराभक्ति में रही है कब किसकी मर्यादा।"** विष्णु रामभक्ति को ज्ञानी से अधिक प्रिय बताते हैं। शबरी को अपनी विपत्ति (सीता हरण) बताकर वे उसके निवारण का उपाय पूछते हैं। शबरी ही उन्हें ऋष्यमूक पर्वत पर सुग्रीव से भेंट करने का सुझाव देती है। राम के प्रस्थान करते ही शबरी ने प्राण त्याग किया परन्तु योगाग्नि प्रवेश का यहाँ कोई उल्लेख नहीं है।

2-क-V-2 अरुण रामायण में शबरी प्रसंग : भाव-विभोर शबरी द्वारा राम को चख-चख कर मीठे बेर खिलाना यहाँ स्वीकृत है। कबन्ध वध के पश्चात् राम शबरी के आश्रम में पहुँचते हैं, अपने आराध्य को पहचानकर भावाभिभूत शबरी सुख-विह्वल हो उठती है- **"आँखें ऊपर की ओर विमूक मयूरी सी, भावना दीपिका और वर्तिका दूरी सी।"** 'कुरबक-कनेर' की माला अर्पित कर वह बेरों से राम का आतिथ्य करती है- **"चख चख कर आज खिलाया उसने प्रेम बेर, प्रभु ग्रीवा में शोभायमान कुरबक-कनेर।"**[16] राम शबरी की इस मौन स्तुति, उसकी श्रद्धा उसके भक्ति-भाव का सम्मान करते हैं। उनके अनुसार शबरी नीच नहीं है, जाति-भेद मनुष्य द्वारा निर्मित है। वर्ण चेतना कर्मानुसार होना ही उचित है। सत् शिव सुन्दर की प्राप्ति, पूर्णता की प्राप्ति

ही जीवन का लक्ष्य है, इस पूर्णता की प्राप्ति भक्ति और ज्ञान दोनों से सम्भव है। शबरी ने भक्ति द्वारा इसी पूर्णता को प्राप्त किया है। राम की सीता विषयक जिज्ञासा के उत्तर में वह उन्हें सुग्रीव मैत्री का सुझाव देकर 'हरि' में लीन हो जाती है। राम द्वारा शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश यहाँ नहीं दिया गया है।

2-क-V-3 रामायण कथा में शबरी प्रसंग : रामायण कथा में शबरी का उल्लेख भर ही प्राप्त होता है। कबन्ध राम को बताता है कि - **"आगे सबरी दरसन होई, तुम पसाउ पावे गति सोई।"** पम्पा सरोवर जाते हुए एक योजन भर चल देने पर राम शबरी के दर्शन करते हैं। शबरी राम के दर्शन कर अग्नि साध कर स्वर्ग चली जाती है- **"जोजन एक तबै चलि गए। सबरी सो तहाँ दरसन भए॥ / ता कह राम दृष्टि गति भई। अगिन साधि वह स्वर्गहिं गई॥"**

2-क-V-4 साकेत में शबरी प्रसंग : साकेत में शबरी प्रसंग का संकेत मात्र है - **"सदा भाव के भूखे प्रभु ने शबरी का आतिथ्य लिया।"** साकेत में शबरी का कोई विशेष व्यक्तित्व ही नहीं उभरता है।

2-क-V-5 जानकी जीवन में शबरी प्रसंग : शबरी का कोई विशेष परिचय हमें यहाँ प्राप्त नहीं होता, मात्र शबरीकृत आतिथ्य का ही उल्लेख जानकी-जीवन में प्राप्य है- **"जिस दिन न किया था अन्य आहार कोई, / उस दिन शबरी ने बेर थे जो खिलाए। / उन मधुर फलों में मिला जो स्वाद भाई, वह सुलभ न होगा स्वर्ग में भी सुधा से।"**[17]

2-क-V-6 वन स्थली में शबरी प्रसंग : सीता परित्याग को लेकर शबरी प्रसंग की ओर भी अहिल्या की ही भाँति यहाँ संकेत भर है- **"शबरी, निषाद, गीध / पा गए, शरण सीध।"**[18]

2-क-V-7 तुलसी पूर्व राम-कथा में शबरी प्रसंग : तुलसी की साहित्य साधना पर उनके पूर्व से चली आ रही विभिन्न प्रकार की साहित्यिकता (काव्य-पद्धतियों) का विशेष प्रभाव पड़ा है। तुलसी पूर्व की काव्य धाराओं में आदि कालीन वीरगाथा काव्य धारा, निर्गुण सन्त कवियों की वाणी, सूफी सन्तों की प्रेमाख्यानक परम्परा इत्यादि प्रमुख थीं। इन रचनाओं में दोहा और चौपाई का प्रयोग अविरल गति से होता चला आ रहा था। जिसका अनुसरण गोस्वामी जी ने भी अपने राम-काव्य को परिपुष्ट करने में किया।[19] तुलसी के पूर्व एवं समकालीन काव्यों में गीतों के रूप में रचित गीतात्मक रचनाएँ भी लोकप्रिय थीं। अत: तुलसी ने इस गेय प्रणाली का सुन्दर स्वरूप राम-भक्ति के श्रद्धालुओं को समर्पित किया। इन गीतों में शबरी प्रसंग एक क्षणिक घटना के रूप में वर्णित है।[20] तुलसी पूर्व साहित्यिक भाषाओं के रूप में संस्कृत, प्राकृत एवं हिन्दी का विपुल साहित्य उपलब्ध है जिसके अनुकरण का प्रभाव भी तुलसी के काव्य में उनकी सर्जनात्मक सृष्टि पर दृष्टिगत होता है। शबरी प्रसंग लगभग सभी ग्रन्थों में संक्षिप्त ही है।(21, 22, 23)

2-क-V-8 गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस में शबरी प्रसंग : मानस का शबरी प्रसंग पूर्व परम्परा से ही साम्य रखता है, किन्तु उसमें वाल्मीकि जैसे विस्तार का अभाव है। मतंग

मुनि का तो उल्लेख ही नहीं है, किन्तु उनके वचनों (राम के आगमन की प्रतीक्षा करते हुए शबरी को आश्रम में रहने का आदेश) का उल्लेख है- **"ताहि देइ गति राम उदारा। सबरी के आश्रम पगु धारा। / सबरी देखि राम गृह आए। मुनि के वचन समुझि जियँ भाए।"**[24] राम को सम्मुख पाकर शबरी भाव विह्वल हो उठती है - **"प्रेम मगन मुख वचन न आवा। / पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा। / सादर जल ले चरन पखारे। / पुनि सुन्दर आसन बैठारे।"**[25] अपनी हेय सामाजिक स्थिति तथा राम के महत्व के अनुभव से शबरी दैन्य पूर्वक राम की स्तुति करती है। राम शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश देते हैं। अन्त में राम को सुग्रीव की मैत्री का सुझाव देकर वह योगाग्नि में शरीर त्यागती है- **"पंपा सरहिं जाहु रघुराई। / तहँ होइहि सुग्रीव मिताई।। / सो सब कहिहि देव रघुवीरा। जानतहूँ पूछहु मतिधीरा।।"**[26] तथा- **"कहि कथा सकल बिलोकि हरि मुखहृदय पद पंकज धरे / तजि जोग पावक देह हरि पद लीन भई जहँ नहीं फिरे।।"**[27] वस्तुतः शबरी का महत्व भक्ति के महत्व में है। निम्न जाति की होकर भी वह भक्त से भक्ति की अधिकारिणी बनी।

2-क-V-9 तुलसीदासोत्तर रामकाव्य साहित्य : गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस के विभिन्न समीक्षकों तथा आलोचकों ने राम-कथा की कथावस्तु, पात्र योजना एवं परिवेशों की विभिन्न प्रकार से विवेचना करके अपने-अपने निष्कर्षों द्वारा न केवल हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है, अपितु राम-कथा सम्बन्धी नवीन तथ्यों का भी उद्घाटन किया है। तुलसीदासोत्तर राम साहित्य के विभिन्न कवियों ने अपनी कल्पना तथा मेधा के द्वारा पुरानी कथा को नवीन आयाम प्रदान किया है। शबरी प्रसंग को भी विभिन्न कवियों ने नया रूप प्रदान किया है।(28, 29, 30)

2-क-V-10 रामचन्द्रिका में शबरी प्रसंग : रामचन्द्रिका में रामचन्द्रिकाकार की प्रवृत्ति की दृष्टि से यहाँ पर शबरी प्रसंग पर्याप्त रूप से विस्तृत है; परन्तु मतंग और सुतीक्ष्ण मुनियों इत्यादि का विशेष उल्लेख यहाँ नहीं है। सीता को खोजते हुए राम लक्ष्मण शबरी आश्रम पहुँचते हैं - **"यहि भाँति बिलोके सफल ठौर, / गए शबरी पै दोउ देवमौर।"** शबरी दोनों का पादोदक लेकर अर्घ्यादि अर्पित कर अपने को धन्य मानती है- **"हर देत मंत्र जिनको विसाल, / संभु कासी में मरन काल। / ले आए मेरे धाम आज, / जप सफल करन जप तप समाज।"**[31] अंत में 'पावक पंथ' से शबरी के हरिलोक जाने का वर्णन है- **"सबरी पावक पंथ तब हरषि गई हरि लोक।"**[32]

2-क-VI आधुनिक हिन्दी साहित्य में राम-कथा सम्बन्धी कृतियाँ

हिन्दी साहित्य की विकास यात्रा के आधुनिक काल में राम-कथा मूलक अथवा राम-कथा में पात्रों से सम्बन्धित कई शोधग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। जिनमें कुछ विद्वानों के नाम इस प्रकार हैं - प्रसाद[33], माहेश्वरी[34], डा. विद्या[35], अवस्थी[36] नारायणन तथा रामायणम् व श्रीवास्तव[38]। इसके अतिरिक्त विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में भी राम-कथा सम्बन्धी सामग्री यत्र-तत्र बिखरी हुयी है यथा - कल्याण विभिन्न अंक[39], नागरी प्रचारिणी पत्रिका विभिन्न अंक[40], सम्मेलन पत्रिका[41] तथा

हिन्दी अनुशीलन[42]। इन सामग्रियों के अनुशीलन व अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि वाल्मीकि कृत रामायण के पूर्व भी राम-कथा से सम्बन्धित आख्यान प्रचलित थे। भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान का हस्तान्तरण व प्रचार प्रसार मुख्यत: श्रुतियों के माध्यम से होने के कारण उस काल की राम-कथा का लिपि बद्ध स्वरूप अप्राप्य है। विद्वज्जनों का मत है कि वाल्मीकि कृत रामायण को ही राम-कथा संज्ञक प्राचीनतम् व विस्तृत रचना मानना सम्यक और श्रेयस्कर है।[43]

आधुनिक हिन्दी साहित्य की जिन काव्य कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन इस शोध ग्रन्थ का अभीष्ट है उनका विस्तृत कथानक एवं उसके 'मूलकथा' से साम्य तथा वैषम्य के विस्तृत अध्ययन हेतु सर्वप्रथम 'मूलकथा' के कथानक और उसकी मुख्य विशेषताओं का निरूपण अपेक्षित है। यहाँ हम सर्वप्रथम वाल्मीकि रामायण में वर्णित शबर्याख्यान का विस्तृत कथानक एवं शबरी संज्ञक काव्य कृतियों के कथानक का निरूपण करेंगे।

2-क-VI-1 वाल्मीकि रामायण में वर्णित शबर्याख्यान अथवा शबरी की मूलकथा : वाल्मीकि कृत रामायण के तीनों पाठों यथा; दक्षिणात्य, गौणीय तथा पश्चिमोत्तरीय में साम्यता के साथ-साथ वैषम्य भी दृष्टिगोचर होता है। हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य विद्वान एवं राम-कथा के मर्मज्ञ फादर कामिल बुल्के (1971)[44] के मतानुसार पाठान्तरों का प्रमुख कारण वाल्मीकि कृत रामायण का उसकी शैशवावस्था में मौखिक प्रचलन तथा लिपिबद्ध होने के क्रम में भिन्न-भिन्न परम्पराओं का समावेश हो सकता है, तथापि तीनों पाठों की कथावस्तु में वैषम्य अपेक्षाकृत कम ही दृष्टिगत होता है। इस अध्याय में शबरी संज्ञक काव्य कृतियों की कथावस्तु में यथार्थ एवं कल्पना के समावेश एवं मूल व ख्यात कथा से साम्यता एवं वैषम्य का विवेचन अभीष्ट है।

2-क-VI-2 वाल्मीकि रामायण में वर्णित शबर्याख्यान (मूलकथा) की समीक्षा : शबरी की कथा वाल्मीकि रामायण के अरण्यकाण्ड में एक उपाख्यान के रूप में वर्णित है। इस कथा के पूर्व जिन आख्यानों एवं उपाख्यानों की सृष्टि वाल्मीकि रामायण के अरण्यकारण्ड में हुयी है उसकी संक्षिप्त रूप रेखा को शबर्याख्यान की भूमिका कहा जा सकता है।[45] सर्ग 1-16 तक दण्डकारण्य प्रवेश का वर्णन है, जिसमें विराध, सुतीक्ष्ण, शरभंग, अगस्त्य तथा जटायु के प्रसंग उल्लेखनीय हैं।[46] सर्ग 17-34 में सूर्पणखा, खर-दूषण वध तथा सूर्पणखा-रावण संवाद प्रसंग अति महत्वपूर्ण हैं।[47] सर्ग 57-75; में सीता की खोज में शून्य पर्णशाला, जटायु, कबन्ध तथा शबरी प्रसंग विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वाल्मीकि रामायण में उल्लिखित मूल-प्रसंग निम्नवत है- **"वाल्मीकि रामायण के अनुसार मतंग ऋषि के आश्रमवासी ऋषियों की सेवा शुश्रुषा तपस्विनी शबरी का कार्य था।"** शबरी की मुक्ति राम के दर्शनों से होती है इस दृष्टि से उसमें और अहिल्या में साम्य है। अरण्यकाण्ड में कबन्ध अपने अन्तिम समय में राम को शबरी और मतंग ऋषि के आश्रम के विषय में बताता है। पम्पा सरोवर के तट पर मतंग ऋषि के आश्रम में ऋषियों के चले जाने पर भी तपस्विनी शबरी वहीं पर निवास करती है। शबरी चिरजीवनी होकर सदैव धर्माचरण में रत रहती है। वह मन ही मन विचार करती है कि राम के दर्शनों से ही वह स्वर्ग जा सकेगी-

"तेषां गतानामधापि दृश्यते परिचारिणी। / श्रवणी शबरी नाम काकुस्थ चिरजीवनी॥ / त्वां तु धर्मे स्थिता नित्यं सर्वभूत नमस्कृतम्। / दृष्टवा देवापमं राम स्वर्ग लोके गमिष्यति॥"[48]

वाल्मीकि रामायण के अनुसार शबरी को ऋषियों ने श्रीराम के मतंगाश्रम आगमन के विषय में पहले से ही सूचित कर दिया था। उनके कथनों से शबरी को ज्ञात था कि राम-लक्ष्मण उसके अतिथि होंगे। उनका उचित सत्कार कर, उनके दर्शनों के फलस्वरूप उसे श्रेष्ठ अक्षय लोकों की प्राप्ति होगी।[49] राम के चित्रकूट आगमन के समय से ही शबरी नित्य विविध वन्य फल फूलों का संग्रह करती थी। शबरी राम को मतंग वन तथा अपने गुरूजनों की 'प्रत्यक्ष-स्थली' नामक वेदी तथा 'सप्त सागर' नामक तीर्थ (जिसमें गुरुजी स्नान करते थे) दिखाकर, अन्ततः अपने गुरुजनों के समीप जाने की आज्ञा लेकर अग्नि में प्रविष्ट होकर देह त्याग करती है।- **"अनुज्ञाता तु रामेण हुत्वाऽऽत्मानं हुताशने। / ज्वलत्पावकसङ्काशा स्वर्गमेव जगाम सा।"**[50] वाल्मीकि रामायण की शबरी, शबर जाति की होने पर भी लोक व्यवहार व ज्ञान-विज्ञान से अपरिचित व अनभिज्ञ नहीं थी, उसे परमात्मतत्व का सम्पूर्ण ज्ञान था। इस प्रकार शबरी हीन-जाति की होने पर भी ज्ञानी तपस्विनी थी। उसकी भक्ति ही उसके अभ्युदय का साधन बनी।

2-क-VII आधुनिक कालीन शबरी संज्ञक समीक्ष्य काव्य कृतियों का कथानक : शोध-प्रबन्ध के इस भाग में शबरी संज्ञक जिन काव्य-कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन अपेक्षित है उनके संक्षिप्त कथानक क्रमवार निम्नलिखित हैं।

2-ख कु. माया देवी 'मधु' कृत 'शबरी' का कथानक

कु. माया देवी 'मधु' ने अपनी परिपक्व मेधा, गहन कल्पनाशीलता एवं परिष्कृत व परिमार्जित भाषा का सम्यक अनुप्रयोग करके रामायण काल की शबरी नामक भीलनी के चरित्र को केन्द्र बिन्दु मानते हुए उससे सम्बन्धित घटनाओं को एक कथा-सूत्र में पिरोने का सशक्त प्रयास किया है। 'मधु' की 'शबरी' नौ खण्डों में विभक्त है यथा- आश्रम, सेवा, उत्कण्ठा, दर्शन, उपदेश, निवेदन, भ्रम निवारण, आत्म-ज्ञान एवं समाज। माया देवी 'मधु' कृत शबरी का संक्षिप्त कथानक निम्नांकित है-

2-ख-I आश्रम

प्रथम खण्ड आश्रम में 'मधु' ने अपनी कल्पनाशीलता का सम्यक प्रयोग करके गेय छन्दों में ऋषि मतंग के आश्रम के आस-पास के मनोहारी वातावरण, प्राकृतिक सौन्दर्य-सुषमा, आश्रम के नियमों तथा आश्रम की दैनन्दिनी का सुन्दर वर्णन किया है- **"थे सुकृती-व्रती-मनस्वी, / मितवादी धर्माचारी / पर आज गर्तगत हम हैं, / है काल-चक्र-गति न्यारी।"**[51] उस युग में नारी का स्थान पूज्यनीय था- **"उस भद्र सभ्य संसदि में / सर्वत्र पूज्य थी नारी। / अधिकार समान सभी के, / था एक न स्वेच्छाधारी।"**[52]

कु. माया देवी 'मधु' ने उस युग की वर्ण-व्यवस्था सामाजिक, आर्थिक दशाओं एवं यज्ञ, जप, तप, ज्ञान, भजन-पूजन, कर्म-काण्डों इत्यादि का समुचित वर्णन किया है- **"वर्णाश्रम-धर्म नियम सब, / सम्यक विधि पालन करते। / कर्तव्य परायण होकर, / वह थे न मृत्यु से डरते।"**[53] 'मधु' ने प्राकृतिक सौन्दर्य का बड़ा ही मनोहारी वर्णन इस खण्ड में किया है- **"वह संध्या मनोहरा जब, / सज अरुण पीत रंग सारी। / किसके न हृदय को हरती, / वह दिव्य छटा अति-प्यारी।"**[54]

2-ख-II सेवा

इस खण्ड-काव्य के द्वितीय खण्ड 'सेवा' में भक्तिमती शबरी का परिचय एक एकाकी पुत्र-विहीना, श्रद्धा-भक्ति प्रवीण भीलनी नारी के रूप में दिया है - **"बस ऐसे समय वहाँ पर, / एकाकी, पुत्र विहीना। / भीलनी एक शबरी थी/ अति श्रद्धा-भक्ति प्रवीणा।"**[55] शबरी स्वयं को लघु वर्ण का समझते हुए भी हरि दर्शन की अभिलाषा मन में सँजोये हुए है। इस अभिलाषा को पूर्ण करने हेतु साधन ऋषि मतंग के आशीर्वाद एवं सानिध्य से ही प्राप्त हो सकता है। इस कारण वह ऋषि की सेवा में तत्पर है तथा ऋषि के दर्शनों की अभिलाषी है- **"लघु वर्णा हूँ मै नारी, / ऋषि सेवा की अभिलाषा। हे हरि कब होगी पूरी, / चिर वांछित मेरी आशा।"**[56] शबरी प्रातः काल उठकर मार्ग-परिष्करण, यज्ञादि में अग्नि प्रज्जवलन हेतु समिधा का संकलन करती है परन्तु यह सब वह गुप्त भाव से करती है- **"उठ प्रातः काल प्रथम ही, / थी मार्ग परिष्कृत करती। / फिर अग्नि प्रज्ज्वलन हित बहु- / ला काष्ठ वहाँ पर धरती।"**[57] ऋषि अपने आश्रम को स्वच्छ पाकर मन में अति हर्षित होते हैं और शिष्यों से उस व्यक्ति का पता लगाने को कहते हैं; जो यह सुन्दर कार्य करता है। शिष्यगण शबरी को उपरोक्त कार्य करते हुए पाते हैं तथा उसको मुनि मतंग के सम्मुख लाते हैं। शबरी की शारीरिक एवं मानसिक अवस्था का चित्रण 'मधु' ने बड़े ही मनोहारी ढंग से किया है- **"ऋषि ने शबरी को देखा, / कृशकाय, अर्ध वसना थी। / जग-वैभव-सुख-परित्यक्ता, / अब शेष न कुछ तृष्णा थी।"**[58]

इसी परिप्रेक्ष्य में मुनि मतंग का केश-वेश वर्णन करने में भी मधु ने अपनी मेधा का परिचय दिया है - **"कर मण्डित मंजु कमण्डल, / कृश-कटि, कोपीन अजिन का। / जाज्वल्यमान भस्मावृत, / था भव्य-भेष अति मुनि का।"**[59] भक्तिमती शबरी अपने हृदय की उत्कट हरि दर्शन अभिलाषा को मुनि मतंग के समक्ष प्रस्तुत करती है। उसके सरल यथार्थ वचनों का श्रवण कर उसे अति दीन परन्तु भक्ति प्रवण समझकर मुनि उसे अपने आश्रम के समीप निवास करने की आज्ञा प्रदान करते हैं- **"तुम रहो हमारे आश्रम, / हे भक्ति तत्व मर्मज्ञा! / अन्नादि यहाँ सादर लो, / धारण कर मेरी आज्ञा।"**[60]

शबरी मुनि की आज्ञा शिरोधार्य कर, स्वयं को धन्य समझकर, लघु पर्ण-कुटीर बनाकर शुचि, जरा, चीर धारण कर मुनि सेवा में तत्पर रहने लगी परन्तु उसका यही सेवा भाव अनेक लोगों के द्वेष का कारण बन गया- **"जग उन्नतिशील किसी को, / क्या देख कभी हर्षाता। /**

छिद्रान्वेषण कर केवल, / है द्वेष, दोष प्रकटाता।"[61] इस द्वेष के कारण अगणित ऋषि मुनि शबरी की अधम जाति का उलाहना देते हैं कि यदि शबरी मतंगाश्रम में निवास करेगी तो वे वहाँ भोजन तो क्या जल भी ग्रहण नहीं करेंगे परन्तु मतंगमुनि समदर्शी थे और वे यह समझते थे कि शबरी एक उच्चात्मा एवं भगवत् भक्ति परायण भक्ता है। इस कारण वे ऋषि मुनियों की उक्त कटु उक्तियों को मूढ़ों का प्रलाप समझकर भुला देते हैं। माया देवी 'मधु' की 'शबरी' में मतंग मुनि शबरी की सेवा सुश्रुषा, भगवत् भक्ति से अभिभूत है, परन्तु निम्न वर्ण की होने के कारण उच्च वर्ग के ऋषि मुनियों द्वारा अपमानित एवं लज्जित की गयी है। यह जानकर मुनि मतंग दुखी हैं परन्तु उन्हें विश्वास है कि प्रभु के आगमन से शबरी के सारे दुख समाप्त हो जायेंगे तथा प्रभु उसके सारे लांछन तथा कलंक को मिटा देंगे- **"करके अपमानित लज्जित, / तुझको अति कष्ट दिया है। / रहकर सदैव विकृतानन, / कितना अपमान किया है।"**[62]

मुनि मतंग प्रभु के सद्गुणों का वर्णन भी करते हैं तथा शबरी को आशीष देते हैं और कहते हैं कि तुम्हारे गुण-गौरव की गंगा सर्वदा अबाध रुप से बहेगी- **"तू भी समुज्जला होकर, सफला, निर्मला बनेगी। / तेरी गुण-गौरव-गंगा, / सर्वदा अबाध बहेगी।"**[63] शबरी अपने गुरू की शिक्षा का पालन करती हुयी अपने हृदय में राम नाम का जप करती रहती है- **"पर प्रत्युत्तर न दिया कुछ, / यह! ऋषिवर थे समदर्शी / हैं सदा साधु सह लेते, / खल वाणी, मर्म-स्पर्शी।"**[64]

शबरी गुरू से अब नित्य प्रति नवीन उपदेश ग्रहण करने लगी, गुरू नाम हृदय में धारण कर हरि भजन-कीर्तन करने लगी और तब तक करती रहती है जब तक मुनि मतंग का शरीर वृद्धावस्था के कारण क्षीणप्राय हो उठता है। अपने अन्त समय में मतंगमुनि उससे अवसाद छोड़ने को कहते हैं तथा यह भविष्यवाणी भी करते हैं कि उसके सेवा श्रम के बदले श्रीराम द्रवित होकर उसके आश्रम में आवेंगे तथा इन चर्म चक्षुओं से ही वह हरि दर्शन प्राप्त करेगी- **"अवसाद छोड़ ऋषि बोले, / है तेरी सेवा का श्रम। / श्रीराम दयालु द्रवित हो, / आवेंगे तेरे आश्रम। / इन चर्म-चक्षुओं से ही तू दर्शन-लाभ करेगी। / नर रुप देख नारायण, / भव-सागर पार तरेगी।"**[65]

2-ख-III उत्कण्ठा

'मधु' की 'शबरी' के तृतीय खण्ड में मुनि मतंग के स्वर्गारोहण के पश्चात् शबरी की दैनन्दिनी का वृहत वर्णन किया गया है। जैसे-जैसे समय व्यतीत होता जाता है उसके हृदय में प्रभु दर्शन की उत्कण्ठा में वृद्धि होती जाती है- **"श्रीराम आगमन की फिर, / उत्कण्ठा बढ़ती जाती। / प्रति पल रह रह कर उसको, / थी प्रेमातुरा बनाती।"**[66] 'मधु' की नायिका शबरी के अतिरिक्त दण्डक वन में रहने वाले ऋषि-मुनि गण, मृग, खग एवं वट वृक्ष सभी की अवस्था ऐसी प्रतीत होती है मानो प्रभु-आगमन की उत्कण्ठा में डूबे हुए हों। शबरी प्रातः काल उठकर पर्ण कुटीर परिष्कृत करती है, पुनः अनेकों प्रकार के कन्द-मूल फल लाकर एकत्र करती है। वह

बार-बार मार्ग परिष्कृत करती है कि कहीं कोई कण्टक प्रभु श्रीराम के चरणों में न लग जाय। वह प्रभु के प्रेम में उन्मत्त होकर उनकी प्रतीक्षा कर रही है। उसका प्रतिपल एक-एक युग के समान प्रतीत होने लगा था- **"कर रही प्रतीक्षा प्रतिपल, होकर के अयुत दृगी सी। / हो प्रेमाकुला प्रमत्ता, / लगती थी परम ठगी सी।"**[67] शबरी द्वारा राम को जूठे बेर खिलाने के प्रसंग को मायादेवी 'मधु' ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है- **"आतिथ्य धर्म पालन हित, / क्षण-क्षण होती थी विह्वल। / वह चख-चख कर रखती थी, / जो होते थे मीठे फल।"**[68] शबरी श्रीराम के आगमन को लेकर इतनी अधिक उत्साहित थी कि उसे अपने शरीर तथा गृह की कोई सुधि नहीं रह गयी थी- **"तज देह-गेह की सुधि को, / थी भक्ता ध्यानासक्ता। / जग-वैभव-सुख परित्यक्ता, / थी गुण-गण में अनुरक्ता।"**[69]

भक्ति की पराकाष्ठा स्वरूप शबरी प्रभु श्रीराम के प्रेम में उन्मत्त सी हो चुकी थी; वह राम हेतु जल लेने जाते समय अज्ञात रूप से किसी ऋषि को स्पर्श कर लेती है जिससे उस ऋषि को क्रोध आ जाता है। वे स्वयं को अछूत द्वारा स्पर्श कर दिये जाने के कारण स्वयं को अशुद्ध मानकर पुनः पम्पासर में स्नान करने के लिए चल पड़ते हैं परन्तु उनके पम्पासर में प्रवेश करते ही पम्पासर का जल रक्तरंजित हो उठता है तथा उसमें कीड़े दिखाये देने लगते हैं। इसे कवयित्री ने भक्ति परायण शबरी के अनुचित तिरस्कार का फल माना है- **"हो गया रक्तरंजित सर, / जल कीटों की क्या सीमा। / क्या भक्ति परायणा शबरी, / का तिरस्कार था धीमा।"**[70] दण्डक वन के निवासियों में भी श्रीराम के आगमन को लेकर बड़ी उत्कण्ठा थी तथा हर व्यक्ति प्रभु को अपने कुटी में लाना चाहता था और यह कार्य वह सर्वप्रथम सम्पादित करना चाहता था- **"जन-जन की थी उत्कण्ठा / प्रभु चरण कुटी में आये। / हो पुण्य लाभ दर्शन का- / जीवन को सफल बनाये।"**[71] श्रीराम के आगमन की बेला ज्यो-ज्यों समीप आती जा रही थी हरि दर्शन की उत्सुकता सबको विकल बनाती जा रही थी- **"श्री रामा-गम की बेला, / ज्यों-ज्यों समीप थी आती। / उत्सुकता हरि दर्शन की, / सबको थी विकल बनाती।"**[72] सभी सिद्ध-तपस्वी योगी, सन्यासी (जितने भी दण्डक वासी थे वे सभी) भगवत्दर्शनार्थ चल पड़े। 'मधु' कृत 'शबरी' के दण्डक वन के सभी निर्जीव व सजीव प्राणी भी श्रीराम के दर्शनों की उत्कंठा अपने-अपने ढंग से प्रदर्शित करते हैं। पवन मृदु गंध से ओत-प्रोत बहा करता था, पुष्पित, पल्लवित तरु भी सुसज्जित होकर श्रीराम की अगवानी हेतु प्रतीक्षारत थे। 'मधु' ने अपने खण्ड-काव्य में वन और वन्य प्राणियों का श्रीराम की प्रतीक्षा में विकल होने का बड़ा ही मनोहारी चित्र उकेरा है- **"श्यामा कल कण्ठ मधुर ध्वनि / "हरि आते होंगे" कहती, / उत्कंठा प्रभु दर्शन की, / चंचल चित व्याकुल करती।"**[73]

2-ख-IV दर्शन

श्रीराम के दर्शनों को प्राप्त होते ही शान्त मूर्ति ऋषि-मुनिगण चंचलायमान हो उठते हैं और अपना आतिथ्य ग्रहण हेतु श्रीराम से याचना करते हैं- **"वे शान्त-मूर्ति चंचल हो, / चरणों में गिरे विकल मन। / फिर बोले विह्वल होकर, / चलिए करिए कुटी पावन।"**[74] साथ ही

साथ उन्हें यह भी भय सताता है कि यदि शूद्रा शबरी के दर्शन प्रभु को प्रथम ही हो जाय तो कहीं यह कुदर्शन न बन जाय। रघुवर सभी ऋषिगणों से उस प्राणी का परिचय जानना चाहते हैं, जिसके कुदर्शन से अमंगल की प्राप्ति हो सकती है। मुनिगण अतीत मे किये गये अपने कुकृत्यों के भय से राम को शबरी का परिचय बताने में असमंजस में पड़ जाते हैं। पुनः साहस कर वे शबरी का परिचय निम्न शब्दों में देते हैं- **"बोला इस पुण्याश्रम के, / सन्निकट वर्तिनी शूद्रा। / अत्यन्त कुचील, कुदर्शन, / वृद्धा, भीलनी, अभद्रा।"**[75] श्रीराम सर्वप्रथम शबरी को दर्शन देने की अभिलाषा प्रकट करते हैं जिसने बहुत कष्ट सहकर भक्तिभाव से उनकी आराधना की है- **"उपकार व्रता देवी की, / बस गणना सर्व प्रथम है। / क्या कभी चर्म प्रिय होता, / जिसमें न कर्म का श्रम है।"**[76] एक ऋषि ने प्रभु श्रीराम को शबरी की पर्ण कुटी का रास्ता बताया जहाँ वह भक्ति भाव से ओत-प्रोत प्रभु दर्शन की उत्कण्ठा में डूबी हुयी है। उसकी पर्ण कुटी अत्यन्त मनोहर है। शबरी ने राम के लिए जल भर कर अपनी कुटिया में रखा है। राम के चरण-कमलों की आहट पाकर उसका हृदय भर आया और उसके मुख से यह वाक्य निकला कि **"आज मेरे सारे मनोरथ पूर्ण हो गये"**; ऐसा कहकर वह राम के चरण कमलों में साष्टांग दण्डवत करने लगी- **"रघुवर ने उसे उठाया, / जननी सम करके आदर। / फिर भक्ति भावना से भर, / बोले प्रभु उससे सादर।"**[77]

भगवान श्रीराम के द्वारा वर दिये जाने पर शबरी कहती है कि वह अधम नीच जाति की भीलनी स्त्री है; मूर्ख है तथा ज्ञान से विहीन है वह उनकी किस तरह विनती करे? शबरी की वाणी अज्ञानता से परिपूर्ण है। भगवान के पर्णकुटी में पधारने को वह सौभाग्य की बात मानती है। शबरी ने जो वरदान मतंग मुनि से प्राप्त किया था आज वह पूर्ण हो गया। इसके पश्चात् शबरी ने फलों को चख-चखकर प्रभु के समक्ष रखा- **"श्रीराम हर्षित होकर, / बर बदरी खाते-जाते। / पुलकित गद् गद् स्वर से, / गुण भूरि-भूरि ते गाते।"**[78]

श्रीराम शबरी के बेरों की मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हैं तथा लक्ष्मण से भी उन फलों को खाने का आग्रह करते हैं। लक्षमण मन में विचार करते हैं कि उच्छिष्ट भीलनी के जूठे बेर क्यों खायें? किन्तु जब प्रभु प्रेम सहित दे रहे हैं तो उनकी आज्ञा कैसे ठुकराऊँ? लक्ष्मण ने बड़े भाई की आज्ञा का पालन करते हुए फल को ले तो लिया परन्तु उन्होंने उसे अपने अधरों तक न ले जाकर चोरी से फेंक दिया- **"अग्रज की मर्यादा का, फल लेकर मान बढ़ाया। / पर फेंका आँख बचाकर, / अधरों तक पहुँच न पाया।"**[79] प्रभु श्रीराम को शबरी के जूठे बेर खाते सबने देखा। भगवान के इस प्रेम तत्व का संसार कोई मूल्यांकन नहीं कर सकता- **"प्रेमोपहार प्रेमी का, / मूल्यांकन वह क्या जाने। / उत्सर्ग न जिसने जाना / वह तत्व कहाँ पहिचाने।"**[80]

2-ख-V उपदेश

घट-घट व्यापी श्रीराम सौमित्र भाव को लक्षित करते हुए बोले कि मैं सदैव अपने भक्तों की मान-मर्यादाओं का ध्यान रखता हूँ। वह कहते हैं कि भले ही मेरा अपमान हो जाय पर अपने

भक्तों का अपमान नहीं होने दे सकता हूँ। भगवान कहते हैं कि जब अस्थि-मांस-मज्जा समस्त प्राणियों में समान रूप से विद्यमान है, तो यह जातिगत विषमता कैसी है? भगवान उपदेश देते हैं कि जो व्यक्ति पत्र, पुष्प, फल, जल ही मुझे आदर पूर्वक समर्पित करता है, मैं उसको सहर्ष स्वीकार करता हूँ। यह संसार परिवर्तनशील है तथा मानव शरीर नश्वर है। हे मनुष्य! यदि तुम्हें अजर अमर बनना है तो सेवा का व्रत धारण कर लो - **"सेवा-व्रत से बनता है, / जग में सर्वोत्तम मानव। / अन्यथा भार भूपर है, / अपकारी निष्कृय, दानव।"**[81]

प्रभु कहते हैं जिस मनुष्य के मन में यह विचार उत्पन्न होता है कि मैं कौन हूँ तथा यहाँ किस लिए आया हूँ, क्या तत्व है तथा कौन हमें बनाने वाला है और हमारा क्या कर्तव्य है? वह मुझे प्राप्त करता है। हृदय में दृढ़ विश्वास रख कर भय का त्याग कर जो प्राणी मेरी शरण में आता है मैं उस की भक्ति स्वीकारता हूँ। प्रभु श्रीराम शबरी को 'भामिनी' शब्द से संबोधित करते हुए कहते हैं कि हे भामिनी! मुझसे भक्त का मात्र भक्ति भाव से ही नाता है। बिना भक्ति के मनुष्य बिना जल के बादल के समान है- **"है भक्ति बिना नर ऐसा, / ज्यों बारिद हो बिना जल के।"**[82]

भगवान ने शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश भी दिया - **"सुन और बताऊँ तुझको, / नवविधा भक्ति मन हारी। / मैं गोप्य रखूँगा कैसे? / पाकर तुझसा अधिकारी।"**[83] प्रभु कहते हैं कि यदि नवविधा भक्ति में से मनुष्य को एक भी भक्ति प्रिय हो तो वह भक्त प्राणों के समान प्रिय है चाहे वह नर हो या नारी। श्रीराम शबरी से कहते हैं कि **"तूने सब प्रकार से मेरी भक्ति की है इसलिए मैं तुझे इच्छित वर देना चाहता हूँ।"** शबरी कहती है कि, उसकी सारी मनोकामनाएँ पूर्ण हो चुकी हैं; कोई कामना अधूरी नहीं है। फिर भी यदि प्रभु थोड़ी कृपा करके उसकी अन्तिम अभिलाषा को पूर्ण करें कि जो भी मनुष्य अपना अभिमान त्याग कर प्रभु चरण में आना चाहे उसे मनवांछित फल प्राप्त हो, तब प्रभु ने "एवमस्तु" कहा- **"फिर एवमस्तु प्रभु बोले / मेरा यह नियम अटल है। / आराध्य साधना का फल, / क्या जाता कभी विफल है।"**[84]

2-ख-VI निवेदन

समस्त ऋषियों के मन में यह धारणा थी कि राम पहले उनको दर्शन देकर, शबरी के घर जायेंगे पर ऋषियों के मान का दमन कर सर्वप्रथम राम शबरी की कुटी में गये। वहाँ पर सबने दोनों भाइयों को दर्भासन पर बैठे एवं शबरी को सेवा में संलग्न देखा। भक्ति परायणा शबरी उन्हें जूठे फल देती जाती तथा श्रीराम प्रेम से उसे खाते जा रहे थे- **"शबरी देती जूठे फल, / श्रीराम प्रेम से खाते। / ऋषि-मुनि-जन थे ईर्ष्या रत, / लक्ष्मण मन में सकुचाते।"**[85] ऋषियों को आया देखकर श्रीराम दर्भासन से उठकर, हाथ जोड़कर तथा शीश झुकाकर ऋषि-मुनियों को प्रणाम कर कहते हैं कि इस तपस्विनी शबरी ने कितना कष्ट उठाया है; इस भक्ता का भक्तिव्रत मुझे यहाँ खींच लाया है। प्रभु की यह वाणी सुनकर ऋषि-मुनिगण लज्जित हो उठे- **"अवरुद्ध कण्ठ हो**

बोले- / कुछ लज्जा से, कुछ दुख से- / अभिनन्दन नाथ! तुम्हारा- / हम करें भला किस मुख से।"[86]

सारे ऋषि-मुनिगणों को अपने किये पर पश्चाताप हो रहा है। वे कहते हैं कि अज्ञात रूप से हमने दीन शबरी का घोर अपमान किया है तथा हमसे यह अनुचित कार्य हुआ है। हमारे उन पापों का प्रायश्चित किस प्रकार होगा? तब प्रभु श्रीराम उन्हें समझाते हुए कहते हैं- **"मानव, अपने जीवन में- / त्रुटियाँ करता है अविरल। / पर पश्चात्ताप हृदय का / उसको कर देता है निर्मल।"[87]** सारे ऋषि-मुनि श्रीराम से एक निवेदन करते हैं कि यद्यपि इस आश्रम में अन्य प्रकार का कोई लेश मात्र भी कष्ट नहीं है, परन्तु आश्रमवासियों को एक बात का महान कष्ट है कि इस पम्पासर में जल होते हुए भी उन्हे घोर कष्ट उठाना पड़ता है। इस ग्रीष्म ऋतु में वे प्यास से दुखी रहते हैं। पहले इस पम्पासर का पानी अत्यन्त शीतल जल से परिपूर्ण रहता था लेकिन पता नही कैसी दुर्घटना घटी जो सरोवर का पानी दूषित हो उठा। यह करुण गाथा सुनकर श्रीराम का हृदय भर आया- **"यह व्यथा भरी गाथा सुन, / करुणा उर में न समाई। / तो पानी-पानी होकर / आँखों में आँसू लाई।"[88]**

2-ख-VII भ्रम निवारण

यह व्यथा सुनकर लक्ष्मण बोले कि इस दुख का कारण झूठा अभिमान है फिर इस शोक का निवारण कैसे होगा। तुम लोगों ने ज्ञानी ऋषिमतंग से द्वेष किया तथा शबरी को प्रतिक्षण अपमानित कर दुखी किया। ये उसी अनादर का फल है जो सरोवर का जल विष के समान हो गया है - **"है उसी अनादर का फल, / जो सर-जल-तरल-गरल है। / विष तरु बोकर नर कैसे; / पा सकता है अमृत फल।"[89]**

इस तपस्विनी शबरी के प्रति यदि तुमने कुत्सित भावना नहीं रखी होती तो फिर दुख से व्यथित होकर उसके आँसू जल में क्यों गिरते। लक्ष्मण ऋषियों से कहते हैं कि तुमने बाह्याडम्बरों को भक्ति का लक्ष्य माना है और उस श्रद्धा की जीवित प्रतिमा का तुमने अनादर किया है- **"श्रद्धा की जीवित प्रतिमा- / का तुमने किया निरादर। / मृत्तिका तुल्य मणि जानी, / सागर को समझा गागर।"[90]** लक्ष्मण कहते हैं कि यह पम्पासर तभी पवित्र होगा जब शबरी के वरद करों से सरोवर के जल का स्पर्श कराओगे। इसके स्पर्श करने से सरोवर का जल पहले जैसा हो जायेगा- **"इसके छू लेने भर से, / सर-सलिल पूर्ववत् होकर। / उपयोगी पुनः बनेगा, / निज कलुष कालिमा धोकर।"[91]** सारे ऋषि गण शबरी को लेकर पम्पासर के तट की ओर चल पड़े, चारों तरफ जयध्वनि फैल गयी। कुछ आश्रमवासी जो अपनी कुटियों में थे, वे जयध्वनि की आवाज सुनकर बाहर निकल पड़े तथा पूछने लगे कि यह कैसा शोर है? 'शबरी की जय' की ध्वनि से वन क्यों गुंजित हो रहा है? यह कैसी उल्टी गंगा आज आश्रम में बही है- **"वह बोला पम्पासर तट पर, / जुड़ रहा मनोहर मेला / क्या पता नहीं तुमको- / है आज पुण्य की**

बेला।"[92] शबरी ऋषि-मुनियों से सुशोभित होकर पम्पासर के तट पर आयी तथा सरोवर की दुर्दशा देखकर उसके नेत्रों से अश्रु निकल आये। वह सरोवर के जल को शीघ्र पवित्र करना चाहती थी- **"अब हुयी शीघ्रता उसको, / जल को पावन करने की । / बन के तृषार्त जीवों का, दुख सम्यक विधि हरने को।"**[93] शबरी ने जैसे ही सरोवर के जल को हाथ लगाया, रक्त और कीटों से दूषित सरोवर स्वच्छ जल से परिपूर्ण हो गया। इस अघटित घटना को सारे दर्शक देख रहे थे। यह दृश्य परम कौतुहलवर्धक तथा मन को प्रिय लगने वाला था- **"आश्चर्य-चकित से होकर- / थे चित्र खचित से प्राणी। / अब कहते क्या? लज्जा वश। / नतशीश, मूक थी वाणी।"**[94] वहाँ पर खड़े समस्त प्राणी अपने तन-मन को विस्मृत कर ऐसे खड़े थे मानो पाषाण की प्रतिमाएँ खड़ी हों।

2-ख-VIII आत्म ज्ञान

सारे ऋषिगण लज्जित होकर अपने कृत्यों पर पश्चात्ताप कर रहे थे। उनकी यह दशा देखकर श्रीरामचन्द्रजी मन ही मन में मुस्कराने लगे- **"बोले हे ऋषि-मुनि ज्ञानी। / मम वाक्य हृदय में धरना। / अब से न किसी सज्जन का / अपमान भूल से करना।"**[95] श्रीरामचन्द्रजी ने कहा तुमने यह कैसे समझ लिया कि नारी भजन-पूजन का अधिकार नहीं पा सकती? वह ज्ञान-विहीना शुचि सेवा भाव भजन क्या जाने। नारी जीवन को पुरुष ने ऐसे साँचे में ढाल दिया है कि वह स्वतंत्रता के अमृत का प्याला नहीं पी पायी। कोई मनुष्य क्या सूर्य-मण्डल पर धूल फेंक सकता है? यदि वह फेंकेगा तो वह अपना उपहास स्वयं करेगा। कौआ और कोयल दोनों ही एक वर्ण कलेवर होने पर भी कौए की आवाज कटु लगती है तथा कोयल की ध्वनि मधुर- **"है काक और पिक दोनों, समवर्ण कलेवर धारी। / रव काक; कर्ण कटु जग को, / पर पिक ध्वनि सबको प्यारी।"**[96] झूठा आडम्बर करके कोई ढोंगी कितना भी साधु बन जाय पर शीघ्र ही अन्ततोगत्वा हो जाता है और सत्य की विजय होती है। सत्कार्य श्रेयप्रद है जिससे तुम्हें वांछित फल भी मिल सकता है। जैसा तुम बीज बोओगे वैसा ही फल प्राप्त करोगे। श्रीराम शबरी से कहते हैं कि संकोच का त्याग करके जो इच्छा हो, वर माँग लो- **"शबरी बोली प्रभु ने है / मम सकल कामना पूजी। / इस लघु जर्जर जीवन में, / है आशा शेष न दूजी।"**[97] शबरी ने प्रभु से कहा कि वह अपना पार्थिव शरीर प्रभु के सन्मुख छोड़कर स्वर्ग चली जायेगी। प्रभु की आज्ञा लेकर शबरी स्वर्ग लोक को चली गयी। प्रभुवर ने अपने हाथों से शबरी की अन्त्येष्टि की- **"अन्त्येष्टि किया शबरी की, / निजकर से की रघुवर ने / वन इसीलिए आये थे, / भक्ताश्रम सार्थक करने।"**[98]

2-ख-IX समाज

माया देवी 'मधु' कृत शबरी के अन्तिम खण्ड समाज में रचना के उपसंहार हेतु तात्कालिक समाज में नारी की अधोस्थिति तथा दुर्दशा का मार्मिक चित्रांकन किया गया है। इसी क्रम में 'मधु' आधुनिक भारतीय समाज में नारी के प्रति किये जा रहे अत्याचार एवं शोषण को शबरीकाल से

चली आ रही परम्पराओं की विरासत घोषित करती है। कृति के आरम्भ में ही कवयित्री ने स्त्री की स्थिति का अवलोकन करते हुए लिखा है- **"..... यद्यपि श्रद्धा, मनीषा, शक्ति, भक्ति आदि नारी वाचक शब्द है, नारी ही संसार की जननी है फिर भी पुरुषों ने इस महिमामयी के महत्व को नहीं समझा। वे सदा उसको अपमानित और तिरस्कृत ही करते रहे।"**[99]

कवयित्री पुरुष और नारी की सामाजिक स्थिति की तुलना निम्न शब्दों में करती हैं- **"पुरुष पर्दे की आड़ में चाहे कितना ही अत्याचार एवं अनाचार करता रहे, पर उसके सारे अपराध रेत पर पड़ी पानी की बूँद के समान हैं, प्रत्युत्तर में यदि नारी किसी सत्कार्य की ओर भी प्रेरित होती है तो उसे शंका की दृष्टि से देखा जाता है।"**[100] ऐसा प्रतीत होता है कि शबरी की गाथा के माध्यम से कवयित्री 'मधु' ने अपने हृदय में उद्वेलित होने वाले विभिन्न विचारों को समाज के सम्मुख प्रकट किया है। श्रीराम द्वारा अहिल्या उद्धार एवं शबरी को दर्शन व नवधा भक्ति का उपदेश दिये जाने को अवलम्बन बनाकर आज के पुरुषों को मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम द्वारा प्रणयित चरित्र से शिक्षा लेकर स्त्रियों के प्रति सहिष्णु, उदार, शोभनीय तथा समान व्यवहार करने की प्रेरणादायी शिक्षा देने का प्रयास किया है। यद्यपि शबरी का कथानक 'मधु' ने आत्मज्ञान नामक खण्ड में सम्पूर्ण कर दिया है तथापि एक अतिरिक्त खण्ड शिक्षा देने तथा कृति को सम्पूर्णता प्रदान करने हेतु बढ़ा दिया गया है।

2-ख-X मूलकथा से साम्य और वैषम्य

'मधु' कृत शबरी का कथानक वाल्मीकि रामायण से प्रेरित प्रतीत होता है। राम का पंपासर आगमन, शबरी का आतिथ्य सत्कार इत्यादि प्रसंगों में साम्य दृष्टिगत होता है, तथापि शबरी द्वारा राम का जूठे बेरों द्वारा स्वागत करने के प्रसंग में वैषम्य है। इस कृति में 'मधु' ने अपने शब्दों में श्रीराम द्वारा शबरी को नवधा भक्ति का रहस्य बताया है, जो श्रीरामचरितमानस से प्रेरित है। इस प्रसंग के परिप्रेक्ष्य में वाल्मीकि रामायण के मूलकथा से वैषम्य दृष्टिगत होता है। प्रभुराम के दर्शनोपरान्त शबरी के शरीर त्याग के प्रसंग में मूल कथा से साम्य है परन्तु राम द्वारा शबरी का अन्त्येष्टि किये जाने के प्रसंग में वैषम्य है। इसके अतिरिक्त लगभग प्रत्येक प्रसंग 'मधु' का परिकल्पित वर्णन कहा जा सकता है।

2-ग गोविन्ददास कृत 'शवरी' का कथानक

गोविन्ददास कृत 'शवरी' के चारों खण्ड यथा- कहानी, एकांकी नाटक, एक पात्री नाटक तथा श्रव्य काव्यों नामक चतुष्पुष्पों से गुँथी यह कालजयी रचना कवि द्वारा प्रभु श्रीराम के चरण-कमलों में अर्पित एक पुष्पांजलि है। गोविन्ददास कृत 'शवरी' एक अद्‌भुत एवं विलक्षण रचना है जिसने आधुनिक हिन्दी साहित्य की विकास यात्रा के ऐसे आयामों व शीर्षों को छुआ है जिसकी कल्पना मात्र ही यथेष्ट है। विरले ही ऐसे रचनाकार हुए हैं जिन्होंने हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं पर एक समान अधिकार प्राप्त किया है। गोविन्ददास उपरोक्त चारों विधाओं में पूर्णरूपेण पारंगत, कुशल,

सिद्धहस्त एवं स्थापित रचनाकार हैं जिन्होंने लीक से हटकर एक ऐसी रचना का प्रणयन किया है जिसमें पाठकों को उपरोक्त चारों विधाओं का रसास्वादन एक साथ होता है। शवरी के गद्यांश भी गद्य काव्य के रूप में लिखे होने के कारण ही प्रस्तुत रचना को इस शोध विषय के लिए प्रमुख संदर्भ ग्रन्थ बनाया गया है। 'शवरी' की नायिका शवरी के जीवन वृतान्त एवं प्रभु श्री राम के दर्शनों के आख्यान को चारों विधाओं के अवलम्बन से जिस प्रकार निरूपित किया गया है उसका संक्षिप्त कथानक निम्नवत् है।

2-ग-I कहानी

यद्यपि गोविन्ददास की 'शवरी', अन्य कृतियों की 'शबरी' से साम्य रखती है परन्तु इन्होंने 'शवरी' नाम जान-बूझ कर चुना है जिससे प्रथमदृष्टया शबरी का शबर जाति से सम्बन्ध न प्रदर्शित हो सके। ग्रन्थ के इस भाग का आरम्भ परिवेश प्रतिबिम्बन से होता है। यह इस ग्रन्थ की अभूतपूर्व विशेषता ही कही जायेगी कि गोविन्ददास ने परिवेश प्रतिबिम्बन को प्रत्येक खण्ड और उपखण्ड का मुख्य विषय बनाया है। अपने कल्पना के रथ पर सवार होकर कवि ने बड़े ही यत्न एवं मनोयोग से उस काल के वातावरण की सृष्टि की है। उनका शब्दलाघव दृष्टव्य है। कहानी के आरम्भ में गोविन्ददास जी ने शवरी को छः वर्ष की श्यामवर्णीय अल्पवय बालिका बताया है जो दण्डकारण्य नामक वन में सप्तर्षियों के आश्रम में उनके संरक्षण में रहती है। इन ऋषियों के नाम क्रमशः ऋषि मारीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, ऋतु तथा वशिष्ठ हैं। ऋषि वशिष्ठ इक्ष्वाकु वंश के कुल पुरोहित ऋषि वशिष्ठ से भिन्न हैं। ये सातों ऋषि चार वर्षों तक आश्रम में निवास करने के पश्चात् देशाटन हेतु प्रस्थान करने वाले हैं। चतुर्वर्षीय युग की समाप्ति पर शवरी की अवस्था दस वर्ष की हो जाती है। गोविन्ददास की शवरी एक अनाथ, भील बालिका है जो ऋषियों की सेवा सुश्रुषा द्वारा पुण्यार्जन में दत्तचित्त है। गोविन्ददास जी ने शायद इसी कारण शवरी नाम अपनी कृति की नायिका हेतु उचित समझा है। चतुर्वषीय युग की अवधि में आश्रम में अपने प्रवास के दौरान ऋषिगण शवरी की सेवा भावना, गुरुभक्ति तथा भगवत्भजन में आस्था से बहुत प्रसन्न हैं, वे शवरी को कलित कथायें सुनाते हैं तथा विभिन्न प्रकार की शिक्षा एवं उपदेश भी देते हैं। सप्तऋषि शवरी को पुत्रीवत् स्नेह एवं सम्बोधन भी देते हैं। कथा का आरम्भ सप्तऋषियों द्वारा चतुर्वर्षीय एक युग की समाप्ति पर अपना प्रसार कार्य सम्पन्न करके प्रबोधिनी एकादशी को; जिस दिन यात्राएँ आरम्भ होती हैं, प्रदोष मुहूर्त में आश्रम से प्रस्थान करने के दृश्य से होता है। शवरी हमेशा स्वयं को आकाश के सप्तऋषियों के साथ रहने वाले तारे अरुंधती के समान समझती आयी है जो कभी वशिष्ठ से विलग नही होती परन्तु उसे इन सप्तऋषियों के साथ नहीं जा पाने के कारण उनके प्रस्थान के पश्चात् आश्रम में सर्वथा एकाकी रह जाने का दुख है। 'श्यामा' नामक धेनु को अपनी माता मानकर वह अल्पवय बालिका स्वयं को सान्त्वना देती है। 'श्यामा' के साथ उसे ऐसा नहीं लगता कि वह एकाकी है बल्कि वे दोनों साथ-साथ आश्रम में रहेंगे यह मान कर वह स्वयं को दिलासा देती है।

गोविन्ददास की शवरी यद्यपि दस ही वर्ष की है परन्तु चार वर्षों के ऋषियों के साथ रहने से एवं उनके द्वारा दिये गये ज्ञान और शिक्षा के फलस्वरूप उसमें अपनी अवस्था से अधिक परिपक्वता व ज्ञान की प्राप्ति हो गयी है जिससे उसमें साधारण बालिका सा ना तो बचपना रह गया है, न हठ और न ही चपलता। प्रयाण के समय ऋषिगण शवरी को अनेक प्रकार की शिक्षा और मार्गदर्शन देते हैं। ऋषि मारीच निम्न शब्दों में उसे आशीर्वाद देते हैं- **"पुत्री यह आश्रम आज से तेरा है। इस आश्रम में निवास करते हुए अतिथि सेवा करना। इस ओर ऐसे आश्रमों की न्यूनता है, जहाँ यात्री विश्राम कर अपने श्रम का निवारण कर सकें। यदि तेरी अतिथि सेवा भी हमारी सेवा के समान ही अगाध भक्ति के साथ चलती रही और इस आश्रम में आगन्तुकों को सच्चा विश्राम मिला तो निश्चय ही अतिथि के रूप में कभी तुझे भगवत्दर्शन भी होंगे।"**[101] शवरी की सेवा से प्रसन्न होकर ऋषियों द्वारा उसे दिया हुआ यह एक वरदान था। शवरी द्वारा शंका व्यक्त करने पर कि भगवत्दर्शन किस प्रकार होगा, होगा भी कि नहीं और अगर होगा भी तो किसी अवतारी पुरुष को वह किस प्रकार पहचानेगी, ऋषियों ने उसे भगवत्दर्शन की अवश्यम्भाविता का आश्वासन दिया। ऋषियों ने अवतारी पुरुष की पहचान बताते हुए कहा कि- **"प्रज्जवलित पावक राख से परिवेष्ठित होने पर भी पहचान लिया जाता है।"**[102] परन्तु ऋषिगणों ने शवरी को भगवत्दर्शन का सही समय नहीं बताया। शवरी ने बाल्यावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक ऋषिगणों के वरदान पर अखण्ड विश्वास रखते हुए प्रभु की प्रतीक्षा की और जब रामावतार हुआ तो भगवान रामचन्द्र ने दक्षिण में पधार कर शवरी को दर्शन दिया।

2-ग-II एकांकी नाटक

आश्रम में एकाकी रह जाने वाली शवरी का स्वयं एवं अपने चतुर्दिक वातावरण, प्राणियों इत्यादि से संवाद एकांकी नाटक के रूप में व्यक्त किया गया है।

2-ग-II-1 प्रथम दृश्य : रचना का दूसरा भाग एकांकी नाटक है जो तीन दृश्यों में विभक्त है। नाटकों की रचना के मानदण्डों के अनुसार सर्वप्रथम गोविन्ददास जी स्थान, समय व दृश्य की परिकल्पना और उसका शाब्दिक निरूपण करते हैं। प्रथम दृश्य में दस वर्षीय शवरी कूप से नीर खींचते हुए गीत गुनगुना रही है। उसे ऋषियों के प्रस्थान के पश्चात् स्वयं के आश्रम में एकाकी रह जाने का बड़ा दुख है।

2-ग-II-2 द्वितीय दृश्य : एकांकी के द्वितीय दृश्य में स्थान वही है। मध्याहन के समय मण्डप में मध्य आयु एवम् जटायुक्त तथा श्मश्रु वाले सात ऋषि जो वल्कल वस्त्रों से विभूषित यज्ञ में संलग्न हैं।

2-ग-II-3 तृतीय दृश्य : सप्तऋषियों का आश्रम से प्रस्थान का दृश्य है। विदा के समय दस वर्षीय शवरी ऋषियों के उपदेश पर अश्रुपात करने लगती है। उसकी सेवा से प्रसन्न ऋषिगणों ने उसे भगवत्दर्शन का आशीर्वाद दिया और वहाँ से प्रस्थान किया।

2-ग-III एकपात्री नाटक

गोविन्ददास ने 'शवरी' नामक रचना के तृतीय खण्ड के एक पात्री नाटक के द्वारा एक नवीन विधा का प्रतिपादन किया है।

2-ग-III-1 प्रथम दृश्य : प्रथम दृश्य में रचनाकार ने उषाकाल का बड़ा ही सजीव वर्णन किया है। कवि ने अपनी कल्पना द्वारा उसे जीवन्त कर दिया है। शवरी, ऋषियों द्वारा दिये गये वरदान पर अटूट विश्वास रखकर उत्कण्ठा पूर्वक भगवत्दर्शन की प्रतीक्षा करने लगती है। शवरी और धेनु श्यामा दो ही प्राणी आश्रम में विद्यमान हैं। शवरी प्रभु के आगमन के समय प्रभु के स्वरूप, प्रभु के आगमन के प्रयोजन एवं प्रभु के आगमन के फलस्वरूप पूर्ण होने वाले उद्देश्यों की परिकल्पना करती है। इसी क्रम में वह स्वयं से प्रश्न पूछती है और स्वयं ही उत्तर भी देती है। एक पात्री नाटकों की यही विशेषता है।

2-ग-III-2 द्वितीय दृश्य : एक चतुर्वर्षीय युग की समाप्ति पर शवरी चतुर्दश वर्षीय तरुणी हो चुकी है और श्यामा का स्थान उसकी पुत्री चतुरब्दा चितकबरी 'शबली' ने ले लिया है। शवरी आश्रम में ऋषियों की आज्ञानुसार अगाध श्रद्धा भक्ति से आगन्तुकों का आतिथ्य सत्कार करती हुयी भगवत्दर्शन की प्रतीक्षा कर रही है। हेमन्त ऋतु में प्रभु आगमन न होने से शवरी एक तरह से संतुष्ट ही है क्योंकि उसे लगता है कि विपिन निवासिनी वह फल फूलों के बिना भगवान का स्वागत किस प्रकार करेगी। वह अनुमान लगाती है कि या तो अभी तक अवतार ही नहीं हुआ अथवा अल्पव्यस्क होने के कारण प्रभु का दक्षिण आगमन नहीं हुआ। शवरी आशा करती है कि यदि भगवान उसकी वय के हों तथा उसके शान्त स्वभाव के विपरित चारु, चंचल, चपल भी हों तो वह संकोच त्यागकर प्रभु के साथ खेलेगी। अपने आतिथ्य सत्कार से प्रभु को प्रसन्न करने के अतिरिक्त अपने कौतुकों से भी प्रभु को रिझाने में शवरी को प्रसन्नता ही प्राप्त होगी। **"... किन्तु पाऊँ मैं समवयस्क यदि प्रभु को / तो आतिथ्य से ही क्यों, रिझाऊँ कौतुकों से भी।"**[103] (कुछ रुककर) **"केवल रिझाऊँ ही? स्वयं भी मैं न रीझूँ क्या? / हाँ, हाँ, आप रीझूँगी कभी न जैसी रीझी मैं।"**[104]

2-ग-III-3 तृतीय दृश्य : दो वर्षों के पश्चात् जब शवरी की अवस्था सोलह वर्ष की हो जाती है तब उसका शारीरिक एवं मानसिक विकास तथा उसके क्रियाकलापों का निर्धारण उसकी वय के अनुसार होता है। अभी भी वह उसी प्रकार प्रभु की प्रतीक्षा करती है। अनेक प्राकृतिक पदार्थों से आश्रम को आभरणयुक्त बनाती है। वह हर गृहागत को आरम्भ में अवतार ही मानकर उसका आदर सत्कार करती है। उसके गुणकर्मों का गूढ दृष्टि से निरीक्षण भी। हेमंत की ठिठुराने वाली ठंड शिशिर की सहनीय शीत में परिणत हो गयी है। वह शवली धेनु से प्रभु के न आने का कारण पूछती है, तथा पतझड़ में गिरने वाली पत्तियों से अठखेलियाँ करती है। उसे ऐसा प्रतीत होता है मानो सूखी पीली पत्तियाँ और शवली धेनु उससे छेड़-छाड़ कर रहीं हैं जैसे वह कोई विरहिणी नायिका हो। झुंझला कर वह कहती है- **"छेड़ती हो तुम सब क्यों मुझे निगोड़ियों!"**[105]

2-ग-III-4 चतुर्थ दृश्य : शवरी की प्रभु प्रतीक्षा में दो वर्ष और व्यतीत हो गये हैं। वह पूर्ण वयस्क स्त्री हो गयी है। वह श्याम वर्ण होते हुए भी सौन्दर्यमती हो गयी है। उसकी अतिथि सेवा, आगंतुकों में अवतार अन्वेषण तथा भगवत् स्वागत की तैयारी भी पूर्ववत् है। गोविन्ददास ने अपनी कल्पना द्वारा हेमंत ऋतु का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया है। इसी दृश्य में गोविन्ददास की शवरी प्रभु राम से कान्ताभाव में अभिसिंचित वर्णित हुयी है। शवरी गीत गाती है - **".... ओ सौन्दर्य सागर पधारो हे, पधारे हे! / मेरे, प्राणनाथ मैने कितनी प्रतीक्षा की- / सोचा नहीं क्या-क्या, किया मैने नहीं क्या-क्या है।"**[106]

2-ग-III-5 पंचम दृश्य : बारह वर्षों के एक युग के अन्तराल पर जब शवरी की अवस्था तीस वर्ष की है, और उसमें प्रौढ़ता का प्रवाह आ गया है, तब भी उसकी प्रभु-प्रतीक्षा, स्वागत-साज, अतिथि-आदर और गृहागतों में भगवत् खोज वैसे ही चल रही है। यौवनावस्था के विपरीत उसमें सादगी का समावेश हो गया है। उसका मानस-पटल झंझावत के पश्चात् शान्त हुए जल के समान निर्मल हो उठता है। प्रभु का आगमन नहीं होने से शवरी थोड़ी उद्विग्न हो उठती है, तथापि ग्रीष्म ऋतु की तीक्ष्णता एवं ताप के कारण उसे करुणानिधान के पधारने में हुआ विलम्ब श्रेयष्कर जान पड़ता है। वह प्रभु के स्वभाव एवम् क्षमताओं के विषय में अनेक प्रकार की कल्पनाएँ करती है- **".... होंगे भगवान कैसे कह भला, धवले? / धीरोदात्त होंगे प्रभु धीरोद्धत अथवा / किंवा धीर ललित, प्रशांत धीर होंगे वा?"**[107]

2-ग-III-6 छठा दृश्य : द्वादश वर्षीय एक और युग की समाप्ति पर शवरी की अवस्था बयालीस वर्ष की है। प्रौढ़ता के साथ-साथ उसमें प्रथुलता आ गयी है पर उसकी सादगी और स्वच्छता बढ़ गयी है। इस दृश्य में रचनाकर ने वर्षा ऋतु का मनभावन वर्णन किया है। शवरी अपनी अवस्था के अनुसार वात्सल्य रस से परिपूर्ण वर्णित हुयी है- **"पुत्री! न्यून होंगे प्रभु मुझसे वयस में। / होते तुल्य वय के तो आ जाते प्रथम ही। / दुष्टों के दमन हेतु यौवन ही ठीक हैं। / तो इस अवस्था के प्रमेद से मै उनको पुत्रवत मानूँ न क्यों? पूत प्रेम माता का!"**[108]

2-ग-IV श्रव्यकाव्य

श्रव्यकाव्य में गोविन्दास अब तक के कथानक को विस्मृत कर एक नई शुरुआत करते हैं। इसमें वे एक यात्रा वृतांत के माध्यम से कथा का प्रणयन करते हैं। इस प्रकार श्रव्यकाव्य, कहानी, एकांकी व एक पात्री नाटक से बिल्कुल अलग जान पड़ता है। इनके अनुसार अवध से पधारे हुए एक अतिथि से शबरी को महाराज दशरथ के चारों पुत्रों के जन्म का शुभ समाचार और उसके पूर्व का वृतान्त विदित हुआ। गृहागत द्वारा यह समाचार सुनकर वह अत्यधिक हर्षित हो उठती है। उसे प्रभु के प्राकट्य के बारे में और अधिक जानने की उत्सुकता उत्पन्न हो जाती है। समय पंख लगाकर उड़ा जा रहा था और शवरी को यदा कदा अवध से समाचार प्राप्त होते रहते थे। बहुत वर्षों के पश्चात् किसी अन्य गृहागत द्वारा महर्षि विश्वामित्र के मख की रक्षा हेतु षोड़श

वर्षीय राम और लक्ष्मण द्वारा महाराक्षसों सुबाहु और ताड़का आदि के दमन का समाचार प्राप्त होता है। इसके पश्चात् शवरी की श्रीराम के दर्शनों की उत्सुकता और बढ़ जाती है - **"यों ही बहुवर्ष बीते, एक दिन उसने / सुना एक यात्री से महर्षि विश्वामित्र के / मख का वृत्तान्त जिसके लिए श्री राम ने / सोलह बरस से भी न्यून लघु वय में / मारे महाराक्षस सुबाहु-ताड़कादि से।"**[109]

तदनन्तर मिथिला में प्रभु राम द्वारा शिव जी का धनुष भंग किये जाने की घटना से शवरी को उनके अवतारी होने का पूर्ण विश्वास हो जाता है। शवरी अब सीता सहित राम के दर्शनों के लिए व्यग्र हो जाती है। इस घटना के बारह वर्षों के उपरान्त भी जब श्रीराम का पदार्पण उसके आश्रम में नहीं हुआ तो शबरी की उत्कण्ठा में इतनी वृद्धि हो गयी कि वह भगवान से मनाने लगी कि दक्षिण में दैत्यों का अत्याचार बढ़े। जिससे रक्षा हेतु प्रभु शीघ्र पधारें और उसे दर्शन दें। रामचन्द्र के चौदह वर्ष के वनवास के दुखद समाचार से उसे सुख प्राप्त हुआ। कुछ समय के पश्चात् शवरी को लगने लगा कि दण्डक वन में प्रभु का आगमन किसी भी क्षण हो सकता है। चित्रकूट में प्रवास की अवधि में जब भरत श्रीराम को अयोध्या वापस ले जाने के लिए आते हैं तो शवरी निराश हो उठती है। रामचन्द्र के वनवास की अवधि में जब शवरी की अवस्था चौरासी वर्ष की थी, उसके अंग दुर्बल और इन्द्रियाँ शिथिल हो चली थी, उस समय उसे पश्चात्ताप होता था कि यदि प्रभु आगमन हुआ भी तो क्या वह उन्हें ठीक प्रकार से देख सुन पायेंगी- **"दुर्बल थे अंग और इन्द्रियाँ शिथिल थीं, / दृष्टि और कर्ण वैसा काम नही देते थे। / आता मन में था यही-प्रभु जब आवेंगे। / कैसे उन्हें ठीक-ठीक देख सुन पाऊँगी?"**[110]

वह स्वयं को सान्त्वना भी देती है कि यदि मरण से पूर्व वह प्रभु के चरण भी स्पर्श कर सकेगी तो वह कृत-कृत्य हो जायेगी। अपनी तीव्र उत्कण्ठा के वशीभूत होकर कभी-कभी वह यह भी सोचती है कि वह स्वयं ही प्रभु के दर्शनों के लिए पंचवटी क्यों नहीं चली जाती? पुनः उसे ऋषियों द्वारा दिये गये आशीर्वाद का स्मरण हो उठता है कि उसे तो प्रभु का स्वागत सत्कार भी करना है। तत्पश्चात् उसे शूर्पणखा प्रसंग, खर दूषण प्रसंग तथा सीता हरण के प्रसंग कर्णगत होते हैं जिन्हें सुनकर वह स्तब्ध हो जाती है, परन्तु उसे इन सारे कार्यों में राम के अवतार के निमित्त दुष्टों का दमन तथा धर्म संस्थापना का उद्देश्य ही दृष्टिगत होता है। प्रभु के दक्षिण आगमन का समाचार सुनकर शवरी दिन रात किसी भी समय प्रभु का आतिथ्य करने हेतु प्रस्तुत रहती है। कभी-कभी उसे लगता है कि राम के दर्शन के बिना ही वह मृत्यु को प्राप्त हो जायेगी और उसकी प्रभु के दर्शन की अभिलाषा अपूर्ण रह जायेगी फिर भी उसे ऋषियों के वरदान पर अखण्ड विश्वास है। अन्त में वह शुभपवन प्रभात भी आता है जब शवरी के आश्रम में भ्राता लक्ष्मण के साथ रामचन्द्र जी पधारते हैं। सहसा शवरी में श्रवण शक्ति संचरी और उसकी जरा और दुर्बलता दूर हो गयी उसकी आँखों में नयी चमक आ गयी और बचपन की स्फूर्ति उसके शरीर में वापस आ

गयी और वह प्रभु के स्वागतार्थ दौड़ पड़ी- **"दौड़ी वह स्वागतार्थ, साथ चले उसके- / आश्रम के सारे जड़ चेतन भी हर्ष से।"**[111]

राम के दर्शन होने पर वह उन्हें चिरपरिचित सा पाती है और वह विस्मय पूर्वक उन्हें देखती रह जाती है। अपनी कल्पना से उसने राम के जो चित्र खींचे थे, वे सभी उनमें क्रम से दिखाई पड़ते हैं। शवरी आनन्दातिरेक से विभोर होकर प्रभु के स्वागत में उन्हें पुष्पमाल्यार्पण करती है तथा उनके पदपंकजों को पखारती है। जो कन्दमूल फल उसने चुन-चुनकर सहेज कर रखे थे उन्हें प्रभु को अर्पित करती है। वे दोनों भाई उसे सहर्ष ग्रहण करते हैं। फलाहार समाप्त हो जाने के पश्चात् वह प्रभु से एक प्रार्थना करती है कि अब कभी आपसे वियोग न हो। गोविन्ददास जी ने शवरी का प्रभु में एकाकार होने का वर्णन निम्न पदों में किया है- **".... इतना उन्हीं से और आप करे अन्त में, / मुझको वियोग अब हो ना कभी आपका। / इन चरणों में यही मेरी एक प्रार्थना है। / एक दिव्यालोक तब शवरी के नेत्रों से / निकल तुरन्त प्रभु नेत्रों में समा गया, / उसका अचेष्ट तनु उनके पदों में था।"**[112]

2-ग-V मूलकथा से साम्य और वैषम्य

गोविन्ददास कृत शवरी के कथानक में वाल्मीकि रामायण से साम्य दृष्टिगत होता है। गोविन्ददास ने शवरी की बाल्यावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक का चरित्रांकन मनोवैज्ञानिक धरातल पर किया है। शवरी द्वारा राम का आतिथ्य करने के प्रसंग मे मूलकथा से साम्यता है। इस कृति में शवरी द्वारा राम को जूठे बेर खिलाने का कोई वर्णन प्राप्त नहीं होता है। इससे दोनों कथानक में साम्यता दृष्टिगत होती है। इस कृति में नवधा भक्ति का भी कोई उल्लेख प्राप्त नहीं होता है। इसके अतिरिक्त कृति की पात्र योजना तथा परिवेश सर्वथा काल्पनिक है। शवरी द्वारा शरीर त्याग के प्रसंग में मूलकथा से साम्य दृष्टिगत होता है।

2-घ श्री धनंजय अवस्थी कृत 'शबरी' का कथानक

प्रस्तुत खण्ड-काव्य 'शबरी', श्री धनंजय अवस्थी; जो आधुनिक काल के एक यशस्वी एवं मूर्धन्य साहित्यकार हैं, के द्वारा रचित है। इस खण्ड-काव्य की भूमिका में राष्ट्रकवि पं. सोहन लाल द्विवेदी की निम्न टिप्पणी इस खण्ड-काव्य की प्रासंगिकता का प्रमाण है- **"आज वर्ण संघर्ष में राष्ट्र का स्वरूप क्षत-विक्षत हो रहा है, शस्त्र द्वारा नहीं, रूढ़ियों, विसंगतियों द्वारा। सही समझ, मानवीय सोच सम्यक ज्ञान तथा मानसिक एकता द्वारा इससे सहज मुक्ति मिल सकती है। एक ऐसे भावात्मक वातावरण की आवश्यकता थी जिसकी पूर्ति निश्चित ही प्रस्तुत शबरी खण्ड-काव्य से होती है।"**[113] प्रस्तुत खण्ड-काव्य में शबरी के जीवन के नये पृष्ठ व नये आयाम उद्घाटित किये गये हैं जिससे न केवल उत्तर वरन् दक्षिण भी प्रस्तुत काव्य की परिधि में उजागर होता है। प्रस्तुत खण्ड-काव्य में आठ यात्रा बिन्दु रखे गये हैं जिनका कथानक निम्न है-

2-घ-I उद्‌भावना

यह कथा उस समय की है जब समाज आश्रम के ऋषियों-मुनियों द्वारा संचालित व प्रतिभाषित होता था। लोगों में सत्य के प्रति निष्ठा और न्याय की प्रतिष्ठा थी। ऋष्यमूक पर्वत के घने पेड़ों की छाँव से दूर अन्त्यज, अछूतों का एक गाँव था। वहाँ के लोग अथक परिश्रम करते थे। उनका आपस में कोई ईर्ष्या द्वेष भी नहीं था तथा वे अपने कर्तव्यों में प्रतिबद्ध थे। उन्हीं गिरि प्रान्तों में राजा शबर का प्रशासन था। उनका अनुशासन बहुत प्रबल था। राजा स्वयं परिश्रम करने वाला व्यक्ति था। एक दिन सूर्योदय होने के पश्चात् चारों दिशायें बसंत ऋतु के कारण उल्लसित थे। ऐसे में राजा शबर बहुत प्रसन्न थे क्योंकि उनकी पुत्री के विवाह का शुभ अवसर था। दरवाजे पर बन्दनवार झूल रहे थे; मण्डप सजा था। एक तरफ सारे बन्धु-बान्धव, गुरुजन तथा नगर के निवासी खड़े थे। अचानक शबरी ने विस्फारित नेत्रों से वन्य पशुओं पर अत्याचार होते हुए देखा। कवि के शब्दों में- **"सहसा-! / पर, अकल्पित, / कैसी यह त्रासदी? / देखा जब शबरी ने / विस्फारित आँखों से / मूक वन्य पशुओं पर / घोर कुलिश वज्रपात / संघात् - / दारुण- / दाहक प्रसंग / पशुओं पर प्रखर खड्ग / स्रवित अमित रक्त-धार / उर भेदक चीत्कार।"**[114]

यह देखकर उसका शरीर काँपने लगा और वह अपने प्यारे छोटे शावक 'छगलक' को ढूँढने लगी, जिसे उसने प्यार से पाला था, बचपन से उसे अपने साथ भोजन खिलाती थी। वह प्यारा सा शावक कहाँ खो गया वह चारों तरफ उसे ढूँढ़ने लगी। अन्त में वह कहीं नहीं मिला, उसका अन्तर्मन विलाप करने लगा, वह रुँधे कण्ठ तथा सजल नेत्रों से सबसे पूछती, कोई कुछ नहीं बता रहा था। अचानक उसके कानों में आवाज आयी कि उसका छगलक बलि दे दिया गया है। उसे याद आने लगा कि पहले भी एक बार छगलक की बलि दी जाने वाली थी तब उसने आगे बढ़कर प्रतिरोध किया था। आज उन्हीं बधिकों ने मेरे छगलक का वध कर दिया। वह रोती कलपती बधिकों को श्राप देती रही। छगलक के बलिदान ने शबरी के अन्तस को भेद दिया तथा उसके प्राणों को छेद कर क्रान्ति का बीज बो दिया।

2-घ-II क्रान्ति

वह शबरी साँवली सलोनी भिल्लिनी थी, जिसने अभी कुछ ही बसंत देखे थे। विवाह के सम्बन्ध में उसे कुछ भी ज्ञात नहीं था। शिक्षा के स्थान पर वह चौपाल की कथाएँ ही जानती थी। वह व्याकुल सी पिता से पूछती है कि यह कैसा समारोह है; तथा उसके पौष्य छगलक की बलि किसने दी? शबरी बहुत अबोध है, वह समारोह देखकर पिता से पूछती है- **"क्या एक और माई घर आयेगी?"** उसकी अबोधता पर शबरराज हँस पड़े तथा उनका अपनी अबोध पुत्री से निम्न वार्तालाप कविवर धनन्जय अवस्थी द्वारा एक मुदित पिता की दशा का सुन्दर निरूपण है - **"मोद मग्न शबर प्रवर। / मुकुलित हो- / बोल उठा। / बेटी- / तू जानती नही है / यह तेरे ही विवाह का उछाह है / सृष्टि का प्रवाह है।"**[115]

शबरी द्वारा विवाह का विरोध करने पर शबरराज उसे समझाते हुए कहते हैं, कि ब्याह का निरादर उचित नही है। सारे बन्धु-बान्धव तथा बिरादरी उन्हें दुत्कारेगी व वे जाति च्युत कर दिये जायेंगे। पिता का निर्देश पाते ही वह अबोधा अपनी सहेलियों के साथ चली जाती है। वह मन ही मन विचार करती है कि सिन्दूर का त्याग कर घर-वर छोड़कर कहीं चली जाये। उसने बचपन में एक दिन पुर की महिलाओं से अपनी माँ को बातें करते सुना था- **"बचपन में एक दिवस / पुर की महिलाओं से / माई की बातों में / एक बात यह भी थी / कच्ची उमर का ब्याह / विपदाएँ भरता है / कटुताएँ गढ़ता है / कभी न स्वीकारें इसे बेटियाँ / सहनी ही क्यों न पड़े हेटियाँ / क्वँारी ही जी लेना, / अच्छा है।"**[116]

वह मन ही मन में निर्णय करती है कि माई ने जो कहा था वह वही करेगी। बचपन का सुना हुआ उसे भूला नहीं है। वह समाज तथा घर कुटुम्ब छोड़ने का विचार करती है; तथा घर से भाग जाना चाहती है, लेकिन उसकी विवशताएँ उसको परिस्थितियों से समझौता करने के लिए बाध्य भी करती हैं। अन्ततः वह अपने आप से जीत गयी और उसका मोह जाल टूट गया। वह सुहाग का पंथ छोड़कर प्रभु श्रीराम एवं जीवन के उत्कृष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अनजान दिशा में दौड़ चली। सामने घनघोर अँधेरा था, प्रभु का अवलम्बन लेकर वह निर्भय होकर चली जा रही थी। जब शबरराज को यह बात पता चली तो वह अचेत हो गये- **"हो गये शबर अचेत- / लौट गये एक-एक / बन्धु-बान्धव समेत, / बोझिल मन- / पुरजन के। / परिजन के / दम्पत्ति- / श्री हीन / दीन / टूट गयी, बजने से पहले ही / मधुर बीन।"**[117] शबरी गृह त्याग के बाद सिर्फ छगलक की याद लिए अनजान दिशा की ओर चल पड़ती है। क्रान्ति का पटाक्षेप जागरण में होता है।

2-घ-III संघर्ष

धनंजय अवस्थी की शबरी चलते-चलते एक पुर में पहुँच जाती है जहाँ सम्पन्नता, वैभव और ऊँची-ऊँची अट्टालिकायें हैं। भौतिक समृद्धि एवं वैभव विलास युक्त नगरीय सभ्यता का वर्णन, नगरीय लोगों द्वारा एक अस्पृश्य, अनपढ़, गँवार, व्यथित एवं कुछ-कुछ भ्रमित शबरी का तिरस्कार एवं अपमान तथा इस तिरस्कार तथा अपमान के कारण दुखी होकर शबरी द्वारा अश्रुपात करने का वर्णन है। जन-जन के व्यंग्य वाणों से शबरी का अन्तस छलनी हो उठता है। नगर में किसी भी नागरिक द्वारा आश्रय प्रदान न किये जाने से निराश शबरी आवास खोजने लगती है। अन्ततः उसे ऋष्यमूक गिरि की गुफाओं में आश्रय मिलता है। शबरी के लिए गुफा के द्वार खुले हैं, वह वहाँ पर सहज सहानुभूति पा जाती है। गुफा की शिलाएँ उसकी सहेलियों के समान हैं जिनसे वह अपनी उलझी आपदाओं के विषय में बातें करती है। उसका आहार कन्दमूल है तथा अपनी प्यास उन्मुक्त जल प्रपातों से मिटाती है। उस गुफा में प्रवेश करके वह भीलनी शबरी धन्य हो गयी- **"धन्य हुयी भीलनी / प्रवेशिनी, / प्रवासिनी। / धन्य हुए शैल खण्ड पाकर- / पुर निवासिनी।"**[118]

उसे यह गुफा परिचित सी लगने लगी है। शबरी को प्रकृति के बीच में रहना अत्यन्त सुखद लगता है। उसके दिन इसी व्रत के परिपालन में व्यतीत होने लगे हैं। शबरी अब यौवनावस्था को प्राप्त हो चली है। उसके हृदय में अनमोल सपने सजते रहते हैं। वह मन ही मन अपनी कल्पनाओं के जाल बुनती रहती है। सहसा उसके मन में एक विचार कौंधता है कि यहीं पर कहीं मतंग मुनि का आश्रम है जहाँ कोई न बड़ा है न कोई छोटा। ऊँच-नीच का कोई भेद भाव नहीं है। मुनि मतंग का आश्रम विधि का वरदान है- **"धरती यह- / करुणा की। / जहाँ न- / बड़ा-छोटा है। / न, भेद ऊँच नीच का, / कुजाति का, / सुजाति का, / कुलीन, अकुलीन का, / विधि का वरदान एक, / मुनि मतंग का आश्रम।"**[119] शबरी मतंग मुनि की तपस्थली की ओर प्रस्थान करती है।

2-घ-IV चेतना

शबरी को मतंग आश्रम के आस-पास रहते हुए कई दिन बीत गये। वह दिन भर वन में भ्रमण करती तथा रात्रि को एक शैल खण्ड पर विश्राम करती है। एक दिव्य शैल खण्ड पर जहाँ शबरी सोती थी, एक रात उसकी इच्छाएँ स्वप्न में प्रतिबिम्बित हो गयीं। उसने स्वप्न में देखा कि वह आश्रम की शिष्या है तथा मतंग मुनि के पाँव पखारती है। मतंग मुनि के आश्रम में कठोर अनुशासन है। एक तरफ पूजा का स्थान है तथा दूसरी तरफ कर्म-काण्ड, विधि-विधान साधना, उपासना के लिए स्थान है। आश्रम के आस-पास अनेक प्रकार के फलों से लदे हुए वृक्ष हैं। अनेक प्रकार के पुष्प अपनी मनमोहक सुगन्ध चारों तरफ फैला रहे हैं। वन के प्राणी आपस में वैर-भाव भुलाकर प्रेम सहित रहते हैं। सारे बटुक वृन्द गाय की पूजा करते हैं। गाय के गोबर से मुनि का आश्रम लीपा जाता है। अचानक उसका स्वप्न टूट जाता है तथा वह आँख मींचते हुए जग जाती है- **"टूट गयी स्वप्न कड़ी- / मींचते नयन, जगी / तथ्य के धरातल में। / स्वप्न-चाह पल-पल में। / फिर वही / विभीषिका / त्राण की मरीचिका / गूँजे संकल्प-घोष, / गूँजी संभावना।"**[120]

वह प्रतिदिन प्रातःकाल होने से पूर्व तथा संध्या से पूर्व मार्ग को बुहारती, झाड़ती तथा सँवारती है। वह प्रातःकाल आम की डालियाँ बटोर कर रख आती, जिसे लेकर मुनि आहुतियाँ देते हैं साथ ही साथ वह फूल, बेल-पत्र अज्ञात भाव से रख आती है- **"आम्र डालियाँ बटोर / रखती निष्काम / जिन्हें लेकर मुनि / आहुतियाँ देते थे / यज्ञों की। / साथ-साथ / फूल, बेलपत्रों को / रखती थी अज्ञात, / सेवा का क्रम अबाध, / स्वीकृत अस्वीकृत में बन गया सहज स्वभाव।"**[121] शबरी के जीवन की यह सुखद साध थी कि वह गुरु चरणों में समर्पित हो जायेगी। एक प्रातःकाल समिधा की सुविधा पाकर आश्चर्य चकित होकर मुनि भ्रमित हो गये तथा मुख्य द्वार स्वच्छ देखकर सशंकित हो गये कि यह किसका योगदान है। कौन इतना महान व्रती है जो सेवा का गुप्तदान कर रहा है। एक प्रातः काल होते ही मुनि के मन में विचार आया कि देखें मुख्य द्वार पर कौन है जिससे मन का भ्रम मिट जाय। मुनिवर शयन सुख त्याग कर चुपचाप द्वार

पर आकर देखने लगे कि यह किसका सेवा क्रम है। मुनि मतंग वह दृश्य देखकर दंग रह गये। उन्होंने देखा कि एक भीलनी यौवना किंचित भयभीत और अधीर होकर अपने कार्य में तन्मय है। मतंग मुनि सशंय की धारा में डूबने लगे। क्रोध से उनका अंग-अंग काँपने लगा। वह सोचने लगे कि यह मायवी छलना यज्ञ-साधना को खण्डित करने तथा बटुकों का पथ विचलित करने के लिए आयी है- **"सोचने लगे मतंग / यह अनंग की कमान / इन्द्र परिचालिता? / मायावी छलना सी, / याग यज्ञ खण्डना / बटुकों का पथ विचलित करने को / आई / बन, काम तृषा पीड़िता? / क्यों न इसे भस्म करुँ।"**[122] थोड़ा रुककर मुनि बोले तुम कौन हो और यहाँ अकेली क्यों आयी है? तब भीलनी मुनि के समीप आकर भयभीत होकर मुनि के चरणों में गिर पड़ी और बोली मैं शबरपुत्री शबरी हूँ; अनाश्रिता, परित्यक्ता, जग से उपेक्षित भीलनी, यही मेरा परिचय है। मेरी एक प्रार्थना है- **".... और एक अनुनय है- / मुझको दे शरण त्राण, / मृत के हो तुम्ही प्राण, / छूट गये रास-रंग / रुठा माँ का दुलार, / खण्डित उर प्रणय राग / छगलक छल दुर्विचार / इतना ही कह सकी / न आगे कुछ कह पायी / कण्ठ रुद्ध पल विरुद्ध / शेष कथा, / हिचकियाँ सुना गयी / पहेलियाँ बुझा गयी।"**[123]

मुनि यह सुनकर स्तब्ध हो गये तथा करुणा से विभोर होकर बोले कि बेटी, तू अपने घर चली जा अभी देर नहीं हुयी है। किसने तेरा मन फेर दिया है। मुनि का यह उत्तर सुनकर शबरी बोली कि यदि आप आश्रय नहीं देंगे तो मुझे मृत्यु का ही सहारा है। आप मेरे माता-पिता हैं, आप ही मुझे इस अँधेरे से बाहर निकाल सकते हैं। मुनि मतंग का हृदय द्रवित हो उठा वह शबरी से कहते हैं कि, "आज से तू मेरी बेटी है और मैं तेरा पिता हूँ। तू इस आश्रम में निर्विघ्न होकर रह सकती है। यहाँ पर रहकर तू सेवाव्रत धारण कर ले। इसी आश्रम में प्रभु श्रीराम आयेंगे और उनकी कृपा विशेष तेरे सारे क्लेश धो देगी।" यह कहकर अपने कमण्डल का जल उस तथाकथित अछूता के ऊपर छिड़का तथा नेत्रों में उमड़ आये जल को अपने उत्तरीय से पोंछा। एक क्षण में सारे युग का ताप, संताप तथा पाप स्वच्छ हो गया।

2-घ-V आस्था

जप-तप के विधि विधान मंत्रों की आहुतियों तथा विधि समेत गायत्री की आराधना तथा संध्योपासना हो रही है लेकिन इनसे भी ऊँची मानवीय संवेदना है। दोनों की तुलना में मानवता ही विजयी होती है। मुनि का उपदेश सुनकर आश्रम के शिष्य तथा पुरवासी चले आये। उन्होंने सुना कि मुनि ने एक भीलनी अछूता की त्राण कथा को अपनी व्यथा बनाकर ओढ़ लिया। आलोचक बहुत सारे हैं परन्तु एक दो प्रशंसक भी हैं- **"आलोचक- / बहुमत में, / एक दो प्रशंसक थे। / कुण्डली लगाये कुछ / तक्षक से, / किंचित फुफकार रहे।"**[124]

शबरी आश्रम में निवास करती है तथा सोचती है कि उसके आराध्यदेव तो श्रीराम हैं उन्हीं के चरणों में उसका भटका मन सुख पा सकता है। शबरी के हृदय में राम के प्रति प्रीति दिन रात

बढ़ती जाती है। वह आश्रम में रहते हुए ऋषि-मुनियों-ब्रह्मचारियों के पैर-प्रक्षालन से एकत्रित जल को गंगा-जल के समान पवित्र समझकर उससे अपनी प्यास की पूर्ति करती है। सबका जूठन जो उसको मिलता है उसी को दिव्य भोग समझकर खा लेती है। वह पुष्प चयन करती तथा कुटी, आँगन, मुख्य द्वार, गौशाला आदि की सफाई करती- **"ऋषियों के, मुनियों के- / ब्रह्मचारियों के / पद प्रक्षालन से होता जल, / संग्रहित। / गंगा जल सा पुनीत। / उतना ही जल करता / प्यास पूर्ति शबरी की / मिलता था जूठन जो, / उतना ही दिव्य भोग / सेवा का अनुपालन, जप-तप विनियोग-योग।"**[125] इतना ही कर्तव्य वहन करके उसका जीवन धन्य हो गया।

2-घ-VI साधना

एक सुबह जब शबरी आश्रम की सफाई कर रही थी, सेवा रूपी नाव में विश्वास की पाल खोले राम नाम स्मरण करते-करते वह अपने काम में इतनी तन्मय हो गयी कि उसे अपने आस-पास का ध्यान भूल गया। झाड़ू लगाते समय उसे ज्ञात ही नहीं हुआ कि किसी कार्यवश मतंगाश्रम आ रहे वितण्ड मुनि के ऊपर जूठन के एक-दो कण कब गिर पड़े। वितण्ड मुनि अपने श्रेष्ठवर्ण के कारण पूर्वाग्रही, अहंकारी, रूढ़िवादी, जड़ विचारों वाले क्रोधी ऋषि थे, जो मतंग द्वारा एक अछूता को शरण दिये जाने के प्रबल विरोधी थे। शबरी के इस अपराध के कारण मुनि अत्यन्त क्रोधित हुए तथा शबरी को बुरा भला कहा। इसके साथ ही साथ वे मुनि मतंग के चरित्र पर भी दोषारोपण करने से नहीं चूके - **"कौन आकर्षण था? / तुझको, जो शरण दिया / कारण था कौन जो अकारण / अपकीर्ति लिया / उलट दिया विधि-विधान / तुझको दे शरण-त्राण।"**[126]

मुनि के इतना विष वमन करने के बाद पहले से ही शबरी से विद्वेष रखने वाले आश्रम वासी, बटुक वृन्द एवं कन्याएँ सभी शबरी को धिक्कारने लगे। वितण्ड मुनि पम्पासर में स्वच्छ होने के लिए चल दिये परन्तु उनके छूते ही पम्पासर का जल पंकिल हो उठा। जिससे आश्रमों में जल की विकट समस्या उत्पन्न हो गयी। शबरी अपनी अवहेलना से इतनी आहत नहीं होती है जितनी मुनि मतंग की अवहेलना से। अवहेलना ही नहीं वरन् एक बहुत ही तुच्छ आक्षेप उसको प्रताड़ित करता है। उसे अपने अभिशाप की चिन्ता नहीं है उसे मुनि मतंग की अपकीर्ति की, उनकी सुकीर्ति तथा यश पताका में लगे कलंक की अधिक चिन्ता है। इसी क्रम में जब वह मुनि मतंग को सारा वृतान्त सुनाती है तब मुनि उसे ढाँढस बँधाते हैं तथा साथ ही साथ राम भक्ति में प्रवृत्त भी करते हैं- **"दूर नहीं दिन, वे / जब, / राम यहाँ आएँगे / तेरे ही हाथों से कन्दमूल खाएंगे। / झुकना, पद पद्मों में / करते वे अपावन को पावन प्रभु / क्षण भर में, तेरे सब, / कलंक धुल जाएँगे।"**[127] कालांतर में शबरी राम के ध्यान में इतना रम जाती है कि उसे ऐसा लगता है कि राम यहीं पर हैं- **"लगन लगी / प्रीति जगी / नींद भगी / ठगी ठगी / होता**

आभास यही / रहते हैं, राम / आस-पास कहीं।"[128] इसी प्रकार कई वर्ष बीत जाते हैं और शबरी राम दर्शन की धुन में डूब जाती है।

2-घ-VII बोध

शबरी मानो एक तरह से स्वयं ही राममय हो जाती है उसे हर समय हर जगह राम ही नजर आते हैं- **"यों ही, जब / कोई आ, कह देता, / माँ शबरी। / राम आ रहे हैं इधर। / कुटिया से आ बाहर / अपलक देखती डगर।"**[129] पक्ष, मास, वर्ष यथावत् बीतते रहते हैं यहाँ तक कि शबरी वृद्धावस्था को प्राप्त हो जाती है। वह राम की प्रतीक्षा में दिवा स्वप्न देखती है और एक अनदेखे व्यक्तित्व का चित्र अपनी कल्पना से गढ़ती है। उसे यत्र तत्र सर्वत्र राम ही राम दृष्टिगत होते हैं- **"अन्तर्मुखी तपस्विनी / देख रही राम, राम/ जल में राम, / थल में राम, / चर में, / अचर में राम । / आर्द्र स्वर / कहाँ हो राम।"**[130] वह सभी से राम के विषय में पूछती है, वन प्रान्तर में उपस्थित प्राणियों तथा दिशाओं से भी।

शबरी की अगाध साधना फलीभूत होती है और किष्किन्धा नामक वन प्रांतर में श्रीराम का आगमन होता है। कवि ने राम के आगमन का बड़ा ही मनोहारी वर्णन निम्न शब्दों में किया है- **"रुक्मिणि के मधुर बोल / कागा की / कांव-कांव / देती सुख ठांव-ठांव। / प्राणों में / षट् रस वे रहे घोल / रोमांचित प्राण आज। / प्रिय की अगवानी से, / मुनि-भविष्य वाणी से। / शंख नाद- / घंटा ध्वनि / जन-समूह, कलरव, / बटुक शिष्य।"**[131] शबरी राम के दर्शनों से अत्यधिक रोमांचित है, अंग-अंग में सिहरन है, हाथ पैर काँप रहे हैं, और अपने शरीर पर उसका वश ही नहीं है। वह भगवान का आतिथ्य सत्कार कैसे करे - यह सोच नहीं पा रही है। क्या-क्या उपहार एकत्रित करे? और कैसे उनका भोग लगाए? राम-लक्ष्मण का शबरी की कुटिया में आगमन संग-संग होता है, ऐसा लगता है मानो सघन मेघ, एवं दामिनी संग-संग दिखे। शील, शौर्य, संयम के निधि साँवले सलोने राम जो कोटि-कोटि मदनों की छवि मलीन करते हैं, उन्होंने शबरी को सादर प्रणाम किया एवं कण्ठ से लगाया और उलाहना भरे स्वर में बोले कि मैं तेरी भक्ति डोर से बंधा हुआ यहाँ चला आया हूँ। मुझे यही एक नाता अत्यधिक प्रिय है। शबरी के भाग्य से लोगों को ईर्ष्या हो सकती है परन्तु वह स्वयं जैसे भक्ति की प्रतिमूर्ति है। आज उसके स्वप्न साकार हो उठे हैं, तथा वह विह्वल होकर अपने तन-मन की सुधि-बुधि भुला चुकी है- **"शबरी की पर्ण कुटी / आज बनी पुण्य कुटी / युग-युग की जैसे साकार हुयी। / आज भक्ति भावना।"**[132]

2-घ-VIII सिद्धि

श्रीरामचन्द्रजी शबरी की सेवा भावना देखकर क्षण भर को सीता की विरह व्यथा भूल गये। शबरी को तनिक भी देर नहीं लगी प्रभु के समक्ष कन्दमूल तथा बेर लाकर रख दिये। प्रभु को बेर खाने में अत्यन्त प्रिय लगता है। श्रीरामचन्द्रजी अपना एक हाथ मुँह में तथा दूसरा हाथ बेर के लिए बढ़ाते जाते हैं। शबरी अत्यन्त प्रसन्न होकर उन्हें बेर खिलाती जाती है- **"बांछ-बांछ देती / क्या**

प्रेम से खिलाती थी / दाख से रसीले बेर। / राम को न, लगती देर / खाते, / न अघाते।"[133]

उधर ऋषियों का चिन्तन क्रम टूट जाता है, उन्होंने समवेत स्वर में कहा कि सारा जन जीवन अस्त-व्यस्त है। भयंकर जलाभाव के कारण हाहाकार मचा हुआ है। हे प्रभु! पास के सरोवर का जल विषाक्त हो गया है। खग-मृग पशु पक्षी तक उस पानी को पीने से कतराने लगे हैं। हे प्रभु! आप उस जल को स्पर्श करके उसका पाप दूर करें, आप हमारे ऊपर इतना उपकार करें। प्रभु ने उनसे पूछा कि कब से यह त्रास तुम लोग सहन कर रहे हो। प्रभु के प्रश्न के उत्तर में सब एक साथ बोल उठे कि शबरी इसकी दोषी है और इसके संरक्षक मतंग मुनि हैं जिन्होंने इसे आश्रम में शरण देकर तपोवन को अपावन कर दिया है। कुछ निर्भय, निशंक, प्रबुद्धजन शबरी का अनजाने में मुनि वितण्ड को अपवित्र करने, मुनि वितण्ड द्वारा क्रोधित होकर शबरी एवं मतंग मुनि को अपशब्द कह कर सरोवर में शुद्ध होने जाने तथा सरोवर का जल उनके छूते ही कर्दम होने की बात बताते हैं। राम को क्षणमात्र में सारी विसंगतियाँ समझ में आ जाती हैं। रामचन्द्रजी द्वारा प्रेम की महत्ता का प्रतिपादन निम्न पद में दर्शनीय है- **"प्रेम का जनक, / होता प्रेम है, / घृणा से घृणा / वैर शान्त होता है- / निर्वैर भाव से / होता है शान्त, वैर / प्रेम के प्रभाव से।"[134]**

राम जानते हैं कि सरोवर का जल निर्मल तभी हो सकता है जब शबरी अपना तपोपूत संस्पर्श दे। रामचन्द्रजी ने शबरी को अपना स्पर्श देकर जल को शुद्ध करने का संकेत दिया। शबरी द्वारा स्पर्श करने से सरोवर का जल निर्मल हो उठा। इस प्रकार शबरी की जन्मगत, जातिगत सामाजिक दुर्बलता का निस्तारण करके श्रीरामचन्द्र ने उसे समस्त ऋषि, मुनियों, योगियों और साधकों से भी उच्च स्थान प्रदान किया। जिसका मूल उसकी भक्तिभावना, प्रभु में प्रेम एवं श्रद्धा, गुरुकृपा, गुरुओं की सेवा तथा हार्दिक निश्छलता इत्यादि गुणों को दिया। कवि श्री अवस्थी ने इसका वर्णन निम्न प्रकार से किया है- **"न कोई जन्मना ऊँचा - / न नीचा है, / विभाजन कर्म की रेखा। / उठाती है, गिराती है विभाजित आचरण लेखा।"[135]**

शबरी भगवान के चरणों में नतमस्तक है परन्तु उसके मुख से शब्द नहीं निकलते। राम उसे झुककर उठाते हैं और विदा लेते हुए उससे पूछते हैं कि मैं सीता को कहाँ ढूँढू? प्रति उत्तर में शबरी उन्हें सुग्रीव से मित्रता करने को प्रेरित करती है। शबरी राम की उद्विग्नता भाँप जाती है परन्तु उसके मन में संकोच हो रहा है कि वह राम को जाने के लिए कैसे कहे- **"कहूँ कैसे? / कि प्रभु जाओ / कि, आठो याम जो कहती रही हो / राम अब आओ!"[136]** राम के प्रयाण करने के पश्चात् उसे एक ओर इस बात की प्रसन्नता है कि वह अपनी प्रतीक्षास्वरूप वर पा गयी परन्तु इस बात की कसक भी है कि जैसे कोई मणि हाथ से छूटकर मार्ग में गिरकर लुप्त हो गयी हो। तदनन्तर वितण्ड मुनि को अपने किये पर पश्चात्ताप होता है और वे शबरी से क्षमायाचना करते हैं। धनंजय अवस्थी की कृति 'शबरी' में शबरी द्वारा प्राण त्याग अथवा योगाग्नि में प्रवेश करने की कोई चर्चा नहीं है। इस विषय में कवि की लेखनी सर्वथा मौन है।

2-घ-IX मूलकथा से साम्य एवं वैषम्य

इस कृति का कथानक वाल्मीकीयरामायण के मूलपाठ पर आधारित है। राम का वनागमन एवं शबरी द्वारा आतिथ्य के प्रसंगों में मूलपाठ से साम्य परन्तु शबरी के बचपन, विवाह, मतंगाश्रम पलायन, वितण्ड मुनि का क्रोध, पम्पासर इत्यादि की घटनाएँ काल्पनिक होने के साथ-साथ मूलपाठ से भिन्नता प्रदर्शित करती हैं। शबरी द्वारा राम को बेर खिलाने का प्रसंग तो वर्णित है पर बेरों के जूठे होने का कोई वर्णन नहीं है। इसके अतिरिक्त शबरी की देहत्याग का कोई वर्णन न होना इस कृति का मूलपाठ से वैषम्य होना दर्शाता है। अवस्थी जी ने पात्रों के चुनाव, उनके चरित्र, परिवेश इत्यादि की सटीक कल्पनाएँ तो की हैं परन्तु उनमें मूलकथा से सर्वथा वैषम्य ही दृष्टिगत होता है। नवधा भक्ति का कोई वर्णन इस कृति में प्राप्त नहीं होता।

2-च श्री अवध किशोर श्रीवास्तव 'अवधेश' कृत 'श्रमणा-शबरी के राम' की कथावस्तु

श्री अवध किशोर श्रीवास्तव 'अवधेश' ने सामान्य बोल-चाल की भाषा को आधार बनाकर तथा उसकी शैली का अनुसरण करते हुए 'श्रमणा - शबरी के राम' नामक एक महाकाव्य की रचना की है। श्रीरामचरितमानस की तरह यह महाकाव्य विभिन्न काण्डों में विभक्त न होकर दो खण्डों; उत्तरार्ध (गृह-खण्ड) तथा पूर्वार्ध (वन-खण्ड) में विभक्त है। इस महाकाव्य की कथावस्तु मूलतः तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस से ही प्रेरित है। जिसकी स्वीकारोक्ति कवि ने स्वयं ही की है परन्तु एक नगण्य से पात्र शबरी को केन्द्र में रखकर महाकाव्य की रचना हेतु कथावस्तु को असीमित विस्तार देने के प्रयत्न में कई अन्य ज्ञात-अज्ञात तथ्यों व घटनाओं का कथानक में समावेश किया जाना आवश्यकता के साथ-2 कवि की विवशता भी कही जा सकती है। इस काव्य कृति का सर्गवार संक्षिप्त कथानक निम्नलिखित है-

2-च-I प्रथम सर्ग

'श्रमणा-शबरी के राम' (संक्षेप में श्रमणा) की कथा मानव जन्म की श्रेष्ठता सिद्ध करने एवं उसकी अधोगति के वर्णन से प्रारम्भ होती है। विषय-प्रवेश के रूप में कवि ने सर्वप्रथम जीव का कर्म, अकर्म द्वारा पथ प्रदर्शन करने का प्रयत्न किया है। तदनन्तर गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस का महत्व प्रतिपादन एवं अन्य कवियों की वन्दना के साथ-2 तुलसीदास जी की भी श्रेष्ठता सिद्ध करने का सार्थक प्रयास कवि 'अवधेश' द्वारा किया गया है- **"राम सीय समान जग लगता जिन्हें अभिराम, / है उन्हीं तुलसी शशी को कोटि-कोटि प्रणाम।"**[137] श्रमणा के पूर्वार्ध (गृह-खण्ड) के प्रथम सर्ग में कविवर 'अवधेश' श्रीराम के वन गमन के समय जटायु उद्धार समाधिस्थ शबरी की झाँकी, शबरी का परिचय और उत्पत्ति का वर्णन करते हैं- **"साधना बनकर धरा पर आ गई साकार, / प्रेम की प्रतिमूर्ति बनकर भक्ति का अवतार।"**[138] कविवर 'अवधेश' ने अपने महाकाव्य 'श्रमणा' को गोस्वामी तुलसीदास के रामचरितमानस से प्रेरित बताकर लगभग उसी के अनुरूप 'श्रमणा' नामक महाकाव्य का प्रणयन किया है इस महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग का आरम्भ मंगलाचरण से होता है।

2-च-II द्वितीय सर्ग

द्वितीय सर्ग में कविवर अवधेश ने शबरी के बालपन, बाल क्रीड़ा वर्णन, ग्रीष्म ऋतु का वर्णन किया है- **"जननी जनक मग्न होते थे, नित्य बाल क्रीड़ा में, / केवल दीपक ही जलते थे मानो इस क्रीड़ा में।"**[139] श्रमणा को हिंसक पशुओं के बीच सोई हुयी देखकर बचाव के लिए उसके पिता द्वारा बाण चलाने से हिरणी के बच्चे सहित श्रमणा का करतल बिंधने का वर्णन किया है- **"लक्ष्य भ्रष्ट शर ने सुसुप्त, शावक को भेद दिया था, / साथ-साथ लिपटी श्रमणा का, करतल छेद दिया था।"**[140] इसी प्रसंग में आगे जीव हत्या का निषेध किया गया है। मृग शावक की मृत्यु के कारण श्रमणा द्वारा किये जाने वाले दारुण विलाप को देखकर शबरगणों का पारम्परिक हिंसा वृत्ति त्याग करने हेतु विचार विमर्श प्रारम्भ होता है- **"पश्चाताप हो रहा था उस समय सभी के मन में, / प्रायश्चित की जगी भावना तभी सभी के तन में।"**[141] इसी क्रम में नारद ऋषि द्वारा श्रमणा के पिता को अयोध्या में श्रीराम के जन्म की सूचना देकर श्रमणा और राम की एकरूपता का वर्णन किया गया है - **"तेरे जैसा रूप साँवला तेरे सदृश नयन हैं, / तेरे जैसे मृदुल स्वभावी सुषमा शील अयन हैं।"**[142]

2-च-III तृतीय सर्ग

तृतीय सर्ग में मंगलाचरण के उपरांत तुलसी वन्दना करते हुये काव्य के मर्म का प्रतिपादन किया गया है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने अपने शबरी-प्रसंग में भी श्रीरामचन्द्र जी द्वारा उसे लगातार तीन बार 'भामिनी' उद्‌बोधन प्रदान किया है। 'भामिनी' शब्द की व्याख्या के साथ-2 कवि श्री 'अवधेश' ने यह सिद्ध करने का भी प्रयत्न किया है कि तुलसीदास जी द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस में लगातार तीन बार राम के श्रीमुख से शबरी को 'भामिनी' उद्‌बोधन देना असंगत, अनायास तथा वृथा नहीं था। शबरी को 'भामिनी' कहने के औचित्य का प्रतिपादन करना कवि अवधेश का अभीष्ट प्रतीत होता है- **"गृह विहीन, तन क्षीण अनीरा त्यागी तपी विरागी, / वन वासनी, उदासी, फिर क्यों भामिनी पद की भागी।"**[143]

श्रमणा के पिता का सुतीक्ष्ण मुनि द्वारा शिवार्चन करना, मुनि द्वारा ज्ञान, भक्ति, कर्म, धर्म ईश्वर इत्यादि की मीमांसा इस सर्ग की मुख्य कथावस्तु है। श्रमणा की किशोर अवस्था का तथा उसके सौन्दर्य का वर्णन निम्नांकित पंक्तियों में दृष्टव्य है- **"श्यामल तन पर झलक उठी थी यौवन की अरुणाई, / रवि आभा पर नील कमल दल जैसे पड़े दिखाई।"**[144]

इस महाकाव्य में शबरराज के वैभव का वर्णन, आखेट के समय श्रमणा के पिता को मूर्छित मारीच का मिलना और उन्हें उठाकर अपने घर ले आने का वर्णन भी प्राप्त होता है। मारीच का अपने परिचय के साथ कौशिक मुनि के मख की रक्षा हेतु आये राम का परिचय बताते हुये बिना नोंक के बाण से समुद्र तट तक फेंके जाने का वर्णन एवं रावण की गुप्तचर सेवा से मुक्ति

लेने के संकल्प का वर्णन किया गया है - **"साधु-साधु मैं लंकापति रावण का वर पायक हूँ, / है स्वनाम मारीच, गुप्तचर सेना का नायक हूँ। / कठिन धर्म संकट में प्रियवर, मेरे प्राण फँसे है, / तन तो है रावण का, लेकिन मन में राम बसे है।"**[145]

2-च-IV चतुर्थ सर्ग

चतुर्थ सर्ग का आरम्भ मंगलाचरण एवं प्रभात वर्णन से होता है। मारीच द्वारा राम की वीरता के वर्णन के उपरांत श्रमणा का राम के प्रति जिज्ञासु होना स्वाभाविक है। उसे स्वप्न में राम से सम्बन्धित वस्तुओं के दर्शन होते हैं- **"आज स्वप्न में दिया उन्होंने मुझको निज संरक्षण, / मैं भी अपना सब कुछ खोकर हुई, उन्हीं को अर्पण।"**[146] मारीच द्वारा श्रीराम के अवतार एवं लोक हित में आने लिए वनवास अर्जित करने को लोक हित एवं श्रमणा के हेतु बताना। कवि ने इस सर्ग में पृथ्वी इत्यादि का वर्णन करने के साथ-2 राम के विराट स्वरूप के वर्णन, रावण के पराक्रम का परिचय देते हुए देवासुर संग्राम में कैकेयी द्वारा महाराज दशरथ को युद्ध में दिये गये सहयोग का विस्तृत वर्णन एवं शाब्दिक चित्रांकन करने का प्रयास किया है - **"प्रलय मेघ सी बन कैकेयी लगी बाण बरसाने, / अंधकार छा गया लगे रिपु हाहाकार मचाने।"**[147] इसी क्रम में महाराज दशरथ द्वारा कैकेयी को दिये गये दो वरदानों का भी समावेश किया गया है। 'अवधेश' ने अपनी तीक्ष्ण कल्पना शक्ति का प्रयोग करते हुए कैकेयी का देश प्रेम, राजा दशरथ द्वारा बिना प्रजा की आज्ञा लिए हुए इन्द्र को सहायता देने पर मानसिक प्रताड़ना का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है - **"महा पाप हो गया कि इसका प्रायश्चित हो कैसे, / गुरू ही बता सकेंगे इसका समाधान हो जैसे।"**[148]

इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में प्रिय वस्तु त्याग का प्रायश्चित बताने के मंतव्य से यह प्रतीत होता है कि मुनि वशिष्ठ को वृद्धावस्था में महाराज दशरथ द्वारा अपने प्रिय पुत्र राम का परित्याग करने की पूर्वदृष्टि हो चुकी थी और इस प्रसंग का वर्णन महाराज दशरथ को ऐसी किसी भी घटना के अनायास प्रकट होने के समय अपनी मनः स्थिति को सम्हालने की भूमिका कही जा सकती है। 'अवधेश' ने गोस्वामीतुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस में वर्णित पात्र मारीच, जिसको स्वर्ण-मृग बनाकर श्रीराम के द्वारा हत बताया गया है, के विपरीत श्रमणा महाकाव्य में मारीच को संत और पितातुल्य मानकर श्रमणी श्रमणा द्वारा मारीच को विदा देकर कथा के महत्व को समझाने का प्रयास चतुर्थ सर्ग में किया है- **"निज पुत्री को आप पितृवर यहीं छोड़ जायेंगे, / जनकोचित कर्तव्य निभाने क्या न आप आयेंगे।"**[149]

2-च-V पंचम सर्ग

महाकाव्य 'श्रमणा' के पंचम सर्ग में श्रमणा के हृदय में राम के प्रति पूर्व राग होना दर्शाया गया है। कविवर अवधेश ने बसंत ऋतु का बड़ा ही सटीक वर्णन किया है। श्रमणा ने सिंह और हाथी से शावक के युद्ध का निराकरण किया। उसे एक पक्षी (तोते) द्वारा रामचन्द्र के हाथों

अहिल्या उद्धार की कथा ज्ञात होती है- **"मैं गौतम वन का वासी रिषि पत्नी का शुक प्यारा, / रिषि अभिशप्ता वहाँ अहल्या भोग रही थी कारा।"**[150] श्रमणा गौतम ऋषि द्वारा अहिल्या उद्धार के बाद पुनः स्वीकार किये जाने की बात जानकर प्रसन्न हो जाती है।

2-च-VI षष्टम सर्ग

कुम्भज ऋषि से विदा लेने के उपरांत सती और शिव का श्रमणा से मिलकर उसे वरद पुत्री बताकर यौवनकाल का वृत्तान्त सुनाये जाने का वर्णन है- **"अति प्रसन्न मैं हुआ शबर कन्या की वाणी सुनकर। / कहा शबर अधिपति होगा हे वत्से तब सुन्दर वर।"**[151] सती द्वारा श्रमणा को विवाह हेतु प्रेरित करने पर वह वैराग्य का समर्थन करती है- **"लेकिन माँ बन्धन बन्धन है, सभी मानते इसको, / इसमें स्वेच्छा से बँध जाना भी भाता है किसको।"**[152] वह तर्क द्वारा विवाह से असहमति व्यक्त करती है। सती ने विवाह का औचित्य बताकर पिता द्वारा निश्चित विवाह के महत्व का प्रतिपादन किया तथा शिव उसे आशीर्वाद देकर प्रस्थान करते हैं।

2-च-VII सप्तम सर्ग

श्रमणा पुरुष वेश में आखेट करने जाती है। जहाँ उसकी भेंट नारदजी से होती है जो उसे धनुष यज्ञ एवं राम सीता के विवाह के विषय में बताते हैं- **"चकवर्ति अवधेश राम ने, धनुष शम्भु का तोड़ा, / पूर्व नियोजित जनक पुत्रि से, पति का नाता जोड़ा।"**[153] यद्यपि श्रमणा को जीव हत्या से घृणा करते दर्शाया गया है परन्तु यह प्रसंग इस के ठीक विपरीत है।

कवि 'अवधेश' ने स्थान-स्थान पर प्राकृतिक सौन्दर्य का निरूपण किया है। इसी क्रम में श्रमणा का निषाद पुत्र से भेंट होना भी वर्णित है, जिससे किसी बात पर वाद-विवाद तथा तर्क वितर्क भी हो जाता है। निषाद पुत्र को मूर्छा आ जाने पर श्रमणा उसे अपने पिता के पास ले आती है जो उसे पहचान कर उसके साथ अपनी पुत्री के विवाह का प्रस्ताव करते हैं और निषादराज के पास संदेश भेजते हैं- **"लिखा पत्र गुहपति को, मेरी सुहृद एक कन्या है, / है सुयोग्य सब विधि सर्वगुण सम्पन्न महाधन्या है।"**[154] निषादराज द्वारा प्रस्ताव स्वीकृत हो जाने पर शबरराज के घर श्रमणा के विवाह की तैयारी होने लगती है।

2-च-VIII अष्टम सर्ग

अष्टम सर्ग में 'अवधेश' की शबरी राम के प्रति कान्ताभाव से अनुरक्त होती है तथा राम की प्रतीक्षा में व्याकुल होती हुयी दर्शायी गयी है- **"सुना कि वे अन्तर्यामी हैं, रमते हैं कण-कण में, / वे न जानते हैं इस मन की या कि न रमते मन में।"**[155] उसके पिता ने उसे नारी की महत्ता तथा नवधा भक्ति एवं पतिव्रत धर्म में एकरूपता बताते हुये नर-नारी का तुलनात्मक स्वरूप बताया है। रावण द्वारा पीड़ित दक्षिणवासी श्रमणा से भेंट करते हैं जिन्हें वह अपने परिचर के साथ अयोध्या भेज देती है- **"यह अपने ही भृत्य आपके साथ वहाँ जायेंगे। / दुर्गम वन में सुगम**

सुपथ यह सीधा दिखलायेंगे।"[156] रावण के आतंक से आतंकित दक्षिणवासियों ने जब दशरथ से अपनी रक्षा का आग्रह किया तो उन्होंने अपनी असमर्थता व्यक्त की। कैकेयी राम को अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए सचेत करती है और तब राम सरयू तट पर जाकर सभी लोगों से प्रातः वन आने की प्रतीज्ञा करते हैं। इधर दशरथ राम के राजतिलक की घोषणा करते हैं उधर राम कैकेयी को दशरथ से दो वरदान मांगने को प्रेरित करते हैं जिसके लिए वह तैयार हो जाती है। राम के वनगमन का हाल बताकर परिचर को पारितोषिक देकर विदा कर देते हैं- **"देकर विविध भेंट परिचर को, सादा विदा किया था, / शबर सुता के सहित, सर्ग ने भी विश्राम लिया था।"**[157]

2-च-IX नवम सर्ग

महाकाव्य के नवम सर्ग में रात्रि वर्णन, सखियों सहित श्रमणा का पशुओं के प्रकोष्ठ में जाना, पृथ्वी आदि ग्रहों का प्रभाव, ज्योतिष आदि का रहस्य कहना, रत्नों व सूक्ष्म मंत्रों का स्थूल पर प्रभाव का वर्णन इत्यादि वर्णित है। सखियों द्वारा श्रमणा को विवाह के अवसर पर भोजन की व्यवस्था में पशुओं की हिंसा की बात बतायी जाती है। इन पशुओं को वध के हेतु प्रकोष्ठ में बाँधा गया है। जिसे सुनकर श्रमणा दुखी होकर प्रकोष्ठ खोलकर पशुओं को मुक्त कर देती है साथ ही स्वयं भी वन को प्रस्थान कर जाती है। इसी क्रम में वह राम के कार्य में सहयोग का संकल्प लेती है- **"उनके इस सहयोग हेतु, मैं भी कुछ यत्न करूँगी, / यदि सहचरी नही बन पायी तो अनुचरी बनूँगी।"**[158] उसके मोह का तिरोहन ज्ञान द्वारा हो जाता है। वह कुंज में समाधिस्थ हो जाती है। बारात घर न आने के कारण उसके पिता की देह त्यागने की बात भी इस सर्ग में निरूपित की गयी है- **"बहुत किया उपचार किन्तु मूर्च्छा कभी न जागी, सुता वियोग-पिता प्राणों ने जठर देह थी त्यागी।"**[159]

2-च-X दशम सर्ग

दशम सर्ग में श्रमणा की समाधिस्थ अवस्था में मोह से निवृत्ति हो जाती है और ज्ञानोदय हो उठता है। मुनि विश्वामित्र से साक्षात्कार होने के फलस्वरूप अनार्य से आर्य बनने के लिए गायत्री की उपासना का उपदेश- **"आर्य अनार्य एक करने का व्रत है कठिन लिये हूँ / क्षत्रि वंश से जन्म ब्रह्म ऋषि का पद ग्रहण किये हूँ।"**[160] गायत्री की उत्पत्ति एवं महिमा का वर्णन, सृष्टि निर्माण की कथा, चारों वर्णों की महत्ता व धर्म इस सर्ग में विस्तार से वर्णित है। मुनि विश्वामित्र द्वारा शबरी को हनुमान के विषय में बताकर किष्किन्धा भेजने के साथ ही इस महाकाव्य का पूर्वार्ध (गृह-खण्ड) समाप्त हो जाता है- **"हनूमान का परिचय किष्किन्धा में तुम्हे मिलेगा, / सखा राम के हैं, शैशव के वहीं प्रसंग चलेगा।"**[161]

2-च-XI ग्यारहवाँ सर्ग

इस महाकाव्य के उत्तरार्ध (वनखण्ड) में वर्णित मुख्य-मुख्य घटनाओं में कुछ महत्वपूर्ण बातें निम्नलिखित हैं। ग्यारहवें सर्ग में श्रमणा की जटायु से भेंट एवं दशरथ से मित्रता की कथा का

ज्ञान होता है - **"नाम जटायु स्वरूप स्वेच्छित रखने की क्षमता है, मेरे पौरुष बल की कोई, कर न सका समता है। / कौशलेश दशरथ जिनका बल तीन लोक ने जाना, / मुझे उन्होंने धर्म साक्ष्य कर धर्म बन्धु ही माना।"**[162] श्रमणा जटायु से निष्काम कर्म की प्रेरणा लेती है। जटायु उसे चित्रकूट में भरत-राम मिलाप का वर्णन सुनाते हुए सीता, सुनयना, कैकेयी इत्यादि के विषय में बताता है। श्रमणा मुनि विश्वामित्र के आदेशानुसार किष्किन्धा जाकर सुग्रीव, हनुमान, एवं तारा इत्यादि से भेंट करती है। यह वह समय था जब बालि और राक्षस युद्ध में बालि के न लौटने के कारण वानर राज्य राजाविहीन हो उठा था। श्रमणा जनसभा आयोजित करके सुग्रीव को राजा चुनकर राज्याभिषेक करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। साथ ही साथ समस्त वानरों को सम्बोधित करके रावण के विरुद्ध राम के सहयोग के लिए प्रेरित भी करती है - **"नर वानर दोनों को अब कर्तव्य निभाना होगा, / लोक यज्ञ में राम भद्र का हाथ बँटाना होगा।"**[163]

2-च-XII बारहवाँ सर्ग

कविवर 'अवधेश' के अनुसार, तारा के सती होने के लिए उद्धत होने पर श्रमणा उसे सती न होने के लिए उपदेश देती है- **"श्रमणा बोली देहत्याग में कुछ कल्याण नहीं है, / बालिराज के अभी निधन का पूर्ण प्रमाण नहीं है।"**[164] श्रमणा तारा से विदा लेकर मतंगाश्रम को प्रस्थान करती है जहाँ ग्रामीण एवं ऋषि मुनियों के दर्शनोपरांत सूर्पणखा से भी परिचय प्राप्त करती है - **"ऋषि वंशज हूँ किन्तु, रक्ष संस्कृति की परिचालक हूँ। / लंका की नारी समाज की अधिकृत संचालक हूँ।"**[165] 'अवधेश' ने रावण का परिचय भी विस्तार पूर्वक देते हुए लंका के वैभव का वर्णन, लंका की आंतरिक व्यवस्था, राजनीति, धर्म, कर्म इत्यादि का भी वर्णन किया है तथा लंका में अधीनस्थ रावण पक्ष के कुछ प्रमुख पात्रों यथा- कुम्भकर्ण, विभीषण, लंकनी, सिंहनी, त्रिजटा इत्यादि का भी वर्णन करते हैं। सूर्पनखा द्वारा जयन्त की घटना का विवरण देने पर कवि ने श्रमणा द्वारा चरित्र के महत्व का प्रतिपादन करवाया है।

2-च-XIII तेरहवाँ सर्ग

तेरहवें सर्ग का प्रारम्भ भी मंगलाचरण से होता है। श्रमणा के मन में का राम विषयक अन्तर्द्वन्द्व चल रहा है- **"राज पुरुष हैं वे मैं हूँ भीलनी दीन अबला सी, / अस्पर्श्या हूँ, अपरिचिता हूँ, अस्वीकृता हूँ दासी।"**[166] इसके अतिरिक्त इस सर्ग में मतंग आश्रम का वर्णन किया गया है तथा मतंग ऋषि द्वारा श्रमणा को दीक्षा देने का वर्णन भी प्राप्त होता है- **"कविर्मनीषी सूत्रधार है जिसने नाट्य लिखा है, / वही देखता विपुल रूप धर, किन्तु न स्वयं दिखा है। / ज्ञानी मानव यहाँ नाट्यशाला समान रहते हैं। / पुनः पुनः आने पर भी सुख दुख न कभी सहते हैं।"**[167] इस सर्ग में दिनचर्या का वर्णन, अर्थ, धर्म, काम मोक्ष की परिभाषा, देह-आत्मा का कर्म-धर्म, आदर्श मानव के लक्षण तथा गुरू महिमा का वर्णन कुछ ऐसे प्रसंग हैं जिनपर कवि श्री 'अवधेश' ने अपनी सशक्त लेखनी का प्रयोग किया है।

2-च-XIV चौदहवाँ सर्ग

कवि के अनुसार, श्रमणा अपने सेवा कार्य से गुरू एवं स्नातकों की प्रिय बन जाती है- **"पुष्प कभी अपने मुख से अपना न नाम कहता है, / उसकी ही सुगन्ध में उसका नाम रूप रहता है।"**[168] परन्तु श्रमणा के विरोधी मुनियों द्वारा उसके मतंग-आश्रम में प्रवेश पर आपत्ति है। यहाँ तक कि वे मतंग ऋषि को भी आरोपित करने से नहीं चूकते- **"एक तरुण बोला मर्यादा भंग आपने की है, / ब्रह्मचारियों के समान श्रमणा को शिक्षा दी है।"**[169] मतंगमुनि ने ब्रह्मानन्द एवं विषयानन्द का विश्लेषण करके मुनियों को निरुत्तर करके लज्जित कर दिया। इसी क्रम में मतंग ने श्रमणा को भक्ति का अवतार घोषित कर दिया। तदुपरांत सभी श्रमणा का मातृभाव में दर्शन करने लगते हैं। श्रमणा पम्पासर जाकर जल शुद्धिकरण करती है। जिसके फलस्वरूप समस्त मुनि अपनी कथनी और करनी के लिए श्रमणा की स्तुति करने लगते हैं।

2-च-XV पन्द्रहवाँ सर्ग

'अवधेश' द्वारा अपने महाकाव्य के पन्द्रहवें सर्ग में मुनियों द्वारा दोषारोपण से क्षुब्ध मतंग ऋषि द्वारा देह त्याग का निर्णय किया जाना वर्णित है- **"दीर्घ आयु तन वृद्ध न मन में थी कुछ अभिलाषायें, / इस जीवन को इस जग में फिर क्यों हम अधिक बितायें।"**[170] कविवर 'अवधेश' ने वेदवती की उत्पत्ति बताते हुए सीता और वेदवती की कथा का निरूपण भी किया है। इसी सर्ग में मुनि मतंग द्वारा सीता और वेदवती की एकरूपता, रावण द्वारा वेदवती के तप को भंग करने एवं वेदवती को प्राण त्याग से रोककर अग्नि ऋषि का वेदवती को इसी देह से लंका पहुँचने की युक्ति बताने का विस्तृत विवरण है। इसके अतिरिक्त सीता की सुरक्षा के लिए सीता को वेदवती से बदलने की बात कहने की एक नयी कथा इस सर्ग की मुख्य विशेषता है। ब्रह्म मुहूर्त में मतंग ऋषि द्वारा देह त्याग के उपरान्त श्रमणा द्वारा आश्रम समाप्ति की घोषणा के साथ सर्ग पन्द्रहवाँ समाप्त हो जाता है- **"कहते यो वृत्तान्त रात्रि के तीन प्रहर बीते थे, / जान ब्रह्म बेला मतंग ने पंच तत्व जीते थे।"**[171]

2-च-XVI सोलहवाँ सर्ग

सोलहवें सर्ग में मंगलाचरण के उपरान्त कथानक को विस्तार देने के लिए कविवर 'अवधेश' ने श्रमणा द्वारा मतंग आश्रम को छोटे रूप में परिणत करने की बात कही है- **"रिषि मतंग का विस्तृत आश्रम हुआ संकुचित ऐसे, / प्रकृति सम्पदा एक पुष्प में सीमित होती जैसे।"**[172] मुनि सुतीक्ष्ण का आगमन, विराध द्वारा सीता का अपहरण एवं राम द्वारा उनकी मुक्ति का वर्णन, गोदावरी के तट पर श्रीराम का निवास बनाकर रहने की बात बताना इत्यादि इस सर्ग की मुख्य कथा है- **"गोदावरी पार करके अब पंचवटी में आये, / पंचवटी से सभी उन्होंने राक्षस मार भगाये।"**[173] तदनन्तर रावण का स्वयं मतंग आश्रम में आकर श्रमणा से वार्तालाप, श्रमणा द्वारा भौतिक एवं आध्यात्मिक योग की विवेचना करने का प्रसंग, रावण को अध्यात्म द्वारा शान्ति मिलने की शिक्षा देना तथा कुछ अन्य मुख्य घटनायें है जो सोलहवें सर्ग का कथानक है।

2-च-XVII सत्रहवाँ सर्ग

इस महाकाव्य के सत्रहवें सर्ग की मुख्य बातें निम्न हैं- शंकित भ्रमित बुद्धि का लक्षण, मारीच का पहली बार राम की कुटिया से लौट कर आते समय पाँच ढोंगी मुनियों को विवाह के हेतु बात-चीत सुनकर नारी के विषय में उपदेश देना, मुनियों का पत्थर की नारी मूर्ति को पानी में फेंककर भाग जाना, मारीच का श्रमणा के यहाँ पहुँचकर सूपर्णखा- प्रसंग एवं खरदूषण के विनाश की बात बताना इत्यादि। इसके अतिरिक्त रावण के सीता-हरण के अभियान में स्वयं का कनक मृग बनने की विवशता की बात भी श्रमणा को बताये जाने का वर्णन निम्न है- **"मुझसे कहा राम को कंचन मृग बन भ्रमित करो तुम, यदि नकार निकली तो मेरी असि से अभी मरो तुम।"**[174] श्रमणा का अन्तर्द्वन्द्व, मतंग ऋषि की आज्ञानुसार सीता को वेदवती से बदलने के लिए अग्नि ऋषि के पास जाने के बारे में सोचना एवं कुछ प्रश्नों के समाधान के वर्णन से सत्रहवें सर्ग की समाप्ति हो जाती है।

2-च-XVIII अट्ठारहवाँ सर्ग

श्रमणा अग्नि ऋषि के पास जाकर उन्हें मतंग ऋषि का संदेश सुनाती है तथा वेदवती को राम के पास ले जाकर सीता से बदलने की बात कहती है- **"अभी समय है शेष अग्नि रिषि के समीप मैं जाऊँ, / उनके द्वारा वेदवती को पंचवटी पहुँचाऊँ।"**[175] अग्निऋषि वेदवती के साथ पंचवटी में राम व सीता के पास पहुँचते हैं जहाँ पहले ही दशरथ द्वारा सीता को स्वप्न में निर्देश प्राप्त हो चुके हैं। सीता और वेदवती का पारस्परिक परिचय होता है। सीता अपनी बहन वेदवती के गले मिलकर उसे संवेदना देती है- **"वेदवती सीता के पग छूने के हेतु चली थी, बरबस ही उनकी आँखों से अश्रु धार निकली थी। / सीता ने अतिशीघ्र हृदय से बढ़कर उसे लगाया, / राम और रिषिवर ने लखकर मन में अति सुख पाया।"**[176] अग्निऋषि सीता को साथ लेकर अपने आश्रम प्रस्थान कर जाते हैं। तभी लक्ष्मण फल लेकर वापस आ जाते हैं।

2-च-XIX उन्नीसवाँ सर्ग

महाकाव्य के उन्नीसवें सर्ग में श्रमणा अग्निऋषि के आश्रम से वापस मतंग-आश्रम आने पर इस प्रकार संतुष्ट हो गयी मानो उसने संसार की अमूल्य निधि प्राप्त कर ली हो- **"दे संदेश अग्नि रिषि को श्रमणा आश्रम पर आई, / हुई तुष्टि मानो अग जग की वर अनन्त निधि पाई।"**[177]

इसके अतिरिक्त शंकरजी का आगमन,सती के मोह एवं उनके परित्याग की कथा, कर्म एवं भाग्य की मीमांसा तथा शंकरजी द्वारा दो नारदीय आख्यान सुनाने का वर्णन इस सर्ग की प्रमुख कथावस्तु है। इसके अतिरिक्त अनाचारी के वैभव एवं उसकी परिणति, रावण के संदर्भ में शंकरजी द्वारा श्रमणा को विस्तार से बताया जाता है- **"अनाचारी वैभव सम्पन्न हुआ करता है, / घट**

कुकृत्य का इस कारण ही यथा शीघ्र भरता है।"[178] श्रमणा को राम के आगमन की सूचना देकर शंकरजी श्रमणा से विदा लेते हैं।

2-च-XX बीसवाँ सर्ग

कविवर 'अवधेश' के अनुसार महाकाव्य का बीसवाँ सर्ग इस महाकाव्य का सबसे महत्वपूर्ण सर्ग कहा जा सकता है। इस सर्ग के प्रारम्भ में राम की प्रतीक्षा में रत श्रमणा कल्प-विकल्प करते हुए मूर्छित हो जाती है- **"होकर अधिक अधीर प्रतीक्षा में अति विकल हुयी थी, / आई थी अति कठिन मूर्च्छा काया शिथिल हुयी थी।"**[179] राम भी व्याकुल होकर श्रमणा के आश्रम में पधारते हैं। शुक और सारिका द्वारा राम को श्रमणा की संवेदनाहीन होने से पूर्व की दशा का ज्ञान होता है, और श्रीराम उसका उपचार करके चेतना दिलाते हैं- **"धनुष बाँण फेका रघुपति ने नीर दृगों में आया, / भू अभिमुख श्रमणा को निज हाथों से शीघ्र उठाया।"**[180]

श्रमणा को चेतना प्राप्त होते ही वह राम के चरणों से लिपट जाती है एवं बारम्बार अपने भाग्य को सराहती है। तदनन्तर वह राम एवं लक्ष्मण का यथाशक्ति स्वागत सत्कार करती है एवं उन्हें आसन देती है। वह राम को शनैः शनैः दक्षिण का हाल सुनाती है। श्रीराम अपने तीन दिन से निराहार होने की बात कहकर श्रमणा से कुछ भोज्य पदार्थों की माँग करते हैं, जिसके प्रत्युत्तर में श्रमणा सूखे बेरों का दोना उन्हें सौंपती है- **"आज न कुछ भी पास बेर, कुछ शुष्क सड़े कोने में, / यों कह श्रमणा शीघ्र उठा लाई छोटे दोने में।"**[181] उसे समाप्त करने के उपरान्त भी क्षुधा-पूर्ति न होने पर श्रीराम जूठे बेरों के दोने को स्वयं उठा लेते हैं तथा खाने लगते हैं। इसके उपरान्त श्रमणा को प्रेम की महिमा बताते हुये मन को मोह का कारण एवं अन्तर्मुख होने का उपाय भी बताते हैं जिससे श्रमणा का लौकिक मोह दूर हो जाता है- **"सुनकर परम रहस्य श्रमण का चित्त शान्त था सारा, / परम शान्त थी नयनों में थी विमल अश्रु की धारा।"**[182] तदनन्तर जटायु का हाल बताते हुए राम रात्रि विश्राम को चले जाते हैं।

2-च-XXI इक्कीसवाँ सर्ग

इक्कीसवें और अन्तिम सर्ग में रात्रि विश्राम के पश्चात् श्रमणा द्वारा श्रीराम लक्ष्मण की पूजा अर्चना, श्रीराम द्वारा सत्याचरण का उपदेश, जीव एवं ब्रह्म की मीमांसा, मानव जीवन का सदुपयोग करने की शिक्षा सद्ग्रन्थों एवं देवताओं से सद्शिक्षा ग्रहण करना जीवात्मा को जागृत करने की बात तथा भक्ति के नौ नियमों की बात बताने का विस्तृत वर्णन है- **"यह नव गुण मानव के आचरणों में यदि आ जाये, / जीवन लाभ समेत आत्म कल्याण शीघ्र ही पाये।"**[183] श्रमणा द्वारा अगले चरित्र को जानने के लिए जिज्ञासु होने पर श्रीराम द्वारा वाल्मीकि के आगमन की पूर्व सूचना एवं उस समय अन्य सारे वृतान्त बताने का आश्वासन देना इस सर्ग की अन्य मुख्य घटनायें हैं- **"त्रिकालज्ञ रिषि बाल्मीक तब आश्रम पर आयेंगे, / और भविष्यत् की गाथा वे सब तुमसे गायेंगे।"**[184] श्रमणा से विदा लेकर श्रीराम किष्किन्धा को प्रस्थान करते हैं तथा समस्त

ऋषि-मुनि गण श्रमणा की वन्दना करने लगते हैं; तभी वाल्मीकि ऋषि का आगमन होता है- **"वन्दन कर श्रमणा का सबने परम भाग्य निज लेखा, / भक्ति मूर्ति के साथ नित्य भगवान रूप को देखा।"**[185] वाल्मीकि ऋषि उपस्थित जनों को उपदेश देते हैं एवं राम की अगली कथा सुनाते हुए आदर्श भविष्य की बात बताते हैं। तदनन्तर ऋषि आशीर्वाद देकर विदा लेते हैं। साथ ही सर्ग इक्कीस का समापन हो जाता है तथा महाकाव्य 'श्रमणा-शबरी के राम' की कथा भी संपूर्ण हो जाती है।

2-च-XXII कृति का मूलकथा से साम्य व वैषम्य

'अवधेश' कृत 'श्रमणा' का कथानक वाल्मीकीयरामायण से प्रेरित न होकर गोस्वामीतुलसीदास रचित श्रीरामचरितमानस से प्रेरित ज्ञात होता है। वाल्मीकीयरामायण में शबरी प्रसंग एक क्षणिक घटना मात्र है परन्तु 'अवधेश' ने अपनी कृति में शबरी को नायिका के रूप में स्थापित किया है, जिसके चतुर्दिक समस्त घटनाक्रम चलता है। 'अवधेश' ने शबरी द्वारा राम के आतिथ्य सत्कार का वर्णन किया है। कवि ने शबरी के जूठे बेरों का भी वर्णन किया है जो रामायण तथा श्रीरामचरितमानस दोनों से वैषम्य रखता है। इस कृति में नवधा भक्ति का वर्णन प्राप्त होता है जो श्रीरामचरितमानस से प्रेरित जान पड़ता है। इस कारण मूलकथा से वैषम्य है। इस कृति में शबरी के शरीर त्याग के विषय में कुछ भी वर्णित नहीं है जो वाल्मीकीयरामायण तथा श्रीरामचरितमानस दोनों ही से वैषम्य प्रदर्शित करता है। इसके अतिरिक्त कवि ने पात्र योजना, कहानी, परिवेश इत्यादि का अपनी कल्पना शक्ति द्वारा विस्तृत वर्णन किया है। जिससे दोनों ही कृतियों से अत्यधिक वैषम्य का दर्शन होता है।

2-छ श्री नरेश मेहता कृत 'शबरी' का कथानक

श्री नरेश मेहता कृत 'शबरी' एक अत्याधुनिक रचना है। 'शबरी' का कथानक आदि कवि वाल्मीकि के शबर्याख्यान को विस्तार देने का एक सार्थक प्रयास है। जिसकी स्वीकारोक्ति मेहता जी ने अपनी रचना की प्रासंगिकता में की है। मेहता जी ने अपनी कुशल मेधा तथा कल्पनाशीलता का प्रयोग करके इस कृति की रचना की है। घटनाओं की प्रासंगिकता एवं उसकी नाटकीयता के प्रतिरूपण में कवि की श्लाधा झलकती है। रामायण कालीन वर्ण-भेद, मानसिक संकीर्णताओं एवं सामाजिक विद्रूपताओं के अवलोकन में मेहता जी का प्रयास पूर्णत: सफल रहा है। शबरी पाँच अध्यायों में विभक्त है यथा-त्रेता, पम्पासर, तपस्या, परीक्षा एवं दर्शन। कवि ने अपनी कृति की रूपरेखा इस प्रकार बनायी है कि प्रथम अध्याय में त्रेतायुग का परिवेश प्रतिबिम्बन किया जा सके। पम्पासर नामक अध्याय में शबरी का गृह-त्याग, मतंगाश्रम आगमन एवं ऋषि मतंग द्वारा उसे आश्रम में स्थान देने का वर्णन है। तपस्या तथा परीक्षा नामक अध्याय कथानक को विस्तार देते हैं। अन्तिम अध्याय दर्शन अपने नाम के अनुसार स्थितियों एवं घटनाओं को दार्शनिक दृष्टिकोण से देखते हुए शबरी की प्रभु राम से भेंट एवं अन्य बातों की विवेचना करते हैं।

2-छ-I त्रेता

'शबरी' के प्रथम अध्याय त्रेता की विषय-वस्तु उस युग की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, भौगोलिक तथा प्राकृतिक परिवेश के वर्णन से आरम्भ होती है। परिवेश प्रतिबिम्बन तथा तात्कालीन सामाजिक मान्यताओं का विस्तृत अवलोकन ही इसका विषय है। संक्षिप्त रूप से यह कहना श्रेयस्कर है कि कवि ने अपनी श्लाधा से त्रेता युग का जो सुन्दर चित्र खींचा है वह अत्यन्त मनोहारी है। 'शबरी' खण्ड-काव्य की नायिका शबरी, शबर परिवार में जन्म लेने के कारण एक ऐसा जीवन जीने को विवश है जो उसकी मानसिक अवस्था को उद्वेलित करते हैं। यद्यपि शबरी एक आखेटक व मांसाहारी परिवेश में जन्मी व पली बालिका है, तथापि किन्हीं अज्ञात कारणों से अथवा पूर्वजन्म के सत्कर्मों से शबरी को पशु हिंसा से अतीव घृणा एवं वितृष्णा है। वह इस जीवन शैली को नारकीय जीवन शैली मानती है तथा सदैव इससे दूर जाने हेतु प्रयासरत रहती है। एक रात जब घर के सारे सदस्य गहन निद्रा में लीन होते हैं, तब शबरी गृह का परित्याग कर देती है। उसने पम्पासर का नाम सुन रखा था जहाँ बड़े बड़े ऋषि-मुनियों के आश्रम भी थे। ये ऋषि-मुनि ज्ञान-ध्यान-तप एवं भगवान की आराधना में सदैव निरत रहते थे। उसने इन ऋषियों में सर्वश्रेष्ठ एवं तेजस्वी ऋषि मतंग का नाम भी सुना था। उसे ऐसा प्रतीत होता था कि मुनि मतंग के सानिध्य में वह शबर होते हुए भी भगवत्भजन के अपने मंतव्य को पूर्ण करने में समर्थ हो सकेगी। शबरी घोर पश्चात्ताप करती है कि श्रमणा जैसा सुन्दर नाम होने पर भी उसे इस घोर नरक में रहना पड़ रहा है- **"श्रमणा जैसा नाम, किन्तु, / रहना तो घोर नरक में / बीत जाएगा क्या यह / सारा जीवन इसी नरक में?"**[186] अन्त में वह गृह का परित्याग कर देती है तथा मतंग ऋषि आश्रम की ओर प्रस्थान कर देती है।

2-छ-II पम्पासर

शाल और सागौन के वनों को पारकर शबरी पम्पासर के समीप पहुँच जाती है। पम्पासर में बड़े-2 ऋषियों और मुनियों के आश्रम थे। पम्पासर पहुँचने के बाद शबरी मन में विचार करने लगी कि वह एक अन्त्यज-अछूत व शबर जाति की स्त्री होकर ऋषि के दर्शन कैसे प्राप्त कर सकेगी? प्रातः काल का समय था, समस्त आश्रमवासी बटुक तथा ऋषि-मुनिगण अपने दैनिक कार्यों के सम्पादन में व्यस्त थे। कवि नरेश मेहता ने प्रातः कालीन प्राकृतिक सौन्दर्य का बड़ा ही सुन्दर चित्र खींचा है। आश्रम के वातावरण की सर्जना बहुत ही दिव्य और भव्य शब्दों में की है। आश्रम की हरीतिमा बहुत विशाल थी, पगवाटें शोभित थीं- **"थी विशाल कितनी हरीतिमा / शोभित थी पगवाटें, / था विराट वट-वृक्ष खड़ा / फैलाए वृद्ध जटाएँ।"**[187]

शबरी ऐसे समय में मतंग ऋषि के आश्रम में प्रवेश करती है जब पावन यज्ञ-धूम्र की दिव्य-गंध से वायु पावन हो उठी थी एवं सामवेद के मंत्रोच्चारण कर्ण प्रिय लग रहे थे। शबरी ने सर्वप्रथम पोखर में जाकर स्नान किया और पवित्र तन-मन लेकर ऋषि दर्शनों की अभिलाषा के साथ अपना जीवन सार्थक करने के लिए आश्रम के दरवाजे पर बैठ गयी। शान्ति पाठ सम्पन्न

करके मतंगऋषि मंडप से उठ आये तो एक स्त्री को आश्रम के मुख्य द्वार पर देखकर सकुचा उठे और शबरी का परिचय प्राप्त करने हेतु उससे निम्न प्रश्न पूछे- **"पूछा ऋषि ने - तुम कौन? / कौन हो? और कहाँ से आयी / देखा न तपोवन में पहले / क्या नयी-नयी ही आयी हो?"**[188]

ऋषि मतंग की जिज्ञासा भरी वाणी सुनकर शबरी की आँखों में आँसू भर आये परन्तु उसे भयमिश्रित अतिशय संकोच हो रहा था कि वह ऋषि को यह कैसे प्रकट करे कि वह एक शबर जाति की अन्त्यज है। शबरी अपने मन में संशय करती है कि यदि वह ऋषि को अपना नाम बता दे तो क्या ऋषि उसे आश्रम में रख लेंगे? यदि ऋषि रख भी लें तो सम्भवत: अन्य आश्रम-वासी उसका जीवन दूभर कर देंगे। ऋषि के प्रश्न के उत्तर में शबरी ने कहा कि प्रभु के दर्शनों से आज मेरा जीवन कृतार्थ हुआ- **"बोली, प्रभु के दर्शन से मेरा / जीवन आज कृतार्थ हुआ / मैं शबर जाति की श्यामा हूँ / प्रभु सेवा मेरा इष्ट हुआ।"**[189]

प्रत्युत्तर में ऋषि ने उससे पूछा कि तुम सौभाग्यवती लगती हो, तुम्हारा परिवार, पुरजन तथा तुम्हारे कुछ सांसारिक बन्धन भी होंगे। मैं तुम जैसी अछूत स्त्री को अपने आश्रम में कैसे रख सकता हूँ। शबरी ऋषि को उत्तर देती है कि वह सब कुछ तृणवत त्याग कर ऋषि के श्री चरणों में चली आयी है पर उसे अन्त्यज सीमा ज्ञात है, तथापि वह ऋषि से प्रार्थना करती है कि उसे यहीं पड़े रहने दिया जाय। ऋषि ने उससे कहा कि यह आश्रम की सामाजिक व्यवस्था है कि कोई भी अन्त्यज आश्रम में स्थान नहीं पा सकता है। शबरी ने ऋषि से कहा कि वह समझती थी कि ऋषि सब सांसारिकता से ऊपर हैं- **"मैं समझी प्रभु हैं अग्नि रूप / सब सांसारिकता से ऊपर / अन्त्यज भी हो जाते पावन / जिनकी पवित्रता को छूकर।"**[190]

इसके उपरांत वह ऋषि से पूछती है कि क्या आत्मा की उन्नति केवल उच्च वर्ग तक ही सीमित है? यदि भगवान सबके पिता हैं तो उनका आराधन इतना सीमित क्यों है? मतंग ऋषि शबरी की बात सुनकर चौंके परन्तु समझ गये कि यह कीचड़ में कमल खिलने जैसी बात है। यह अछूत अवश्य है परन्तु न जाने किन जन्मों के पुण्य के अनुरूप इसकी भावना पुण्यमयी हो गयी है। अन्त में ऋषि मतंग शबरी से बोले कि यदि तू अन्त्यज और अछूत है तो कौन यहाँ पर श्रेष्ठ है? मुनि मतंग का निम्न कथन दृष्टव्य है- **"बोले मतंग - बेटी शबरी! / यदि अन्त्यज तू, तो कौन श्रेष्ठ? / तुझमें तो प्रभु ही बोल रहे / निश्चय होगी तू भक्त श्रेष्ठ।"**[191]

यह कहकर मुनि शबरी को आश्रम की गौशाला सौंपते हैं तथा उससे कहते हैं कि तुम गायों की सेवा करना और आश्रम के नियमों का पालन करना। यह सुनकर वह गुरू के चरण-कमलों पर गिर पड़ी तथा उसकी आँखों से अश्रु प्रवाहित होने लगे। भाव विह्वल शबरी को लेकर मुनि आश्रम के भीतर आये। उनके कुछ शिष्यों ने विद्रूपतापूर्ण मुँह बना लिया तथा कुछ ने उन्हे कुटिलता भरी मुस्कान से देखा। शबरी मतंग मुनि के साथ आश्रम में न जाकर गौशाला में चली जाती है- **"वह पहुँची तब गौशाला में / देखी धौला, कपिला, श्यामा / वे गायें थीं या कामधेनु /**

चित्रित सींगों की अभिरामा।"[192] उन गायों को देखकर ऐसा लग रहा था मानो वे शबरी को अपने पास आने का मौन निमंत्रण दे रही हों। ऋषि को यह विश्वास हो गया कि शबरी निश्चय ही कोई पुण्यात्मा है जो किन्ही कर्मों के परिणाम स्वरूप थोड़ा भटक गयी है। वे मन ही मन सोचने लगे कि जिस भगवान ने इसको भेजा है वे ही इसका मार्गदर्शन भी करेंगे।

2-छ-III तपस्या

शबरी ने मतंग मुनि के आश्रम से कुछ दूर पम्पासर के किनारे अपनी कुटिया बनायी। गुरू की आज्ञा के अनुसार शबरी आश्रम के नियमों का सम्यक अनुपालन करती थी। वह ब्रह्म मुहूर्त में अपनी शैय्या का परित्याग कर देती थी तथा स्नान-ध्यान समाप्त कर वह कुश तथा पुष्प आदि चुनकर लाती थी। सूर्योदय होने से पूर्व गायें गौशाला में होती थी- **"सूर्योदय के पहले ही / गुरू-गोशाला में होती, / दाना-पानी दे सबको / तब गाय दुहती होती।"**[193] जब शबरी गायों के गोबर से आश्रम का आँगन लीप रही होती तब उसके आँचल में मुँह छिपाकर मृग शावक घूमते थे। सारे पशु पक्षियों को शबरी अत्यन्त प्रिय थी। तोता-मैना जो सदैव मौन रहते थे, वे भी शबरी को देखकर चिल्लाने लगते थे। सारा दिन वह आश्रम की साफ-सफाई, अनाज को धूप दिखाना एवं कूटना-पीसना करती थी। सायं काल में ऋषि नित्य अपने शिष्यों को कथा सुनाते, उस समय शबरी भी कोने के खंभे से टिककर उस कथा का अर्थ सुनती थी। बाद में वह अपनी कुटिया में चली जाती थी- **"आश्रम की दीया-बत्ती / करने पर ही घर जाती, / तब अपने भीतर कैसा / प्रभु का संबोधन पाती।"**[194]

शबरी की प्रातः और रातें ठाकुर की मूर्ति के सामने पूजन-कीर्तन करने में ही व्यतीत होती। कब दीप जलकर बुझ जाता, वह कब बेसुध हो जाती, कब उसकी आँखों से आँसू झरने लगते, उसे कुछ पता नहीं चलता। जब कृष्ण पक्ष की अँधियारी रातें होती तो वह आश्रम की सीढ़ियों पर बैठकर मुग्धभाव से आकाश को देखा करती थी। शबरी आकाश को देखते हुए प्रभुमय हो जाती और गीत सुनाने लगती थी। मन्द-मन्द हवा बह रही है चन्दन से सुवासित होकर। वह सोचती है कि प्रभु के चरणों के स्पर्श मात्र से ही इतनी सुगन्धित हवा बह रही है। शबरी प्रभु से कहती है कि, 'हे विराट, मेरा मन भटका हुआ है; आप प्रतिमा बनकर मेरी इस टूटी हुयी कुटिया में पधारें।' वह आगे कहती है कि भगवान की विशाल रचना में वह एक तिनके के समान है। शबरी की सारी रातें प्रभु से प्रार्थना करते ही बीत जाती थी। प्रातः काल होने पर आश्रम की ओर उन्मुख होती- **"कर स्नान आदि पोखर से / ऋषि पथ में थे मिल जाते, / शबरी-मुख की तन्मयता / से मन ही मन मुसकाते।"**[195] सारे ऋषि-गण शबरी की तन्मयता देखकर सोचते थे कि यह अपनी तपस्या से दिन प्रतिदिन शिष्या से भक्त बनती जा रही है। मन्दार पुष्प के समान वह सम्पूर्ण रूप से प्रभु को समर्पित है। जिस दिन इसकी तपस्या पूर्ण होगी उस दिन प्रभु को अपना त्रैलोक्य छोड़कर शबरी को दर्शन देने आना ही होगा।

2-छ-IV परीक्षा

कुछ समय व्यतीत होने पर शबरी की दिनचर्या में पूजा का प्रबन्ध करना भी शामिल हो गया। तब वह पूरे आश्रम की अभिभावक के समान हो गयी थी। शबरी अपनी भक्ति के कारण आदरणीय बनती जा रही थी एवं यदा-कदा मतंग मुनि के प्रवचनो में शबरी का नाम भी उल्लेखित होता था ऐसा लगने लगा था मानो वह भक्त शिरोमणि ही बन चुकी हो। कल तक जो जंगल में घास के तिनके के समान थी आज वह अपनी भक्ति-भावना तथा सेवा-भावना से तुलसी के पौधे के समान पूज्यनीय हो गयी। उसका श्याम वर्ण ऐसा लगता था मानो वह आकाश की पवित्र नीलिमा को अपने अन्दर समेटे हुए है। उसके नेत्रों में करुणा के भाव समाहित थे व उसको सब कुछ प्रभुमय लगता था- **"उन नयनों में करुणा थी / और थी पवित्र पावनता, / उसको सब प्रभुमय लगता / थी उसमें प्रभु की प्रभुता।"**[196]

कुछ समय पश्चात शबरी को यत्र-तत्र-सर्वत्र प्रभु श्रीराम के ही दर्शन होते थे तथा ऐसा प्रतीत होने लगा था मानों वह स्वयं प्रभुमय हो गयी थी। किसी भी आहट को सुनकर वह भाव विभोर हो जाती थी। शबरी के इस परम भक्ति स्वरूप से मतंग ऋषि पूर्णतः परिचित थे। समस्त मुनिगण तथा आश्रमवासी उस अन्त्यज स्त्री से ईर्ष्या द्वेष रखते थे। उनका मत था कि मतंग मुनि शबरी को जों चाहे वह मानें यह उनकी अपनी इच्छा है, परन्तु समाज की कुछ मान्यताएँ तथा मर्यादाएँ हैं; जिनका पालन प्रत्येक मनुष्य को करना अनिवार्य था। आश्रम के अन्य ऋषि मुनियों का विचार था कि निम्न वर्ग का प्राणी मात्र भग्वत्भजन तथा भगवान की आराधना करने से ही उच्च वर्ग का नहीं हो सकता। यद्यपि मतंगऋषि आश्रम की मर्यादा को विस्मृत किये हुए थे- **"भूले मतंग ऋषि शायद / आश्रम-जीवन-मर्यादा, / यह अनाचार है कैसा / घर में रक्खे हैं शूद्रा।"**[197] सारे ऋषि-गण समवेत स्वर में कहते थे कि, पम्पासर का ऋषि-कुल शबरी को अपना हिस्सा स्वीकार नहीं कर सकता। मतंग मुनि आश्रम चुन लें या शबरी को। उन के मतानुसार इस पम्पासर का जल शूद्रा शबरी के स्पर्श मात्र से अपवित्र हो गया था एवं इसमें स्नान-ध्यान करना वर्जित था। मतंग मुनि ऋषि-गणों के इस आचरण तथा उनके निर्णय से खिन्न हो उठते हैं तथा तर्क करते हैं कि यदि वर्णाश्रम व्यवस्था का स्थान धर्म तत्व से उच्च है तो गंगा भी अपवित्र मानी जानी चाहिए। उनके अनुसार शबरी अपनी तप-शक्ति-भक्ति तथा वैराग्य के कारण इन सब सांसारिकता से ऊपर उठ चुकी थी परन्तु जैसा कि सदैव होता है जन समाज के सम्मुख मतंग अकेले पड़ गये तथा उन्हें वह तपोवन त्यागना पड़ा- **"और त्यागना पड़ा तपोवन / ऋषि को, शबरी को भी / कुटी जला, सब नष्ट किया / शूद्रा की स्मृति को भी।"**[198]

मुनिमतंग एवं शबरी ने ऋषि मुनियों के विरोध के कारण आश्रम परिसर तथा पम्पासर से थोड़ी दूरी पर एक नयी कुटी का निर्माण किया तथा जीवन निर्वाह करने लगे। यज्ञ-याग, आराधना-कीर्तन से उसमें पुनः पवित्रता आ गयी। तत्पश्चात मतंगऋषि ने शबरी को योग और दर्शन की भी शिक्षा दी, परन्तु अभी शबरी के जीवन की एक मुख्य परीक्षा बाकी बची हुई थी। अभी भी साधु समाज

के मन में प्रतिहिंसा की ज्वाला शान्त नहीं हुयी थी। समस्त ऋषियों ने शबरी का अतीत जानकर उसके पति को बुलवाया, जो पहले ही गृहत्याग के कारण शबरी से अत्यधिक कुपित था। ऋषि मुनियों ने शबरी के पति को यह समझाया कि ऋषि मतंग ने तुम्हारी पत्नी को उपपत्नी रूप में रख छोड़ा है और उसे वापस प्राप्त करने के लिए थोड़ा धैर्य से काम लेना पड़ेगा। जब आधी रात का समय हो तो तुम शबरी का अपहरण करके ले जा सकते हो लेकिन यह कार्य अत्यन्त गुप्त रूप से करना पड़ेगा, यदि मुनि मतंग को पता चल गया तो वह सब को भस्म कर देंगे। शबरी का पति अत्यन्त सतर्कता के साथ शबरी की कुटी तक पहुँचा; साथ में शाबर दल भी था। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि कुटिया के अन्दर कोई अदृश्य शक्ति या जादु-पुरुष जाग रहा है जो उनको देख रहा है। वे द्वार को ढकेल कर कुटी के अन्दर चले गये जहाँ का दृश्य देखकर वे थर-थर काँपने लगे। उन्होंनें सोचा कि शबरी के चिल्लाने से पूर्व ही उसका मुँह बाँधकर जंगल के पार हो जायेंगे। जैसे ही वे दो कदम आगे बढ़े वैसे ही उन्हें शबरी के चारों ओर आग का गोला दिखायी पड़ा परन्तु निकट जाकर देखने से मालूम हुआ कि वह साँपों का क्रम है तथा साँपों का दल आगे बढ़ता चला आ रहा है। धीरे-2 उन अग्नि सर्पों की गरमी उनके शरीर को झुलसाने लगी तथा वे चिल्लाने लगे। उनकी आहट सुनकर मतंगऋषि दरवाजे पर आकर खड़े हो गये तथा पूछने लगे कि तुम कौन हो? लगता है किसी दुष्ट प्रयोजन से तुम लोग यहाँ आये हो। शाबर दल डर से काँपने लगा तथा वे सभी ऋषि के पैरों पर गिर पड़े। ऋषि ने सबको क्षमा कर दिया और वे वापस लौट गये। तब ऋषि भी अपने आश्रम को चले गये। उन्हें पहले से ही इस घटना का आभास था- **"ऋषि को अवगत थी घटना / वे तो त्रिकालदर्शी थे / सब कुछ के प्रति इस जग में / वे तो करुणादर्शी थे।"**[199] प्रातःकाल होने पर शबरी चैतन्य हो उठी। वह रात्रि की घटना से अनभिज्ञ थी। वह तो हर क्षण उस परम-पुरुष की प्रतीक्षा कर रही थी- **"कर रही प्रतीक्षा हर क्षण / शबरी किस परम पुरुष की, / जब वह धरती जैसी है / होगा आकाश पुरुष भी।"**[200]

2-छ-V दर्शन

जनमत शबरी-मतंग प्रसंग को लेकर उग्र था। सीता-हरण की कथा सभी को विदित थी एवं राम की दारुण व्यथा भी। जनमानस के मन में राम का युवराज स्वरूप तथा विश्वामित्र का मख-रक्षक स्वरूप था। मतंग राम के अवतारी-स्वरूप को पहचान गये थे एवं निश्चिंत भी थे कि राम के वनागमन से शबरी को प्रभु कृपा-शरण में जाना होगा। शबरी अपनी कुटिया में प्रभु के ध्यान में तल्लीन थी, दो देव पुरुष राम और लक्ष्मण ऋषि-चरणों में झुक गये, कुशल क्षेम के पश्चात् मतंग ने राम-लक्ष्मण के आने का प्रयोजन पूछा तब राम ने पम्पासर के उनके आश्रम का सूनापन, मतंग और शबरी के विषय में मिथ्या प्रवाद, शबरी की तप-गाथा एवं मुनियों द्वारा उत्पन्न कौतुहल को उनके समक्ष आने का प्रयोजन बताया। शबरी के प्रति राम के विचारों को नरेश मेहता ने निम्न शब्द दिये हैं- **"शबरी अन्त्यज है तो क्या / वह शक्ति रूप है शूद्रा, / है तेज रूप वह केवल / शिव शक्ति रूप है शूद्रा।"**[201]

अपनी पूजा समाप्त कर शबरी जब मुनि मतंग के सम्मुख आयी तब उसने राम-लक्ष्मण को आसन पर बैठे देखा। प्रभु के दर्शनों से ही उसके शरीर में असीम आनन्द की सरिता फूट पड़ी और आनन्दातिरेक से अश्रुपात होने लगा। वह किंकर्तव्यविमूढ़ सी खड़ी होकर सोचने लगी कि प्रभु का स्वागत किस प्रकार करे, त्रैलोक्यपति के सम्मुख क्या रखे? वह प्रभु-चरणों में श्रद्धानत हो गयी। प्रभु ने शबरी को सादर आसन देकर पूजा का प्रसाद जंगली बेर उससे माँगा। शबरी ने अत्यधिक संकोच पूर्वक जंगली बेर चख-चख कर प्रभु को खिलाया। शबरी द्वारा अर्पित बेरों को सहज भाव से खाते हुए प्रभु ने शबरी को जगत्-जननी, पावन, तपस्विनी, धर्मरूपिणी और परम सती का सम्बोधन दिया। कविवर मेहता के शब्दों में रामचन्द्र जी द्वारा भक्तिमती शबरी को दिया गया निम्न सम्बोधन दर्शनीय है- **"है, अन्य कौन त्रेता में / जो श्रेष्ठ भक्त, शबरी से, / है मन्त्र, यज्ञ यह सब कुछ / सब सिद्ध इसी शबरी से।"[202]**

शबरी ने प्रभु से निवेदन किया कि उसकी प्रार्थना है कि वह अब क्षण मात्र के लिए भी प्रभु का वियोग सहन नहीं कर सकती। इतना कहते ही शबरी योगाग्नि की पुण्य ज्वाला में जल उठी तथा वह स्वर्ग लोक की ओर प्रस्थान कर गयी। सारे आश्रमवासी उसकी जयकार करने लगे उन्हें ज्ञात हो गया कि वह वास्तव में सती थी। केवल मतंग ऋषि ही अविचल भाव से खड़े थे उनके मन में बड़ा संतोष था- **"केवल मतंग थे अविचल / संतोष बड़ा था मन में, / शूद्रा से शक्ति बनी वह / संभव सब कुछ जीवन में।"[203]**

2-छ-VI कृति का मूलकथा से साम्य-वैषम्य

कविवर नरेश मेहता की कृति 'शबरी' का कथानक वाल्मीकीयरामायण से प्रभावित न होकर गोस्वामीतुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस से प्रभावित है। घटना का उद्गम यद्यपि रामायण ही है परन्तु कल्पनाशीलता के कारण कृति का कलेवर सर्वथा आधुनिक व भिन्न है। इस कृति में शबरी द्वारा श्रीराम को जूठे बेरों को खिलाने का वर्णन मूल कथानक से वैषम्य एवं नवधा भक्ति का कोई वर्णन न होना साम्य दर्शाता है। इस में शबरी की देह त्याग का वर्णन प्राप्त होता है जो मूल कथा से साम्य होना प्रदर्शित करता है। इसके अतिरिक्त कवि ने अपनी कल्पना से कृति में विभिन्न रंग भरे हैं। नवधा भक्ति के प्रसंग में इनकी कृति तथा श्रीरामचरितमानस में वैषम्य दृष्टिगत होता है। इस प्रकार हम सिद्ध कर सकते हैं कि सभी कृतियों के कथानक का मूलाधार आदिकवि वाल्मीकि कृत रामायण ही है। यद्यपि वैचारिक, साहित्यिक मेधा, भावना व भक्ति की भिन्नताओं के कारण विभिन्न कृतियों का मूलकथा से साम्य व वैषम्य एवं आपसी साम्य व वैषम्य स्वाभाविक ही है।

संदर्भ

1. अवध विलास - अनूठी रामायण - संत धर्मदास, सेठ गोविन्द दास (सदस्य लोक सभा) की सम्मति, श्याम नारायण सक्सेना (संकलन कर्ता), संत धर्मदास स्मारक एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी साहित्य सेवा संघ, 1128 संकटादेवी, जिला: खीरी, लखीमपुर उ. प्र. सं. 2029 पृ. 79 ।

2. श्रीरामचरितमानस - गो. तुलसीदास, हनुमान प्रसाद पोद्दार (टीकाकार), गीता प्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड 139-3 पृ. 116 ।
3. अवध विलास-अनूठी रामायण - संत धर्मदास, महादेवी वर्मा द्वारा दो शब्द, श्याम नारायण सक्सेना (सं.), संत धर्मदास स्मारक रा. हि. सा. से. सं., खीरी-लखीमपुर सं. 2029 : पृ. 44 ।
4. राम कथा-उद्‌भव और विकास, फादर कॉमिल बुल्के, भारतीय हिन्दी परिषद, इलाहाबाद, 1950 ई.।
5. हरि कथा अनन्ता - राजेन्द्र अरुण, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
6. अध्यात्म रामायण (हिन्दी अनुवाद सहित) - श्री मुनिलाल, गीता प्रेस, गोरखपुर, सं. 2027 वि. : 3-10-8 ।
7. वही, : 3-10-18 ।
8. वही, : 10-20-32 ।
9. आनन्द रामायण, सारकाण्ड : 7-162-166 ।
10. भट्टि काव्य : 6-59 ।
11. वही, : 6-60-62 ।
12. वही : 6-71 ।
13. राधेश्याम रामायण - अरण्यकाण्ड, सीताहरण : पृ. 21 ।
14. वही, : पृ. 22 ।
15. वही, : पृ. 24 ।
16. अरुण रामायण, अरण्यकाण्ड : पृ. 397 ।
17. जानकी जीवन : 3-47 ।
18. वनस्थली, सर्ग 8 : पृ. 143 ।
19. तुलसी पूर्व राम साहित्य-अमर पाल सिंह, रचना प्रकाशन, सन् 1948 ई.।
20. तुलसी रसायन- डा. भगीरथ मिश्र (पंचम सं.), इलाहाबाद, सन 1966 ई. : पृ. 36-66 ।
21. गोस्वामीतुलसीदास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (अष्टम सं.) प्रयाग, सन् 1935 ई.।
22. तुलसीदास और उनका काव्य - पं. राम नरेश त्रिपाठी, दिल्ली, सन् 1953 ई.।
23. तुलसी काव्य मीमांसा - डा. उदयभानु सिंह, दिल्ली, सन् 1966 ई. : पृ. 239-240 ।
24. श्रीरामचरितमानस - गोस्वामी तुलसीदास, गीता प्रेस गोरखपुर, अरण्यकाण्ड 33-3 : पृ. 572 ।
25. वही, अरण्यकाण्ड; 33-5 : पृ. 572 ।
26. वही, अरण्यकाण्ड; 35-6 : पृ. 574 ।
27. वही, अरण्यकाण्ड (छन्द) : पृ. 574 ।
28. मानस-पीयूष - अंजनी नंदन शरण (पाँच खण्डों में), गीता प्रेस, गोरखपुर, सं. 1948 वि.।
29. तुलसीदासोत्तर राम साहित्य - राम लखन पाण्डेय, अभिनव प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. सं.।
30. रामकाव्यधारा : अनुशीलन और चिन्तन - भगवती प्रसाद सिंह, सं. 1936 वि. ।
31. राम चन्द्रिका - आचार्य केशवदास : पृ. 12, 43, 46 ।
32. वही , : पृ. 12, 43, 46 ।
33. हिन्दी शोध : दिशायें प्रवृत्तियां एवं उपलब्धियाँ, सर्वोदय डा. गणेश प्रसाद वाङमय मुजफ्फापुर सन् 1982 ई., प्र. पृ. 358 ।
34. हिन्दी रामकाव्य का स्वरूप और विकास- बदलते युग बोध के परिप्रेक्ष्य में - प्रेम चन्द माहेश्वरी, वाणी प्रकाशन - दिल्ली, 1983; प्र. पृ. 499 ।
35. राम काव्यों में नारी - डा. विद्या, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली सन् 1998 प्र. पृ. 380 ।
36. राम कथा-भक्ति और दर्शन - डा. विश्वम्भर दयाल अवस्थी, सरस्वती प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद, सन् 2000 ई., प्र. पृ. 310 ।

37. रामायण-भारत के महाकाव्य का संक्षिप्त एवं आधुनिक स्वरूप (अंग्रेजी) - नारायणन रं.कं. तथा रामायणम् क. (2002) पेन्गुविन प्रकाशन, सं. रा. अ. ।
38. रामचरितमानस की समध्वनीय शब्दावली का सांस्कृतिक अनुशीलन - डा. विवेक कुमार श्रीवास्तव, ऊर्जा प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1997, प्र. सं. ।
39. कल्याण (विभिन्न अंक) गीता प्रेस, गोरखपुर
40. नागरी प्रचारिणी पत्रिका (विभिन्न अंक), श्री काशी।
41. सम्मेलन पत्रिका, मानस चतु:शती अंक विशेषांक, प्रयाग।
42. हिन्दी अनुशीलन (विभिन्न अंक), भारतीय हिन्दी परिषद, प्रयाग।
43. राम-कथा - उद्भव और विकास - फादर कामिल बुल्के, भारतीय हिन्दी परिषद इलाहाबाद, 1950 ई.।
44. वही, सन् 1971 ।
45. श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणम् - आचार्य जगदीश विद्यार्थी - गोविन्दराम दासानन्द, आर्य साहित्य भवन, नई सड़क दिल्ली, अरण्यकाण्ड सर्ग 1-16 (दण्डकारण्य वर्णन)।
46. वही, सर्ग - 17 : 34 ।
47. वही, सर्ग - 57 : 75 ।
48. वही, सर्ग - 73 : 26-27 ।
49. वही, सर्ग - 74 : 14-16 ।
50. वही, सर्ग - 38 : 12 ।
51. शबरी- कु. मायादेवी 'मधु', अरुण लिमिटेड मुरादाबाद, सन् 1939 ई., आश्रम, 15 : पृ. 6 ।
52. वही, आश्रम, 11 : पृ. 4 ।
53. वही, 16 : पृ. 6 ।
54. वही, 41 : पृ. 15 ।
55. वही, सेवा, 2 : पृ. 17 ।
56. वही, 3 : पृ. 18 ।
57. वही, 4 : पृ. 18 ।
58. वही, 10 : पृ. 20 ।
59. वही, 15 : पृ. 22 ।
60. वही, 22 : पृ. 24 ।
61. वही, 26 : पृ. 25 ।
62. वही, 37 : पृ. 26 ।
63. वही, 44 : पृ. 31 ।
64. वही, 29 : पृ. 26 ।
65. वही, 35, 36 : पृ. 28, 29 ।
66. वही, उत्कंठा, 2 : पृ. 33 ।
67. वही, 4 : पृ. 34 ।
68. वही, 7 : पृ. 35 ।
69. वही, 12 : पृ. 37 ।
70. वही, 71 : पृ. 56 ।
71. वही, दर्शन, 2 : पृ. 58 ।
72. वही, उत्कंठा, 27 : पृ. 42 ।
73. वही, 29 : पृ. 42 ।

74. वही, 33 : पृ. 44 ।
75. वही, दर्शन, 12 : पृ. 62 ।
76. वही, 20 : पृ. 64 ।
77. वही, 29 : पृ. 67 ।
78. वही, 39 : पृ. 71 ।
79. वही, 45 : पृ. 73 ।
80. वही, 54 : पृ. 76 ।
81. वही, सेवा, 17 : पृ. 82 ।
82. वही, उपदेश, 25 : पृ. 85 ।
83. वही, 25 : पृ. 85 ।
84. वही, 43 : पृ. 91 ।
85. वही, निवेदन, 7 : पृ. 94 ।
86. वही, 12 : पृ. 96 ।
87. वही, 17 : पृ. 97 ।
88. वही, 48 : पृ. 108 ।
89. वही, भ्रमनिवारण, 3 : पृ. 110 ।
90. वही, 8 : पृ. 111 ।
91. वही, 32 : पृ. 119 ।
92. वही, 41 : पृ. 122 ।
93. वही, 50 : पृ. 125 ।
94. वही, 53 : पृ. 125 ।
95. वही, आत्मज्ञान, 2 : पृ. 128 ।
96. वही, 12 : पृ. 132 ।
97. वही, 44 : पृ. 142 ।
98. वही, 56 : पृ. 146 ।
99. शबरी की भूमिका : पृ. 9 ।
100. वही, : पृ. 9 ।
101. शवरी - गोविन्ददास, भारतीय विश्व प्रकाशन, दिल्ली, सन् 1959 ई., एकांकी नाटक : पृ. 15
102. वही, एकांकी नाटक : पृ. 17 ।
103. वही, एक पात्री नाटक : पृ. 28 ।
104. वही, : पृ. 28 ।
105. वही, : पृ. 32 ।
106. वही, : पृ. 37 ।
107. वही, : पृ. 40 ।
108. वही, : पृ. 44 ।
109. वही, श्रव्य काव्य : पृ. 49 ।
110. वही, : पृ. 52 ।
111. वही, : पृ. 54 ।
112. वही, : पृ. 56 ।
113. शबरी - श्री धनंजय अवस्थी, संगम प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1981 ई. सोहन लाल द्विवेदी द्वारा भूमिका : पृ. 3 ।

114. वही, उद्‌भावना : पृ. 14 ।
115. वही, क्रान्ति : पृ. 24 ।
116. वही, : पृ. 27 ।
117. वही, : पृ. 34 ।
118. वही, संघर्ष : पृ. 45 ।
119. वही, : पृ. 51, 52 ।
120. वही, चेतना : पृ. 59, 60 ।
121. वही, : पृ. 60, 61 ।
122. वही, : पृ. 63 ।
123. वही, : पृ. 64 ।
124. वही, आस्था : पृ. 72 ।
125. वही, : पृ. 75, 76 ।
126. वही, साधना : पृ. 80 ।
127. वही, : पृ. 86, 87 ।
128. वही, : पृ. 88 ।
129. वही, बोध : पृ. 89 ।
130. वही, : पृ. 92 ।
131. वही, : पृ. 93-94 ।
132. वही, : पृ. 98 ।
133. वही, सिद्धि : पृ. 100 ।
134. वही, : पृ. 106 ।
135. वही, : पृ. 109 ।
136. वही, : पृ. 110 ।
137. श्रमणा- शबरी के राम - श्री 'अवधेश', अंजलि प्रकाशन, झाँसी, प्रथम सर्ग : पृ. 7 ।
138. वही, : पृ. 10 ।
139. वही, द्वितीय सर्ग : पृ. 14 ।
140. वही, : पृ. 18 ।
141. वही, : पृ. 22 ।
142. वही, : पृ. 25 ।
143. वही, तृतीय सर्ग : पृ. 26 ।
144. वही, : पृ. 29 ।
145. वही, : पृ. 34, 37 ।
146. वही, चतुर्थ सर्ग : पृ. 39 ।
147. वही, : पृ. 52 ।
148. वही, : पृ. 59 ।
149. वही, : पृ. 61 ।
150. वही, पंचम सर्ग : पृ. 70 ।
151. वही, षष्टम सर्ग : पृ. 87 ।
152. वही, : पृ. 90 ।
153. वही, सप्तम सर्ग : पृ. 102 ।
154. वही, : पृ. 110 ।

155. वही, अष्टम सर्ग : पृ. 114 ।
156. वही, : पृ. 122 ।
157. वही, : पृ. 135 ।
158. वही, नवम सर्ग : पृ. 142 ।
159. वही, : पृ. 148 ।
160. वही, दशम सर्ग : पृ. 153 ।
161. वही, : पृ. 165 ।
162. वही, ग्यारहवाँ सर्ग : पृ. 169 ।
163. वही, : पृ. 183 ।
164. वही, बारहवाँ सर्ग : पृ. 186 ।
165. वही, : पृ. 190 ।
166. वही, तेरहवाँ सर्ग : पृ. 204 ।
167. वही, : पृ. 209 ।
168. वही, चौदहवाँ सर्ग : पृ. 215 ।
169. वही, : प. 217 ।
170. वही, पन्द्रहवाँ सर्ग : पृ. 229 ।
171. वही, : पृ. 239 ।
172. वही, सोलहवाँ सर्ग : पृ. 244 ।
173. वही, : पृ. 248 ।
174. वही, सत्रहवाँ सर्ग : पृ. 265 ।
175. वही, : पृ. 267 ।
176. वही, अट्ठारहवाँ सर्ग : पृ. 279 ।
177. वही, उन्नीसवाँ सर्ग : पृ. 285 ।
178. वही, : पृ. 295 ।
179. वही, बीसवाँ सर्ग : पृ. 301 ।
180. वही, : प. 302 ।
181. वही, : पृ. 306 ।
182. वही, : पृ. 312 ।
183. वही, इक्कीसवाँ सर्ग : पृ. 318 ।
184. वही, : पृ. 320 ।
185. वही, : पृ. 322 ।
186. शबरी - श्री नरेश मेहता, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, त्रेता : पृ. 8 ।
187. वही, पंपासर : पृ. 15 ।
188. वही, : पृ. 17 ।
189. वही, : पृ. 18 ।
190. वही, : पृ. 19 ।
191. वही, : पृ. 21 ।
192. वही, : पृ. 22 ।
193. वही, तपस्या : पृ. 29 ।
194. वही, : पृ. 31 ।
195. वही, : पृ. 36 ।

196. वही, परीक्षा : पृ. 40 ।
197. वही, : पृ. 44 ।
198. वही, : पृ. 49 ।
199. वही, : पृ. 61 ।
200. वही, : पृ. 62 ।
201. वही, दर्शन : पृ. 70 ।
202. वही, : पृ. 79 ।
203. वही, : पृ. 80 ।

तृतीय अध्याय

तृतीय अध्याय

पात्र योजना

राम-कथा विषयक विभिन्न ग्रन्थों में वर्णित सामग्री का सम्यक अनुशीलन करने पर जो महत्वपूर्ण तथ्य सर्वप्रथम ध्यानाकर्षण करता है वह है राम-कथा के पात्रों की संख्या। वस्तुत: राम कथा का परिवेश जितना विस्तृत है उतनी ही विस्तृत है इसके पात्रों की संख्या भी।[1] राम-कथा के पात्रों का अध्ययन करने हेतु सर्व प्रथम पात्रों का उचित वर्गीकरण आवश्यक है। पात्रों को उनकी सामाजिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एवं उनके आचरण के आधार पर विभिन्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है। राम-कथा के प्रमुख पात्र हैं - राम, सीता, भरत, कैकेयी, राजा दशरथ, कौशल्या, मुनि वशिष्ठ, मुनि विश्वामित्र, राजा जनक, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, हनुमान, सुग्रीव, बालि, अंगद, जाम्बवन्त, रावण, मेघनाद, कुम्भकरण, मन्दोदरी, त्रिजटा, सूर्पणखा, शबरी व गुह्यराज निषाद।[2] विभिन्न विद्वानों ने राम-कथा के पात्रों के वर्गीकरण करने का प्रयत्न किया हैं।[3] मुख्यत: राम-कथा के पात्रों को मुख्य, गौण व अति गौण; पुरुष व नारी पात्र; देव, असुर, मनुष्य, पशु-पक्षी; राजसी, साधारण व आदिवासी (अरण्यवासी); सुहृदय व दुष्ट प्रकृति जैसे विभिन्न वर्गों में विभक्त किया जा सकता है।[4] इन वर्गीकरणों के संयोग से राम-कथा के पात्रों के अनगिनत भेद-प्रभेद संभव हैं। विद्वज्जनों ने तर्क संगत शोध निष्कर्षों के अनुपालनार्थ राम-कथा के पात्रों को दो वर्गों (मुख्य एवं गौंण) दो उपवर्गों (सुर एवं असुर जन) एवं दो उप-उपवर्गों (राजसी एवं साधारण) पात्रों में विभक्त किया है।[5]

आधुनिक युग नारी जागरण का युग है। आधुनिक रामकाव्यों में नारी के किसी न किसी विशिष्ट गुण को रेखांकित और परिभाषित करनें का उपक्रम है। आधुनिक युगीन नैतिक व सामाजिक मान्यताएँ इन्हीं नारी पात्रों के माध्यम से अपना प्रतिबिम्ब खोजती हैं। मध्य युग के व्यक्तित्व विहीन नारी चरित्र इन्हीं पात्रों के माध्यम से अपनी अस्मिता तथा व्यक्तित्व का पुर्नसंस्कार कर सके हैं। जहाँ आधुनिक युग में उर्मिला, कैकेयी, माँडवी, श्रुतिकीर्ति जैसे पात्रों को नया आयाम मिला वहीं मंथरा, सूर्पणखा, शबरी, सुमित्रा व कौशल्या सभी के व्यक्तित्वों को परिवर्तित युग के संदर्भ में नया संस्कार भी प्राप्त हुआ। आधुनिक कवियों ने इन पात्रों को न केवल करुणा व सहानुभूति ही अर्पित की, अपितु उनके व्यक्तित्व में निहित सौन्दर्य, प्रेम, स्वाभिमान, आत्मोत्सर्ग एवं राष्ट्रीय भावना को भी विभिन्न कोंणों से उजागर किया है।[6] आधुनिक युग में विभिन्न नारी पात्रों पर रचनाओं यथा अहिल्या का 'पाषाणी' (शरण बिहारी गोस्वामी व जानकी वल्लभ कृत), मंथरा का 'एक विश्वास और' शबरी का (माया देवी 'मधु', धनन्जय अवस्थी, 'अवधेश' व गोविन्ददास कृत) 'शबरी' संज्ञक कृतियाँ इत्यादि का प्रणयन किया गया।[7]

'शबरी' नामक पात्रा राम-कथा की राम भक्ति प्रवण नारियों के 'गौण-सुरजन-साधारण-उपवर्ग' की प्रतिनिधि पात्रा है।[8] शबरी प्रसंग लगभग सभी राम-कथा मूलक कृतियों में सूक्ष्म रूप से विद्यमान है। कहीं-कहीं तो शबरी का मात्र नामोल्लेख ही प्राप्त होता है। यद्यपि शबरी प्रसंग अति संक्षिप्त है तथापि वह राम-कथा रूपी ब्रह्मांड के अनन्त विस्तार के परम विस्तृत आलोक में किसी दूरस्थ स्थित ग्रह की भाँति यदा-कदा टिमटिमाता सा प्रतीत होता है। क्षणांश के लिए ही सही वह अपनी अमिट छाप प्रबुद्ध पाठकों के हृदय पर छोड़ जाता है। शबरी प्रसंग की पात्र योजना के सम्यक अनुशीलन हेतु वाल्मीकीयरामायण (मूलकथा) एवं आधुनिक हिन्दी साहित्य की शबरी संज्ञक काव्य कृतियों की पात्र-योजना का समीक्षात्मक अध्ययन अधोलिखित अनुच्छेदों में किया जा रहा है।

महाकवि वाल्मीकि द्वारा शबरी प्रसंग को किंचित संक्षिप्त रूप में ही रामायण महाकाव्य में स्थान प्रदान करना किसी निश्चित प्रयोजन को अभीष्ट मानकर ही किया गया है। हर रचना की तरह रामायण में भी निष्प्रयोजन कुछ भी नहीं है। धार्मिक रूप से शबरी प्रसंग का महत्व एक अन्त्यज, अछूत, अनपढ़ उस पर भी स्त्री भक्त द्वारा भक्ति की पराकाष्ठा प्राप्त कर लेने पर भगवान द्वारा उसे दर्शन दिये जाने और मोक्ष प्रदान करने के अनेक आख्यानों में से एक आख्यान है। सामाजिक दृष्टि से शबरी प्रसंग का महत्व तात्कालिक वर्णाश्रम धर्म की विशेषताओं, कलुषिताओं एवं विद्रुपताओं को एक सक्षम पुरुष द्वारा मिटाने का प्रयास है। शबरी-आख्यान का एक अप्रत्यक्ष परन्तु राजनैतिक प्रयोजन यह भी हो सकता है कि कैसे एक राज्यच्युत राजा सदियों से दबी कुचली, निरीह व निस्सहाय जनता से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करके जनता का प्यार, आदर और सहयोग प्राप्त कर सकता है। साथ ही साथ उपलब्ध संसाधनों के समुचित उपयोग द्वारा एक सर्वसाधन सम्पन्न एवं बलशाली शत्रु को परास्त करने का भगीरथ प्रयत्न भी इस दृष्टांत में परिलक्षित होता है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के कुछ संवेदनशील साहित्यकारों ने शबरी जैसी गौण नारी पात्रा के चरित्र की कुछ विशिष्ट उत्कृष्टताओं को अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज के समक्ष नये-2 दृष्टिकोणों से उद्घाटित करने का प्रयत्न किया। विभिन्न कवियों द्वारा शबरी संज्ञक रचनाओं की सर्जना के पीछे निश्चय ही रामायण कालीन सामाजिक परिस्थितियों में भी एक अन्त्यज-अछूता-स्त्री द्वारा भगवत्भक्ति द्वारा अर्जित आत्मज्ञान व बुद्धिमत्ता के द्वारा अपने चैतन्य की रक्षा एवं सामूहिक जड़ता (विरोध) के समक्ष अडिग रहते हुए योग, दर्शन एवं भक्ति की पराकाष्ठा (मोक्ष) तक पहुँचने की घटना को उद्घाटित करना ही कारण रहा होगा।[9] इन कृतियों में वर्णाश्रम धर्म की विद्रूपताओं एवं उसमें पिसती हुयी नारी जाति तथा इसकी बेड़ियों में जकड़ी सामाजिक दुरव्यवस्था, जिसने एक महान ब्रह्मज्ञानी व तेजस्वी ऋषि को भी अपना शिकार बना डाला के ऊपर कुठाराघात किया गया है। इन रचनाओं द्वारा इन कुरीतियों को दूर किये जाने हेतु छेड़े जाने वाले सामाजिक युद्ध का शंखनाद किया गया है ताकि आज के प्रगतिशील समाज में इस तरह की वीभत्स घटनाओं

की पुनरावृत्ति ना हो सके। इसी क्रम में प्रत्येक रचनाकार ने अपनी रचना को यथोचित आयाम देने हेतु विभिन्न पात्रों का समावेश किया है। मूलकथा में वर्णित शबरी के अतिरिक्त मतंग मुनि, कबन्ध, वितण्ड मुनि, राम, लक्ष्मण, सुग्रीव इत्यादि के साथ ही साथ कुछ नये पात्रों की सर्जना तथा प्रमुख स्थलों जैसे- पम्पासर, मतंगाश्रम, पंचवटी इत्यादि का समावेश करके कथानक को सम्पूर्णता प्रदान की गयी है।[10]

शबरी संज्ञक प्रबन्धकाव्यों (महाकाव्यों एवं खण्ड-काव्यों) की रचना हेतु नवीन विषयों, वस्तुओं, जीवों, घटनाओं व निर्जीव वस्तुओं को भी सजीव मानकर उनसे वार्तालाप, प्रकृति-वर्णन, प्रतीकों व बिम्बों का प्रयोग, काव्यों के पात्रों के चरित्र-चित्रण में सहायक सिद्ध हुआ है। प्रस्तुत अध्याय का मुख्य उद्देश्य शबरी संज्ञक काव्य कृतियों के प्रमुख पात्रों के चरित्रांकन एवं उनकी विशिष्टताओं को मूल एवं ख्यात कथा के पात्रों के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करना है। साथ ही इस अध्याय में समीक्ष्य कवियों द्वारा उद्घाटित शबरी की चारित्रिक विशेषताओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी अभीष्ट है। इस शोध कार्य में प्रयुक्त प्रमुख संदर्भ ग्रन्थों की पात्र योजना व चरित्र-विधान का अध्ययन क्रमिक रूप से निम्न अवतरणों में किया गया है।

3-क वाल्मीकीयरामायण (मूलकथा) के पात्रों का चरित्रांकन

वाल्मीकीयरामायण में वर्णित शबर्याख्यान अत्यन्त संक्षिप्त है। इसके आधार पर कबन्ध द्वारा श्रीराम व लक्ष्मण को पम्पासरोवर स्थित मतंगाश्रम जा कर शबरी को दर्शन देने का आग्रह, राम का भ्राता सहित पम्पासर पदार्पण, संवाद एवं शबरी उद्धार तथा किष्किन्धा गमन ही वर्णित है। कृति के आधार पर मात्र शबरी का चरित्र चित्रण ही सम्भव है।

3-क-I वाल्मीकीय रामायण (मूल कथा) में शबरी की चरित्रगत विशेषताएँ

शबरी-आख्यान मूलकथा के मात्र कुछ श्लोकों में वर्णित है। ध्यानपूर्वक अवलोकन करने पर भी श्लोकों में प्रयुक्त विशेषणों के आधार पर शबरी की चरित्रगत विशेषताओं को समझना किंचित दुरूह कार्य है। प्रयुक्त श्लोकों की समीक्षात्मक रूप से विवेचना करने से प्राप्त ज्ञान को क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित करके शबरी का चरित्रांकन करने का प्रयास किया गया है।

3-क-I-1 चिरजीवनी : वाल्मीकीयरामायण की शबरी राम की प्रतीक्षा करते-2 वृद्धावस्था को प्राप्त हो गयी है। पंपासरोवर के तट पर मतंग ऋषि के आश्रम में ऋषियों के चले जाने पर भी तपस्विनी शबरी वहीं निवास करती है। शबरी चिरजीवनी होकर सदैव धर्माचरण में रत रहती है- **"तेषां गतानामद्यापि दृश्यते परिचारिणी। / श्रवणी शबरी नाम काकुस्थ चिरजीवनी।"**[11] इसके अतिरिक्त दो और श्लोकों में श्रीराम के दर्शनों के समय शबरी को अतिशय वृद्ध और कृशकाय दर्शाया गया है- **"रामेण तापसी पृष्टा सा सिद्धा सिद्ध सम्मता। / शशंस शबरी वृद्धा रामाय प्रत्युपस्थिता।"**[12]

3-क-I-2 रूप : वाल्मीकीयरामायण में सात्विक गुणों की प्रतीक शबरी का चरित्रांकन अत्यन्त तपोनिष्ठा श्रमणी के रूप में किया गया है। आदि कवि ने उसके रूप के विषय में कुछ भी नहीं कहा है।

3-क-I-3 वेशभूषा : आदि कवि वाल्मीकि का कथन है कि शबरी सिर पर जटा, शरीर पर चीर तथा काला मृग-चर्म धारण किया करती है - **"इत्युकत्वा जटिला वृद्धा चीर कृष्णाजिनाम्बरा। / तस्मिन मुहूर्ते शबरी देह जीर्ण जिहासती।"**[13]

3-क-I-4 आहार : आदि कवि वाल्मीकि के अनुसार शबरी राम के लिए वन्य फल-फूलों का संचय करती है। इससे यह संकेत मिलता है कि वह स्वयं भी वन्य फल-फूलों का आहार करती है। आहार पर उसका पूर्ण नियन्त्रण है। शबरी राम से कहती है कि मैने आपके लिए वन के विविध कन्दमूल एकत्र कर रखे हैं- **"मया तु संचित वन्य विविध पुरुषर्षभ्।"**[14]

3-क-I-5 तप : कबन्ध राम से शबरी का परिचय देते हुए कहता है कि शबरी चिरजीविनी होकर सदैव धर्म के अनुष्ठान में लगी रहती है। राम उस धर्मपरायणा तपस्विनी को देखते ही उससे तपस्या विषयक प्रश्न पूछते हैं- **"कच्चिते निर्जिता विघ्ना: कच्चिते वर्धते तप:। / कच्चिते नियत: क्रोध आहारश्च तपोधने।"**[15] उसका तपोबल अद्वितीय है। वह अपने गुरुजनों की आज्ञा के कारण उस आश्रम में तप करते हुए राम की प्रतीक्षा करती है। जब उसका उद्देश्य पूरा हो जाता है तो शबरी राम से अपनी देह को परित्याग करने की आज्ञा माँगती है।

3-क-I-6 सिद्धा : शबरी न केवल साधिका बल्कि एक सिद्धा नारी भी है तथा सिद्धों द्वारा सम्मानित है। शबरी राम से स्वयं कहती है कि आज आपका दर्शन पाकर मुझे अपनी तपस्या की सिद्धि प्राप्त हो गयी है तथा मेरा जन्म सफल हो गया है- **"अद्यप्राप्ता तप: सिद्धस्तव सन्दर्शनामन्या। / अद्य में सफलं तप्तं गुरवश्च सुपूजिता:।"**[16]

3-क-I-7 गुरुभक्ति : शबरी मतंग मुनि तथा उनके अन्य शिष्यों की सेवा तथा पूजा किया करती थी। उसने अपने गुरुजनों को अपना भावितात्मा माना है। शबरी स्वयं को उन महर्षियों के चरणों की दासी मानती थी तथा अपने प्राणों का विसर्ग करके शीघ्र ही उनके पास पहुँचना चाहती है। राम के दर्शनों के उपरान्त वह राम से कहती है कि- **"अनुज्ञाता तु रामेण हुत्वाऽऽत्मानं हुताशने। / ज्वलत्पावक सङ्काशा स्वर्गमेव जगाम सा।"**[17]

3-क-I-8 राम भक्त शबरी : शबरी राम को दर्शन करने के लिए कठोर तप करती है। राम के दर्शन के बिना अपने तप तथा गुरुजनों की सेवा को अपूर्ण मानती है। राम के दर्शन होते ही वह अपनी तपस्या सफल तथा अपने जीवन को सार्थक मानती है। शबरी भक्ति पूर्वक राम का सानुज आतिथ्य-सत्कार करती है तथा राम को यह भी बताती है कि गुरू के आदेश के कारण वह राम की भक्ति किया करती है।

3-क-I-9 विदुषी : यद्यपि परवर्ती भक्ति प्रधान कवि शबरी को विद्याहीन मानते हैं परन्तु आदि कवि वाल्मीकि तथा महाकवि भट्टि ने उसे पूर्ण विदुषी माना है। आदि कवि वाल्मीकि का कथन है कि शबर जाति का होने पर भी उसे परमात्मा का पूर्ण ज्ञान है। वह अतिथियों का स्वागत करने वाली है। देवताओं का हवन कर्म करती है- **"पाद्यमाचनीयं च सर्व प्रादाद्यथाविधि। / तामुवाच ततो रामः श्रमणी शंसितव्रताम्।"[18]**

3-क-I-10 संस्कारी : शबरी महान संस्कारी नारी है। वह निम्न जाति में जन्म लेने के उपरान्त भी अत्यन्त संस्कारशील नारी है। वह राम तथा लक्ष्मण के दर्शन के पश्चात् उनका चरण-स्पर्श कर उन्हें प्रणाम करती है- **"तौ च दृष्टा तदा सिद्धा समुत्थाय कृताञ्जलिः। / रामस्य पादौ जग्राह लक्ष्मणस्य च धीमतः।"[19]**

3-क-I-11 योगिनी : शबरी एक महान योगिनी भी है। इसके लिए वह आत्म समाधि से स्वर्ग-लोक जाने में समर्थ होती है। वह चित्त को योग के द्वारा एकाग्र किया करती थी। योग के कारण ही वह अपनी चित्तवृत्तियों का विरोध करने में समर्थ थी- **"दिवं तु तस्यां यातायां शबर्या स्वेन जेतसा। / हित कारिणमेकाग्नं लक्ष्मण राघवोऽब्रतीत्।"[20]**

3-ख कु. माया देवी 'मधु' कृत 'शबरी' के पात्रों का चरित्रांकन

कुमारी मायादेवी 'मधु' रचित खण्ड-काव्य 'शबरी' भारतीय स्वातन्त्रयोत्तर युग के हिन्दी काव्याकाश का एक अनुपम एवं मधुरतम रचनाओं का प्रतिनिधि ग्रन्थ है। 'मधु' एक प्रगतिशील, विचारक एवं स्त्री जाति की सामाजिक अवस्था (वर्तमान एवं ऐतिहासिक दोनों ही संदर्भों में) से क्षुब्ध कवयित्री हैं जिनकी भाषा अत्यन्त मनोहारी है। खण्ड-काव्य में पात्रों की भरमार न करके उन्होंने बड़ी ही शालीनता एवं स्वच्छता से भारतीय स्त्रियों की हीन दशा को उभारने का प्रयास किया है। इसी क्रम में शबरी का चरित्र सृजित हुआ है। 'मधु' ने शबरी के माध्यम से भारतीय समाज में सदियों से प्रचलित स्त्रियों की हीनदशा के परिमार्जन हेतु विभिन्न सुझाव दिये हैं। इस खण्ड-काव्य द्वारा 'मधु' ने यह प्रतिपादित करने की महती चेष्टा की है कि स्त्री जाति पुरुषों से किसी प्रकार से हीन नहीं है और शबरी का चरित्र उसी का उदाहरण है।

शबरी मायादेवी 'मधु' की कृति की नायिका है। इस खण्ड-काव्य में पात्रों की सर्जना में कल्पना का समावेश अल्पतम है। राम, लक्ष्मण तथा मतंग मुनि जैसे पुरुष पात्रों को मुख्य पात्रों की श्रेणी में रखना श्रेयस्कर है। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य पात्र भी कथानक को विस्तार प्रदान करते हैं। माया देवी 'मधु' कृत 'शबरी' में अन्य गौण पात्रों में पम्पासर निवासी, मुनि वृन्द एवं एक विशेष अनाम ऋषि का चरित्र चित्रण समवेत रूप से किया गया है। उस समय के ऋषि मुनियों एवं समाज का जो चित्रण कवयित्री ने किया है उसकी विस्तृत समीक्षा चतुर्थ अध्याय में सामाजिक परिवेश के अन्तर्गत की गयी है। माया देवी ने अपने पात्रों के चुनाव व उनके चरित्र चित्रण में अपनी कला-कौशल तथा विस्तृत कल्पना-शीलता का परिचय देते हुए तात्कालिक वातावरण

का विहंगम दृश्य प्रस्तुत करने में अपनी अद्‌भुत काव्य क्षमता सिद्ध की है। इस अध्याय के अगले चरण में मायादेवी के खण्डकाव्य के मुख्य पात्रों का चरित्र चित्रण और उनकी प्रमुख चारित्रिक विशेषताओं का अध्ययन किया गया है जो निम्नलिखित हैं-

3-ख-I शबरी का चरित्रांकन

3-ख-I-1 भीलनी नारी : कु. माया देवी 'मधु' कृत शबरी खण्ड-काव्य में शबरी का परिचय एक पुत्रविहीना भीलनी नारी के रूप में हुआ है। जो श्रद्धा-भक्ति में पारंगत है तथा ऋषि के आश्रम में उपस्थित है- **"बस ऐसे समय वहाँ पर, / एकाकी, पुत्रविहीना। / भीलनी एक, शबरी थी, / अति श्रद्धा-भक्ति प्रवीणा।"**[21] वह स्वयं को लघु वर्ण की नारी बताते हुए भगवान से प्रश्न करती है कि ऋषि की सेवा करने की उसकी अभिलाषा कब पूरी होगी?

3-ख-I-2 सेवा-भावना : शबरी मुनि के आश्रम के आस-पास रह कर गुप्त भाव से आश्रम के सारे कार्य करती रहती है; जैसे मार्ग परिष्कृत करना, यज्ञ के लिए समिधा लाना इत्यादि- **"वह प्रातः काल प्रथम ही, / थी मार्ग परिष्कृत करती। / फिर अग्नि प्रज्जवलन हित बहु- / ला काष्ठ वहाँ पर धरती।"**[22]

3-ख-I-3 अशिक्षित नारी : माया देवी 'मधु' कृत 'शबरी' खण्ड-काव्य की नायिका शबरी एक अशिक्षित नारी है। जब शिष्यगण शबरी को मुनि मतंग के समक्ष लाते हैं तब वह मुनि से स्वयं कहती है- **"मैं अबला ज्ञान विहीना, / उत्कट दर्शन-अभिलाषा। / सेवा-व्रत द्वारा मैने, / की पूर्ण हृदय की आशा।"**[23] श्रीराम आगमन के पश्चात् जब राम ने शबरी से अभीष्ट वर माँगने के लिए कहा तो उस समय भी शबरी ने कहा कि वह अशिक्षित नारी है- **"हूँ मूर्खा ज्ञान विहीना, / फिर अधम भीलनी नारी। / वह कहाँ वाक्य पटुता है, / विनती कर सकूँ तुम्हारी।"**[24]

3-ख-I-4 वैरागिनी : जब शिष्य गणों के साथ आयी हुयी शबरी को ऋषि ने देखा तो उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ मानो शबरी ने सारे सुखों का परित्याग कर दिया हो और उसकी कोई तृष्णा शेष न बची हो। उसके मुख पर अतुलनीय तेज विद्यमान था- **"ऋषि ने शबरी को देखा, / कृशकाय, अर्द्ध वसना थी। / जग-वैभव-सुख परित्यक्ता, / अब शेष ना कुछ तृष्णा थी।"**[25]

3-ख-I-5 श्रीराम-आगमन के प्रति उत्कण्ठित : मतंग मुनि द्वारा अपने अन्तिम समय में शबरी को यह बताना कि राम तेरी कुटिया में अवश्य पधारेंगे और तेरे सारे दुखों का हरण करेंगे। यह सुनने के पश्चात् वह प्रतिपल श्रीराम-आगमन की प्रतीक्षा करती रहती है- **"श्रीराम-आगमन की फिर, / उत्कण्ठा बढ़ती जाती। / प्रति-पल रह रह कर उसको, / थी प्रेमातुरा बनाती।"**[26]

3-ख-I-6 भक्तिमती नारी : शबरी श्रीराम-आगमन की प्रतीक्षा करते हुए प्रेमाकुल हो गयी है। वह नित्य प्रति मार्ग परिष्कृत करती रहती है, उसका प्रेम उन्माद की सीमा को पार कर गया है।

ऐसा प्रतीत होता है कि उस भक्तिमती शबरी के भाग्य जाग जायेंगे- **"उन्माद प्रेम की सीमा- / को त्याग बढ़ा था आगे। / उस भक्तिमती शबरी के, / थे सुप्त भाग्य अब जागे।"**[27]

3-ख-I-7 आतिथ्य सत्कारी : शबरी को आतिथ्य सत्कार के विषय में पर्याप्त ज्ञान है। वह मन में विचार करती कि प्रभु-आगमन पर उनके सामने क्या रखना है। इसलिए वह जंगल से फल एकत्र करती थी। जो फल मीठे होते, उन्हें रख लेती तथा जो खट्टे होते उन्हें फेंक देती- **"आतिथ्य-धर्म पालन हित, / क्षण क्षण होती थी विह्वल। / वह चख-चख कर रखती थी, / जो होते थे मीठे फल।"**[28]

3-ख-I-8 प्रेम प्रमत्ता : शबरी अपने भगवान श्रीराम के प्रेम में मगन है उसे अपने शरीर की भी सुधि नहीं है। शबरी भगवान के प्रेम में अपनी सुध-बुध खो बैठी है, उसे कुछ होश नहीं रहता है- **"तज देह-गेह की सुधि को, / थी भक्ता ध्यानासक्ता। / जग-वैभव सुख परित्यक्ता, / थी गुण-गण में अनुरक्ता।"**[29]

3-ख-I-9 सुसंस्कारवान नारी : शबरी में संस्कार कूट-कूट कर भरा हुआ है। वह एक संस्कारी नारी है। जब श्रीराम उसकी कुटिया में पधारते हैं; तब अपने अच्छे संस्कारों के कारण उनके चरणों में साष्टांग दण्डवत करती है- **"श्रीराम पाद पद्मों में / साष्टांग दण्डवत करके। / हूँ पूर्ण मनोरथ बोली, / अति मोद हृदय में भरके।"**[30]

3-ख-I-10 तपस्विनी नारी : जब शबरी श्रीराम आगमन के पश्चात् प्रभु को दण्डवत करती है तब प्रभु उसे तपस्विनी कहकर सम्बोधित करते हैं तथा कहते हैं कि तूने अपनी सेवा के द्वारा विघ्नों को पराजित किया है- **"हे तपस्विनी, सुन तूने / विघ्नों को किया पराजित। / अपनी सेवा के द्वारा, / की भक्ति पवित्र उपार्जित।"**[31] रामचन्द्रजी के आश्रम आगमन पर आश्रमवासी उनसे निवेदन करते हैं कि पंपासर का जल दूषित हो गया है, उस जल को पवित्र करने का उपाय करिये। यह सुनकर लक्ष्मण कहते हैं कि शबरी जैसी तपस्विनी नारी का अपमान करने से यह फल प्राप्त हुआ है।

3-ख-I-11 नवधा भक्ति की अधिकारिणी : शबरी द्वारा दिये गये बेर खाने के पश्चात् श्रीराम चन्द्र ने कहा कि शबरी के जैसा दूसरा कोई अन्य भक्त नहीं हो सकता। अत: उन्होंने शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश दिया- **"सुन और बताऊँ तुझको, / नव विधा भक्ति मन हारी। / मैं गोप्य रखूँगा कैसे? / पाकर तुझसा अधिकारी।"**[32]

3-ख-I-12 भक्ति एवं श्रद्धा की मूर्ति : शबरी भक्ति एवं श्रद्धा की प्रतिमूर्ति है। पम्पासर को पवित्र करने का निवेदन करने आये आश्रम वासियों से लक्ष्मण शबरी को भक्ताग्रगण्या तपस्विनी सम्बोधन प्रदान करते हैं- **"भक्ताग्रगण्या शबरी के / उर निधि की भक्ति तरंगे। / तुम सबके कलुषित उर में, / भर सकी न उच्च उमंगे।"**[33] लक्ष्मण मुनियों से कहते हैं कि शबरी श्रद्धा की प्रतिमा है उस श्रद्धा की जीवित प्रतिमा का तुमने निरादर किया है- **"श्रद्धा की जीवित**

प्रतिमा- / का तुमने किया निरादर। / मृत्तिका तुल्य मणि जानी, / सागर को समझा गागर।"[34]

3-ख-I-13 पवित्रता : शबरी पवित्रात्मा है। लक्ष्मण को यह बात ज्ञात है। अतएव वह आश्रम वासियों से कहते हैं कि उस पवित्र आत्मा का अपमान करने के कारण ही सरोवर का जल दूषित हो गया है। अत: आप लोग शबरी को पम्पासर के तट पर ले जाइये उसके हाथों के स्पर्श से ही जल पवित्र हो जायेगा- **"पम्पासर होगा पावन, / इस शबरी को ले जाओ। / इसके वर-वरद करों से, / सर आप स्पर्श कराओ।"[35]**

3-ख-II मुनि मतंग का चरित्र चित्रण

माया देवी 'मधु' कृत 'शबरी' में मुनि मतंग का वर्णन बहुत ही संक्षिप्त रूप में हुआ है। मुनि मतंग का वर्णन 'सेवा' नामक उपखण्ड में आया है। जिस समय शबरी खण्ड-काव्य में प्रविष्ट होती है लगभग उसी समय मुनि मतंग का वर्णन भी आरम्भ होता है। जब शबरी मुनि मतंग के आश्रम में प्रवेश करती है तब उसे मतंगाश्रम की व्यवस्था और परिवेश का सम्यक दर्शन तत्काल हो जाता है। लगभग सारे ऋषि-मुनिगण ऋषियोचित दैनन्दिनी का पालन करते हैं जिसमें एक निश्चित वेश-भूषा, संध्यावंदन, स्वच्छता, पवित्रता, सत्यवादिता, उदारता, दया, क्षमा, करुणा, प्रकृति तथा जीव जन्तु प्रेम, सारी बातों का समावेश रहता है। कुछ अधिष्ठाता ऋषि अपने-अपने आश्रमों में शिक्षा-दीक्षा का कार्य भी करते हैं जैसे मुनि मतंग। मुनि मतंग के गुणों का जो चित्रण 'मधु' ने अपनी कृति में खींचा है उसका निम्न प्रकार से वर्णन किया जा सकता है।

3-ख-II-1 वेश-भूषा : ऋषि मतंग की वेश-भूषा ऋषियोचित वेश-भूषा है। ऋषि एक कोपीन धारण करते हैं, हाथों में कमण्डल तथा शरीर पर भस्म लेपन करते हैं। सिद्धासन में एक मृगचर्म पर वे आसीन रहते हैं- **"कर मण्डित मञ्जु कमण्डल; / कृश कटि, कोपीन अजिन का। / जाज्वल्यमान भस्मावृत, / था भव्य-भेष अति मुनि का। / मृग चर्म सुखद आसन था, / बैठे सिद्धासन मारे। / तप, तेज, नियम, संयम से- / तन शुभ्र सौम्य-गुण धारे।"[36]**

3-ख-II-2 नियम-संयमी : मुनि मतंग अपने नियम-संयम व तपस्या के द्वारा ज्योर्तिमय हो उठते हैं। तप के प्रभाव से उनकी बुद्धि, बल व विद्या बहुत बढ़ जाती है। ऋषि रोज प्रात: काल नियम पूर्वक मार्जन व संध्या-वन्दन करते हैं- **"जब ऋषि मार्जन को जाते, / नित मार्ग परिष्कृत पाते। / नव कार्य्य देखकर के वह, / थे मन में अति हर्षाते।"[37]**

3-ख-II-3 तेजस्वी मुनि : अपने तेज के प्रताप से ऋषि मतंग अन्य ऋषियों- मुनियों में गणमान्य एवं वंदित हो उठते हैं- **"मुख मण्डल ज्योतिर्मय था, / राका-शशि-प्रभा विनिन्दित। / तप-तेज-आयु-विद्या-बल, / बहु ऋषि-मुनि द्वारा वन्दित।"[38]**

3-ख-II-4 समदर्शी : मतंग ऋषि एक समदर्शी व्यक्तित्व के स्वामी हैं। जिन्होंने शबरी नामक अत्यन्त दीन भीलनी को भी अपने आश्रम में रहने की आज्ञा प्रदान की है। वे अपने अन्य शिष्यों और शूद्रा शबरी में समभाव रखते हैं। अन्य ऋषियों द्वारा शबरी को आश्रम में स्थान देनें पर प्रतिवाद करने पर मतंग कोई प्रत्युत्तर नहीं देते- **"पर प्रत्युत्तर न दिया कुछ, / यह ऋषिवर थे समदर्शी। / हैं सदा साधु सह लेते, / खलवाणी, मर्म-स्पर्शी।"**[39]

3-ख-II-5 गुणों के पारखी : मतंग ऋषि गुणों के पारखी हैं। शबरी से संभाषण के फलस्वरूप वे उसके चारित्रिक गुणों को तत्काल परख लेते हैं। उन्हें ज्ञात हो जाता है कि शबरी एक साधारण नारी नहीं है बल्कि भक्ति-तत्व-मर्मज्ञा है; और शूद्रा होने के पश्चात् भी आश्रम में स्थान प्राप्त करने की अधिकारिणी है- **".... बोले मतंग ऋषि उससे, / सुन भद्रे, परम प्रवीणा। / तुम रहो हमारे आश्रम, / हे भक्ति तत्व मर्मज्ञा! / अन्नादि यहाँ सादर लो, / धारण कर मेरी आज्ञा।"**[40]

3-ख-II-6 दूरदृष्टा : मतंग अन्य ऋषियों की भांति बाह्य आडम्बर और कलेवर से प्रभावित नहीं होते हैं, अपितु शबरी की भगवत् भक्ति परायणता एवं सेवा-भावना से अति प्रभावित होते हैं। मतंग को भक्त की महिमा ज्ञात है और वे अपनी दिव्य दृष्टि द्वारा शबरी का भविष्य जान लेते हैं- **"फिर ऋषि ने हृदय विचारा। / शबरी उच्चात्मा, भक्ता। / है भगवत्-भक्ति-परायण, / मम सेवा में अनुरक्ता।"**[41]

3-ख-II-7 त्रिकालदर्शी : मतंग एक त्रिकालदर्शी ऋषि हैं। अपनी वृद्धावस्था में शरीर त्याग के समय शबरी को दु:खी देखकर वे भगवान के द्वारा उसे दर्शन मिलने के गुप्त रहस्य की बात उद्घाटित कर देते हैं- **"अवसाद" छोड़ ऋषि बोले / है तेरी सेवा का श्रम। / श्री राम दयालु द्रवित हो, / आवेंगे तेरे आश्रम। / इन चर्म-चक्षुओं से ही / तू दर्शन-लाभ करेगी। / नर रूप देख नारायण, / भव-सागर पार तरेगी।"**[42]

3-ख-III राम का चरित्रांकन

कु. माया देवी 'मधु' कृत -शबरी' खण्ड-काव्य में एक ओर जहाँ 'शबरी' नायिका के रूप में वर्णित हुयी है वहीं पर श्रीराम नायक के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं। कु. माया देवी ने राम के मानव तथा भगवत् स्वरूप का विस्तृत वर्णन किया है। खण्ड-काव्य के मुख्य भाग में श्रीराम का पम्पासर आगमन, शबरी के आश्रम में पदार्पण, शबरी का आतिथ्य सत्कार ग्रहण करना तथा उसके द्वारा प्रदत्त जूठे बेर खाने के क्रिया कलापों और उनसे सम्बन्धित विशेषताएं श्रीराम के मानवस्वरूप की चारित्रिक विशेषताएँ हैं। तत्पश्चात् शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश, तात्कालिक ऋषि मुनियों को उपदेश, भ्रम निवारण इत्यादि आख्यानों में उनका भगवत् स्वरूप और उनकी चारित्रिक विशेषताओं को मानवोपरि दर्शाने का सम्यक प्रयास किया गया है। इस प्रक्रिया में माया देवी 'मधु' की कृति शबरी के मुख्य पात्रों में राम का चरित्र चित्रांकन निम्न प्रकार से किया जा सकता है-

3-ख-III-1 राम के मानव स्वरूप का चरित्रांकन : दाशरथि राम शबरी की तपस्या, भक्ति तथा प्रेम की पराकाष्ठा और पम्पासर निवासियों द्वारा शबरी के सामाजिक बहिष्कार व तिरस्कार से पूर्णत: अवगत हैं। श्रीराम पम्पासर पहुँचकर समस्त ऋषि मुनियों का आग्रह अस्वीकार करके सर्वप्रथम शबरी की भक्ति को पुरस्कृत करते हेतु शबरी के आश्रम में पधारते हैं तथा उसका आतिथ्य ग्रहण करते हैं। शबरी द्वारा एकत्र किये गये कन्दमूल-फलों तथा बेरों को श्रीराम प्रेम पूर्वक खाते हैं। खण्ड-काव्य में वर्णित घटनाओं तथा संभाषणों के आधार पर श्रीराम की चारित्रिक विशेषताओं का जो परिचय हमें प्राप्त होता है उसे निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

3-ख-III-1.1 वेष-भूषा : पम्पासर आगमन पर श्रीराम सर्वप्रथम शबरी की कुटिया में पधारते हैं। समस्त ऋषि गण श्रीराम के दर्शनार्थ अधीर होकर शबरी के आश्रम में जाकर श्रीराम के दर्शन करते हैं। राम के सिर पर जटाओं का मुकुट, मस्तक पर चन्दन एवं उर में वनफूलों की माला एवं कानों में कुण्डल सुशोभित हैं- **"सिर जटा-मुकुट, मस्तक पर- / चन्दन, उर में वनमाला। / श्रुति-कण्डल की झलकन पर, / था ऋषि समूह मतवाला।"**[43]

3-ख-III-1.2 संस्कारशील पुरुष : श्रीराम एक संस्कारवान पुरुष हैं। उन्हें बड़ों तथा छोटों के यथोचित अभिवादन का ज्ञान है। जब ऋषि-मुनि गण शबरी के आश्रम में जाकर प्रभु के दर्शन करना चाहते हैं तब प्रभु अपने दर्भासन से उठकर उनका अभिवादन करते हैं- **"तब दर्भासन से उठकर, / कर-बद्ध, शीश नत रघुवर- / बोले, हे ऋषिवर वाग्मी! / स्वीकृत प्रणाम हो सादर।"**[44]

3-ख-III-1.3 अस्पृश्यता विरोधी : मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम अस्पृश्यता विरोधी हैं। वह जाति नहीं कर्म की श्रेष्ठता को महत्व देते हुए कहते हैं कि जब अस्थि, माँस व मज्जा में एकरूपता है तो विषमता कहीं नही है- **"जब अस्थि माँस मज्जा की, / है मनुज मात्र में समता। / तो मूलाधार कहाँ वह / जिससे हो सके विषमता।"**[45] शबरी द्वारा आतिथ्य धर्म के निर्वहन हेतु श्रद्धापूर्वक रखे गये जूठे फलों को प्रभु जाति-पाँति का भेद किये बिना प्रेम पूर्वक खा लेते हैं तथापि अनुज लक्ष्मण उसे ग्रहण नहीं करते हैं- **"शबरी देती जूठे फल, / श्रीराम प्रेम से खाते / ऋषि-मुनि-जन थे ईर्ष्या-रत, / लक्ष्मण मन में सकुचाते।"**[46]

3-ख-III-1.4 नारी के प्रति आदर भाव : श्रीराम के हृदय में नारी की आदरणीय छवि विद्यमान है। ऋषि-मुनियों द्वारा शबरी के अपमान किये जाने की बात सुनकर वह दुखी हो उठते हैं तथा कहते हैं कि नारी को कभी निर्बल समझकर उसका अपमान मत करना- **"वह नारी परमोत्कृष्टा, / गार्गी, गुण शीला गव्या। / अति बुद्धिमती वाणी सी / है सब प्रकार से पूण्या।/ तप-शौर्य्य-वीर्य्य-बल-विद्या, / में न्यून हुयी कब नारी। / हरि-हर-विधिवर की प्रज्ञा, / नारी के सन्मुख हारी।"**[47]

'शबरी' नामक इस कृति में जहाँ एक ओर राम का मनुष्य और मानवोचित चरित्र उकेरा गया है; जिसके अन्तर्गत राम के वे सारे क्रिया-कलाप आते हैं जो उन्होंने अपने बालपन से लेकर रावण वध तक किये हैं; वहीं दूसरी ओर शबरी को दर्शन देने के प्रसंग और ऋषि-मुनियों को उनकी अस्पृश्यता रूढ़िवादिता इत्यादि के विरुद्ध उपदेश देने के प्रसंग में उनका भगवत्स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। कृति के सम्यक अनुशीलन से ज्ञात होता है कि जन साधारण यह जानते हुए कि राम एक मनुष्य हैं और उन्हीं में से एक हैं, यह भी मानता है कि राम न केवल अवतारी पुरुष हैं बल्कि स्वयं भगवान हैं। कवयित्री स्वयं भी राम को भगवान मानती है और इसी कारण राम के चरित्रांकन में उन्होंने उनके भगवत्स्वरूप का बड़ा ही मनोरम एवं श्रेष्ठ वर्णन अपनी कृति में किया है। निम्न अवतरणों में 'मधु' द्वारा सृजित भगवत्स्वरूप श्रीराम के चरित्र को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है

3-ख-III-2 श्रीराम के भगवत्स्वरूप का चरित्रांकन : श्रीराम साक्षात भगवान हैं, यह बात स्वयं प्रभु को भी ज्ञात है, और सभी तात्कालिक देशवासियों को भी। यद्यपि श्रीराम अयोध्या नरेश दशरथ के पुत्र हैं और सामान्य मनुष्य के समान हाड़-माँस से बने हुए एक पुरुष हैं तथापि अपने गुणों तथा आचरण के कारण वे सर्वत्र समभाव से पूजित हैं। कदाचित् वे मानवोचित आचरण करने के लिए बाध्य हैं क्योंकि इस मानव शरीर के साथ लौकिक लीला करना ही संभव है। मतंग मुनि जैसे कुछ त्रिकालदर्शी योगी-मुनियों को यह गुप्त रहस्य ज्ञात था। शायद इसी कारण अपनें अन्तिम समय में मतंग मुनि शबरी को भविष्य की बात आशीर्वाद के रूप में बता देते हैं। कभी-कभी परिस्थितिवश श्रीराम को अपना भगवत्स्वरूप भक्तों के समक्ष प्रस्तुत करना अवश्यम्भावी हो उठता है जैसे शबरी प्रसंग में हुआ है। माया देवी 'मधु' की कृति 'शबरी' के श्रीराम शबरी की भक्ति भावना, प्रेम तथा सेवा भावना से प्रमुदित हैं और उसे उसकी भक्ति का प्रसाद नवधा भक्ति का उपदेश तथा मोक्ष प्रदान करके देते हैं। मायादेवी 'मधु' कृत 'शबरी' में प्रभु श्रीराम के भक्त वत्सल स्वरूप की चारित्रिक विशेषताओं का बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया गया है। इस कृति के आधार पर श्रीराम के भगवतस्वरूप की चारित्रिक विशेषताएं निम्न हैं-

3-ख-III-2.1 भक्तों के रक्षक : प्रभु श्रीराम अपने भक्तों की सदैव रक्षा करते हैं। उनके भक्तों के ऊपर यदि कोई संकट आये तो उसका निवारण करने भगवान स्वयं उपस्थित हो जाते हैं। शबरी के आश्रम में अपने भक्तों से उन्होंने स्वयं यह बात कही है- **"घट-घट व्यापी प्रभु बोले, सौमित्र भाव कर लक्षित। / मै सदा भक्त का रखता, / मर्यादा, मान सुरक्षित।"**[48]

3-ख-III-2.2 सच्चिदानन्द प्रभु : सच्चिदानन्द प्रभु के पम्पासर आगमन के पश्चात् सर्वप्रथम शबरी की कुटिया में पधारने पर शबरी को यह विश्वास ही नहीं होता है कि जिस सच्चिदानन्द प्रभु की प्रतीक्षा में इतने वर्ष व्यतीत हो गये हैं वह उसकी कुटिया में पधारे हुए हैं- **"सच्चिदानन्द प्रभु वह ही, / मम पर्ण-कुटीर पधारे। / कृतकृत्या आज हुयी हूँ, / बस जागे भाग्य हमारे।"**[49]

3-ख-III-2.3 सेवा व्रत से प्रेम : प्रभु श्रीराम अपने भक्तों को उपदेश देते हुए कहते हैं कि सेवाव्रत धारण करने से इस संसार में मानव सर्वश्रेष्ठ बन सकता है। इस परिवर्तनशील संसार में मानव शरीर नश्वर है, यदि अजर-अमर बनना है तो सेवा व्रत धारण करना चाहिए- **"परिवर्तनशील जगत में, / मानव शरीर है नश्वर। / यदि अजर-अमर बनना है, / तो सेवा-व्रत धारण कर।"**[50]

3-ख-III-2.4 भक्ति भाव से प्रेम : सच्चिदानन्द प्रभु शबरी को उपदेश देते हुए कहते हैं कि जो मनुष्य भक्ति को हृदय में धारण करता है वही श्रेष्ठ है। भक्ति भाव के द्वारा ही भक्त भगवान को सहज ही प्राप्त कर लेता है- **"मै सत्य मानता भामिनी / बस एक भक्ति का नाता / भर भक्ति भाव से मुझको, / है भक्त सहज में पाता।"**[51]

3-ख-III-2.5 अनन्त अविनाशी : शबरी के द्वारा पम्पासर के जल को पवित्र करने के पश्चात् प्रभु श्रीराम ने शबरी से कोई मनोकामना; जो शेष रह गयी हो वह वर माँगने को कहा। शबरी ने उस अनन्त अविनाशी के समक्ष अपना शरीर त्यागने की इच्छा जाहिर की तथा कहा कि- **"छवि धाम राम सुख दायक, / अभिराम अखिल जग त्राता। / जिस अज अनन्त अविनाशी- / को, वेद अनादि बताता। / लेकर आज्ञा प्रभुवर की / हरि-धाम गयी सुख पागी।"**[52]

3-ख-IV लक्ष्मण का चरित्र चित्रण

राम के अनुज भ्राता लक्ष्मण ने प्रभु श्रीराम के सानिध्य व सेवा का व्रत लिया है। अपनी भक्ति के फलस्वरूप उन्होंने चौदह वर्षों का स्वेच्छिक वनवास अर्जित किया है। सभी ज्ञाताज्ञात स्त्रोतों के अनुशीलन से लक्ष्मण जी का एक लोक प्रसिद्ध चरित्र जो जनमानस में विख्यात है उसकी प्रमुख विशेषताएं निम्न हैं- माता-पिता, गुरुजनों एवं अग्रज श्रीराम में असीम श्रद्धा, अनन्य प्रेम व भक्ति, अग्रज राम के सहचर, सेवक, अतुलित बलशाली, शूरवीर व पराक्रमी, शीलवान, चरित्रवान, गुणी, किंचित चंचल व उग्र स्वभाव तथा क्रोधी इत्यादि। उदाहरणार्थ; धनुष भंग के अवसर पर परशुराम जी के क्रोधित हो जाने पर और विनयपूर्वक प्रार्थना को तिरस्कृत किये जाने पर लक्ष्मण के क्रोध का जो चित्रण तुलसीदास ने किया है वह इस प्रकार है- **"इहाँ कुम्हण बतिया कोउ नाही, / जे तर्जनी देखि मरि जाही।"**[53]

परन्तु यह लक्ष्मण का क्षणिक मात्र का उद्वेगपूर्ण चरित्र है। हम लक्ष्मण जी के उन्हीं गुणों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे जो शाश्वत् और निरन्तर हैं। माया देवी 'मधु' कृत 'शबरी' के उपखण्ड 'भ्रम निवारण' के अनुशीलन से लक्ष्मण के चरित्र की कुछ विशेषताओं से पाठकों का जो परिचय प्राप्त होता है, वह लक्ष्मण के चरित्र की क्षणिक विशेषताएं न होकर शाश्वत् चारित्रिक विशेषताओं की श्रेणी में आती हैं। 'मधु' ने जहाँ एक ओर लक्ष्मण द्वारा शबरी के जूठे बेरों को न खा कर फेंक दिये जाने की घटना द्वारा लक्ष्मण जी को अस्पृश्यता मानने वाला सिद्ध किया है, वहीं उनके

द्वारा पम्पासर निवासियों को धिक्कारने के प्रसंग से उनको अस्पृश्यता विरोधी भी बना डाला है। संक्षिप्त रूप से 'मधु' कृत 'शबरी' के आधार पर लक्ष्मण के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं-

3-ख-IV-1 वेश भूषा : श्रीराम के समान उनके अनुज लक्ष्मण जी की वेशभूषा भी तपस्वियों के समान है। उनके सिर पर जटाओं का मुकुट है तथा हृदय पर वन-पुष्पों की माला है- **"सिर जटा-मुकुट, मस्तक पर- / चन्दन, उर में वनमाला। / श्रुति-कुण्डल की झलकन पर। था ऋषि समूह मतवाला।"[54]**

3-ख-IV-2 अग्रज राम के अनन्य सहचर : अनुज लक्ष्मण अग्रज भ्राता राम के अनन्य सहचर हैं। वह राम के साथ-साथ प्रत्येक अवसर तथा स्थान पर सुशोभित होते हैं। जब श्रीराम को चौदह वर्षों का वनवास होता है तब भी लक्ष्मण जी राम की छाया बनकर उनके साथ जाते हैं। शबरी की कुटिया में भी लक्ष्मण राम के सहचर बनकर जाते हैं- **"देखा- वे दोनों भ्राता- / बैठे थे दर्भासन पर। / ज्यों नील-अरुण कमलों से- / शोभित हो सरस-कनक-सर।"[55]**

3-ख-IV-3 संकोची स्वभाव : 'मधु' कृत 'शबरी' में श्रीराम के अनुज भ्राता लक्ष्मण अत्यन्त संकोची स्वभाव के पुरुष हैं। शबरी के आश्रम पहुँचने पर उसके द्वारा दोनों भाइयों के स्वागतार्थ लाकर रखे गये बेरों को राम द्वारा आग्रह करने पर लक्ष्मण संकोच में पड़ जाते हैं- **"ले लूँ या तज दूँ लक्ष्मण- / थे मोह-उदधि में तरते। / बनकर कर्तव्य-परान्मुख, / मन क्लिष्ट कल्पना करते।"[56]**

3-ख-IV-4 अग्रज के प्रति सम्मान की भावना : अनुज लक्ष्मण अपने बड़े भाई राम के प्रति आदर भाव रखते हैं। राम की आज्ञा के अनुसार वह सारे कार्य करते हैं परन्तु जब राम उन्हें शबरी द्वारा लाये गये बेरों को खाने का आग्रह करते हैं, तब वह सोच में पड़ जाते हैं। वे अग्रज का सम्मान करते हुए फल ले कर प्रत्यक्ष में खाने का उपक्रम करते हुये बिना खाये ही श्रीराम की आँख बचाकर अन्यत्र फेंक देते हैं- **"अग्रज की मर्यादा का / फल लेकर मान बढ़ाया। / पर फेंका आँख बचाकर, / अधरों तक पहुँच न पाया।"[57]**

3-ख-IV-5 वर्ण भेद के समर्थक व विरोधी : श्रीराम के अनुज भ्राता लक्ष्मण एक ओर तो वर्ण-भेद के समर्थक हैं दूसरी तरफ उसके घोर विरोधी भी हैं। नीच जाति की स्त्री होने के कारण वह शबरी के द्वारा दिये गये बेरों को ग्रहण नहीं करते हैं- **"उच्छिष्ट भीलनी के हैं, / फिर बेर भला क्यों खायें।"[58]** लक्ष्मण उन बेरों को आँख बचाकर फेंक देते हैं परन्तु बेर फेंकने की घटना अन्तर्यामी प्रभु की आँखों से बच नहीं पाती और वे लक्ष्मण को लक्ष्य करके कह उठते हैं- **"यह, संजीवनी जड़ी बन, / प्राणों का दान करेंगे।"[59]** लक्ष्मण को यह सुनकर असीम लज्जा होती है तथा उनकी ऊँच-नीच की भावना तिरोहित हो जाती है। खण्ड-काव्य के 'भ्रम-निवारण' नामक उप-खण्ड में पम्पासर के जल के अशुद्ध हो जाने की घटना के कारण को जानकर लक्ष्मण जी ने ऋषि मुनियों को अस्पृश्यता और जाँति-पाँति का भेद करने पर वाक्य प्रहार करते हुए कहा कि-

"जब कर्मों के करने में, / मानव स्वतंत्र अधिकारी। / फिर द्वेष किसी से कैसा, / क्या उच्च-नीच नर-नारी।"[60]

3-ख-IV-6 बाह्याडम्बर व भक्ति के पारखी : लक्ष्मण बाह्याडम्बर के विरोधी पुरुष हैं तथा वे भक्त की भक्ति को पहचान लेते हैं। पम्पासर का जल दूषित हो जाने पर लक्ष्मण क्रोधित होकर कहते हैं कि तुमने जाति-पाँति का भेद करके शबरी को अपमानित किया है तथा बाह्याडम्बर को ही भक्ति का लक्ष्य माना है- **"तुम सबने बाह्याडम्बर- / को लक्ष्य भक्ति का माना। / पर हाय! क्रियात्मक जन का- / कुछ मूल्य ना तुमने जाना।"[61]**

3-ख-IV-7 निडर पुरुष : लक्ष्मण का व्यक्तित्व एक निर्भय पुरुष का है। वह ऋषि-मुनियों को उपदेश देते हुए कहते हैं कि जो मनुष्य विकट संकट तथा भयानक बाधाओं से डर जाते हैं उनका जीवन व्यर्थ हो जाता है- **"जो संकट विकट, भयावह- / बाधाओं से डर जाते। / वह जीवन व्यर्थ गँवाते, / उन्नति न कभी कर पाते।"[62]**

3-ख-IV-8 जातिगत हीनता पर कर्मों की श्रेष्ठता का प्रतिपादन : लक्ष्मण जी कर्मों की श्रेष्ठता पर जोर देते हुए ऋषि मुनियों को समझाते हैं। वह ऋषियों से कहते हैं कि जो मनुष्य अपने कर्मों से श्रेष्ठ है उसे जातिगत हीनता के कारण ठुकराया नहीं जा सकता। जब कर्मों के करने में मनुष्य स्वतंत्र है तो ऊँच नीच का भेद नहीं करना चाहिए। तुमने जातिगत हीनता के कारण शबरी के हृदय को नहीं पहचाना- **"तुमने न कृपाण निहारी- / पर कोष ध्यान से देखा। / अन्तर का मर्म न जाना, / कर जाति मात्र का लेखा।"[63]**

3-ख-IV-9 शबरी की भक्ति और तप का समुचित सम्मान : श्री लक्ष्मण जी शबरी की भक्ति तथा तपस्या से प्रभावित होते हैं। वे शबरी की भक्ति तथा तप को उचित सम्मान देना चाहते हैं। लक्ष्मण पम्पासर के दूषित जल को पवित्र करने के लिए शबरी को जल का स्पर्श कराने की बात कहते हैं- **"पम्पासर होगा पावन, / इस शबरी को ले जाओ। / इसके वर-वरद करों से, / सर आप स्पर्श कराओ।"[64]**

3-ग गोविन्ददास कृत-'शवरी' के प्रमुख पात्रों का चरित्रांकन

गोविन्ददास कृत 'शवरी' अपने समय की एक अद्‌भुत रचना है। जिसमें कहानी, नाटक, एक पात्री नाटक तथा श्रव्य काव्य विधाओं का अवलम्बन लेकर शवरी आख्यान की सर्जना की गयी है। इस कृति को कहानी, नाटक, एक पात्री नाटक अथवा श्रव्य काव्य किसी भी श्रेणी में रखना श्रेयस्कर होगा। कथा में 'शवरी' नायिका के रूप में प्रतिष्ठित है। इसके अतिरिक्त अन्य-गौण पात्रों का ही समावेश है।

3-ग-I शवरी का चरित्रांकन

गोविन्ददास कृत 'शवरी' में शवरी नायिका के रूप में प्रतिष्ठित है। वह इस कृति की प्रमुख पात्रा है। 'शवरी' नामक कृति में गोविन्ददास जी ने नायिका को 'शवरी' सम्बोधन देकर अन्यान्य कवियों तथा साहित्यकारों के विपरीत 'शबरी' से भिन्नता प्रदर्शित करने का उपक्रम भी किया है। इस कृति में शवरी छः वर्षीय अबोध बाला से किशोरी, तरुणी, युवती, प्रौढ़ा तथा वृद्धावस्था प्राप्त करके अन्त में प्रभु में लीन हो जाती है। गोविन्ददास जी की शवरी के चरित्र को उसकी अवस्था के विकास के क्रम से निम्नलिखित सोपानों में विभक्त किया जा सकता है- बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था तथा वृद्धावस्था।

3-ग-I-1 शवरी की बाल्यावस्था का चरित्र चित्रण : कथा के पूर्वार्ध में शवरी छः वर्षीय भील बाला के रूप में चित्रित की गयी है। यह भील बालिका सप्त ऋषियों की सेवा शुश्रुषा में लगी रहती है। वह एक अनाथ बालिका है जो ऋषियों द्वारा पालित-पोषित है। ऋषियों द्वारा आश्रम से प्रस्थान के समय शवरी को यह वर प्राप्त हुआ कि उसे भगवत्दर्शन होंगे। बालिका शवरी के चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

3-ग-I-1.1 अल्पवय भील बालिका : गोविन्ददास की शवरी मात्र छः वर्ष की आयु से ही सप्तऋषियों के सेवा कार्य में लगी हुयी थी- **"....इस काल में उन ऋषियों की सेवा में दत्त चित्त थी शवरी नाम की एक भील बालिका। छः वर्ष की अल्पवय से ही अनाथ शवरी ऋषि-सेवा के इस पुण्य कार्य में लगी हुयी थी।"**[65]

3-ग-I-1.2 वर्ण व वेश भूषा : शवरी का वर्ण श्याम है तथा ऋषियों के संसर्ग में रहने के कारण वह वल्कल वस्त्र धारण करती है।

3-ग-I-1.3 पशु प्रेम : गोविन्ददास की शवरी को बाल्यावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक पशुओं से अत्यधिक प्रेम था। विशेष रूप से गाय से उसका मातृवत स्नेह था। वह गाय को माँ का सम्बोधन देकर पुकारती थी- **"शवरी- (गान पूर्ण होते होते पानी भी भर जाता है। गाय के निकट आ, गाय से) तो... तो, माँ, आज, हाँ, आज से आश्रम में श्यामा और शवरी... शवरी और श्यामा रह जायेंगी; सुता और माता मात्र... क्यों ना?"**[66]

3-ग-I-1.4 वय से अधिक परिपक्व : ऋषियों के संसर्ग में रहने के कारण शवरी में अपनी आयु की साधारण बालिका जैसी न तो चंचलता रह गयी है; और न हठ। शवरी बड़ों के समान आचरण करती है- **"शवरी अभी भी बालिका ही है, किन्तु चार वर्षों के ऋषि संग एवं उनके द्वारा प्राप्त शिक्षा ने उसमें उसकी अवस्था से कहीं अधिक ज्ञान भर दिया है। उसमें साधारण बालिका सा ना बचपन रह गया है और ना चपलता ही और ना हठ।"**[67]

3-ग-I-1.5 सेवा कार्य में पारंगत : शवरी छः वर्ष की अल्प आयु से ही ऋषियों की सेवा करती आयी है। शवरी ने ऋषि सेवा को ही अपना धर्म माना है। उसकी सेवा-भावना से समस्त

ऋषि-गण प्रसन्न होकर उसे आशीर्वाद देते हैं- **"मरीचि (आशीर्वाद के अनन्तर) शवरी, चतुर्वर्षीय इस एक युग में इतनी अल्पवयस्क रहते हुए भी तूने हमारी जो सेवा की है उसे हममें से कोई भी विस्मृत न कर सकेगा।"**[68]

3-ग-I-1.6 उत्कंठित बालिका : आश्रम से प्रस्थान के समय ऋषियों द्वारा शवरी को भगवत्दर्शन के विषय में बताया जाता है। जिसे सुनकर शवरी अत्यन्त हर्षित हो उठती है। शवरी उत्कंठित होकर सोचती है कि प्रभु का स्वरूप कैसा होगा? वे ऋषियों के समान होंगे? क्या उन्होंने वल्कल वस्त्र धारण किये होंगे? अनेक प्रश्न उसके हृदय में उठते हैं- **"देव कैसे होंगे?... होंगी किस वर्ण की जटाएँ, श्याम, श्वेत वा, / श्मश्रु कैसे, मुण्डित क्या केश होंगे उनके? / वल्कल के वस्त्र होंगे वा कोपीन मात्र ही?"**[69]

3-ग-I-2 किशोर शवरी की चरित्रगत विशेषताएँ : शवरी किशोरावस्था में प्रवेश कर चुकी है। सप्त ऋषियों को गये हुए चार वर्षों का एक युग समाप्त हो चुका है। इन चार वर्षों की अवधि में बहुत कुछ परिवर्तन हो गया है। शवरी की आयु चौदह वर्ष की हो चुकी है। श्यामा गाय का स्थान उसकी पुत्री चतुरब्दा को प्राप्त हो गया है। भगवत्दर्शन की लालसा में शवरी अगाध भक्ति और श्रद्धा के साथ अतिथियों का स्वागत सत्कार करती है। गोविन्ददास कृत 'शवरी' की नायिका शवरी के कैशोर्यावस्था के चरित्र की कुछ विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

3-ग-I-2.1 आतिथ्य सत्कारी : बाल्यावस्था से लेकर किशोरावस्था तक शवरी में आतिथ्य सत्कार का गुण विशेष रूप से विद्यमान है। उसके आश्रम से कोई भी अतिथि बिना कुछ ग्रहण किये नहीं जा सकता है। अतिथि आदर के लिए शवरी और उसका आश्रम सर्वत्र प्रसिद्ध हो गये हैं- **"आगन्तुकों का आदर उन्हें अवतार मानकर किया जाता है अतः इस सेवा-सुश्रुषा में सच्ची भक्ति तथा वन में सुलभ सर्वश्रेष्ठ सामग्री का समावेश रहता है। इसीलिए अतिथि-आदर के हेतु यह आश्रम एवं शवरी सर्वत्र प्रसिद्ध हो गये हैं।"**[70]

3-ग-I-2.2 कल्पनाशील : गोविन्ददास की शवरी कल्पनाशील बालिका है। वह विचार करती है कि प्रभु का अवतार अभी हुआ या नहीं? शवरी कल्पना करती है कि प्रभु मेरे समान आयु के हों तथा मुझसे विपरीत वह चंचल और चपल हों- **"क्या ही भला हो जो वे व्यस्क मेरे आगे हों; / जैसी मैं नहीं हूँ, चारु चंचल चपल हों। / आवें तब बालकों का जीवन ले आवें वे; / फैलावें वही सर्वत्र मैंने नहीं देखा जो।"**[71]

3-ग-I-2.3 सौन्दर्य शालिनी : गोविन्ददास की शवरी अपनी किशोरावस्था में सौन्दर्य से परिपूर्ण हो गयी है। उसका रंग साँवला है परन्तु साँवले रंग में भी सौन्दर्य का पुट परिलक्षित होता है। बाल्यावस्था में शवरी ऋषि-सेवा के कारण अपना बचपन भूलकर धीर गम्भीर हो गयी थी, वही अपनी किशोरावस्था में चंचल और चपल हो गयी है- **"सर्वथा साँवले वर्ण में भी सौन्दर्य का समावेश हो गया है और सौन्दर्य के संग ही अद्भुत प्रकार का अल्हड़पन आ गया है।"**[72]

3-ग-I-3 युवा शवरी की चरित्रगत विशेषताएँ : गोविन्ददास की शवरी प्रभु श्रीराम की प्रतीक्षा करते करते युवावस्था को प्राप्त हो गयी है। ऋषि आज्ञा के अनुसार वह अतिथि सेवा धर्म का निर्वहन कर रही है। प्रभु के स्वागत की तैयारी में कोई शिथिलता नहीं आने पायी है। शवरी प्रत्येक दिन के आगमन के साथ दुगुने उत्साह से प्रभु के स्वागत की तैयारी में लग जाती है। दिन प्रतिदिन उसकी प्रभु दर्शन की अभिलाषा और अधिक बढ़ती जा रहीं है। गोविन्ददास जी ने युवा शवरी के चरित्र के विषय में बहुत संक्षिप्त लिखा है। अतः कृति के आधार पर युवा शवरी के चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

3-ग-I-3.1 अनुरागिनी नारी : शवरी अपनी युवावस्था में राम के प्रति कांता भाव से अभिसिंचित वर्णित की गयी है। वसंत ऋतु के आगमन पर शवरी प्रभु श्रीराम की प्रतीक्षा करती है परन्तु वसंत ऋतु के समाप्त होने के पश्चात् भी प्रभु के दर्शन नहीं होते हैं। वह प्रभु श्रीराम की प्रतीक्षा करते-करते थक गयी है तथा दुखी होकर कहती है- **"ओ सौन्दर्य-सागर पधारो हे पधारो हे! / मेरे प्राणनाथ, मैने कितनी प्रतीक्षा की- / सोचा नहीं क्या-क्या, किया मैने नहीं क्या-क्या है?"**[73]

3-ग-I-3.2 श्रृंगार प्रिय : गोविन्ददास की शवरी का वर्ण श्याम होने पर भी वह सौन्दर्यशालिनी नारी है। युवावस्था में शवरी अपने सौन्दर्य के प्रति अत्यधिक जागरूक है। वह वन के फूलों द्वारा अपना श्रृंगार करती है- **"शवरी ने आज अपने शरीर को भी सुमनों से सजाया है। कचों में कचनार की कबरी है। कर्णों में किंशकों के कर्णफूल। हृद पर पुष्पक के हार हैं। बाहुओं में बेले के बाजूबन्द। मणिबन्दों में पाटल की पहुँचियाँ है। कटि में कमलों की किंकणी। विविध रंगों और रूपों के प्रसूनों से सजी शवरी बसंत की चेतन प्रतीक प्रतीत होती है।"**[74]

3-ग-I-4 प्रौढ़ा शवरी की चरित्रगत विशेषताएँ : युवावस्था के बाद शवरी प्रौढ़ावस्था की ओर अग्रसर हो रही है। आयु बढ़ने के साथ-साथ उसकी स्वच्छता और सादगी भी बढ़ गयी है। अब वह पहले के समान अपने श्रृँगार में समय व्यतीत नहीं करती है। ग्रीष्म ऋतु का समय है। चारों ओर गर्मी से हाहाकार मचा हुआ है। ग्रीष्म के कारण शवरी की यही इच्छा है कि प्रभु इस ऋतु में यहाँ न पधारें, नहीं तो उन्हें महान कष्ट होगा। गोविन्ददास जी ने अपनी कृति की नायिका शवरी के प्रौढ़ावस्था का जो चित्र खींचा है उसी के आधार पर हम शवरी के चरित्र की विशेषताओं का निरूपण करेंगे।

3-ग-I-4.1 गायन में पारंगत : प्रौढ़ अवस्था को प्राप्त होने के पश्चात् भी शवरी गायन में निपुण है। शवरी अपनी बाल्यावस्था से ही गायन में पारंगत थी। शवरी को लोक गीतों का पूर्ण ज्ञान है। किसी भी कार्य को करते समय वह गाना गाती है। गाय का दूध दुहते समय वह गाना गा रही है- **"घेरि-घेरि आवे रामा कारी बदरिया, / दैवा बरसै हो बड़े-बड़े बूँदा। / बदरिया बैरिन हो। / सब लोग भीजे घर आपने, / मोरा रामा हो भीजें परदेश, / बदरिया बैरिन हो।"**[75]

3-ग-I-4.2 राम के प्रति मातृत्व भाव में प्रेम : गोविन्ददास की कृति की नायिका शवरी अपनी युवावस्था में राम के प्रति कांता भाव में अभिसिंचित वर्णित की गयी है वहीं प्रौढ़ावस्था को प्राप्त होने के पश्चात् उसका राम के प्रति प्रेम पुत्रवत हो जाता है। वह स्वयं को माता के समान मानती है- **"तो इस अवस्था के प्रमेद से मैं उनको पुत्रवत् मानूँ न क्यों? / पूत प्रेम माता का।"**[76]

3-ग-I-5 वृद्धा शवरी का चरित्रांकन : गोविन्ददास कृत 'शवरी' की नायिका शवरी राम की प्रतीक्षा करते-करते बाल्यावस्था से किशोरावस्था, युवावस्था तथा प्रौढ़ावस्था के सोपानों को पार करते हुए वृद्धावस्था को प्राप्त होती है। इस समय उसकी आयु चौरासी वर्ष से अधिक की हो गयी है। परन्तु श्रीराम की प्रतीक्षा तथा दर्शन की अभिलाषा समाप्त नहीं हुयी। वृद्धा शवरी के चरित्र का जो वर्णन कवि ने अपनी कृति 'शवरी' में किया है उसको निम्नलिखित रूप से व्यवस्थित किया जा सकता है।

3-ग-I-5.1 रूप रंग : शवरी की अवस्था चौरासी वर्ष को पार कर पचासी वर्ष की हो रही है। वृद्धावस्था के कारण उसकी त्वचा सिकुड़ गयी है। उसके केश सफेद हो चुके हैं। सारा शरीर दुर्बल हो गया है। इन्द्रियाँ शिथिल पड़ गयी हैं तथा आँख और कान सही-सही काम नहीं कर रहे हैं- **"सिकुड़ी हुयी त्वचा थी और कच हुए सित थे / श्याम शैलश्रृंग जैसे श्वेत हो प्रभात में।"**[77]

3-ग-I-5.2 आतिथ्य सत्कारी : शवरी में आतिथ्य सत्कार का गुण बाल्यावस्था से ही विद्यमान था। चौरासी वर्ष से ऊपर की आयु हो जाने पर भी शवरी ने अतिथियों का स्वागत सत्कार करना नहीं छोड़ा। राम आगमन तथा उनके आतिथ्य सत्कार के लिए वह सदैव तत्पर व उत्सुक रहती है- **"झूलती थी नित्य नयी द्वार पर मालाएँ, / फूलों और पल्लवों से जो बनायी जाती थीं। / कन्दमूल और फल नित्य नये आते थे, / पके-पके बेर वह रखती थी चख के।"**[78]

3-ग-I-5.3 प्रेम तथा भावुकता से ओत-प्रोत : वृद्धा शवरी की राम आगमन की लम्बी प्रतीक्षा समाप्त होती है। श्रीराम अपने अनुज लक्ष्मण के साथ उसके आश्रम में पधारते हैं। श्रीराम के दर्शन होते ही शवरी के अन्दर एक नयी शक्ति का संचार हो जाता है। प्रेम तथा भावुकता से ओत-प्रोत होकर शवरी ने दोनों भाइयों को माला पहनायी तथा अपने नेत्रों के नीर से उनके पाँव पखारे। शवरी प्रभु के चरण कमलों में प्रेम से अभिभूत होकर लोटने लगी- **"हो गयी विभोर वह आनन्दातिरेक से, / काँपते करों से कठिनाई से प्रसूनों के / हार दोनों भाइयों को पहनाये उसने; / और पाद-पद्म धोये आँसुओं से उनके।"**[79]

3-ग-I-5.4 ईश्वरोन्मुख : श्रीराम के दर्शनों के पश्चात् शवरी के हृदय में अन्य कोई अभिलाषा शेष नहीं बची थी। शवरी ने प्रभु से कहा कि हे प्रभु आपने मुझे बनाया है और मेरे अन्दर अनेकों परिवर्तन किये होंगे। वह प्रभु से कहती है कि उसे अब कभी भी प्रभु का वियोग न हो। इतना कहकर शवरी निष्चेट होकर प्रभु चरणों में गिर पड़ती है- **"प्रभु! जिन हाथों से बनाया मुझे**

आपने / औ किये परिवर्तन मुझमें बहुत से; / इतना उन्ही से और आप करें अन्त में, / मुझको वियोग अब हो ना कभी आपका। / इन चरणों में यही मेरी एक प्रार्थना। / एक दिव्यालोक तब शवरी के नेत्रों से / निकल तुरन्त प्रभु-नेत्रों में समा गया, / उसका अचेष्ट तनु उनके पदों में था।"[80]

3-ग-II शवरी के अन्य पात्र

गोविन्ददास कृत शवरी में किसी अन्य पात्र को समाविष्ट नहीं किया गया है। यह कृति के प्रकार द्वारा ही निर्धारित है; क्यों कि यह कृति कहानी, एकांकी, एक पात्री नाटक और श्रव्य-काव्य (एक पात्री) चारों विधाओं का मिला जुला स्वरूप है। कथा के बीच-2 में पात्रों की नगण्य भूमिका है, कहीं-कहीं तो मात्र नामोच्चारण ही पात्रों का परिचय है। इस प्रकार के पात्रों में मानव और चतुष्पद दोनों ही हैं। मानव पात्रों में सप्तर्षि (वशिष्ठ, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुल्ह, ऋतु एवं मरीचि) तथा चतुष्पदों में श्यामा, शबली, चतुरब्दा इत्यादि समय-2 पर उद्धृत किये गये हैं। राम, लक्ष्मण, मरीचि इत्यादि भी मानव पात्र हैं परन्तु कृति के आधार पर किसी भी पात्र का सार्थक चरित्रांकन नहीं किया जा सकता।

3-घ श्री धनंजय अवस्थी की कृति शबरी के पात्रों का चरित्रांकन

कविवर धनंजय अवस्थी की उत्कृष्ट कृति 'शबरी' की नायिका शबरी इस कृति की प्रमुख स्त्री पात्र है। शबरी के अतिरिक्त मुनि मतंग, राम, मुनि वितण्ड तथा शबरराज इस कृति के प्रमुख पुरुष पात्र हैं। इसके अतिरिक्त कवि ने अपनी दूरदृष्टि, कल्पना, मेधा व श्लाधा के सम्यक समन्वय के द्वारा कथा को विस्तार व नये आयाम प्रदान करने का अनूठा प्रयास किया है। मतंगाश्रम मुनि वृन्दों एवं सामान्य जनों जैसे सहायक परन्तु अन्य-गौण पात्रों का सृजन कवि ने अपनी सुमेधा द्वारा करके अपनी कृति को एक कालजयी रचना बना डाला है। इस कृति के रचयिता कविवर धनंजय अवस्थी द्वारा पात्रों के चरित्र-चित्रण का जो महान प्रयास किया गया है; उसकी समीक्षात्मक रूप से व्याख्या करने के अपने अभीष्ट मंतव्य की पूर्ति हेतु मेरे द्वारा किंचित प्रयास निम्नलिखित विधि से किया गया है।

3-घ-I 'शबरी' की प्रमुख स्त्री पात्र शबरी की चरित्रगत विशेषताएँ

धनंजय अवस्थी की शबरी एक अबोध बाला, किशोरी, युवा, प्रौढ़ एवं वृद्धावस्था जैसे जीवन के मुख्य सोपानों को पार करती है। जीवन की इस यात्रा में वह विभिन्न शारीरिक व मानसिक अवस्थाओं को प्राप्त करती है। अपनी हीन जातिगत विशेषता तथा उच्चतम मानसिक अवस्थाओं एवं भगवत्प्राप्ति की जिस महात्वाकांक्षा की ओर वह उन्मुख और अग्रसर होती है, उसके परिणामों और प्रतिकारों के फलस्वरूप वह विभिन्न मानसिक संतापों को भी सहन करती है। उसकी शारीरिक तथा मानसिक अवस्था का निरूपण करने का कवि ने महान और श्लाघनीय प्रयास किया है। बाल्यावस्था में शबरी एक अबोध बालिका, तरुणावस्था में एक क्रांतिकारी किशोरी तथा युवावस्था

में अनुरागिनी परन्तु संयमी व भक्तिमती नारी व वृद्धावस्था में राम भक्ति से ओत प्रोत भक्ति व प्रेम में पारंगत मातृरूपी वृद्धा में परिवर्तित हो जाती है, जिसे प्रभु श्रीराम के चरणों में अगाध प्रेम, श्रद्धा व भक्ति है। अवस्थी के अनुसार शबरी का चरित्र नयी-नयी ऊँचाइयाँ प्राप्त करता हुआ दर्शाया गया है।

3-घ-I-1 शबरी की बाल्यावस्था का चरित्र : श्री धनंजय अवस्थी ने अपनी कृति 'शबरी' में सर्वप्रथम शबरी की बाल्यावस्था का वर्णन किया है। ऋष्यमूक पर्वत से थोड़ी दूर पर शबरों का एक ग्राम था, जिसका प्रतिनिधित्व शबरों के राजा करते थे। राजा स्वयं अपना रक्षक था। उसके राज्य में प्रबल अनुशासन था। शबरी शबरराज की पुत्री थी जिसकी बाल्यावस्था के चरित्र का निरूपण कृति के आधार पर निम्नलिखित बिन्दुओं के सापेक्ष करेंगे।

3-घ-I-1.1 शबर जाति की बालिका : शबरी अन्त्यज, अछूतों के प्रतिनिधि शबरराज की पुत्री है। शबरी के विवाह के समारोह से उसका परिचय प्राप्त होता है। द्वार पर बन्दनवार सजे थे। लिपी-पुती वेदी थी। मण्डप सुसज्जित था। सारे बन्धु-बान्धव बालिका शबरी के विवाह के उत्सव में सम्मिलित होने के लिए एकत्र थे। शबरराज पुत्री के विवाह के अवसर पर अत्यन्त हर्षित थे- **"शबर, प्रवर, / प्रमुख, प्रधान, / आज प्रमुदित हर्षित महान्। / जिनका यश कीर्ति गान / करता पुरजन-वितान / बासंती संध्या में / गूँज रही शहनाई- / मुख्य द्वार- / कानों में धीरे से- / गीत गुनगुनाती / गुदगुदाती / पछुआ बयार / पुत्री के विवाह का अभूतपूर्व समारोह / आरोह, / अवरोह।"**[81]

3-घ-I-1.2 पशुओं के प्रति प्रेम : बालिका शबरी का पशुओं से बहुत लगाव था। वह उन्हें प्यार करती थी। इन पशुओं में उसे छोटे से शावक 'छगलक' से पुत्रवत् स्नेह था। वह उसे अपने साथ खाना खिलाती तथा साथ में शयन भी करती थी। अचानक 'छगलक' के खो जाने पर वह आशंकित हो जाती है कि कहीं उसका वध तो नही कर दिया गया- **".... आशंकित खोजने लगी 'छगलक' / मन मोहक शावक, सा, / निहारती उसे अपलक- / बचपन से- / भोजन, / शयन में, / जो साथ-साथ रहता था। / कहाँ गया? / दुलारा, प्रिय-प्राण खण्ड।"**[82]

3-घ-I-1.3 पशुहिंसा से घृणा : अन्त्यज, अछूत जाति में पैदा होने के बाद भी उसे मूक पशुओं का वध करने वाले पापी प्रतीत होते हैं। उसे पशुओं के वध से अत्यन्त घृणा है। पशुओं का वध होते देखकर उसका शरीर काँपने लगता है- **"सहसा-! / पर, अकल्पित, / कैसी यह त्रासदी? / देखा जब शबरी ने / विस्फरित आँखों से / मूक वन्य पशुओं पर / घोर कुलिश बज्रपात / संघात- / दारुण- / दाहक प्रसंग / पशुओं पर प्रखर खड्ग / स्रवित अमित रक्त-धार / उर भेदक चीत्कार।"**[83]

3-घ-I-1.4 अशिक्षित : शबरी किशोरावस्था प्राप्त करने के उपरान्त भी अशिक्षित है। उस समय पुर में शिक्षा का कोई प्रचलन नहीं था। स्त्रियाँ प्राय: अशिक्षित ही रहती थीं- **"शिक्षा के नाम थीं**

/ कथाएँ चौपाल की। / पुर में था न शिक्षा सदन / न चलन, प्रचलन / यदा-कदा सन्तों के प्रवचन।"[84]

3-घ-I-1.5 अबोध : शबरी अबोध है। विवाहोत्सव की तैयारियाँ देखने के उपरान्त भी उसे यह नहीं ज्ञात है कि उसी के विवाह के लिए बन्दनवार सजाये जा रहे हैं। वह अपनी माँ को श्रृँगार किये घूमते देखती है तथा छिप-छिपकर आँसू बहाते देखकर वह अपने पिता से पूछती है- **"बापू- / क्या, और एक माई घर आयेगी? / अबोधता हुयी मुखर / खिलखिला उठे शबर / अर्थ बोध अक्षम था / शबरी का / ताकने लगी सतृष्ण पाने को / समाधान, सप्रमाण।"[85]**

3-घ-I-1.6 चंचल प्रकृति : शबरी एक चंचल प्रकृति की बालिका है जो साँवली और सौन्दर्य से परिपूर्ण है। जिसने अभी कुछ ही बसन्त देखें हैं। वह हिरनी के समान चंचल तथा चपला के समान कौंधती रहती है- **"दौड़ती, विहँसती, / जो / लचकाती कोमल कटि / चटखाती / पोर-पोर / धूप-छाँह गढ़ती थी। / पारा की धारा सी, / चंचल बन हिरनी-सी / चपला सी, कौधती!"[86]**

3-घ-I-1.7 विद्रोही : शबरी पशुहिंसा से उद्वेलित है। विवाहोत्सव में प्रिय शावक 'छगलक' की बलि देने से उसका हृदय विवाह के विरुद्ध हो जाता है परन्तु पारिवारिक और सामाजिक बन्धन उसे विद्रोह करने से रोकते हैं। अचानक उसे बचपन में कही गयी माँ की बातों का स्मरण हो जाता है - **"मैं वही करुँगी, / जो / माई ने कहा उस दिन / सीख पर उसी की मैं चलूंगी / अब आजीवन।"[87]**

3-घ-I-1.8 दृढ़ संकल्पमयी : शबरी दृढ़ संकल्पी नारी है। मन में एक बार दृढ़ निश्चय करने के पश्चात् वह उस पथ से विचलित नहीं होती है। शबरी अपना गृह त्याग करके चली जा रही है तथा मन में संकल्प कर रही है- **"एक बार प्रण जगा- / जगा जीवन / उसमें कटिबद्ध ही जीवन यों तो- / संकल्प कभी यों ही जगा करता है / जागा संकल्प कहीं / सोया नहीं करता है।"[88]**

3-घ-I-2 युवा शबरी का चरित्रांकन : खण्ड-काव्य की प्रमुख नारी पात्र शबरी अपनी बाल्य एवं किशोर अवस्था को प्राप्त कर युवावस्था में प्रविष्ट होती है। इस अवस्था के अनुरूप शारीरिक व मानसिक परिवर्तनों के अनुसार तथा अल्पवय में गृहत्याग के फलस्वरूप जातीय बहिष्कार एवं तिरस्कार जैसी विडम्बनाओं से संघर्ष करते हुए उसका व्यक्तित्व निर्माण हुआ है। वह जीवन के जिन झंझावतों से जूझ रही है, उनके कारण यद्यपि शारीरिक व मानसिक अवस्थायें कभी-2 परिवर्तित होती प्रतीत होती हैं तथापि वे शाश्वत नहीं हैं। उसे अपनी अवस्था के अनुरूप आचरण करने का न तो समय है और न ही परिस्थितियाँ। अल्पवय में गृहत्याग और भगवत् प्राप्ति की लालसा उसे धर्म परायण, सन्यासिनी, वैराग्यमयी, तपस्विनी और सांसारिक सुखों से विरक्त बना देता है। प्रभु श्रीराम के नाम चिन्तन के अतिरिक्त आश्रम-वासियों को श्रम और सेवा सुश्रूषा से प्रसन्न

करना ही उसका यथेष्ट बन जाता है। युवा शबरी की जिन चारित्रिक विशेषताओं को कविवर ने उभारने का प्रयास किया है अथवा कथा के विस्तार के अनुरूप शबरी के चरित्र का जो निर्माण अनायास ही हो गया है उसको निम्न प्रकार से व्यवस्थित किया जा सकता है।

3-घ-I-2.1 सामाजिक तिरस्कार से आहत : गृह त्याग के पश्चात् शबरी वन्य प्रांगण से निकलकर पुर में आ जाती है जहाँ उच्च वर्ग का साम्राज्य है। एक ग्रामीण नगर में आने पर जहाँ स्वयं को एकाकी, उत्कंठित, आवेशित, संशययुक्त एवं उद्विग्न अनुभव करता है वहाँ एक भीलनी बाला अपने विवाह समारोह पर गृह का परित्याग कर एक पुर में आकर बाल, वृद्ध, युवा जनों के तिरस्कार पूर्ण व्यवहार, प्रश्नों की बौछार एवं व्यंग्य वाणों से आहत हो जाती है। उसकी मानसिक अवस्था का विशेष चित्रण दृष्टव्य हैं- **"दे सकी न, उत्तर, प्रत्युत्तर / अश्रुधार ढोती रही, अनहोनी, होनी पर, / विषाद की द्रोणी पर। / क्रन्दन-स्वर, उभर-उभर, / चीरता दिशा-अम्बर / प्रश्नों से जर्जर था- / आहत मन। / जैसे- / शर-बिद्ध, विहग / छटपटा रहा सभीत अवनि पर।"**[89]

3-घ-I-2.2 असहाय भीलनी : शबरी एक असहाय भीलनी है। उसकी सहायता करने वाला इस नगरीय परिवेश में कोई नहीं है। इस नये परिवेश में वह एकाकी है और नये सामाजिक आचरण और गृह त्याग के कष्टों से जूझ रही है। शबरी जनमानस के कटु व्यवहार को सहन नहीं कर पाती और गिर पड़ती है- **"असहाया भीलनी / गिरी अचेत / जैसे- / करि-कर मदान्ध निर्मम आघातों से / रौंद रहा नलिनी को।"**[90]

3-घ-I-2.3 एकाकी जीवन की विवशता : शबरी एकाकी जीवन जीने को विवश है। उसने अपना विवाह तथा अपने घर-परिवार, बन्धु-बान्धवों का परित्याग स्वेच्छा से किया है। घर का परित्याग करने के पश्चात् शबरी एक नगर में पहुँचती है। नगर में आकर व्यंग, तिरस्कार, विद्रूपता, घृणा इत्यादि ही उसे नागरिकों से प्राप्त हुआ परन्तु संरक्षण और सहयोग नहीं। इस कारण वह ऋष्यमूक पर्वत की गुफाओं को अपना निवास बनाती है। शबरी वहाँ प्रकृति की सहानुभूति प्राप्त कर लेती है। एकाकी खेलना, घूमना तथा विचरण करना उसकी तपश्चर्या थी- **"उत्सुक ज्यों, / मातृ-अंक धोने को कुल-कलंक, / अपने प्राण-खण्ड का। / सहज सहानुभूति पा गयी / गुफाओं से, / सहेलियाँ शिलाओं की, / सुलझातीं / उलझी आपदाओं को। / एकाकी- / खेलना, / भ्रमण, / विचरण-उसकी तपश्चर्या थी। / यही दिनचर्या थी।"**[91]

3-घ-I-2.4 सौन्दर्यमयी : शबरी अपनी युवावस्था में सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति है। ऋष्यमूक पर्वत पर निवास करने वाली शबरी वन की गुफाओं तथा पहाड़ों पर उन्मुक्त भाव से विचरण करती है। इस उन्मुक्त वातावरण में शबरी के सौन्दर्य का वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है- **"केश राशि, यों बिखरी / उमड़ी हो, / जैसे- / कजरारी बदरी। / अनचीते, / दृग रीते, / निर्मल जल-कुण्डों में / अपनी ही छवि / जागा अनुराग-राग अपने से, / बीत गये बोझिल दिन सपने से।"**[92]

3-घ-I-2.5 वर्ण भेद से दुखीः : शबरी अपनी जातिगत हीनता के कारण दुखी रहती है। वह मतंग मुनि की तपस्थली जाना चाहती है परन्तु अपनी जातिगत हीनता तथा सामाजिक वर्ण भेद के कारण डरती है कि कहीं मतंग मुनि के आश्रम में भी अन्त्यज, अछूतों का प्रवेश वर्जित तो नहीं होगा- **"किन्तु वहीं / कौंध गयी / वर्ण-भेद यातना / त्राण, तुष्टि याचना! / ऊन बीन अंतर का / कोंचता रहा अविरल। / वर्जित प्रवेश जहाँ / अन्त्यज, / अछूतों का।"**[93]

3-घ-I-2.6 सेवाव्रत धारिणी : शबरी प्रभु श्रीराम की सेविका है। भगवान को प्राप्त करने के लिए उसने मुनि मतंग की सेवा का व्रत लिया तथा वह मुनि के आश्रम के समीप पहुँचकर अज्ञात रूप से सेवा करने लगी। वह प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व तथा संध्या से पूर्व आश्रम को जाने वाले रास्ते को झाड़ती तथा सफाई करती है। शबरी नित्य यज्ञ के लिए आम्र की डालियाँ तथा फूल, बेल पत्र एकत्र करके रखती है- **"सेवा की वैसाखी / अविरल सुख दायिनी / प्रातः के पूर्व / पूर्व संध्या के / झारती, बुहारती, / संवारती, / डगर, कुटीर, मुख्य-द्वार / आम्र डालियाँ बटोर / रखती निष्काम / जिन्हें लेकर मुनि / आहुतियाँ देते थे / यज्ञों की।"**[94]

3-घ-I-2.7 मुनि मतंग के प्रति आदर भाव : शबरी के हृदय में मुनि मतंग के प्रति असीम आदर भाव है। मुनि मतंग ने शबरी को अज्ञात रूप से आश्रम की सेवा करते देख लिया। मुनि द्वारा उसका परिचय पूछने पर उसने स्वयं को भिल्लनी नारी बताया तथा मुनि से आश्रम के समीप आश्रय माँगा। मुनि द्वारा इस बात को अस्वीकार किये जाने पर वह अत्यन्त दुखी होकर कहती है कि यदि आप आश्रय नहीं देंगे तो मुझे मृत्यु का ही अवलम्बन है- **"मातु-पिता मेरे तुम / मेरे आधार तुम्हीं। / गुरुवर इस तमसा से / कर सकते पार तुम्हीं। / त्राण-ज्योति देकर / यह अंतर निष्कलंक करो, / हत्भागी मस्तक पर- / वरदानी अंक धरो।"**[95]

3-घ-I-2.8 कर्तव्य भावना : शबरी में कर्तव्य भावना कूट-कूट कर भरी हुयी है। जब मुनि मतंग की ऊँच-नीच भावना तिरोहित हो जाती है तब वे द्रवित होकर उसे आश्रम में शरण दे देते हैं। शरण मिलने के पश्चात् भी शबरी अपने कर्तव्य का पालन पहले की ही भांति करती रही है। प्रातः काल स्नान के पश्चात् पुष्प लाना, आँगन, कुटी रास्ते झाड़ना, बुहारना तथा जहाँ मुनि यज्ञ करते हैं; वहां की साफ-सफाई करना ही उसका कर्तव्य था। भोजन के नाम पर आश्रम में जो जूठन बचता था वही उसका भोजन था तथा पद प्रक्षालन से एकत्र हुआ पानी ही उसकी प्यास बुझाता था- **"मिलता था जूठन जो, / उतना ही दिव्य भोग / सेवा का अनुपालन जप-तप विनियोग-योग। / स्नान-ध्यान, / पुष्प-चयन, / झारती, बुहारती, कुटी-आँगन, / मुख्य द्वार, गौशाला / और जहाँ करते मुनि यज्ञ, हवन। / इतना ही जीवन धन, / उसका कर्तव्य वहन।"**[96]

3-घ-I-2.9 सामाजिक लांछना से व्यथित : मुनि मतंग द्वारा शबरी को यह आशीर्वाद देने पर कि राम कुटिया में आयेंगे तथा तुम्हें दर्शन देंगे। यह सुनने के बाद शबरी कार्य करते समय भी राम का ध्यान करती रहती है। वितण्ड मुनि द्वारा मुनि को अपशब्द कहे जाने एवं सामाजिक लांछना के अपमान से शबरी अत्यन्त व्यथित हो उठती है तथा मुनि मतंग से निवेदन करती है- **"आपकी-**

/ सुकीर्ति, / यश-पताका में / कैसा यह कलंक / आह ...। / कैसे हो? / शान्त दाह। / चिन्ता, ... / अभिशाप की नहीं, मुझको, / चिन्ता है आपकी / जप तप के प्रताप की।"[97]

3-घ-I-3 वृद्धा शबरी का चरित्रांकन : शबरी युवावस्था को पार कर के वृद्धावस्था में प्रवेश कर चुकी है। पक्ष, मास, वर्ष की परिधियों को लाँघता हुआ समय का रथ आगे बढ़ता जा रहा है। शबरी के युवावस्था का सौन्दर्य समाप्त हो चला है, उसकी केशराशि उज्ज्वल हो चुकी है। वह प्रत्येक स्थान पर राम का नाम लिखती रहती है। वृक्षों से, पुष्पों से तथा भँवरों से वह श्रीराम के विषय में पूछती रहती है। शबरी राम के स्वागतार्थ अनेक प्रकार के पुष्प तथा कन्दमूल फल एकत्र करके रखती जाती है परन्तु उसकी प्रतीक्षा समाप्त नहीं हो रही है। धनंजय अवस्थी कृत 'शबरी' की वृद्धा शबरी के चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

3-घ-I-3.1 राम के प्रति गहन आस्था : राम की प्रतीक्षा करते करते शबरी वृद्धावस्था को प्राप्त हो गयी है। राम के प्रति शबरी के हृदय में गहन आस्था है। वृद्धा होने के पश्चात् भी वह अत्यन्त उन्माद, उत्साह के साथ राम की प्रतीक्षा करती रहती है। उसके नेत्रों में राम बसे हैं। साँसों में राम बसे हैं। सुप्तावस्था तथा जागृतावस्था में भी उसे राम ही राम दृष्टिगत होते हैं- **"क्षण-क्षण की अन्तर्ध्वनि / पल-पल के दिवास्वप्न। / खींचते सजीव चित्र। / प्रीति पाश में बँधकर / राम आ रहे स्वयं / पंथ में सुमन झरते / कर, कटि में धनुष-वाण / बाँधे सिर जटा-जूट / कोटि काम के त्रिकूट।"**[98]

3-घ-I-3.2 अन्तर्मुखी तपस्विनी : राम की प्रतीक्षा करते-करते शबरी अन्तर्मुखी तपस्विनी बन गयी है। वह स्वयं से बातें करती रहती हैं। वह कभी कलियों से पूछती है तो कभी भँवरों से पूछती है कि तुमने राम को तो नहीं देखा है। उसे थल में, जल में राम दिखायी दे रहे हैं। वह स्वयं ही बोलती है कि हे राम तुमने अहिल्या का उद्धार किया, मेरा भी करो नाथ- **"अन्तर्मुखी तपस्विनी / देख रही राम, राम / जल में राम / थल में राम, / चर में, / अचर में राम। / आर्द्र स्वर / कहाँ हो राम। / आओ / उद्धार करो, / तारा है, उबारा है, / जड़वत् अहिल्या को, / मुझको भी उबारो नाथ, / पावन स्पर्श से।"**[99]

3-घ-I-3.3 आतिथ्य सत्कारी : शबरी को आतिथ्य सत्कार का ज्ञान था। राम आगमन से पूर्व ही उसने राम के आतिथ्य सत्कार के लिए विभिन्न प्रकार के फल-फूल तथा बेर एकत्र कर रखे हैं। राम आगमन के पश्चात् वह उनके आतिथ्य के लिए बेर तथा अनेक प्रकार के फल रखती है जिसे प्रभु श्रीराम प्रेम पूर्वक ग्रहण करते हैं- **"शबरी को लगी न देर- / राशि-राशि, कन्द मूल, / बेरों के ढेर-ढेर, लाकर दिया बिखेर। / चुन-चुन कर देती थी / बेर, बेर, बेर / झर बेरी के। / चखते ही राम,- / सहज कहते / ये बेर मधुर, भक्ति-युक्त ढेरी के।"**[100]

3-घ-I-3.4 तपस्विनी नारी : श्रीराम के आश्रम आगमन तथा शबरी को दर्शन के पश्चात् आश्रम वासियों से उन्मुख श्रीराम शबरी को तपस्विनी संबोधन देते हुए शबरी से ही जल शुद्धिकरण के लिए कहते हैं- **"उठो, उठो ...। / तपस्विनी / तुम स्वयं पयस्विनी / अपने कर कमलों से / जल का उद्धार करो / पूत संस्पर्शों से पाप-ताप क्षार करो ...।"**[101]

3-घ-I-3.5 भक्ति की प्रतिमूर्ति : शबरी साक्षात भक्ति की प्रतिमूर्ति है। उसने अपनी भक्ति तथा तपस्या से प्रभु श्रीराम को प्राप्त कर लिया है। जिस वितण्ड मुनि ने शबरी पर लांछना तथा आरोप लगाकर उसे आश्रम से निष्कासित करवाया, उन्हें श्रीराम के दर्शनों का सुख प्राप्त नहीं हो सका। अन्त में वितण्ड मुनि ने शबरी से क्षमा माँगी तथा राम के चरण चिन्हों की धूलि को साष्टांग दण्डवत किया। भक्ति की प्रतिमूर्ति शबरी मौन थी- **"भक्ति की प्रतिमूर्ति शबरी, मौन मुद्राएँ / मुखर थीं- / आपकी ही कृपा का गुरुदेव प्रतिफल है, / मिट गये अभिशाप, ताप, प्रपंच / जीवन के / तपोवन के / विवादित आश्रम के।"**[102]

NORTH EASTERN HILL UNIVERSITY LIBRARY DATE ... 104349

3-घ-II राम का चरित्रांकन

अन्य कृतियों की भाँति श्री धनंजय अवस्थी कृत 'शबरी' खण्ड-काव्य में भी राम नायक के पद पर प्रतिष्ठित हैं। किसी भी कृति में यदि राम हैं; तो नायक कोई दूसरा कैसे हो सकता है? राम की जितनी भी चारित्रिक विशेषताएँ हैं; जिनके कारण वे मर्यादा पुरुषोत्तम के नाम से विश्वविख्यात हैं, किसी अन्य पुरुष में एक साथ इतनी विशेषताएँ अकल्पनीय हैं। यही कारण है कि राम पुरुषश्रेष्ठ मानक हैं। राम का चरित्रांकन करने की किसी कवि या कथाकार की न तो योग्यता है और न ही आवश्यकता। **"राम के नामोच्चार मात्र से ही राम का चरित्र भाष्य है।"** मुनि मतंग भी शबरी को मुनि वितण्ड द्वारा अपमानित तथा लांछित किये जाने पर राम नाम अवलम्बन ही की शरण में भेजते हैं- **"दूर नहीं दिन, वे, / जब / राम यहीं आएँगे / तेरे ही हाथों से कन्द मूल खायेंगे।"**[103]

मतंग मुनि अपनी दिव्य दृष्टि द्वारा यह ज्ञात कर लेते हैं कि श्रीराम सीता की खोज करते-2 पम्पासरोवर तट तक अवश्य पधारेंगे एवं उनका मतंगाश्रम आना अवश्यम्भावी है। धनन्जय अवस्थी ने अपनी कृति 'शबरी' नामक खण्ड-काव्य में राम के क्रिया-कलापों एवं संक्षिप्त संभाषण द्वारा श्रीराम के चरित्र की जिन विशेषताओं का निरूपण किया है उनका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है। यहाँ यह बताना सम्यक होगा कि राम **"प्रभु श्रीराम"** हैं और अपनी लोक प्रसिद्ध चारित्रिक विशेषताओं से परिपूर्ण **"भगवान"** हैं।

3-घ-II-1 शीलवान शौर्यशाली एवं संयमी पुरुष : श्रीराम और लक्ष्मण एक साथ शबरी की कुटिया में पदार्पण करते हैं। उनके दर्शनों से प्रतीत होता है मानों पृथ्वी पर घने मेघ और दामिनी की तरंगें फैल गयी हों। राम श्यामवर्ण के शील-शौर्य तथा संयम के निधि स्वरूप हैं- **"सांवले / सलोने / अभिराम, राम, कोटिकाम / शील / शौर्य / संयम के / निधि-ललाम।"**[104]

3-घ-II-2 भक्ति तथा प्रेम के प्रणेता : प्रभु श्रीराम अपने भक्तजनों की भक्ति भावना एवं प्रेम से अत्यन्त प्रभावित होते हैं। भक्तजनों को भगवद्भजन हेतु स्थाई प्रेरणा प्राप्त होती है। शबरी की अनन्य भक्ति तथा प्रेम को देखकर वे विह्वल हो उठते हैं तथा उसे गले से लगाकर कहते हैं- **"भद्रे / मैं तेरी भक्ति डोर से बँधा चला आया। / भाता है यही एक नाता अनुरागिनी।"**[105]

3-घ-II-3 करुणा के सागर : मर्यादा पुरुषोत्तम करुणा के सागर हैं। शबरी की भक्ति, प्रेम आतिथ्य सत्कार और सविनय आग्रह को देखकर वे करुणामूर्त हो उठते हैं और क्षणांश मात्र के लिए सीता की विरह व्यथा भी भूल जाते हैं- **"देख विविध- / सेवा-विधि / प्रेम सिन्धु, करुणा निधि / भूल गये क्षण भर को / सीता की विरह व्यथा।"**[106]

3-घ-II-4 अन्तर्यामी पुरुष : श्रीराम के पम्पासर आगमन के पश्चात ऋषि मुनियों द्वारा सर के दूषित होने की बात एवं शबरी को दोषी बताने पर अन्तर्यामी प्रभु को सब कुछ समझने में देर नहीं लगी- **"राम को न लगी देर / समझ गए- / विसंगतियों का अंधेर।"**[107]

3-घ-II-5 ज्ञानी पुरुष : प्रभु श्रीराम जातिगत हीनता तथा रूढ़ियों के समर्थक नहीं है फिर भी ये अनीतियाँ, कुरीतियाँ धनुर्धारी राम को चुनौतियाँ देने लगती हैं परन्तु राम बहुत ही ज्ञानी पुरुष हैं वे विभिन्न संस्मरणों से सारी बातों से भिज्ञ हैं - **"जाग उठे संस्मरण, / दर्प-भेद / गाधि-तनय गुरु वशिष्ठ अतिक्रमण / ब्राह्मण-क्षत्रिय विरोध, / भृगु वंशी परशु-क्रोध, / पद-पखारने का हठ अपढ़ निषाद का, / भरत के विषाद का, / सत्ता में चूर इन्द्र का विलास, / गौतम ऋषि पत्नी का सामाजिक बहिष्कार। / नवजीवन संचार।"**[108]

3-घ-II-6 अस्पृश्यता के सर्वथा विरुद्ध : राम के विभिन्न क्रिया कलापों से उनका अस्पृश्यता का सर्वथा विरोधी होना निश्चित होता है। निषादराज के साथ उनका बर्ताव, शबरी के आश्रम में पदार्पण इत्यादि इसके साक्षात उदाहरण हैं। पम्पासर का अशुद्ध जल शबरी के तपोपूत स्पर्श द्वारा ही शुद्ध होगा कि उक्ति देने वाले श्रीराम कह उठते हैं- **"पाप ताप शापित जल, / निर्मल बनेगा तभी / मैं नहीं- / शबरी ही दे अपना तपोपूत संस्पर्श।"**[109]

श्रीराम अपने श्रीमुख से निम्न उदघोष, उद्बोधन देते हैं जिससे उनकी उक्त भावना का समग्र प्रतिपादन होता है- **"न, कोई जन्मना ऊँचा- / न नीचा है, / विभाजन कर्म की रेखा। / उठाती है, गिराती है विभाजित आचरण लेखा। / नहीं वह नीच हो सकता / कि जिसका कर्म ऊँचा है। / बड़ा वह हो नहीं सकता / कि जिसका कर्म नीचा है। / हमारे वेद, श्रुतियाँ उपनिषद, / सिद्धान्त शास्त्रों के / यही कहते- / इसी में मर्म, जीवन का समूचा है।"**[110]

3-घ-II-7 शबरी उद्धारक : प्रभु श्रीराम शबरी का उद्धार करने के लिए आए हैं। वह ऋषि मुनियों से कहते हैं कि प्रेम ही प्रेम का जनक होता है और घृणा से घृणा की ही प्राप्ति होती है।

शबरी द्वारा पम्पासर के जल को शुद्ध करने की घटना से वर्ण भेद और ऊँच-नीच की सामाजिक कुरीतियों को जनमानस से दूर कर दिया और शबरी का उद्धार किया।

3-घ-II-8 उत्तरदायित्व की भावना : श्रीराम क्षणांश के लिए भी रावण द्वारा अपहरित और किन्हीं अनजान संकट में पड़ी अपनी पत्नी सीता को अपने मानस पटल से विस्मृत नहीं कर पाते हैं। शबरी की दर्शनाभिलाषा को पूर्ण करके वे शीघ्रातिशीघ्र वैदेही की खोज में प्रयाण करना चाहते हैं, तभी वे शबरी से विदा लेते समय कह उठते हैं- **"मुझको विदा दो भक्ति रूपे। / मर्म की यह बात तुमसे कह रहा हूँ / कहाँ ढूँढूँ? / बताओं तुम्हीं वह पथ कौन है? / विरहाग्नि में जलती न जाने हैं कहाँ / सुकुमार वैदेही?"**[111]

3-घ-III मुनि मतंग का चरित्रांकन

मुनि मतंग धनन्जय अवस्थी कृत खण्ड-काव्य शबरी के एक प्रमुख पुरुष पात्र हैं। शबरी पीड़ित और प्रताड़ित होकर नैराश्य के सागर में डूब जाती है। पम्पासर के अन्य ऋषि मुनिगण रुढ़िवादी संस्कारों को मानने वाले, छुआछूत, ऊँच नीच के घोर पुजारी है जिनके द्वार-2 भटकने पर भी शबरी को कटुप्रहार ही मिलते हैं- **"भीलनी व्यथा विभोर- / ढूँढती रही प्रवास, / व्यर्थ हो गए प्रयास / यत्न हो गये हताश!"**[112]

मुनि मतंग का आश्रम एक प्रसिद्ध आश्रम है क्योंकि एक अशिक्षित, अल्पवयस्क, ग्रामीण, अरण्यवासिनी बाला को भी मतंगाश्रम की कुछ विशेषताऐं भिज्ञ थीं। मुनि मतंग का आश्रम एक प्रगतिशील, प्रतिष्ठित आश्रम था क्योंकि वे विद्वान, तेजयुक्त, भक्ति और ज्ञान के संगम व वृहदमना थे। इस कारण वे शबरी को अपने उद्धारक अवलम्बन प्रतीत होते हैं- **"सुनती थी यहाँ-वहाँ / सराहनीय आश्रय तो एक / मुनि मतंग का। / न भय जहाँ अनंग का! / धरती वह करुणा की / जहाँ न- / बड़ा-छोटा है / न, भेद ऊँच, नीच का, / कुजाति का, / कुलीन, अकुलीन का, / विधि का वरदान एक, / मुनि मतंग का आश्रम।"**[113]

धनन्जय अवस्थी के मात्र एक ही पद का अनुशीलन करने से मुनि मतंग की समग्र चारित्रिक विशेषताएं ज्ञात हो उठती हैं- **"मुनि मतंग / तपः पूत, / ज्योर्तिमय अंग-अंग / मानवता के प्रतीक / भक्तियोग पुण्डरीक। / 'इन्दु'- / सुयश, कीर्ति के / कल्प वृक्ष, तीर्थ के। / मुंज, मेखला सुमुंज, भस्म अंग / जटा-जूट, / जीते युग, घूँट-घूँट / थर्राता जिनसे / शापित अनंग।"**[114] मुनि मतंग की यशोकीर्ति पताका दूर-2 तक दृष्टिगोचर होती है और यह यशोकीर्ति मात्र उनके चारित्रिक प्रताप का परिणाम थी। कुछ अन्य विशेषताएं निम्न हैं-

3-घ-III-1 अधिष्ठाता व प्रकांड विद्वान : मतंग ऋषि प्रकांड विद्वान हैं जिनके आश्रम में विद्यादान का महायज्ञ चलता है- **"पाठ वेद-मंत्रों का करता था बटुक वृन्द / भाष्य नए श्रुतियों के / ललित कला, दर्शन के / होता साहित्य सृजन, / मानवीय मूल्यांकन / इसके भी आगे कुछ और विचित्रता।"**[115]

3-घ-III-2 कठोर अनुशासन प्रिय : मतंगाश्रम के कठोर अनुशासन के अनुपालन को मान्यता प्राप्त थी। वे अत्यन्त कर्म काण्डी तथा विधि विधान पूर्वक जप-तप यम-नियम में रत रहते हैं- **"अनुशासन कठोर घोर। / नियमों का पालन ही / पूजा का एक छोर / एक छोर- / कर्म काण्ड / विधि-विधान, / साधना / उपासना।"**[116]

3-घ-III-3 ब्रह्मचर्य व्रतधारी : मुनि मतंग स्वयं ब्रह्मचर्य व्रतधारी हैं साथ-साथ वे यह अपेक्षा भी रखते हैं कि उनके आश्रमवासी सभी बटुकों और मुनियों को इस व्रत का कठोरता पूर्वक पालन करना चाहिए। शबरी द्वारा अज्ञात रूप से किये जा रहे सेवा कार्य का पता लगाने के लिए जब उन्होंने ब्रह्मवेला में शयन त्याग कर छुपकर देखा और एक नवयौवना भीलनी को यह कार्य करते पाया तो उनके मन में संशय उत्पन्न होता है- **"देख रहे / एक भीलनी सभीत, /. एक यौवना, अधीर / तन्मयरत / नित्य कर्म संपादन- / था अपूर्व अनुपालन। / संशय की धारा में / डूबे कुलपति मतंग।"**[117]

3-घ-III-4 अस्पृश्यता विरोधी : शबरी द्वारा अपना परिचय देने तथा मुनि से आश्रय माँगने पर मुनि ने उसे आश्रय देनें में असमर्थता जतायी परन्तु शबरी की दीन-हीन अवस्था को देखकर वह द्रवित हो उठे तथा उनके हृदय से वर्ण-भेद की भावना तिरोहित हो **"उठी- भूल गया ध्यान, ज्ञान / छूत का, / अछूत का, / जाति, वर्ण-भेद का।"**[118]

3-घ-III-5 त्रिकालज्ञ : मुनि मतंग त्रिकालदर्शी हैं। वे अपने दिव्य दृष्टि द्वारा भूत, वर्तमान तथा भविष्य का ज्ञान कर लेते हैं। उन्हें इस बात का पूर्वज्ञान है कि श्रीराम उनकी कुटिया में अवश्य आयेंगे। मुनि शबरी को समझाते हुए कहते हैं- **"आएँगे राम यहीं / कुटिया में / उनकी ही कृपा विशेष / धो देंगी शेष कलेश।"**[119]

3-घ-III-6 करुणा की प्रतिमूर्ति : मुनि मतंग साक्षात करुणा की मूर्ति हैं। शबरी को शरण देने के पश्चात् मुनि करुणा से आप्लावित होकर कहते हैं कि जो तुझे नीच, अधम कहते हैं वे स्वयं नीच हैं - **"करुणा से आप्लावित / परिप्लावित / पूँजीभूत,- / मानवता / अपराजेय कालदण्ड / परख रहा कंचन को / उपेक्षिता कसौटी में।"**[120]

3-घ-III-7 प्रेरणा स्रोत : मुनि मतंग का व्यक्तित्व शबरी के लिए प्रेरणा स्रोत है। जब मुनि वितण्ड ने शबरी को शापित और कलंकित कहा था, उस समय शबरी तुरन्त मुनि के समीप गयी। शबरी ने रूँधे गले से सारा वृतांत कह सुनाया। मुनि ने शबरी को सान्त्वना देते हुए कहा कि- **"बेटी / जो बैठ गये, हो निराश जीवन में। / होता उपलब्ध नहीं, लक्ष्य उन्हें त्रिभुवन में। / जीते वे, / जिनका विश्वास जिया करता है। / जिसका विश्वास मरा / वही मरा करता है। / मृत न, बन, अमृत पुत्री! / ऐसा विश्वास बन - / जीना है, युगों-युगों / ऐसा इतिहास बन।"**[121]

3-घ-IV अन्य पात्रों का चरित्रांकन

श्री धनन्जय अवस्थी की शबरी के अन्य पात्रों में शबरी के पिता शबरराज एवं मुनि वितण्ड का चरित्र उल्लेखनीय है। यह दोनों पात्र कथा के अन्य पात्र हैं जो थोड़े समय के लिए ही कथानक में प्रविष्ट होते हैं परन्तु अपनी उपस्थिति से कथानक को परिपूर्ण करते हैं। क्रमशः संक्षिप्त रूप से उनकी चारित्रिक विशेषताएँ अधोवर्णित हैं।

3-घ-IV-1 शबरराज का चरित्रांकन : ऋष्यमूक पर्वत के निकट शबर राज्य स्थित होना प्रदर्शित है। शबरी के पिता शबर जाति के महानायक और राजा हैं। आज भी विन्ध्य प्रदेश में शबर जाति के वंशजों का अस्तित्व है। शबर जाति एक अरण्यवासी जनजाति थी जिसका जनजातीय अनुशासन बहुत सख्त था। राजा स्वयं अपना प्रतिहारी था। सारा समाज श्रम का व्रती था। सारी जनजाति एक संयुक्त परिवार की तरह थी जिसका अपना ही नियम-कानून होता था और राजतन्त्र के अन्तर्गत रूढ़ि सम्मत विचार सर्वमान्य था- **"उसी गिरि प्रान्तर में- / शबर का प्रशासन था / प्रबल अनुशाासन था / पुरजन, परिजन समाज, / श्रम का व्रतधारी था / राजा था स्वयं / स्वयं अपना प्रतिहारी था।"**[122] शबरराज की मुख्य चारित्रिक विशेषताऐं निम्नलिखित हैं-

3-घ-IV-1.1 उत्तरदायित्व की भावना : शबरराज एक पुत्री के पिता हैं। वह अपनी पुत्री के विवाह के अवसर पर अत्यन्त हर्षित भी हैं। शबरराज बहुत ही यशस्वी राजा हैं। जिनकी यश-कीर्ति का गान समस्त पुरवासी करते हैं। वे अपनी पुत्री का विवाह कर अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन करना चाहते हैं- **"शबर-प्रवर, प्रमुख प्रधान / आज प्रमुदित हर्षित महान। / जिनका यश-कीर्ति गान / करता पुरजन वितान ... / पुत्री के विवाह का अभूतपूर्व समारोह / आरोह / अवरोह।"**[123]

3-घ-IV-1.2 वात्सल्य की भावना से ओत-प्रोत : पिता शबर वात्सल्य की भावना से ओत-प्रोत हैं जो आनन्दित होने के साथ-2 अपनी पुत्री के विवाह से संबन्धित नवीन कल्पनाएं भी करते हैं- **"कल्पना किल्लोल / लेती है- / मृदु हिलोल। / कितना सौभाग्य आज। / होंगे पीताभ पाणि, प्राण प्रिय पुत्री के।"**[124] अबोध शबरी अपने विवाह के आयोजन को अपने पिता द्वारा एक और माई घर लाने का आयोजन समझ कर प्रश्न करती है जिससे शबरराज का वात्सल्य उमड़ पड़ता है- **"सम्हले तत्काल शबर, उन्मीलित वात्सल्य / मूर्ति मन्त- / डोल उठा।"**[125]

3-घ-V मुनि वितण्ड का चरित्रांकन

मुनि वितण्ड तात्कालिक ऋषि कुल-समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। वैसे तो सारा ऋषि कुल एक पूर्वाग्रही, रूढ़िवादी, अहंकारी, अस्पृश्यता और ऊँच-नीच मानने वाला दर्शाया गया है, परन्तु यह एक जनमानस का किसी एक समय का सामूहिक आचरण और चरित्र है। मतंग द्वारा एक अन्त्यज अछूत स्त्री को आश्रम में आश्रय देने के कारण ऋषि कुल स्तम्भित एवं स्तब्ध है। मुनि वितण्ड के चरित्र की मुख्य विशेषताएं निम्न हैं-

3-घ-V-1 अहंकारी पूर्वाग्रही, रूढ़िवादी परन्तु संस्कारी : मुनि वितण्ड अपने गुरुजनों से प्राप्त संस्कारों, जप-तप, यम-नियम इत्यादि का अक्षरशः पालन करने वाले एक रूढ़िवादी पूर्वाग्रही परन्तु अहंकारी पुरुष हैं। मुनि वितण्ड का ब्रह्मचारी, विद्वान एवं उच्च वर्ण का होना स्वयं सिद्ध है। क्यों कि इनमें से एक भी गुण के न होने से अहंकार नहीं आ सकता- **"मुनि 'वितण्ड' के उर में / अहंकार / पूर्वाग्रही संस्कार / रूढ़िबद्ध जड़ विचार...।"**[126]

3-घ-V-2 अस्पृश्यता के घोर पुजारी : मुनि वितण्ड अस्पृश्यता के घोर पुजारी हैं साथ ही शुद्धि-अशुद्धि का इतना ध्यान रखते हैं कि शरीर पर यत्किंचित जूठन के (अन्नकण) गिरने पर शरीर को अशुद्ध समझते हैं। शरीर को पुनः शुद्ध करने हेतु स्नान इत्यादि न कर पाने के कारण तुरन्त ही शबरी के ऊपर क्रोधित हो उठते हैं- **"गिरते ही- / किंचित कण / क्षुब्ध-हृदय / भृकुटि बंक / अधर कंप / रक्त-नयन / क्रुद्ध वचन।"**[127]

3-घ-V-3 कटुभाषी : भीलनी को कटुवचन भी बोलते हैं यथा- **"दुष्टे!/ पथ भ्रष्टे / नराधमे / पापिनी, पिशाचिनी।"**[128]

3-घ-V-4 मतंग के धर्म विरुद्ध आचरण से संतप्त : मतंग मुनि की श्रेष्ठता सर्वोपरि है, परन्तु तात्कालिक सामाजिक मान्यताओं के विरुद्ध एकाएक इतना बड़ा निर्णय ले लेना जिसके अत्यन्त दूरगामी परिणाम अपेक्षित हों, वह भी एक श्रेष्ठतम अधिष्ठाता द्वारा और समकक्षीय ऋषि मुनियों की सर्वथा उपेक्षा तथा अवहेलना करने के कारण यह मानवीय स्वभाव के विरुद्ध किया गया असामाजिक कार्य की श्रेणी में आता है। जिसके कारण अन्य श्रेष्ठ मुनियों का मतंग के प्रति क्रोधित और कुपित होना अवश्यम्भावी था। मुनि वितण्ड कहते हैं- **"अपराधिनी अकेली / तू ही नहीं। / वरन् ये मतंग भी, / दे कर जो शरण-त्राण / बन बैठा ऋषि महान। / हो गयी अपावन अपवित्र, / यह तपस्थली, / वनस्थली।"**[129]

3-घ-V-5 स्पष्टवक्ता : मुनि वितण्ड स्पष्टवक्ता भी हैं। शबरी एक नवयौवना है; और विश्वामित्र जैसे महान ऋषियों का, जो राजर्षि से ब्रह्मर्षि बन सकते हों, तप भंग करने में रम्भा और मेनका यदि सक्षम हैं तो मतंग भी तो कहीं पथ भ्रष्ट तो नहीं हो गये; ऐसी संकल्पना करना दुरूह नहीं कहा जा सकता और इस बात को वितण्ड निम्न शब्दों में व्यक्त करते हैं- **"कौन आकर्षण था? / तुझको, जो शरण दिया / कारण था कौन जो अकारण / अपकीर्ति लिया? / उलट दिया विधि-विधान / तुझको दे शरण-त्राण।"**[130]

3-घ-V-6 पश्चाताप और अपनी भूल के लिए क्षमायाचक : **"क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा"** नामक उक्ति वितण्ड, दुर्वासा और अन्य तमाम ऋषि मुनियों पर एक समान रूप से लागू होती है इसका मुख्य कारण ज्ञात करने हेतु उनकी मानसिक वृत्तियों का सम्यक आंकलन और विस्तृत अध्ययन अपेक्षित है। ऐसे लोग मन से वस्तुतः बहुत स्वच्छ और दुर्भावना से परे होते हैं। श्रीराम द्वारा शबरी को उसकी भक्ति के पुरस्कार स्वरूप ऋषि-मुनियों के पहले दर्शन दिये जाने के कारण

वितण्ड समझ जाते हैं कि उनसे जाने-अनजानें में भयंकर भूल हो गई है तथा वे तुरन्त ही जप-तप त्यागकर शबरी के आश्रम आ जाते हैं- **"जब सुना आख्यान क्रुद्ध वितण्ड ने यह- / राम आए आज शबरी के अतिथि बन / छोड़ कर जप-तप / चले आए जहाँ / शबरी रहा करती अकिंचन।"**[131]

3-घ-V-7 विनम्रता एवं सद्गुणी : वितण्ड वस्तुत: एक उत्तम पुरुष हैं। उनकी क्रोध की वृत्ति है और क्रोध का कारण समाप्त हो जाने पर उनका वास्तविक चरित्र सम्मुख आता है वे उसी शबरी से, जिसको उन्होंने गर्व से शाप दिया था क्षमायाचना करते हैं यह एक महान सद्गुण है- **"वे 'वितण्ड' प्रचण्ड बोले / विनत होकर / याचना है एक / मुझको क्षमा कर दो / महाभागे! / तपस्विनी / भक्ति की मंदाकिनी।"**[132]

3-च श्री अवध किशोर श्रीवास्तव 'अवधेश' कृत 'श्रमणा-शबरी के राम' के पात्रों का चरित्रांकन

श्री 'अवधेश' ने अपने महाकाव्य के सिंहावलोकन में यह नि:संकोच स्वीकार किया है कि उन्होंने अपनी ओर से कुछ भी कहने का प्रयत्न नहीं किया है अपितु जो गोस्वामी-तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस में लिखा है उसी को आधार बनाकर पात्रों का सृजन तथा कथा का प्रणयन किया है। कवि के शब्दों में - **"मैने अपनी ओर से कुछ नहीं कहा है, मुझे तो रामबोला (तुलसीदास के बचपन का नाम) ने जो कुछ बोला, सुझाया वही मैने श्रमणा महाकाव्य में लिख दिया।"**[133] कवि ने जिस भावना और विचार के अन्तर्गत कथा का प्रणयन एवं पात्रों के चरित्र का सृजन किया है उनका सम्यक अनुशीलन करने से पहले कवि के उद्गारों को उद्धृत करना सम्यक होगा। 'अवधेश' के ही शब्दों में- **"... कवि के हृदय में अपने देश, धर्म और जाति के प्रति एक वेदना थी; अन्त:करण में आकुलता थी, यही कारण है कि उन्होंने (गो. तुलसीदास जी) एक उदात्त चरित्र को संस्कृत से उठाकर लोक भाषा में अंकित किया, किन्तु हमने कवि के हृदय की टीस उस मार्मिक वेदना को नहीं समझा और उसे स्वार्थ और दम्भ की पूर्ति का साधन बनाया, दुख मिला तो भगवान ने दिया, सुख मिला तो भगवान ने दिया, इस धारणा ने मानव को कर्मभीरु बना दिया ...।"**[134]

गोस्वामी तुलसीदास ने जहाँ राम के ईश्वरीय पक्ष को अधिक उभारा है, वहीं 'अवधेश' ने देश-काल के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मानस के ब्रह्मअंश, प्रभु श्रीराम के कर्म पक्ष एवं उनकी लीला को मानवोचित आचरण मानकर 'श्रमणा' महाकाव्य में समस्त घटनाओं को उभारने का प्रयत्न किया है। इसी क्रम में महाकाव्य में विभिन्न पात्रों का सृजन व उनका चरित्र चित्रण स्वयमेव अथवा सप्रयास हो गया है। प्रस्तुत खण्ड में 'अवधेश' की 'श्रमणा' के प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण किया गया है।

3-च-I 'श्रमणा' महाकाव्य के प्रमुख पात्र

महाकाव्य के पात्रों के परिप्रेक्ष्य में इतना बताना श्रेयस्कर है कि राम-कथा के लगभग सभी ज्ञात पात्रों के अतिरिक्त कुछ नये पात्रों को भी इस महाकाव्य में स्थान प्राप्त हुआ है। कुछ पात्र किंचित अत्याल्प समयावधि के लिए प्रगट होते हैं और लुप्त हो जाते हैं वहीं कुछ अन्य पात्र कथा में विशेष योगदान करते हैं। इस महाकाव्य के प्रणेता ने शबरी प्रसंग के संदर्भ में नवीन घटनाओं और पात्रों की सर्जना द्वारा इस महाकाव्य को एक अतुलनीय ग्रन्थ बना डाला है जिसका कथानक श्रीरामचरितमानस से किंचित भिन्न व अलौकिक है। इस महाकाव्य में जिन पात्रों का उल्लेख हुआ है वे निम्नलिखित हैं - श्रमणा, श्रमणा के पिता शबरराज, सुतीक्ष्ण मुनि, संत मारीच, कौशिक, राम, रावण, कैकेयी, दशरथ, वशिष्ठ, अहिल्या, सीता, सती व शिव, नारद, कुंभज ऋषि, निषाद पुत्र, दक्षिणवासी, मुनि विश्वामित्र, सुनयना, हनुमान, जटायु, बालि, सुग्रीव, तारा, मतंग ऋषि, सूर्पणखा, कुम्भकर्ण, लंकिनी, सिंहिनी, त्रिजटा, जयंत, विभीषण, वेदवती, अग्नि ऋषि, विराध, खर-दूषण, सिंह, हाथी, शावक, तोता इत्यादि।

3-च-II 'श्रमणा' की शबरी का चरित्र चित्रण

शबरी 'श्रमणा' महाकाव्य की नायिका है। इस कारण इस महाकाव्य का कथानक उसके चतुर्दिक घूमता रहता है। 'अवधेश' ने श्रमणा के पूर्वजन्म, इस जन्म में उत्पत्ति तथा उत्पत्ति के कारणों की एक वृहद पृष्ठभूमि का सृजन किया है। 'अवधेश' की श्रमणा का सम्यक चरित्रांकन करने हेतु हमें उसके जन्म, बालपन, किशोरावस्था, युवावस्था एवं वृद्धावस्था तक का चरित्र संक्षेप में निरूपण करना होगा। श्रमणा के आधार पर शबरी का चरित्र चित्रण निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है-

3-च-II-1 परिचय : महाकाव्य के पूर्वार्ध गृहखण्ड में 'अवधेश' ने शबरी के जन्म का आख्यान एक अनूठे रूप में प्रतिपादित किया है। उनके अनुसार शबरी पूर्वजन्म में देवराज इन्द्र की सभा में नृत्य करने वाली एक अप्सरा थी। किंवदन्ती ने अनुसार, एक बार महाप्रभु विष्णु के इन्द्रलोक आगमन के समय वह अप्सरा उन पर कान्ता भाव से अनुरक्त होकर अपलक उनका श्रीमुख-मण्डल अवलोकित करती रह गयी तथा अपना निर्धारित कृत्य भूल गयी। इस पर देवराज इन्द्र ने कुपित होकर उसे अधम जाति और मनुष्य योनि में अवतार लेने का श्राप दे दिया। 'अवधेश' ने शबरी की उत्पत्ति स्थल नर्मदा नदी के दक्षिणी तट की ओर विन्ध्य वनों के मध्य दण्डक वन होना निर्धारित किया है- **"पूत सरिता नर्मदा के दक्षिणी तट ओर, / विन्ध्यवन के मध्य दण्डक वन विशद अति घोर।"**[135] शबरी की जाति के बारें में 'अवधेश' का मत है कि - **"व्याध, भील, कुणीर, कौणय अधम जाति अनूप, / शबर, कोल किरात, बपु में थे मनुज के रूप।"**[136]

शबरी के जन्म के संदर्भ में महाकाव्य के पूर्वार्ध गृह-खण्ड में दक्ष सुता सती और कैलाशपति शिव के मध्य हुये वार्तालाप का यह निष्कर्ष निकलता है कि शबरी की माता द्वारा

शिवजी को प्रसन्न किये जाने के उपरान्त वर स्वरूप उन्हें इस जन्म में शबरी जैसी बालिका की माता बनने का महान गौरव प्राप्त हुआ। शिवजी ने शबरी की माँ को यह आशीर्वाद देते हुए कहा था - **"दिया दूसरा वर, होगी उत्पन्न एक वर कन्या, / जिसको पाकर तू भी वत्से हो जायेगी धन्या।"**[137] कालान्तर में जिस शबर कन्या ने शिव को प्रसन्न कर उपरोक्त वरदान प्राप्त किया था। उसका पाणिग्रहण शबर राज्य के अधिष्ठाता के साथ हुआ और उनकी पुत्री के रूप में शबरी का जन्म हुआ- **"साधना बनकर धरा पर, आ गई साकार, / प्रेम की प्रतिमूर्ति बनकर भक्ति का अवतार।"**[138]

3-च-II-2 श्रमणा की बाल्यावस्था

'अवधेश' की श्रमणा का बचपन वन प्रांगण में व्यतीत होता है। यद्यपि वह शबरराज की पुत्री है तथापि अरण्य निवासी जातियों के रहन-सहन व रीति रिवाजों के अनुसार उसका लालन-पालन होता है- **"जहाँ वट विटप की विशद डालियों पर। / प्रखर धूप में छाँह भी पल रही थी। / वहीं एक तरु की नवल डालिका पर। / नवल बालिका का पड़ा पालना था।"**[139]

3-च-II-2.1 शबरी का बाल सौन्दर्य : शबरी अपने बचपन में अत्यधिक सौन्दर्यमयी बालिका थी। 'अवधेश' ने शबरी के बाल सौन्दर्य का विशद वर्णन किया है। यद्यपि शबरी का वर्ण साँवला था तथापि उसका मुख चन्द्रमा के समान कांतिमय था- **"सुद्दवि मान मुख साँवरा सा सलोना, / किसी पूर्ण शशि पुत्र की पुत्री जासा।"**[140]

'अवधेश' ने शबरी के बाल सौन्दर्य के वर्णन में अपने अद्वितीय काव्य शिल्य का परिचय दिया है। संक्षिप्त रूप में यह कहना श्रेयस्कर होगा कि- **"अनोखी छटा थी विपिन की, विपिन धर, / विपिन वाटिका की विपिन बालिका की।"**[141]

3-च-II-2.2 पशु प्रेम : अपने बाल्यकाल से ही शबरी को पशुओं से अगाध स्नेह था। विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षी उसके खेल के साथी थे। शबरी के पशु प्रेम का एक उदाहरण दृष्टव्य है- **"सुनकर सिंह दहाड़ बनावलि, सहम सिमट जाती थी, / सभय मृगी को, अभय बनाने दौड़ लिपट जाती थी।"**[142] कभी-2 तो वह उन पशुओं के साथ खेलते-खेलते उनके बीच सो भी जाती थी- **"मृगी सुप्त शावक के संरक्षण में व्यस्त हुयी थी, / और उसी से लिपट अंक भर, श्रमणा सुप्त हुयी थी।"**[143] श्रमणा को पशुओं का शिकार करने वाला व्यक्ति अप्रिय था यहाँ तक कि उसके पिता शबरराज के तीर से जब सुप्त शावक विंध जाता है तो वह अत्यन्त वेदना से रोने लगती है।

3-च-II-2.3 बाल क्रीड़ा : शबरराज की पुत्री होने के कारण शैशवावस्था में श्रमणा का श्रृंगार वन्य प्राणियों से प्राप्त होने वाले चर्म, दन्त, नख, गजमुक्ता इत्यादि से किया जाता था। बालिका शबरी अपनी बाल सुलभ क्रीड़ाओं से अपने माता-पिता तथा बन्धु-बान्धवों को रिझाती थी- **"नागदन्त की पैंजनियों में, मणि कलोल करते थे, / जननी जनक विलोक बालिका, मन प्रमोद भरते**

थे। / जननी जनक मग्न होते थे, नित्य बाल क्रीड़ा में, / केवल दीपक ही जलते थे मानो इस क्रीड़ा में।"[144]

3-च-II-2.4 निरामिष : 'अवधेश' कृत श्रमणा की नायिका श्रमणा का जन्म एक माँसभक्षी निम्न कुल में हुआ था परन्तु शबरी माँस भक्षण के सर्वथा विरुद्ध थी। 'अवधेश' के शब्दों में - **"शबर प्रवर घर मद्य माँस का, यदपि अभाव नहीं था, / पर श्रमणा के मन पर उसका, रंच प्रभाव नहीं था।"[145]** श्रमणा का साहचर्य पाकर उसके साथ रहने वाले समस्त वन्य पशु-पक्षी भी निरामिष हो गये थे- **"उसके सहचर वनचर जितने जीव जन्तु पशु पक्षी, / वह भी सब बन गये निरामिष, जो थे आमिष भक्षी।"[146]**

3-च-II-3 श्रमणा की किशोरावस्था : अवधेश की श्रमणा अपने बाल्यकाल की अवधि पूरा करने के पश्चात् किशोर अवस्था में प्रवेश कर चुकी है। महाशिवरात्रि के अवसर पर मुनि सुतीक्ष्ण श्रमणा को देखने के पश्चात् उसके पिता शबरराज को आशीर्वाद देते हुए कहते हैं कि शबरराज धन्य हैं जो उन्हें श्रमणा जैसी पुत्री का पिता होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। किशोरी श्रमणा की मुख्य चारित्रिक विशेषताएं निम्न हैं।

3-च-II-3.1 सौन्दर्यमयी : 'अवधेश' की श्रमणा अपनी किशोरावस्था में सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति परिलक्षित होती है। यद्यपि उसका वर्ण साँवला है परन्तु उसमें यौवन की लालिमा दृष्टिगोचर होती है- **"श्यामल तन पर झलक उठी थी यौवन की अरुणाई, / रवि आभा पर नील कमल दल जैसे पड़े दिखायी। / रूप और लावण्य सिमट कर एकाकार हुआ था, / ओज पिता का माँ का यौवन फिर साकार हुआ था।"[147]** उसके मुख मण्डल पर पूर्ण चन्द्रमा के समान आभा दमक रही थी तथा उसके चौड़े मस्तक पर बाल सूर्य के समान बिन्दी दमक रही थी- **"मुख मण्डल पर पूर्ण चन्द्र की, आभा दमक रही थी, / विशद भाल पर बाल अरुण सी, बिन्दी चमक रही थी।"[148]**

3-च-II-3.2 अनुशासन प्रिय : 'अवधेश' की श्रमणा अनुशासन को अपने दिनचर्या में विशेष महत्व देती है। श्रमणा के पिता की चिकित्साशाला की वह नित्य प्रति देखभाल करती रहती है। यद्यपि चिकित्साशाला में बहुत सारे सेवक और परिचारक थे परन्तु उनके ऊपर श्रमणा का स्नेह पूर्ण अनुशासन था- **"यों तो सेवक चर परिचारक, थे कर्तव्य परायण, / किन्तु सभी पर था श्रमणा का स्नेह युक्त अनुशासन।"[149]**

3-च-II.3.3 राम के प्रति पूर्वानुराग : चिकित्साशाला में घायल मारीच को लगे हुए बिना नोंक के बाण पर अंकित श्रीराम की सुन्दर व नयनाभिराम छवि दृष्टव्य है। उसे देखकर श्रमणा के हृदय में राम के प्रति पूर्वराग उत्पन्न हो जाता है- **"लगा हृदय से तीर प्रेम में श्रमणा मग्न हुयी थी, / सुनकर करुण कराह कल्पना मन की भग्न हुयी थी।"[150]**

3-च-II.3.4 राम के प्रति सम्पूर्ण समर्पण की भावना : अवधेश की श्रमणा के हृदय में राम के प्रति इतना पूर्वराग उत्पन्न हो जाता है कि वह जागृतावस्था में भी राममय हो गयी। श्रमणा अपने आराध्य को स्वप्न में देख कर उन्हें अपना सर्वस्व अर्पित कर देती है- **"आज स्वप्न में दिया उन्होंने मुझको निज संरक्षण, / मैं भी अपना सब कुछ खोकर हुयी उन्हीं को अर्पण।"**[151] श्रमणा हृदय में विचार करती है कि क्या प्रभु उसे अपना संरक्षण देकर स्वीकार करेंगे? 'अवधेश' के शब्दों में- **"इसी देह से हो सकती हूँ क्या मैं उन्हें समर्पण, / स्वीकृत भी क्या वे कर लेंगे, देकर निज संरक्षण।"**[152]

3-च-II-3.5 अति उत्साही तरुणी : श्रमणा के हृदय में मारीच ने एक नये उत्साह का संचार कर दिया है- **"श्रमणा के उर छोड़ गये मारीच नयी जो आशा, / बढ़ने लगी वही दिन प्रतिदिन अब बनकर अभिलाषा।"**[153]

3-च-II-3.6 विद्रोही तरुणी : श्रमणा के पिता शबरराज श्रमणा का विवाह करना चाहते थे, परन्तु श्रमणा विवाह के विरुद्ध थी। उसके हृदय में श्रीराम विद्यमान थे अत: वह किसी अन्य से विवाह नहीं करना चाहती। श्रमणा को विवाह करना अस्वीकार था क्योंकि वह श्रीराम का वरण कर चुकी थी। उन्हें प्राप्त करने हेतु वह सांसारिक बन्धनों से मुक्त ही रहना चाहती है- **"श्रमणा को स्वीकार नहीं था, किन्तु पिता का कहना, / चाह रही थी भव बन्धन से, मुक्त सदा वह रहना।"**[154]

3-च-II-3.7 दृढ़ निश्चयी : श्रमणा एक दृढ़ निश्चयी तरुणी है। त्रिपुरारि तथा दक्ष कुमारी द्वारा श्रमणा को विवाह के लिए प्रेरित करने पर भी श्रमणा का हृदय परिवर्तन नहीं होता है क्योंकि उसने विवाह न करने का दृढ़ निश्चय जो कर लिया है- **"लेकिन माँ बन्धन-बन्धन है, सभी मानते हैं इसको, / इसमें स्वेच्छा से बंध जाना भी भाता है किसको।"**[155] सती द्वारा श्रमणा से यह कहने पर कि तुझे राम में अधिक रुचि है परन्तु श्रीराम अपनी मर्यादा तोड़कर तुझसे विवाह नहीं कर सकते हैं। अत: उन्हें पाना इतना सरल कार्य नहीं है। श्रमणा माँ सती से कहती है कि उसका संकल्प सुदृढ़ है एवं वह विवाह नहीं करेगी- **"माँ संकल्प सुदृढ़ है मेरा, मै न विवाह करुँगी, / एक आस विश्वास एक बल पर निर्वाह करुँगी।"**[156]

इस प्रकार अवधेश ने यह सिद्ध करने का भरपूर प्रयास किया है कि श्रमणा राम के प्रति कांताभाव से अनुरक्त है। वह उन्हीं को अपना मानस वर स्वीकार कर चुकी है तथा इसी कारण उसे कोई अन्य अपने पति रूप में स्वीकार नहीं है।

3-च-II-3.8 प्रेम भक्ति की प्रतिमा : श्रमणा साक्षात प्रेम तथा भक्ति की प्रतिमूर्ति है। यह बात दक्षकुमारी सती को भी ज्ञात थी फिर भी उन्होंने उसे विवाह करने के लिए प्रेरित किया था, किन्तु श्रमणा ने विवाह के लिए अपनी स्वीकृति नहीं दी। उस समय भगवान शिव ने कहा-

"श्रमणा यह मानवी नहीं है, राम भक्ति गरिमा है, / पावन परम त्याग की तप की प्रेम भक्ति प्रतिमा है।"[157]

3-च-II-3.9 एक आखेटक के रूप में : श्रमणा प्रेम तथा भक्ति की प्रतिमा होने के साथ-साथ आखेटक भी थी। उसे आखेट करना प्रिय था। पिता से आखेट खेलने की आज्ञा माँगने के समय का श्रमणा का कथन दृष्टव्य है- **"कर नत नयन कहा पितु से, आई मैं आज्ञा लेने, / बात आज आखेट खेलने की, सोची है मैने"।**[158] परन्तु श्रमणा की जीव हत्या से घृणा की वृत्ति से विरोधाभाष स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

3-च-II-3.10 तरुणी श्रमणा का अन्तर्द्वन्द्व : श्रमणा के हृदय में विवाह को लेकर मानसिक अन्तर्द्वन्द्व उत्पन्न हो जाता है। जब से उसके पिता शबरराज ने उसका विवाह गुह निषादपति के पुत्र से करने का निर्णय किया है तब से श्रमणा मानसिक अन्तर्द्वन्द्व में उलझ गयी है- **"जब से सुना ब्याह का निर्णय, श्रमण पिता के मुख से, / निशा न बीती बिना जागरण, दिवस ना बीता सुख से।"**[159]

3-च-II-3.11 प्रकृति प्रेमी : श्रमणा बाल्यावस्था से ही प्राकृतिक परिवेश में पली बढ़ी है अत: उसका प्रकृति से प्रेम स्वाभाविक ही है। श्रमणा किशोरावस्था में अपनी सहेली के साथ प्राकृतिक सौन्दर्य का अवलोकन करती है- **"बोली आलि आओ देखें, यह निसर्ग की सुषमा, / शशि जिसका उज्जवल प्रतीक है, जिसकी अन्य न उपमा।"**[160]

3-च-II-3.12 गृह त्याग : विवाह के अवसर पर बलि देने के लिए बन्दी बनाये गये पशुओं को खोल देने के पश्चात् श्रमणा ने स्वयं भी गृह त्याग का निश्चय कर लिया। अपने पिता, स्वजन, पुरजन, परिजन सबसे नाता तोड़कर श्रमणा वन को प्रस्थान कर गयी- **"मात पिता स्वजन पुरजन परिजन से नाता तोड़ा, / भक्त और भगवान लोक हित दोनों ने गृह छोड़ा।"**[161]

3-च-II-4 युवा शबरी का चरित्र : 'अवधेश' की कृति श्रमणा की नायिका भी बालपन और किशोरावस्था पार कर युवा होती है। राम द्वारा मारीच को बिना नोक के तीर द्वारा कई योजन दूर फेंक दिये जानें और उसके द्वारा राम के शील, रूप, गुण, बल, शौर्य, बुद्धि इत्यादि का वर्णन सुनकर अपनी अवस्था के अनुरूप शबरी राम पर उन्हें बिना देखे ही अनुरक्त हो उठती है और हर समय उनका ही ध्यान करती है। यहाँ तक कि स्वप्न में भी श्रीराम के दर्शन करती है जो ध्यान की चरम अवस्था कही जाती है- **"अर्धरात बीते श्रमणा की सुप्त चेतना जागी, / व्याकुल हो उठ पड़ी चौंक कर पलंग पीठिका त्यागी। / देखा चारों ओर किन्तु, श्रीराम न दिये दिखाई, / सुनी स्वप्न में थी जो वाणी, वह इसमृति में आई।"**[162] युवा श्रमणा के चरित्र की मुख्य विशेषताओं का संकलन निम्नलिखित चरणों में किया गया है जो संक्षिप्त रूप से उल्लिखित हैं-

3-च-II-4.1 श्रीराम के प्रति कांता भाव से प्रेम की भावना : 'अवधेश' ने यह प्रतिपादित कर दिया है कि श्रमणा को श्रीराम से अनुराग है परन्तु सामाजिक मर्यादाओं में बद्ध स्त्री अपनी

कोमलतम भावनाओं को गोपनीय ही रखती है, क्योंकि यह प्रेम एक पक्षीय है। किसी सुन्दर वस्तु को प्राप्त करने की चाहत में जैसे कोई व्यक्ति उस जैसी अन्य वस्तुओं का तिरस्कार कर देता है शायद वैसी ही मानसिक अवस्था से गुजरने वाली शबरी को अपने सजातीय अन्य पुरुषों से वैवाहिक सम्बन्ध प्रस्ताव अमान्य हुए और पारिवारिक दबाव में उसने वन्य पशुओं की रक्षा और राम के कार्य हेतु गृह त्याग को अपना लिया। शबरी द्वारा गृह त्याग हेतु दिये गये कुछ तर्क इस मत को पुष्ट करते हैं- **"मेरा इतना स्वार्थ कि मैं, सानिध्य उन्हीं का पाऊँ, / वे यदि मेरे बन न सके तो मैं उनकी बन जाऊँ/ हानि भृंङ्ग की ही क्या है, यदि कीट भ्रमर बन जाये, / क्या बिगड़ेगा भला स्वाँस का बाँस मुखर बन जाये।"** तथा **"अपयश भले मिले मुझको कब सुयश चाहती हूँ मैं, / मैं तो केवल उनको ही निशि दिवस चाहती हूँ मैं।"**[163]

श्रमणा का राम के प्रति कान्ता-भाव के अनुराग को 'अवधेश' ने विभिन्न प्रकार से चित्रित किया है। गृह त्याग के निर्णय पर विचार करते समय श्रमणा का तर्क-वितर्क इसका उदाहरण है- **"वह जब जन कल्याण हेतु साम्राज्य त्याग सकते हैं, / तो हम उनके लिए न क्यों गृह-राज्य त्याग सकते हैं।"**[164]

3-च-II-4.2 पशु प्रेम : बाल्यावस्था की वृत्ति युवावस्था में भी वैसी ही रहती है। श्रमणा द्वारा जलाशय में स्नान करने के प्रसंग से यह स्वयं सिद्ध है- **"मीन मत्स्य कच्छप जलचर श्रमणा समीप सब आये, / मेवा मधुर चुगाकर कर से बार-बार दुलराये।"**[165]

इसी प्रसंग में गज द्वारा शावक को प्रताड़ित किये जाने पर श्रमणा द्वारा शावक को स्वतन्त्र करने से उसका पशु प्रेम प्रदर्शित होता है- **"कण्ठ रुद्ध हो रहा था शावक का क्षीण हो रहा था स्वर, / तभी श्रमणा ने ललकारा था गज को आगे बढ़कर।"**[166]

3-च-II-4.3 सौन्दर्यमयी नारी : शबरी एक सुन्दर स्त्री है जिसका सौन्दर्य उसकी युवावस्था के कारण और अधिक बढ़ गया है। 'अवधेश' द्वारा शबरी की युवावस्था में सौन्दर्य का वर्णन दृष्टव्य है- **"श्यामल सुन्दर सर सिज सा मुख कमल नाल सी बाहें, / बार-बार वारिचर संस्पर्श स्वभाग्य सराहें।"**[167]

3-च-II-4.4 लज्जाशील नवयौवना : मारीच द्वारा राम का वर्णन सुनकर, राम का चित्र अंकित शर प्राप्त कर तथा राम को वर के रूप में प्राप्त करने की प्रेरणा इत्यादि कुछ ऐसे प्रसंग हैं जो युवा शबरी को राम के प्रेम में पगा देते हैं। यह विशुद्ध कान्ताभाव से एक नारी और पुरुष का प्रेम है। एक शुक द्वारा राम के नामोच्चारण से ही शबरी प्रसन्न हो उठती है- **"पुलक हो गया गात, नाम जब राम पड़ा श्रवणों में, / उत्कण्ठित हो गई आर्द्रता छलक पड़ी नयनों में।"**[168] उसी शुक से राम द्वारा अहिल्या उद्धार का वृतान्त सुनकर तथा उस पक्षी ने राम के दर्शन किये हैं; यह जानकर शबरी उसके भाग्य की सराहना करती है। वह उसके पैर छू कर अपनी राम को छू लेने की इच्छा प्रदर्शित करती है क्योंकि शुक ने राम चरणों को स्पर्श किया है- **"यह उपकार तुम्हारा**

शुकवर कभी नहीं भूलूँगी, / छुए आपने चरण राम के मैं तब पग छू लूँगी।"[169] श्रमणा जैसे ही शुक को पकड़ने को हाथ आगे बढ़ाती है वह उसकी मनोभावना समझ कर उड़ते-2 बोलता जाता है- **"किसके कौन छुए पग, मैने यह सब जान लिया है, / सखी तुम्हारी अलि, का वर मैने पहिचान लिया है।"**[170] श्रमणा अपने मन की बात पहचान लिये जाने तथा उसे सार्वजनिक कर दिये जाने से लज्जा से अनुरक्त हो उठती है। कवि के शब्दों में- **"सुनकर शुक की बात कपोलों पर अरुणाई छाई, / मानो लज्जा ने भी सत्यापन की छाप लगाई।"**[171]

3-च-II-4.5 विवाह से असहमत : श्रमणा महाकाव्य के षष्टम सर्ग में शिव और पार्वती द्वारा श्रमणा को विवाह करने के लिए प्रेरित करते हुए विवाह का औचित्य समझाया जाता है परन्तु श्रमणा विभिन्न प्रकार के तर्क-वितर्क करती है। वह राम के अतिरिक्त किसी और को पति स्वरूप में स्वीकार नहीं करना चाहती है। निराश होकर शिव सती से कहते हैं- **"विहँस शम्भु ने कहा सती, लो तुम भी हार गयी हो, / राम भक्ति साकार मूर्ति पर, तुम बलिहार गई हो।"**[172]

3-च-II-4.6 दृढ़ निश्चयी : श्रमणा अपने निश्चय पर अटल है क्योंकि शिव व सती के लाख समझाने पर भी वह विवाह करने के लिए राजी नहीं होती। निराश होकर शिव कहते हैं- **"किन्तु अभी है समय शेष, शबर पति धैर्य धरेंगे, / सम्भव कोई परिवर्तन हो, सतत प्रयास करेंगे।"**[173]

3-च-II-4.7 बुद्धिमती : श्रमणा एक बुद्धिमती नारी है। मतंगाश्रम के मार्ग में एक स्थान पर रात्रि विश्राम हेतु रुकती है। प्रातः काल अनजाने में मुनि मतंग का पैर उसके शरीर से छू जाने और मुनि के कुपित होने पर श्रमणा द्वारा प्रस्तुत तर्क उसकी बुद्धिमती होने का प्रमाण है- **"दैव आपके पग पवित्र हैं, मेरी देह अपावन, / छूकर आप अछूत हुए तो क्यों न हुई मैं पावन। / नाथ अपावनता कहो कहाँ रख आऊँ, / सभी ओर दिखती पवित्रता कहो कहाँ पर जाऊँ।"**[174]

3-च-II-4.8 ब्रह्मचारिणी नारी : श्रमणा एक ब्रह्मचारिणी नारी है उसने श्रीराम के लिए विवाह तथा अपने पिता, स्वजन, बन्धु-बान्धवों व गृह का परित्याग कर दिया। मुनि मतंग को वह अपना परिचय निम्न शब्दों में देती है- **"ब्रह्मचारिणी हूँ फल-फूलों पर जीवन-निर्भर है; मेरा दोष कहाँ गुरुवर यदि मेरी जाति शबर है।"**[175]

3-च-II-4.9 राम दर्शनों की अभिलाषी : श्रमणा अपने बाल्यकाल से ही श्रीराम को अपना अभीष्ट मानती है। विभिन्न घटनाओं से उसकी राम के प्रति प्रेम की भावना का विकास होता जाता है। जिसकी परिणति उसके द्वारा अपने विवाह के प्रसंग में गृह त्याग से होती है। अपने पिता द्वारा निषादराज के पुत्र से विवाह नियत कर दिये जाने पर अन्यमनस्क एवं दुखी रहना, चुपके से दक्षिण वासियों के साथ राम का समाचार लाने के लिए दूतों को भेजना, दूतों के द्वारा शीघ्र समाचार न लाने पर उद्विग्न होना, ऋषि विश्वामित्र से मिलने पर उन्हें श्रीराम का गुरू जान कर उनसे अपने बालपन से अभी तक श्रीराम से स्नेह सम्बन्ध के जन्म एवं उसके प्रगाढ़ होने तथा श्रीराम के दर्शनाभिलाषी होने की इच्छा व्यक्त करना इत्यादि उसकी राम के प्रति अनन्य प्रेम की भावना का

द्योतक है। शबरराज द्वारा विवाह के लिए मनाने हेतु दिये गये उदाहरणों से श्रमणा की प्रेम भावना भक्ति में परिवर्तित हो जाती है। वह राम के दर्शनों की चिर अभिलाषी है- **"अधम जाति की नारी हूँ लोक दृष्टि से हीना, / अल्पज्ञा हूँ अति आर्ता हूँ सब प्रकार से दीना। / है मेरी अभिलाष, राम को कभी किसी विधि पाऊँ, / किन्तु न उनकी मानव मर्यादा में छिद्र बनाऊँ।"**[176]

3-च-II-4.10 विदुषी : श्रमणा यद्यपि अनपढ़ है तथापि उसे सामाजिक आर्थिक, धार्मिक तथा राजनैतिक विषयों का सम्यक ज्ञान है। यह ज्ञान उसे पितृ गृह में विभिन्न श्रेष्ठ गुरुओं एवं योगियों द्वारा दिये गये उपदेशों से प्राप्त हुआ है। यहाँ तक कि 'अवधेश' की श्रमणा किष्किन्धा के वानर राज्य में पहुँच कर उस राज्य की एक महान समस्या सुलझाने के लिए आदर पूर्वक आमंत्रित की जाती है- **"आज जनसभा का सम्बोधन श्रमणा सुश्री करेंगी, / अन्तिम अपने निर्णय से हम सबकी दिशा करेंगी।"**[177]

इसी प्रसंग में श्रमणा द्वारा वानर प्रजा को दिया गया सम्बोधन और सुग्रीव को बालि की अनुपस्थिति में राजा घोषित करने का निर्णय उसकी विद्वता एवं पाण्डित्य की पहिचान है। इसी सम्बोधन में श्रमणा द्वारा राजधर्म, प्रजाधर्म, लोकमर्यादा, चारों आश्रमों के धर्म, तात्कालिक सामाजिक समस्याओं को सुलझाने की योजना तथा नर-वानर मैत्री की पृष्ठभूमि तैयार करना इत्यादि कुछ बातें हैं जिससे श्रमणा का एक विद्वान नारी होना सिद्ध होता है; उदाहरणार्थ- **"राजा का कर्तव्य चतुष्फल निज विक्रम से पाये, / शान्ति पूर्वक प्रजा जनों को भी वह प्राप्त कराये।"**[178]

बालि पत्नी तारा को श्रमणा द्वारा देह न त्यागने की सम्मति उसकी विद्वता, दूरदर्शिता जीवन के प्रति सकारात्मक सोच और राम कार्य में प्रयुक्त होने वाले वानर सहयोग की पृष्ठभूमि तैयार करने हेतु उसके प्रयत्नों का ही उदाहरण है- **"श्रमणा बोली देह त्याग में कुछ कल्याण नहीं है। / बालिराज के अभी निधन का पूर्ण प्रमाण नहीं है।"**[179]

3-च-II-4.11 सच्चरित्र एवं आत्म ज्ञानी : श्रमणा की सूर्पनखा से भेंट होने, परिचय, मैत्री होने एवं श्रमणा द्वारा आर्य और रक्ष संस्कृति के अन्तर को प्रतिपादित करने के प्रसंगों से यह ज्ञातव्य है कि श्रमणा स्वयं सच्चरित्रधारिणी एवं चरित्र की रक्षा करने वाले सुपथगामियों की अनुनायक है। वहीं राम द्वारा जयन्त को सीता के अपमान के लिए दिये गये दण्ड का समर्थन कर के वह सूर्पणखा को आर्य संस्कृति की रक्ष संस्कृति पर श्रेष्ठता प्रमाणित करती है। यहाँ निम्न उदाहरण दृष्टव्य है- **"बोली सद् प्रवृत्तियाँ ही जब आचरणों में आती, / मानव के स्वभाव में रमकर वे चरित्र बन जातीं। / संचित ज्ञान आचरण में जब व्यक्त हुआ करता है, / मानव के जीवन गाथा में वह चरित्र बनता है।"**[180]

3-च-II-5 वृद्धा शबरी का चरित्र : कविवर 'अवधेश' की श्रमणा की युवावस्था; गृह त्याग, मतंगाश्रम में निवास के प्रसंगों में वर्णित है। तदुपरान्त यद्यपि श्रमणा के आचार-विहार, दिनचर्या,

तपश्चर्या, भक्ति, योग, ध्यान, लोक-कल्याण के लिए उसका प्रयास यहाँ तक कि किष्किन्धा जा कर सुग्रीव को वानरराज बनाने की सहमति तथा तारा प्रसंगों में समय के अन्तराल का वर्णन प्राप्य है; परन्तु शबरी की शारीरिक अवस्था का कोई वर्णन 'अवधेश' ने कहीं नहीं किया है। सभी ऋषियों जैसे अग्नि, मतंग, सुतीक्ष्ण तथा कुम्भज ने उसे पुत्री सम्बोधन ही दिया है। मात्र एक स्थान पर शबरी को माता सम्बोधन मिला है जो उसकी प्रौढ़ावस्था का द्योतक है। अवधेश ने सीता की अनुजा वेदवती का प्रसंग अपने महाकाव्य में जोड़ा है जो श्रीरामचरितमानस एवं इतर रामायणों से भिन्न है। सीता अपहरण अवश्यम्भावी जान कर श्रमणा अपने गुरु मतंग के आज्ञानुसार अग्नि ऋषि के पास सीता व वेदवती को एक दूसरे से बदलने का संदेश लेकर पहुँचती है; उस समय वेदवती द्वारा श्रमणा को माता सम्बोधन दिया जाता है- **"सीता का व्रत मेरा प्रण यह दोनों फल जायेंगे, / एक तीर से यों अनेक आखेट सिद्धि पायेंगे। / महामती श्रमणा माता की, उपकृत सदा रहूँगी, / जन्म जन्म तक अनुकम्पा उपकार नहीं भूलूंगी।"**[181] वृद्धा शबरी की चारित्रिक विशेषताएं निम्नवत हैं।

3-च-II-5.1 निष्काम भक्तिमती : शबरी श्रीराम की भक्ति निष्काम भाव से करती है तथा वह राम को उनके कार्य में तन-मन-धन-वचन-कर्म सभी से सम्पूर्ण सहयोग देती आई है। शिव द्वारा शबरी की निष्काम भक्ति का वर्णन दृष्टव्य है- **"तुम हो अति सौभाग्यशालिनी हो विमुक्त माया से, / हो सचमुच निष्काम भक्ति तुम मानस वचन काया से।"**[182] राम भक्ति की प्रतिमूर्ति शबरी के लिए श्रीरामचन्द्र जी भी अपने मुख से उसे निष्काम भक्ति का मूर्तमान स्वरूप मानते हैं, मतंगाश्रम में प्रवेश के समय नि:शब्द आश्रम को देख अनिष्ट की आशंका से राम विचलित हो उठे- **"चलो-चलो अति शीध्र पगों की गति कुछ तीव्र बनाओ / कर निष्काम भक्ति का दर्शन जीवन का फल पाओ।"**[183]

वृद्धावस्था में शबरी की राम दर्शनों की अभिलाषा अत्यन्त तीव्र हो उठती है। राम के प्रति प्रेम की भावना भक्ति में बदल जाती है परन्तु यह प्रेम और भक्ति की भावनाएं समय-2 पर तीव्र व मध्यम हुआ करती हैं। कभी प्रिय की प्रतीक्षा में शबरी विह्वल हो उठती है तो प्रिय राम के दर्शनों उपरान्त अपनी सुध-बुध खोकर बावली बन जाती है और अपने जूठे बेरों से राम का स्वागत करती है। श्रीराम की उसकी चिरप्रतीक्षित भेंट होने पर उसने राम के प्रति अपने अनुराग से उन्हें अवगत करवाया तथा बदले में राम से उनकी अनन्य भक्ति का प्रसाद ग्रहण किया जिसकी सारे ऋषि मुनियों यहाँ तक की भगवान शिव भी सराहना करते हैं। 'अवधेश' के अनुसार- **"पूर्ण समर्पित हो गई श्रमणा मन वच काम, / बाहर भीतर दिख गये, इसलिए भी राम। / तज बिकार मनवृत्तियाँ, बनी स्वयं ही आप्त,शबरी से श्रमणा हुई, हुआ देव पद प्राप्त।"**[184]

3-च-II-5.2 सेविका नारी 'श्रमणा' : अपनी सेवा वृति के कारण ही शबरी को श्रमणा नाम से विभूषित किया गया है। मतंगाश्रम में यदि कोई दुखी और पीड़ित व्यक्ति पहुँच जाता तो शबरी ही सर्वप्रथम उसकी सेवा में प्रस्तुत होती थी तथा उसकी सेवा बड़ी ही तत्परता से करती थी-

"व्याधि तथा पीड़ा से कोई दुखी अगर हो जाता, / सबसे पहिले तो श्रमणा को ही सेवा में पाता।"[185]

3-च-II-5.3 मातृवत-स्नेह से ओत-प्रोत : वृद्धा श्रमणा का हर अन्तेवासी के प्रति मातृवत आचरण होता था। प्रत्येक व्यक्ति उसे माता के समान आदर करता था- **"मधु मुस्कानों से वत्सलता का पराग झरता था, / मातृ सदृश ही हर अन्तेवासी आदर करता था।"**[186] श्रमणा के हृदय में सब के प्रति स्नेह का सागर बहता है। बटुक एवं पशु पक्षी सभी श्रमणा का स्नेह एक समान रूप से प्राप्त करते थे। श्रमणा मतंगाश्रम की प्राण बन गई थी।

3-च-II-5.4 योगिनी शबरी : मुनि मतंग के देहावसान के उपरान्त उनकी आज्ञानुसार मतंगाश्रम भंग कर के शबरी एक कुटिया बनाकर रहने लगती है। समय के साथ-2 साधना में परिपक्वता आती गई और शबरी एक सिद्ध योगिनी बन गई जो अल्पकाल में समाधिस्थ होकर सूक्ष्म नेत्रों से समस्त विश्व को देख सकती है- **"अल्पकाल में योग सिद्ध तन को समाधि देती थी / राम समेत विश्व को त्रिकुटी मध्य देख लेती थी।"**[187] रावण के किष्किन्धा आगमन पर मतंगाश्रम के स्थान पर एक साधारण सी कुटिया दिखाई पड़ती है। वह यह ज्ञात करने के लिए कि यह किसकी कुटिया है वहाँ पर जाता है और उसे वहां पर ध्यानस्थ शबरी के दर्शन होते हैं- **"समाधिस्थ बैठी थी श्रमणा प्रिय का ध्यान लगाकर / रावण सहसा उसी समय रुक गया द्वार पर जाकर।"**[188]

3-च-II-5.5 श्रीराम से कांताभाव में प्रेम की भावना : 'अवधेश' की श्रमणा में ऐसे तमाम उद्धरण हैं जो यह प्रतिपादित करते हैं कि शबरी अनदेखे-अनजाने राम से प्रेम की पराकाष्ठा तक प्रेम करती है। उसका प्रेम विशुद्ध प्रेम है जो कुछ पाने की अभिलाषा नहीं करता वरन प्रिय के ऊपर सर्वस्व न्यौछावर एवं प्राणोत्सर्ग करने तक को हमेशा प्रस्तुत रहता है। श्रमणा श्रीराम की प्रतीक्षा एक विरहिणी नारी के रूप में करती है। श्रीराम से मिलन के प्रसंग में 'अवधेश' ने श्रमणा की प्रेम भावना का भक्ति में परिवर्तन तो जरूर दर्शाया है परन्तु यह प्रेम-मिश्रित भक्ति उच्च कोटि की भक्ति थी जिसमें भक्त और आराधक एक दूसरे के हो जाते हैं- **"श्रमणा का केवल तन था, मन था रघुपति के मन में / रघुपति का केवल मन था वह था श्रमणा के तन में / तन दो थे परन्तु मन दोनों मिल कर एक हुऐ थे, आत्मा आत्मा में लय थी, युग विवेक हुए थे।"**[189] गोस्वामी तुलसीदास ने अपने रामचरितमानस में श्रीराम के मुख से श्रमणा को तीन बार 'भामिनी' सम्बोधन दिलवाया है। इसी आधार पर 'अवधेश' के राम शबरी को चार बार भामिनी सम्बोधन देते हैं जो जानबूझकर प्रयुक्त किया गया है।

3-च-III 'श्रमणा' में राम का चरित्रांकन : 'अवधेश' के राम दशरथ पुत्र अवधपति श्रीराम हैं। जो एक बालक से कुमार और युवराज होते हुए विभिन्न राक्षसों एवं दुष्टों को दण्ड देते हुए रावण कुल घालक एवं अपनी जीवन यात्रा के विभिन्न सोपानों पर विभिन्न व्यक्तियों से विभिन्न प्रकार के सम्बन्धों का समुचित निर्वहन करते हैं। अपने सद्गुणों से सभी को हर्षित एवं प्रमुदित करते हुए मनुजता से भग्वत्स्वरूप को प्राप्त होते हैं। 'अवधेश' का यह प्रयास रहा है कि इस कृति में राम

के मनुज स्वरूप का चित्रांकन किया जाय जिसकी स्वीकारोक्ति उन्होंनें स्वयं की है। इस कृति के आधार पर राम के चरित्र की कुछ महत्वपूर्ण वृत्तियों को निम्नलिखित अवतरणों में व्यक्त किया जा रहा है-

3-च-III-1 सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति : रावण की गुप्तचर सेना के सेनानायक मारीच द्वारा राम के सौन्दर्य गुण का प्रथम वर्णन श्रमणा को प्राप्त होता है। मारीच को राम ने बिना नोक के बाण द्वारा शत योजन दूर फेंक दिया था। उसके शरीर पर लगे शर पर श्रीराम का नाम एवं उनकी लघु छवि अंकित है जो अतिशय सुन्दर है। मारीच द्वारा राम के प्रथम दर्शनों का वर्णन निम्न है- **"मीन नयन, श्यामल तन युग कर साधे कठिन शरासन, / रामचन्द्र यज्ञ रक्षाहित बैठे थे बीरासन।"**[190] मारीच को राम की छवि इतनी अद्‌भुत लगती है कि वह उनसे लड़ाई के स्थान पर आत्मसमर्पण करने को तत्पर हो उठता है- **"सोच रहा था अद्‌भुत छवि पर कर दूँ आत्मसमर्पण, / किन्तु सैन्य संयुक्त सुबाहु ने छेड़ा रण संघर्षण।"**[191]

3-च-III-2 वीर पुरुष : राम की वीरता का यह उदाहरण निश्चित रूप से उच्च कोटि का है जिसके द्वारा बिना नोक के बाण द्वारा उन्होंनें मारीच को बिना घायल किये शत योजन दूर फेंक दिया तथा ताड़का सुबाहु इत्यादि का वध भी निमिष मात्र में कर दिया। मारीच को स्मृति होती है कि उनकी माता एवं लघु भ्राता का संहार इन्हीं राम के द्वारा किया गया है- **"इस्मृति आई, इन्हीं राम ने, माता को भी मारा, मारा गया आज लघु भाई इन्हीं राम के द्वारा।"**[192]

3-च-III-3 अवतारी पुरुष : राम एक अवतारी पुरुष हैं। वे मात्र एक साधारण मनुष्य नहीं हैं परन्तु मानव शरीर से वे मानवोचित कार्य ही सम्पादित करते हैं। मारीच द्वारा राम का यह चरित्र चित्रण दृष्टव्य है- **"हुआ राम अवतार ब्रह्म का यद्यपि यह निश्चित है, / किन्तु चरित्र सभी उनका पूर्णतः मानवोचित है।"**[193]

3-च-III-4 मर्यादा पुरुषोत्तम : राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, उनके मानवोचित गुण भी सर्वश्रेष्ठ कोटि के हैं। वे मानव मर्यादाओं को जोड़ने के लिए अवतरित हुए हैं- **"टूटी मानव मर्यादायें राम जोड़ने आये, / युगों-युगों तक आर्यत्व की छाप छोड़ने आये।"**[194] एवं **"राम सीय मय सब जग ज्ञानी की विराट प्रतिमा है, / कौन उसे वर्णन कर पाये वह अनन्त गरिमा है।"**[195]

3-च-III-5 दयावान पुरुष : राम एक दयावान पुरुष हैं, जिन्होंने अभिशप्ता अहिल्या को अपनी दया से पाषाण से पुनः स्त्री बनाकर उसके पति के समीप पहुँचा दिया- **"किन्तु दयामय राम पधारे ऐसी दया दिखाई, / परित्यक्ता पत्नी फिर से पति समीप पहुँचाई।"**[196]

3-च-III-6 विवेकी पुरुष : राम स्वयं एक विवेकवान पुरुष हैं जिन्हों ने गौतम ऋषि द्वारा अपनी पत्नी को त्याग देने के कारणों का इतने विवेकपूर्ण ढंग से परिमार्जन किया कि गौतम ऋषि अपनी अविवेकपूर्ण कृत्यों पर मात्र पश्चाताप ही कर सके और राम द्वारा दिये गये तत्वज्ञान के फलस्वरूप

अपनी भूल समझ कर ग्लानि से भर उठे- **"त्राहि त्राहि मुनि बोले रघुवर मैं सचमुच व्याधी हूँ, अग जग का आपका अहिल्या का भी अपराधी हूँ।"**[197]

3-च-III-7 अलौकिक पुरुष : राम का पुण्य लक्ष्य है कि सभी सुखी व निरापद हों। इसी कारण लोक कल्याण का अभीष्ट लेकर राम राज-वैभव को त्याग जनहित हेतु जंगलों में विचरण करते हैं। वे पर-पीड़ा हरण हेतु स्वयं को होम कर देते हैं- **"हुआ राम अवतार ब्रह्म का यद्यपि यह निश्चित है, / किन्तु चरित्र सभी उनका पूर्णतः मानवोचित है। / जड़ चेतन मय रूप राम का यों तो नित्य अपरिमित, / किन्तु बताता ज्ञान चक्षु से जो प्रत्यक्ष है सीमित।"**[198]

3-च-III-8 आज्ञाकारी पुत्र : राम एक आज्ञाकारी पुत्र हैं जिन्होंने अपनी माँ और पिता की आज्ञा सहर्ष स्वीकार कर ली है और दक्षिणवासियों की रक्षा और कुल गौरव की प्रतिष्ठा हेतु राज्यारोहण के स्थान पर वनगमन को अपना लिया है। दक्षिणवासियों को राम अभय दान देते हुए कहते हैं- **"दायाँ हाथ उठाकर बोले, हे प्रिय दक्षिणवासी, मैं दशरथ सुत राम, आज आया बन कर विश्वासी।"**[199]

राम के वनगमन के प्रसंग में सुनयना द्वारा राम को उलाहना दिया जाता है कि उन्होंने अपनी पुत्री सीता को चक्रवर्ती राम को दिया था न कि तापसी राम को, इस पर राम की दी गई उक्ति दृष्टव्य है जो राम की मातृ-पितृ भक्ति की परिचायक है- **"मातृ-पितृ आज्ञा न पुत्र ही यदि पालन कर पाये, / तो फिर उसको जग में करने को कुछ क्या रह जाये।"**[200]

3-च-III-9 एक पत्नीव्रती : राम एक पत्नीव्रती हैं जिन्होंने शूर्पणखा द्वारा विवाह प्रस्ताव सम्मान समेत ठुकरा दिया- **"राम एक नारी व्रत का आदर्श बनाने आये, / नारी में मातृत्व भाव की ज्योति जगाने आये।"**[201]

3-च-III-10 भक्तवत्सल श्रीराम : श्रीराम को श्रमणा द्वारा अपनी अनन्य भक्ति का ज्ञान है। वे भक्तवत्सल हैं जिन्हें ज्ञात है कि श्रमणा उनके प्रेम में पगी और भक्ति में रमी है और वे उसे शीघ्रातिशीघ्र दर्शन देना चाहते हैं। आने में किंचित विलम्ब होने पर श्रमणा अचेत हो उठती है तो वे उसे शीघ्रता से उठा लेते हैं- **"धनुस बाँण फेंका रघुपति ने नीर दृगों में आया, / भू अभिमुख श्रमणा को निज हाथों से शीघ्र उठाया।"**[202]

3-च-III-11 प्रेमभक्ति के भूखे श्रीराम : राम प्रेम भक्ति के भूखे हैं। शबरी को दर्शन देने के उपरान्त वह उससे विनोद करके कहते हैं कि- **"विहंस राम बोले, भामिनि है प्रेम तुम्हारा रूखा, / कुछ खाने को भी दो, हूँ जाने कब से भूखा।"**[203] तथा **"कौन कहे, थी भूख उदर की या कि हृदय के भूखे, / एक निमिष में बेर खा गये प्रभु सब रुखे सूखे।"**[204]

3-च-III-12 ब्रह्मज्ञानी : राम ब्रह्मज्ञानी हैं। वे श्रमणा को नवधा भक्ति का उपदेश देते हैं और उसकी लौकिक प्रेम और भक्ति को ज्ञान एवं मोक्ष की ओर मोड़ देते हैं। परम रहस्य की गूढ़ बात

सुनकर श्रमणा का तन ओर मन दोनों ही शान्त हो उठते हैं- **"यही मोक्ष है, सामरस्य है, एकाकार यही है, / परमानन्द कामनाओं का भी सब सार यही है। / सुनकर परम रहस्य श्रमण का चित्त, शान्त था सारा, / परम शान्त थी नयनों में थी विमल अश्रु की धारा।"**[205]

3-च-IV श्रमणा के अन्य पात्र : 'अवधेश' कृत श्रमणा महाकाव्य एक नायिका प्रधान रचना है। जिसे श्रमणा को मूल में रखकर सृजित किया गया है। कुछ मुख्य पुरुष पात्र, स्त्री पात्र और कुछ गौण पात्रों के अलावा पशु-पक्षियों एवं अनेकों अन्य गौण पात्रों के समावेश से इस महाकाव्य की कथा ओत-प्रोत है। विभिन्न अन्य पात्रों जैसे; देवगण, इन्द्र, नारद, गंधर्व, शिव, शची इत्यादि भी कथा में यत्र-तत्र प्रयुक्त किये गये हैं। वस्तुत: कथा में सर्वविदित पात्रों का ही समावेश किया गया है। कुछ अज्ञात आख्यानों को भी स्थान प्राप्त हुआ है और इस कारण कुछ नये पात्रों जो कि श्रीरामचरितमानस में वर्णित नहीं है; का भी उल्लेख इस कृति में है जैसे- मारीचि का रावण की सेना का सेनापति होना एवं वेदवती का सीता की अनुजा होने के आख्यान। अन्य पात्रों का सर्वविदित चरित्र होने के कारण कथा के आधार पर यद्यपि चरित्र चित्रण सम्भव है तथापि हमारा ध्येय मुख्य पात्रों पर ध्यान केन्द्रित करना है। इस कारण अन्य पात्रों के चरित्र चित्रण का प्रयास नहीं किया जा रहा है।

3-छ नरेश मेहता कृत 'शबरी' की पात्र योजना

नरेश मेहता कृत शबरी खण्ड-काव्य की पात्र योजना अत्यन्त साधारण है। खण्ड-काव्य की मुख्य स्त्री पात्र शबरी के अतिरिक्त पुरुष पात्रों में मतंग मुनि, रामचंद्र तथा लक्ष्मण हैं। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य गौण पात्र जैसे साधु समाज, शबरी के कुटुम्बी जन, शाबर दल, आश्रम वासी वटुक वृंद, कपिला, धौला एवं श्यामा नामक गायें भी वर्णित हैं।

3-छ-I भक्तिमती शबरी का चरित्रांकन: नरेश मेहता कृत शबरी एक खण्ड-काव्य है। इस खण्ड-काव्य की मुख्य पात्र शबरी है। शबरी का नाम श्रमणा किसी अनजान साधु या ऋषि द्वारा प्रदत्त होना दर्शाया गया है, परन्तु पूरे काव्य में सर्वत्र उसका वास्तविक नाम 'श्रमणा' उद्धृत न होकर उसका जाति सूचक (शबर) नाम, जो लोक प्रसिद्ध है, शबरी ही प्रयुक्त हुआ है। यह इसलिए भी हो सकता है कि आदि कवि ने अपने 'रामायण' में 'शबरी' नाम का ही प्रयोग किया है। इस खण्ड-काव्य में शबरी के जन्म एवं मातृ-पितृ वर्णन से बचा गया है जिससे शबरी की चारित्रिक विशेषताओं पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया जा सके, परन्तु कवि ने शबरी के निवास स्थल, घर की स्थिति तथा उसमें व्याप्त घृणित एवं जुगुप्सामय वातावरण का काल्पनिक किन्तु सजीव सृजन का अथक प्रयास किया है और कवि इसमें बहुत सफल भी हुआ है। खण्ड-काव्य में शबरी की जिन चारित्रिक विशेषताओं को कवि ने उभारने का प्रयास किया है उन्हें क्रमश: निम्नवत रखा जा सकता है।

3-छ-I-1 अन्त्यज अछूत नारी : नरेश मेहता की शबरी एक अन्त्यज अछूता नारी है जिसे अपनी सामाजिक स्थिति का सम्यक ज्ञान भी है- **"अन्त्यज अछूत, फिर शबर जाति / उस पर स्त्री, क्या हेतु कहूँ?"**[206]

3-छ-I-2 श्रमणा नामकरण : किसी अनजान साधु के द्वारा शबरी का नामकरण श्रमणा के रूप में हुआ था- **"पता नहीं किस साधू ने, / यह नाम दिया था श्रमणा / भला शबर लड़की का होता / नाम कभी भी श्रमणा?"**[207]

3-छ-I-3 वैवाहिक स्थिति : इस खण्ड-काव्य में शबरी को विवाहिता माना गया है, जो किसी अनजान प्रेरणा के वशीभूत होकर भगवत्प्राप्ति हेतु अपनी इच्छा से पति व बच्चों को त्यागकर मतंगाश्रम में आ जाती है- **"घोर वितृष्णा घिर आयी / श्रमणा शबरी के मन में, / त्यागो यह परिवार-मोह / यदि करना कुछ जीवन में।"**[208]

3-छ-I-4 पशु हिंसा से घृणा : शबरी को अपनी जातिगत प्रवृत्ति पशुहिंसा से घृणा थी तथा उसे अपना घर बूचड़खाना जैसा प्रतीत होता था- **"श्रमणा नामक शबरी वह / ऐसा ही जीवन जीती, / उसे घृणा थी पशु हिंसा से / पर क्या कर सकती थी।"**[209]

3-छ-I-5 दयालु नारी : शबरी एक दयालु नारी है। शबरी को अपने कुटुम्बी जन निर्मम तथा निर्दयी प्रतीत होते हैं। जिससे यह सिद्ध होता है कि उसके मन में दया और प्रेम की भावना है। उसका संवेदनशील मानस पशुहिंसा से विदीर्ण हो जाता है। वह अपनी इन भावनाओं को निम्न शब्दों में व्यक्त करती है- **"निर्मम तो प्रकृति भी है / पर उससे भी निर्मम मानव / सब भोजन हैं इसके तो / यह कैसा भूखा दानव।"**[210] किसी मृग शावक के वध पर (जो शबर जाति की उदर क्षुधा पूर्ति हेतु एक सामान्य सा कृत्य है) शबरी के हृदय में दयालुता के कारण अपने कुटुम्बी जनों के प्रति क्षोभ एवं स्वयं की स्थिति से घृणा व निराशा उत्पन्न होती है।

3-छ-I-6 सेवा भावना : नरेश मेहता की शबरी के अन्दर सेवा भावना कूट-कूट कर भरी हुयी है। मतंग मुनि द्वारा उसे आश्रय ना देने की स्थिति में वह मुनि से कहती है- **"मैं चाह रही केवल प्रभु / के श्री चरणों की सेवा करना, / मैं कर लूँगी संतोष मिले / यदि गायों की सेवा करना।"**[211] शबरी मुनि मतंग के आश्रम में विभिन्न प्रकार के कार्य सम्पादित करती है। उसका सेवा कार्य ब्रह्म मुहूर्त से शुरु होकर रात्रि तक चलता है- **"भिनसार ब्राह्मवेला में / बिस्तर से वह उठ जाती/ स्नान-ध्यान कर तब वह / कुश-फूल आदि चुन लाती।"**[212]

3-छ-I-7 भक्ति भावना : शबरी के हृदय में भगवान के प्रति अटूट श्रद्धा और विश्वास की भावना विद्यमान है। शबरी ठाकुर की प्रतिमा के सन्मुख तन्मय होकर कीर्तन करती रहती है। शबरी भगवत्भजन में रात्रि जागरण करती रहती है तथा दिन भर के सारे कार्यों को प्रभु का श्रृंगार समझ कर करती है- **"लेकिन शबरी तो दिन में / भी प्रभु में तन्मय रहती / वह सभी कर्म को प्रभु का / श्रृंगार समझ कर करती।"**[213]